विज्ञापना

श्रीजीनवरेंद्रायनम ॥ श्रीजैनधर्मी साधुसाधवी श्रावकश्रावीका चतुर्विधसंघने प्रथम ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए ४ मोक्षमार्गना हेतु छे तेहमा पण ज्ञान मुख्य छे जेहथि हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थनु जाणपणु थाय तेहथि प्रथम अभ्यास ज्ञाननो करवो जेहथि परंपराए मुक्तिना लाभनो हेतु थाय एहवु जाणिने भव्य जीवना उपकारनिमित्ते आ बोलचालना थोकडा पन्डित राज पूज्य श्रीदेवजी स्वामिना शिष्य सर्वगुणालंकृत महाराजश्री ५ लाधाजीस्वामी पासे शुध्द कंरावी छपावी प्रसिध्द किधाछे तेहमा सुधारता कोइ पण भुल चुक रहि होय तो पन्डितजन कृपा करी सिध्दात तथा ग्रथ जोइ सुधारि लेशो एज माहरी विज्ञप्ति छे जैनमार्गमा ज्ञानपूर्वक क्रिया साफल्य छे बिजु आ पुस्तक छपाके मुखे तथा दिवाने अजवाले वाचवु नहि ॥ तथास्तु ॥ भगवानदास केवलदास

॥ श्रीप्रकरणसर अनुक्रमणिका ॥

१	ठकायनावोल	
२	नवतत्व	
३	लघुदंकक	५
४	गतागत	२०
५	गुणठाणा	४४
६	मोहोटोथासठियो	
७	अगाणुयोगनो अल्पबहुत्व	७
८	ठ्यारानावोल	
९	चोवीसतिर्थंकरनाआंतरा	८
१०	कर्मप्रकृतिनावोल	९३
११	धर्मध्यान	१०१
१२	पांचबोल	११०
१३	पदवीनावोल	१३७
१४	सिऊणाद्वार	१०
१५	विरहद्वार	१४३
१६	पांचदेवनावोल	१४४
१७	दिसाणुवाद	१४७
१८	समाजोपय	१४९
१९	संजयानावोल	१६१
२०	नियठानावोल	१७६
२१	षट्द्रव्यनावोल	१८८
२२	रुपीअरुपीनावोल	१९८
२३	प्रमाण बोध	१९९

॥ ॐ नम ॥ श्रीवीतरागाय नम ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नम ॥ श्रीगणधरेभ्यो नम ॥ अथ ठकायना बोल लिख्यते ॥ पहेले बोले इंदी थावरकाय ॥ २ ॥ बीजे बोले बंभी थावरकाय ॥३॥ सपि थावरकाय ॥४॥ सुमति थावरकाय ॥५॥ पयावच्च थावरकाय ॥ ६ ॥ जगमकाय ए ठकायना नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ पृथवीकाय ॥१॥ अपकाय ॥२॥ तेऊकाय ॥३॥ वाउकाय ॥४॥ वनस्पतिकाय ॥५॥ त्रसकाय ॥६॥ हवे पृथ्वीकायना बे भेद ॥ सुक्षम अने बादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमा भर्याछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ ज्ञानी जाणे देखे ॥ हवे बादरपृथ्वीकायना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले माटीने मीठानी जात ॥२॥ खमीने खारानी जात ॥३॥ कालमिंढ मरमीया पाहाणा ने सिझानी जात ॥४॥ हिंगलो ने हरताळनी जात ॥ ५ ॥ गेरु ने गोपीचदननी जात ॥६॥ रत्न परवालानी जात ॥७॥ सोल जातिना रत्न आदि लेईने तेंतालीस जातनी पृथ्वीकायछे ॥ तेना एक कक

मामा ॥ असख्याता जीव । श्रीभगवते कह्याछे ॥ जुवार ॥ तथा पीलु ॥ जेटली पृथ्वीकाय लइये ॥ तेमाथी ॥ एकेको जीव निकलीने । पारेवा जेवडी काया करे तो ॥ एक लाख जोजननो जबुद्विप छे ॥ तेमा समाय नही ॥ तेना कुलबारलाख कोडछे ॥ तेनु आउखु ॥ जघन्य ॥ अतर्मुहुर्त्तनु ॥ उत्कृष्टु २२ हजार वर्षनु ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ १ ॥ हवे अप्काय ते पाणी ॥ तेना वे भेद ॥ सुक्ष्म ॥ अने वादर ॥ सुक्ष्मते ॥ आखा लोकमा भर्याछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ वादर पाणीना नाम कहे छे ॥ पहेले बोले ॥ वरसादने कराना पाणी ॥२॥ झाकल ने धुमरना पाणी ॥३॥ कुवा नदी तलावना पाणी ॥४॥ दरिया ने झरणना पाणी ॥५॥ खारा । खाटा । पाणी ॥६॥ मीठा मोला पाणी ॥७॥ ए आदिलेइने घणी जातिना पाणी छे ॥ तेना एक बिंदुमा असख्याता जीव श्रीभगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने ॥ सरसबना दाणा

जेवडी ॥ काया करेतो एक लाख जोजनना जंबुद्वीपमा समाय नही॥ तेना कुल सात लाख क्रोडछे॥ तेनु आउखुं जघन्य॥ अंतर्मुहुर्तनु॥ उत्कृष्ट सात हजार वर्षनु तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ २ ॥ हवे तेउ काय ते अग्नी तेना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमा भर्या छे॥ ते आपणी नजरे न आवे॥ हवे बादर अग्नीना नाम कहेछे॥ पहेले बोले चूला ने भठीनी अग्नि ॥२॥ धुमाडी तापणीनी अग्नि ॥३॥ चकमक ने वीजलीनी अग्नि ॥४॥ दीवाने उमाडानी अग्नि ॥५॥ लोढा धगधगता ने अरणीनी अग्नि ॥६॥ ए आदिलेइ ने घणी जातिनी अग्नि छे॥ तेना एकतणखामा ॥ असंख्याता जीव श्री भगवंते कह्याछे ॥ तेमाथी एकेको जीव नीकलीने । खसखसना दाणा जेवडी ॥ काया करे तो जंबुद्विपमा समाय नहि । तेना कुल ॥ त्रण लाख क्रोडछे ॥ तेनु आउखुं । जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्ट ॥ त्रण अहोरात्रनुं तेनी दया पाली

ये तो ॥ अनता मोक्षना सुख पामीये ॥ ३ ॥ हवे वाउकायना बे भेद । सुक्ष्म ने वादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमा जर्याछे । ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे बादर वायराना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले उगमणो ने आथमणो वा ॥ १ ॥ उत्तर ने दक्षीणनो वा ॥ ३ ॥ उचो निचो ने त्रिछो वा ॥ ४ ॥ वतोलियो ने मरूलीयो वा ॥ ५ ॥ गुजवा ने सुघवा ॥ ६ ॥ एआदिलेइने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुकरवेकरी हणायछे ॥ उघाडे मोढे बोल्ये ॥ झापट नाखवे ॥ सुपडे सोवे झाटकवे ॥ कातवे । विंझवे ॥ तालोटा वगाडवे ॥ विंझणे विंझवे ॥ हींचोले हींचकवे ॥ आदिलेइने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाडे मोढे बोल्ये ॥ असरव्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वडना वीज जेवडी काया करेतो ॥ जबुद्विपमा समाय नहि ॥ तेना कुल सातलाख क्रोड छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहूर्तनु ॥ उत्कृष्ठ ॥ त्रणहजार वर्षनुं ॥ तेनी

दया पालीये तो अनता मोक्षना सुख पामीये ॥४॥ पाचमे बोले वनस्पतिकाय तेना बे भेद । सुक्ष्म ॥ अने ॥ वादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमा भर्याछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे । वादरवनस्पतिकायना बे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण ॥ प्रत्येक कोने कहीये । सरीरे सरीरे एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक सरीरे अनता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात ॥ रिंगणी तलसी ने गुलमनी जात ॥ एरण्ड आकडा धतुरानी जात ॥ दाडम सेलडी ने केलानी जात ॥ घो केवडो दाभडो ने तरणानी जात ॥ फूल कमल ने नागरवेलनी जात ॥ बोरडी केरडे ने कसेलानी जात ॥ जुवार वाजरो मठ मकाइनी जात ॥ ताजलजो सूवा मोघरी वालोरफलीनी जात ॥ ए आदि लेइने घणी जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे ॥ तेमा भगवाने त्रण प्रकारना जीव कह्याछे ॥ सख्याता ॥ असख्याता ॥ अन

ता॥तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीए तेनु आउखुं ज० अंत० उत्० दशहजार वर्षनुं ॥ हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले लीलफूल सेवालनी जात ॥ गाजर मूलानी जात ॥ भुगली लसणनी जात ॥ आडु ने गरमरनी जात ॥ रतालु पिंडालुनी जात ॥ कटालो थोर खुरसाणी कुंवार सेलरानी जात ॥ मोथ लुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने कुणी काकडीनी जात ॥ ए आदि घणी जातिनी साधारण वनस्पति छे॥ एक कंद मुलना कणमा । अनंता जीव छे ॥ तेनु आउखुं । जघन्य।उत्०अंतर्मुहुर्तनुं । वेहुना कुल २८ लाख कोम्डे तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे त्रसकायना चार भेद । वे इंद्रीय ।तेइंद्रीय। चौरेंद्रीय।पंचेंद्रीय।हवे वे इंद्रीयना वे भेद।अपजाता।ने प्रजाता॥वेइंद्रीय तेकोने कहीये।जेने काया।जीभ्या।वे इंद्रीय होय।तेने वेइंद्रीय कहीये।तेना नाम॥ जलो। किमा पोरा।करमीया॥ सरमिया

मामणमुंम्हा । अलसीया । लट । लाल । सख । छीप । कोमा ॥ आदि लेइने घणी जातिना । वेइंडीय जीव छे ॥ तेना कुलसातलाखकोम्छे॥तेनु आउखु जघन्य ॥ अतर्मुहुर्तनुं उतकृष्टु । बारवर्षनु ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ तेइंडीयना बे भेद । अप्रजासा ॥ ने प्रजासा ॥ तेइंडीय ते कोने कहीये ॥ काया मूख ने नासिका होय तेने । तेइंडीय कहीये ॥ तेना नाम ॥ जु । लीख । चाचरू । माकरू । कीमी । कंथुवा । माटला । धनेम्हा । जूवा । इंतमी । गींगोरू ॥ घीमेल । गधैया । कानखजुरा ॥ मकोमा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ तेइंडीय जीव छे ॥ तेना कुल॥ आठलाख कोरू छे ॥ तेनुं आउखु॥ जघन्य । अतर्मुहुर्तनु ॥ उतकृष्टुं । ओगणपचास दिवसनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनता मोक्षना सुख पामीये ॥हवे चौरिंडीयना बे भेद । ते अप्रजासा । ने प्रजासा । चौइंडीय ते कोने कहीये॥जेहने काया । मुख । नासिका । अने आख । होय

तेने चौइंडीय जीव कहीये। तेना नाम माखी मसला। डांस। मछर। भमरा। तीड।
पतंग। करोळीया। कंसारी। वींछी। खडमाकडी। बगा। धुडीया। फूदा॥ एआदि
लेइने घणी जातिना॥ चौइंडीय जीव छे॥ तेना कुल नवलाख कोडछे। तेनुआउखु।
जघन्य। अंतर्मुहुर्तनुं॥ उत्कृष्टु॥ छमासनु॥ तेनी दया पाळीये तो अनंता मो
क्षना सुख पामीये॥ हवे पंचेंडीय ते कोने कहीये। जेने काया। मुख नासिका।
आख। कान। एप्रमाणे होय। तेने पचेंडीय कहीये॥ तेना बे भेद॥ अप्रजाप्ता।
अने प्रजाप्ता। तेनी॥४॥ जाति॥ नारकी। तिर्यंच। मनुष्य। देवता। तेमा १४
भेद नारकीना॥ ४८ भेद तिर्यंचना॥ ३०३ भेद मनुष्यना॥ १९८ भेद देव
ताना॥ वळी तेमा देवताना चार भेद॥ भवनपति॥ वाणव्यंतर॥ जोतिपी॥
वैमानिक॥ मनुष्यना चार भेद॥ १५ कर्मभूमीना मनुष्य॥ ३० अकर्म भूमी
ना मनुष्य॥ ५६ अतरद्विपना मनुष्य॥ १४ स्थानकना समूर्छीम मनुष्य॥ हवे

नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी। उत्कृष्टी तेत्रीस सागरो
पमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी। उत्कृष्टीं त्रण पल्यो
पमनी तेनी दया पालीये तो अनता मोक्षना सुख पामीये॥ इतिश्री छकायना
बोल सम्पूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीपार्श्वनाथाय नम ॥ अथ श्रीनवतत्व लिख्यते ॥ हवे विवेकि सम्यत्कदृष्टि
जीवने। नवपदार्थ जेहवा छे। तेहवा। तथा रूप बुद्धिप्रमाणे गुरु आम्नायथि धा
रवा ॥ ते नवपदार्थना नाम कहेछे ॥ जीवतत्व ॥ १ ॥ अजीवतत्व ॥ २ ॥ पुण्य
तत्व ॥ ३ ॥ पापतत्व ॥ ४ ॥ आश्रवतत्व ॥ ५ ॥ सवरतत्व ॥६॥ निर्जरातत्व
॥ ७ ॥ वधतत्व ॥ ८ ॥ मोक्षतत्व ॥ ए ॥ हवे जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चेत
न्यलक्षण ॥ सदास उपयोगी ॥ असख्यात प्रदेशी । सुखदु खनो जाण ॥ सु
खदु खनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते केहने कहिये

जमलक्षण ॥ चैतन्यरहित ॥ तेहने अजीवतत्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ते शु
भ कमाणिये करी ॥ शुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता
मीठा लागे तेहने पुण्यतत्व कहिये ॥ ३ ॥ पापतत्व ते अशुभ कमाणिये करी ॥
अशुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता कडुवा लागे । तेह
ने पापतत्व कहिये ॥ ४ ॥ आश्रवतत्व ते । अव्रतने अपच्चखाणे करी । विषय
कषायने सेववेकरी ॥ आत्मारूपतलावने विषे ॥ इन्द्रियादिक घरनाले छिद्रेकरी ।
कर्म पापरूप जलनो प्रवाह आवे । तेहने आश्रवतत्व कहिये ॥५॥ सवरतत्व
ते जीवरूप तलावनेविषे ॥ कर्मरूप जल आवता व्रतपच्चखाणादिक द्वार देवेकरी
रोकीये ॥ तेहने सवरतत्व कहिये ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ते ॥ आत्माना प्रदेशथि
वार भेदे तपस्यायेकरी देशथकि कर्मनु निर्जरवु जरीने झर थावु ॥ तेहने निर्ज
रातत्व कहिये ॥७॥ बधतत्व ते । आत्माना प्रदेशने कर्मपुद्गलना दल खीरनी

स्नीपरे ॥ लोहपिंम अग्निनी परे ।लोलीभूत थइ बधाय ॥ तेहने बंधतत्व कहि
ये ॥८ ॥ मोक्षतत्व ते सकल आत्माना प्रदेशथि सकल कर्मनुं छुटवुं ॥सकल
बधनु मुकावबु ॥ सकल कार्यनि सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥ ए ॥
ए नव पदार्थनुं जाणपणु ॥ तेहने तत्व कहिये ॥ हवे जीवनो एक भेद छे ॥ स
कल जीवोनु चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि । एक भेदे जीव क
हिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥ १ ॥ थावर ॥ २ ॥ तथा ॥ सिद्ध
॥ १ ॥ ने ससारी ॥ २ ॥ तथात्रण भेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ पुरुषवेद ॥ २ ॥
नपुसकवेद ॥ ३ ॥ तथा भवसिद्धिया ॥ १ ॥ अभवसिद्धिया ॥२॥ नोभवसिद्धि
य नो अभवसिद्धिया ॥ ३ ॥ तथा च्यार भेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥
मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनी ॥ २ ॥ अ
वधि दर्शनी ॥३॥ केवलदर्शनी ॥४॥ तथा पाचप्रकारे जीव ॥ एकेंडिय ॥ १ ॥ बे

ने। प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेइंड्रियनो। अप्रजाप्तो ॥ ७ ॥ ने। प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥९॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असज्ञी पचेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ सज्ञी पचेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पाचसेंत्रेंसठ नेद जीवना कहे छे ॥ तेहमा त्रणसेंनेत्रणनेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुनेद देवताना ॥ अमृतालीसनेद तिर्यंचना ॥ चउदनेद नारकीना ॥ ए ॥ ५६३ ॥ नेद जीवना ॥ हवे तेहमा ॥ मनुष्यना ॥ ३०३ ॥ नेद कहेछे ॥ ते ॥ १५ कर्म नूमिना मनुष्य ॥ ३० अकर्मनूमिना मनुष्य ॥ ५६ अंतर द्विपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ खेत्रना गर्नज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एव ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक खेत्रना सम्मुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं ॥ ३०३ ॥ नेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मनूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृपी

॥ ३ ॥ ए ॥३॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मभूमिना मनुष्य कहिये॥
ते कर्मभूमिना क्षेत्र केटलाछे ॥५॥ भरत ॥५॥ इरवतने ॥ ५ महाविदेह । एव
॥ १५ ॥ ते कर्मभूमि किहा छे ॥ एकलाख जोजननो जम्बुद्विप छे॥ तेहमा ॥१॥
भरत ॥१॥ इरवत॥१॥महाविदेह । ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मभूमिना जंबुद्विपमा छे॥ ते
हने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र छे॥तेहने फरतो चारलाख जो
जननो धातकीखण्डद्विप छे ॥ तेहमा ॥२॥ भरत ॥२॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह
छे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो
॥ ८ ॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्विप छे ॥ तेहमा ॥ २ भरत ॥ २ इर
वत ॥ २ महाविदेह छे ॥ एव । छ्छ ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर ॥ कर्मभूमिना म
नुष्य कह्या ॥ हवे ॥ ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्मभूमि ते केह
ने कहिये ॥ ३ कर्मरहित । दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने जीवे तेहने अक

ने। प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेइंद्रियनो। अप्रजाप्तो ॥ ७ ॥ ने। प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिं द्रियनो अप्रजाप्तो ॥९॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असञ्ज्ञी पचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचसेंत्रेंसठ भेद जीवना कहे छे ॥ तेहमा त्रणसेंनेत्रणभेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुभेद देवताना ॥ अडतालीसभेद तिर्यंचना ॥ चउदभेद नारकीना ॥ ए ॥ ५६३ ॥ भेद जीवना ॥ हवे तेहमा ॥ मनुष्यना ॥ ३०३ ॥ भेद कहेछे ॥ ते ॥ १५ कर्म भूमिना मनुष्य ॥ ३० अकर्मभूमिना मनुष्य ॥ ५६ अंतर द्विपना मनुष्य ॥ एव ॥ १०१ क्षेत्रना गर्भज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एव ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना सम्मुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एव ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृपी

॥ ३ ॥ ए ॥३॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मभूमिना मनुष्य कहिये॥
ते कर्मभूमिना क्षेत्र केटलाछे ॥५॥ भरत ॥५॥ इरवतने ॥ ५ महाविदेह । एव
॥ १५ ॥ ते कर्मभूमि किहा छे ॥ एकलाख जोजननो जम्बुद्विप छे ॥ तेहमा ॥१॥
भरत ॥१॥ इरवत॥१॥महाविदेह । ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मभूमिना जंबुद्विपमा छे ॥ ते
हने फरतो ॥ वे लाख जोजननो लवण समुद्र छे॥ तेहने फरतो चारलाख जो
जननो धातकीखन्डद्विप छे ॥ तेहमां ॥२॥ भरत ॥२॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह
छे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो
॥ ८ ॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्विप छे ॥ तेहमा ॥ २ भरत ॥ २ इर
वत ॥ २ महाविदेह छे ॥ एव । छ्ड ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर ॥ कर्मभूमिना म
नुष्य कह्या ॥ हवे ॥ ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्मभूमि ते केह
ने कहिये ॥ ३ कर्मरहित । दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने जीवे तेहने अक

र्मनूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥ ५ ॥ हेमवय ॥ ५ हिरणवय ॥५
हरिवास ॥ ५ रमकवास ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उतरकुरु ॥ एव ॥ ३० ॥ हवे
जंबुद्विपमा ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १
देवकुरु ॥ १ उतरकुरु ॥ एवं ॥ ६ ॥ क्षेत्रजम्बुद्विपमा छे ॥ धातकिखन्डमा ।
बेबे जाणवा ॥ एव ॥ १८ ॥ अर्द्धपुष्करद्विपमा बेबे । जाणवा ॥ एवं ॥
॥ ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपनअंतरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥
जम्बुद्विपना भरतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार । चुल हिमवतनामा पर्वत छे ॥ ते
पीलासोनामय छे ॥ ते सो जोजननो उंचो छे ॥सो गाउनो ऊंडो छे ॥ एकहजार
बावन जोजन ने बार कलानो पहोलो छे ॥ चोविशहजार नवशोंबत्रिश जोज
ननो लांबो छे ॥ तेहने पुर्वपश्चिमने छेहडे बबे डाढा निकलि छे ॥ एकेकि डा
ढा चोराशीशें चोराशीशों जोजननी ऊंडेरी लांबि छे ॥ ते एकेकि डाढाउपरे ॥ सा

तसात अंतरद्विपाछे ॥ ते अंतरद्विपा किहा छे ॥ जगतिना कोटथकि ॥ ३०० ॥
जोजनलवणसमुद्रमा जाइये । तिवारे पहेलो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ३०० ॥
जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ४०० ॥ जोजन जाइये । तिवारे विजो
अतरद्विपो आवे ते ॥ ४०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ५०० ॥
जोजन जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥५०० ॥ जोजनो लांबो
ने पहोलो छे ॥ तिहांथि छसें जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अतरद्विपो आवे ते
॥ ६०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ७०० ॥ जोजन जाइये
तिवारे । पाचमो अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो
छे ॥ तिहांथि ॥८००॥ जोजन जाइये तिवारे छठो अतरद्विपो आवे ॥ ते ८००॥
जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥९००॥ जोजन जाइये तिवारे सा
तमो अतरद्विपो आवे ते ॥९००॥ जोजननो लांबो ने पोहोलो छे ॥ एव । सात

चोकु ॥ २८ ॥ अतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरवतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार
शिखरीनामा पर्वत छे ॥ ते चुल हिमवत सरिखो जाणवो ॥ तिहा पण ॥२८॥
अतरद्विपा छे ॥ अगाविश छ॥ ५६ अंतरद्विपा जाणवा ॥ अंतरद्विपाना मनु
ष्य ते केहने कहिये ॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर अधर माढामां द्विपाना रहे
नार छे ॥ माटे अंतर द्विपाना मनुष्य कहिये । हवे १०१ क्षेत्रना सम्मुर्छिम मनु
ष्य ॥ १४ स्थानकमा उपजे छे ते कहेछे ॥ उच्चारेसुवाते वडिनितमा उपजे ॥१॥
पासवणेसुवाते लघुनितमा उपजे ॥ २ ॥ खेले सुवाते वलखामा उपजे ॥ ३ ॥
सघाणेसुवाते लिंटमा उपजे ॥ ४ ॥ वंतेसुवाते वमनमा उपजे ॥ ५ ॥ पीतेसुवाते
निखापिखा पीतमा उपजे ॥ ६ ॥ पुइएसुवाते परुमा उपजे ॥ ७ ॥ सोणिएसु
वाते रुधिरमा उपजे ॥ ८ ॥ सुक्केसुवाते विर्यमा उपजे ॥ ए ॥ सुक्कपोगलप
रिसाडिएसुवाते विर्यादिकना पुद्गलसुकाणाते फिरि भिना थाय तेहमां उ

पजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरेसुवाते मनुष्यना कलेवरमा उपजे ॥ ११ ॥
इत्थिपुरिस सजोगेसुवाते स्त्रीपुरुषनासजोगमा उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणेसु
वाते नगरनी खालोमा उपजे ॥ १३ ॥ सव्वेसुचेवअसुइठाणेसुवाते सर्वमनुष्य
संबंधिअशुचिस्थानकोमा उपजे ॥ १४ ॥ एव ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनु
ष्य अप्रजाप्ता ॥ एव सर्व मिली ॥ ३०३ ॥भेद मनुष्यना कह्या ॥ हवे देवताना
॥ १९८ ॥ भेद कहेछे ॥ तेहमा । दश भवनपतिना नाम ॥ असुरकुमार ॥ १ ॥
नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥४॥ अग्निकुमार ॥५॥ द्विप
कुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥७॥ दिशाकुमार ॥८॥ पवनकुमार ॥९॥ थणितकु
मार ॥ १० ॥ हवे ॥ १५ ॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अब ॥ १ ॥ अबरिस
॥२॥शाम ॥३॥ सबल ॥४॥ रुद्र ॥५॥ वैरुद्र ॥६॥ काल ॥७॥ महाकाल ॥८॥ अ
शिपत्र ॥९॥ धनुष्य ॥१०॥ कुम्भ॥११॥ वालु॥१२॥वेतरणी॥१३॥खरस्वर॥१४॥

महाघोप ॥ १५ ॥ सोल वाणव्यंतरना नाम ॥ पिशाच ॥ १ ॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥४॥ किन्नर ॥५॥ किंपुरिस ॥६॥ महोरग ॥७॥ गधर्व ॥८॥ आण पन्नी ॥९॥ पाणपन्नी ॥ १०॥ इसिवाइ ॥११॥ भूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥१३॥ महाकदिय ॥ १४ ॥ कोहंरू ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥ १६ ॥ दश जंनकाना नाम॥ आणजंनका ॥ १ ॥ पाणजंनका ॥ २ ॥ लयणजंनका ॥ ३ ॥ शयणजंनका ॥ ४ ॥ वत्थजंनका ॥ ५ ॥ पुष्पजंनका ॥ ६ ॥ फलजंनका ॥ ७ ॥ वीय जंनका ॥ ८ ॥ विज्झुजंनका ॥ ९ ॥ अवियत जंनका ॥ १० ॥ दश ज्योतिषीना नाम॥ चद्रमा ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥५॥ ए ॥५॥ चल ते अढि द्विपमा छे । ने ॥ ५ स्थिर ते अढि द्विपबाहिर छे ॥ एव ॥ १० ॥ हवे ॥ ३ ॥ किल्बिषिना नाम ॥ त्रण पलिया ॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर सा गरिया ॥ ३ ॥ नव लोकातिकना नाम ॥ सारस्वत ॥१॥ आदित्य ॥२॥ विन्हि

॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्द्दतोया ॥५॥ तोषिया ॥ ६॥ अव्याबाधा ॥ ७ ॥ अगिच्चा
॥ ८ ॥ रिठा ॥ ए ॥ बार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म ॥१॥ इशान ॥ २॥ सनत्कु
मार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लांतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ स
हस्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ए ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्चुय ॥ १२ ॥
नव ग्रीवेकना नाम ॥ न्नद्दे ॥ १ ॥ सुन्नद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥४॥
प्रियदर्शणे ॥ ५ ॥ सुदर्शने ॥ ६ ॥ आमोहे ॥ ७ ॥ सुपम्बिद्धे ॥ ८ ॥ जशोधरे
॥ ए ॥ पाच अनुत्तर विमानना नाम ॥ विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयंत
॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ ए एए जातना देवता अप्र
जाप्ता ने ॥ एए जातना प्रजाप्ता । एवं ॥ १एट ॥ न्नेद देवताना कह्या ॥ हवे ति
र्यंचना ॥ ४८ ॥ न्नेद कहेछे ॥ पृथवी ॥ १ ॥ पाणि ॥ २॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ॥४॥
ए ॥ ४ सुक्ष्म ने ॥ ४ बादर ॥ एव ॥ ८ ॥ ए ना अप्रजाप्ताने ॥ ८ ना प्रजा

सा ॥ एव ॥ १६ ॥ वनस्पतिना ॥ ३ ॥ भेद ॥ सुक्ष्म ॥ १ ॥ प्रत्येक ॥ २ ॥ ने ।
साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ एव ॥६॥
एव ॥ ३२ ॥ एकेंद्रियना ॥ त्रण विकलेंद्रिय ॥ बे इन्द्रिय ॥ १ ॥ ते इन्द्रिय ॥२॥
चउरिंद्रिय ॥३॥ ए ॥३॥ ना अप्रजाप्ता ने ॥३॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥६॥ एव ॥३८॥
जलचर ॥ १ ॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥३॥ भुजपर ॥४॥ खेचर ॥५॥ ए ॥५॥
समुर्छिम ने ॥ ५ ॥ गर्भज ॥ एव ॥ १० ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ १० ॥ ना । प्र
जाप्ता ॥ एव ॥ २० ॥ एव ॥ ४८ ॥ भेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥ १४ ॥ भेद ना
रकिना कहेछे ॥ सात नरकना [illegible] ॥ २ ॥ शिला ॥ ३ ॥
अजणा ॥ ४ ॥ रिठा ॥[illegible] ॥ घमा ॥ २ ॥ वंशा ॥ २ ॥ शिला ॥ ३ ॥
[illegible] नाम ॥ [illegible] ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ हवे ॥७॥ ना गोत्र कहेछे
रत्नप्रभा ॥ १ ॥ [illegible] ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ॥ ४ ॥ धुमप्र

॥ ७ ॥ ना प्रजासा । एव ॥ १४ ॥ भेद नारकिना कह्या ॥ एव । सर्वे मिलीने ॥५६३॥ भेद जीवना जाणवा ॥ इति जीवतत्वं समाप्त ॥१॥ हवे अजीवतत्वना ॥ १४ ॥ भेद कहेछे ॥ धर्मास्तिकायनो स्कध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कध ॥ ४ देश ॥५॥ प्रदेश ॥ ६ ॥ आकाशास्ति काय नो स्कध ॥ ७ ॥ देश ॥८॥ प्रदेश ॥९॥ अद्धासमयकाल ॥१०॥ ए ॥१०॥ भेद अरुपि अजीवना कह्या ॥ हवे रूपि अजीवना ॥४॥ भेद कहेछे ॥ पुग्गलास्ति काय ॥ नो स्कंध ॥११॥ देश ॥१२॥ प्रदेश ॥१३॥ परमाणुपुग्गल ॥१४॥ एवं ॥१४॥हवे व्यवहार विस्तारनयेकरी ॥५६०॥ भेद अजीवतत्वना कहेछे ॥ तेहमा ॥३०॥ भेद । अरूपि अजीवना कहेछे॥ धर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक॥१॥क्षेत्रथ कि लोक प्रमाणे॥२॥ कालथकि अनादिअनत ॥३॥ भावथकि । अवर्णे अगधे। अरसे । अफासे । अमुर्ति ॥४॥ गुणथकि चलणसहाय ॥५॥ अधर्मास्तिकाय द

व्यथकि एक ॥६॥ क्षेत्रथकि लोकप्रमाणे ॥७॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥
भावथकि । अवर्णे । अगधे । अरसे । अफासे । असुर्ति ॥९॥ गुणथकि स्थिर
सहाय ॥ १० ॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥११॥ क्षेत्रथकि लोकालोक
प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादिअनत ॥ १३ ॥ भावथकि । अवर्णे । अग
धे । अरसे । अफासे । असुर्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥ अवगाहनादान ॥ १५ ॥
हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥ १६ ॥ क्षेत्रथकि । अढिद्विपप्रमाणे ॥ १७ ॥ का
लथकि अनादिअनंत ॥ १८ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगधे । अरसे । अफासे ।
असुर्ति ॥ १९ ॥ गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे
कह्या ते ॥ एव ॥ ३० ॥ भेद अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥ ५३० ॥ भेद
रूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥५॥ कालो ॥ १ ॥ निलो ॥२॥ रातो ॥३॥
पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमाहि वीश वीश भेद लाभे ॥ ते ॥२॥

गध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ सठाण ॥८॥ स्पर्श ॥ एव । विश पंचा सो ॥ हवे ॥२॥
गध ते । सुरनिगध ॥ १ ॥ डरनिगंध ॥ २ ॥ एकेका गधमादि त्रेविश त्रेविश
नेद लाने ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव ॥ २३ ढ
ठेतालिश नेद जाणवा ॥ हवे ॥ ५ ॥ रस ते ॥ तिखो ॥१॥ कडुवो ॥२॥ कसा
यलो ॥३॥ खाटो ॥४॥ मिठो ॥५॥ एकेका रसमा वीश वीश नेद लाने ॥ ५ ॥
वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥५॥ सठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥ ५ ॥
सठाण ॥ परिमन्डल सठाण ॥ १ ॥ वटसठाण ॥ २ ॥ त्रश ॥३॥ चठरस ॥ ४ ॥
ग्रायतसठाण ॥५॥ एकेका सठाणमा वीश वीश नेद लाने ॥५॥ वर्ण ॥ २ ॥
गंध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एव । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥८॥ स्पर्श । खरखरो
॥ १ ॥ सुहालो ॥ २ ॥ नारि ॥ ३ ॥ हलवो ॥ ४ ॥ टाढो ॥ ५ ॥ उन्हो ॥ ६ ॥
चोपन्यो ॥७॥ लुखो ॥८॥ एकेका स्पर्शमा । त्रेविश त्रेविश नेद लाने ॥ ५ ॥

वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥५॥ रस ॥५॥ सठाण ॥६॥ स्पर्श ॥ एव ॥२३॥ भेद जाने । खरखरामा खरखरो ने सुहालो वे वर्जवा ॥ एम वेवे स्पर्श वर्जवा ॥ एव ॥२३ ध्यठा १८४ ॥ एव सर्व मिलिने ॥५३०॥ भेदरूपि अजीवना कह्या ॥ एव सर्व मिलिने ॥ ५६० ॥ भेद । अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्व समाप्त ॥ २ ॥ हवे नव भेदे पुण्यउपराजे ते कहे छे ॥ अन्नपुन्ने ॥ ४ ॥ पाणपुन्ने ॥ २ ॥ लयण पुन्ने ॥ ३ ॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वछपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचनपुन्ने ॥ ७ ॥ कायपुन्ने ॥ ८ ॥ नमस्कार पुन्ने ॥ ए ॥ ए ॥ ए ॥ भेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना शुन फल ॥ ४२ ॥ भेदे भोगवे ॥ शातावेदनिय ॥ १ उच गोत्र ॥ २ ॥ मनु ष्यगति ॥ ३ ॥ मनुष्यानु पूर्व्वी ॥ ४ ॥ देवतानि गति ॥५॥ देवानुपूर्व्वी ॥६॥ पंचेन्द्रियनि जाति ॥ ७ ॥ उदारिक शरिर ॥ ८ ॥ वैक्रेय शरिर ॥ ए ॥ अहा रक शरिर ॥ १० ॥ तैजस शरिर ॥ ११ ॥ कार्मण शरिर ॥ १२ ॥ उदारिकना

अंग उपांग ॥ १३ ॥ वैक्रेयना अंग उपांग ॥ १४ ॥ आहारकना अंग उपांग ॥ १५ ॥ वज्ररिषभनाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ १७ ॥ शुभ वर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वासनाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥ २८ ॥ त्रसनाम ॥ २९ ॥ बादरनाम ॥ ३० ॥ प्रजाप्तनाम ॥ ३१ ॥ प्रत्ये कनाम ॥ ३२ ॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेयनाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानु आउषू ॥ ३९ ॥ मनुष्यनुं आउषू ॥ ४० ॥ तिर्यंचनु आउषू जुगलवत् ॥४१॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्व स मास ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥

मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ परिग्रह ॥ ५ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह॥१२॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशून्य ॥ १४ ॥ परपरिवाद ॥ १५॥ रतिअरति ॥१६॥ मायामोसो ॥१७॥ मिछादंसणसल्ल ॥१८॥ ए ॥१८॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥ ८२ ॥ प्रकारे भोगवे ते कहेछे ॥ मतिज्ञानावरणिय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥ ३ ॥ मनपर्जवज्ञानावरणिय ॥४॥ केवलज्ञानावरणिय ॥ ५ ॥ दानांतराय ॥ ६ ॥ लाभांतराय ॥ ७ ॥ भोगांतराय ॥ ८ ॥ उपभोगांतराय ॥ ९ ॥ वीर्यांतराय ॥ १० ॥ निद्रा ॥ ११ ॥ निद्रानिद्रा ॥१२॥ प्रचला ॥ १३ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ १४ ॥ थीणद्धिनिद्रा ॥ १५ ॥ चक्षुदर्शनावरणिय ॥ १६ ॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥ १७ ॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥१८॥ केवलदर्शनावरणिय ॥ १९ ॥ निचगोत्र ॥ २० ॥ अशातावेदनीय ॥ २१ ॥ मि

थ्यात्वमोहनिय ॥ २२ ॥ स्थावरपणु ॥ २३ ॥ सुक्ष्मपणु ॥ २४ ॥ अप्रजाप्त
पणु ॥ २५ ॥ साधारणपणुं ॥ २६ ॥ अस्थिरनाम ॥ २७ ॥ अशुजनाम ॥२८॥
दौर्जाग्यनाम ॥ २९ ॥ ड स्वरनाम ॥ ३० ॥ अनादेयनाम ॥ ३१ ॥ अजशो
कीर्तिनाम ॥ ३२ ॥ नरकनिगति ॥३३॥ नरकनुंआउषु ॥ ३४ ॥ नरकानुपूर्वी
॥ ३५ ॥ अनतानुवंधि क्रोध ॥ ३६ ॥ मान ॥३७॥ माया ॥३८॥ लोज ॥३९॥
अपच्चखाणावरणिय क्रोध ॥ ४० ॥ मान ॥ ४१ ॥ माया ॥४२॥ लोज ॥४३॥
पच्चखाणावरणिय क्रोध ॥ ४४ ॥ मान ॥ ४५ ॥ माया ॥ ४६ ॥ लोज ॥४७॥
सजलनो क्रोध ॥ ४८ ॥ मान ॥४९॥ माया ॥५०॥ लोज ॥५१॥ हास्य ॥५२
रति ॥ ५३॥ अरति ॥५४॥ नय ॥ ५५॥ शोक ॥५६॥ डुगंछा ॥५७॥ स्त्रीवेद
॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९ ॥ नपुसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यंचनि गति ॥६१॥ तिर्यं
चनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंडियपणु ॥६३॥ वेइंडियपणु ॥ ६४ ॥ तेइंडियपणु

॥ ६५ ॥ चउरिंडियपणुं ॥ ६६ ॥ अशुभ चालवानि गति ॥ ६७ ॥ उपघातना
मकर्म ॥ ६८ ॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥
अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ ऋषभनाराच संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥७४॥
अर्धनाराचसघयण ॥ ७५ ॥ किलकसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवटुसघयण ॥७७॥ नि
गोहपरिमंमलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥७९॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कु
ब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एव ॥८२॥ भेद पापतत्वना जाणवा॥
इति पापतत्वं समाप्तं ॥ ४ ॥ हवेआश्रवना सामान्य प्रकारे ॥२०॥ भेद कहेछे॥
मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥३॥
कपाय ते आश्रव ॥ ४ ॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आ
श्रव ॥ ६ ॥ मृपावाद ते आ० ॥७॥ अदत्तादान ते आ० ॥८॥ मैथुन ते आ०
॥ ९ ॥ परिग्रह ते आ० ॥ १० ॥ श्रोतेंद्रियअसवरे ते आ० ॥११॥ चक्षुइंडि

यअ०आ० ॥१२॥ घ्राणेंद्रियअ०आ० ॥१३॥ रसेंद्रियअ०आ०॥१४॥स्पर्शेंद्रियअ०आ० ॥१५॥ मनअ०आ० ॥१६॥ वचनअ०आ० ॥१७॥ कायअ०आ० ॥१८॥ नंमउपगरणउपधिजिमतिमलियेमुके ते आ० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग करे ते आ० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ४२ ॥ नेद कहेछे ॥ ५ ॥ आश्रव ॥५॥ इंद्रिय मोकलि मुके एव ॥ १० ॥ ने ॥ ४ ॥ कषाय ॥ एव ॥१४॥ नेत्रण अशुन्न जोग एव ॥ १७ ॥ ने ॥ २५ ॥ क्रिया ॥ कायिकी क्रिया ॥ १ ॥ अधिकरणकी क्रिया ॥ २ ॥ पाउसिया ॥ ३ ॥ पारितावणिया ॥ ४ ॥ पाणाइवाय ॥ ५ ॥ आरंनिया ॥ ६ ॥ परिग्गहिया ॥ ७ ॥ मायावतिया ॥ ८ ॥ अपच्चखाणवतिया ॥ ए ॥ मिगदंशणवतिया ॥ १० ॥ दिठीया ॥ ११ ॥ पुठिया ॥१२॥ पाडुच्चिया ॥१३॥ सामतोवणिया ॥ १४ ॥ नेसथिया ॥ १५ ॥ सहथिया ॥ १६ ॥ अणवणिया ॥ १७ ॥ विदारणिया ॥ १८ ॥ अणान्नोगी ॥ १९॥ अणवकखवतिया ॥२०॥

अनापडगी ॥ २१ ॥ सामुदाणी ॥२२॥ पेजवतिया ॥२३॥दोसवतिया ॥२४॥
इरियावहिया क्रिया ॥ २५ ॥ एवं ॥ २५ ॥ ने ॥ १७ ॥ वेतालीश भेद आश्रव
तत्वना जाणवा ॥ इति आश्रवतत्व समाप्तं ॥५॥ हवेसंवरना सामान्य प्रकारे
॥ २० ॥ भेद कहेछे ॥ समकित ते सवर ॥ १ ॥ व्रतपच्चखाण ते स० ॥ २ ॥
अप्रमाद ते स० ॥ ३ ॥ अकषाय ते स० ॥ ४ ॥ शुभजोग ते स०॥५॥ जीव
दया पालवी ते सं० ॥ ६ ॥ सत्यवचन बोलवुं ते सं० ॥ ७ ॥ दत्तव्रत ग्रहण
ते स० ॥ ८ ॥ शियल पालवु ते स० ॥ ९ ॥ अपरिग्रह ते । स० ॥ १० ॥इं
द्रिय ॥ ५ ॥ जोग ॥ ३ ॥ ९ ॥ ८ ॥नु संवरवु ते स० । एव ॥ १८ ॥ भमडप
गरणउपधिजतनायेलिये मुके ते स०॥१९॥ शुचिकुसग्ग न करे ते स०॥२०॥
हवे विशेषे ॥ ५७ ॥ भेद कहेछे ॥ इर्यासुमति ॥१॥ भाषासुमति ॥ २ ॥ एषणा
सुमति ॥ ३ ॥ आयाणभमत्तनिखेवणासुमति ॥४॥ उच्चारपासवणखेलजल

सिंघाणपारिठावणीया सुमति ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ने ॥ ३ ॥ गुप्ति ॥ मन गुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥३॥ ए ८ प्रवचनमाता आदरवाने ॥ २२ परिसहसहेवा ॥ ते कहेछे ॥ क्षुधानो परिसह ॥ १ ॥ तृपानो० ॥ २ ॥ शीतनो० ॥ ३ ॥ तापनो० ॥ ४ ॥ दंशमशनो० ॥ ५ ॥ अचेलनो० ॥६॥ अरतिनो० ॥ ७ ॥ स्त्रीनो० ॥ ८ ॥ चरियानो० ॥ ९ ॥ बेसवानो० ॥ १० ॥ सेजानो० ॥११॥ आक्रोश वचननो० ॥ १२ ॥ वधनो० ॥१३॥ जाचवानो० ॥१४॥ अलाभनो० ॥ १५ ॥ रोगनो० ॥१६॥ तृणस्पर्शनो० ॥१७॥ मेलनो० ॥१८॥ सत्कार पुरस्कारनो० ॥ १९ ॥ प्रज्ञानो० ॥ २० ॥ अज्ञाननो० ॥ २१ ॥ दर्शणपरिसह ॥ २२ ॥ ए ॥ २२ ॥ ने ॥ ८ ॥ पूर्वे कह्या ते । एव ॥ ३० ॥ खति ॥ ३१ ॥ मुत्ति ॥ ३२ ॥ अज्जवे ॥ ३३ ॥ मद्दवे ॥ ३४ ॥ लाघवे ॥ ३५ ॥ सच्चे ॥ ३६ ॥ सजमे ॥ ३७ ॥ तवे ॥ ३८ ॥ चियाए ॥ ३९ ॥ बंभचेरवासे ॥ ४० ॥

॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जतिधर्म आराधवो ने ॥ १२ ॥ नावना नाववी । तेहना
नाम ॥ अनित्यनावना ॥ १ ॥ अशरणना० ॥ २ ॥ ससारना० ॥ ३ ॥ एक
त्वना० ॥ ४ ॥ अन्यत्वना० ॥ ५ ॥ अशुचिना० ॥ ६ ॥ आश्रवना० ॥७॥
सवरना० ॥ ८ ॥ निर्जराना० ॥ ए ॥ लोकना०॥ १० ॥ बोधना० ॥ ११ ॥
धर्मना० ॥ १२ ॥ ए ॥ ४० ॥ ने ॥ १२॥ बावन । शामायकचारित्र ॥५३॥
बेदोपस्थापनिय० ॥५४॥ परिहारविशुद्ध ॥ ५५ ॥ सुक्ष्मसपराय० ॥ ५६ ॥
जथाख्यात० ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७ ॥ नेद सवरतत्वना जाणवा ॥ इति सवरतत्वं
समास ॥ ६ ॥ हवे निर्जराना ॥ १२॥ नेद कहेछे ॥ अनशन ॥ १ ॥ ऊणोदरि
॥ २ ॥ वृत्तिसक्षेप ॥ ३ ॥ रसपरित्याग ॥४॥ कायक्लेश ॥ ५॥ पम्सिंलिणया
॥ ६ ॥ ए ब नेद बाह्यज्यना कह्या ॥ हवे ब नेद अभ्यतरना कहेछे ॥ प्रा
यछित ॥ ७ ॥ विनय ॥ ८ ॥ वेयावच्च ॥ए॥ सजाय ॥ १० ॥ ध्यान ॥ ११ ॥

काउसग्ग ॥ १२ ॥ एव ॥ १२ ॥ भेद निर्जरातत्वना कह्या ॥७॥ हवे बधत त्वना ॥ ४ ॥ भेद कहेछे ॥ प्रकृतिबध ॥ १ ॥ स्थितिबध ॥ २ ॥ अनुभागबध ॥ ३ ॥ प्रदेशबंध ॥ ४ ॥ प्रकृतिबध ते कर्मनो स्वभाव तथा परिणाम ॥ १॥ स्थितिबध ते जे कर्मनि जेटलि स्थिति छे तेटलि ॥२॥ अनुभागबध ते रस तिव्र मद रसादि कर्मनो ॥ ३ ॥ प्रदेशबध ते कर्म पुद्गलना दल ॥४॥ ए ॥४॥ बधनु स्वरूप मोदकने दृष्टाते करी बतावेछे ॥ जिम कोइ मोदक घणा प्रकार ना द्रव्यने सजोगे निपनो ॥ वायुने तथा पीतने तथा श्लेष्मने जेणे स्वरूपे करि हणे तेने स्वभाव कहिये ॥१॥ तथा तेज मोदक । पक्ष । मास । बेमास त्रणमास चारमाससुधि ते रूपे करि रहे तेने स्थिति कहिये ॥२॥ जिम वलि तेज मोदक कोइ कडुयो होय कोई तीव्र होय तेने रस कहिये ॥३॥ जीम वलि तेज मोदक कोइ अल्प दलने परिमाणे निपनो। कोइ वलि बहु दलने

परिमाणे निपनो॥एमज मोदकने विषे दलनु परिमाण तेहने प्रदेशबंध कहिये ॥४॥ एणिपरे कर्मनो बंध ॥४॥ प्रकारे जाणवो ॥इति बंधतत्वं समाप्तं ॥८॥ हवे मोक्षतत्वते ॥१५॥ जेदे सिद्ध थाय ते कहेछे॥तिर्थ सिद्धा ॥१ अतिर्थ सिद्धा ॥२॥ तिर्थंकर सिद्धा ॥३॥ अतिर्थंकर सिद्धा ॥४॥ ग्रहस्थलिंग सिद्धा ॥ ५ ॥ अन्यलिंग सिद्धा ॥ ६ ॥ स्वलिंग सिद्धा ॥७॥ स्त्रीलिंग सिद्धा ॥८॥ पुरुषलिंग सिद्धा ॥ ९ ॥ नपुंशकलिंग सिद्धा ॥१०॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ॥११॥ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा ॥१२॥ बुद्धबोहि सिद्धा ॥१३॥ एक सिद्धा ॥१४॥ अनेक सिद्धा ॥१५॥ तथा ॥४॥ प्रकारे जीवमोक्ष जाय ते कहेछे॥ ज्ञानेकरि ॥१॥ दर्शनेकरि ॥ २॥ चारित्रेकरि ॥३॥ तपेकरि ॥४॥ तथा ॥ ९ ॥ द्वार मोक्षना कहेछे ॥ सत्पदप्ररूपणा ते ॥ मोक्षगति पूर्वकाले हति हमणा पण छे। आग मिये काले हशे ते गति अस्ति छे।पण आकाशना फुलनिपरे नास्ति नथि

॥१॥ द्रव्यप्रमाणे ते सिद्ध अनता छे॥अभव्य जीवथि अनतगुणा अधिक छे।
वनस्पति वर्जिने ॥ ७३ ॥ दक्कथि सिद्धना जीव अनतगुणा अधिक छे ॥ २ ॥
क्षेत्रद्वार ते सिद्धशिला प्रमाणे छे ॥ ते। सिद्धशिला पिस्तालिस लाख जोज
ननी लांबि पहोलि छे ॥ अने त्रिगुणि झाझेरि परिधि छे॥ अने उंचपणे ॥३३३॥
धनूष ने ॥ ३२ ॥ आंगुलप्रमाणे ॥ एटला क्षेत्रमा सिद्ध रह्या छे ॥ ३ ॥ स्पर्श
ना द्वार ते सिद्धक्षेत्रथि काइक अधिकी सिद्धनिस्पर्शना छे ४ कालद्वार ते ॥
एक सिद्ध आश्रि सादिअनत सर्व सिद्ध आश्रि अनादिअनत ॥ ५ ॥ अतर
ते फरि सिद्धने ससारमा अवतरवु नथि ॥ अने एक सिद्ध तिहा अनता सिद्ध
छे ॥ अने अनता सिद्ध तिहा एक सिद्ध छे॥ एटले सिद्ध २ मा अतर नथि॥६॥
भाग ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनतमे भागे छे। लोकने असख्यातमे
भागे छे ॥ ७ ॥ भाव ते सिद्धमा क्षायकभाव॥ केवलज्ञान। केवलदर्शन। क्षा

यकसमकित छे । अने परिणामिकनाव ते सिद्धपणो जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प ब
हुत्व द्वार ते ॥ सर्वथि थोमा नपुसक सिद्ध ॥ तेथि स्त्री सख्यातगुणि सिद्ध ॥
तेथि पुरुष संख्यातगुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुसक ॥ १० ॥ सिद्ध थाय ॥
स्त्री ॥ २० ॥ सिद्ध थाय ॥ पुरुष ॥ १०८ ॥ सिद्ध थाय ॥ ए ॥ त्रसपणे ॥ १ ॥
बादरपणे ॥ २ ॥ संज्ञिपणे ॥ ३ ॥ वज्रऋषननाराचसघयणपणे ॥ ४ ॥ शुक
लध्यानपणे ॥ ५ ॥ मनुष्यगति ॥६॥ क्षायकसमकित ॥७॥ जथाख्यातचारित्र
॥८॥ पम्डितवीर्य ॥ए॥ केवलज्ञान॥१०॥केवलदर्शन॥११॥नव्य सिद्धिक॥१२॥
परमशुकललेशी ॥ १३॥ चरमशरीरि ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ बोलनो धणि मोक्ष
जाय ॥ जघन्य बे हाथनि अवघणावालो ॥ उत्कृष्टि पाचशें धनूषनि अवघेणा
वालो।जघन्य नव वरसनो ॥ उत्कृष्ठ पूर्वकोम्डिना आयुष वालो कर्मनूमिनो होय
ते मोक्षमा जाय ॥ इति मोक्षतत्वं समास ॥ए॥ इति नव तत्वना बोल सपूर्ण ॥

॥ ॐनम सिद्ध ॥ अथश्री २४ दण्डकना बोल लिख्यते ॥गाथा॥ सरीरोगाहणसंघ
यण॥सठाणकसाय तहहुंतिसन्नाउ॥लेसिंदियसमुघाए।सन्निवेदेयपज्जती ॥१॥
दिठिदसणनाणअनाणे॥जोगुवउगेतहाकिमाहारे॥उववायठिइसमुहाए। चव
णगइरागइश्चेव॥२॥एवे गाथा सुत्रपाठे कही॥हवे अर्थ कहेछे॥सरीर कहेता स
रीर पांच॥उदारीक सरीर॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर॥३॥ तैजस
सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥५-१॥ उगाहण कहेता। अवघेणा॥उदारिक सरी
रनी अव घेणा जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जो
जननी जाजेरी ॥ कमलनालोमानेन्याये॥ वैक्रेय सरीरनि भवधारणि अवघेणा।
जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग॥उत्कृष्टी पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वै
क्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग॥उत्कृष्टीलाख जो
जन जाजेरी॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य। मुंढा हाथनी॥ उत्कृष्टी एक

हाथनी ॥ तेजस कार्मण सरीरनी अवघेणा जघन्य अंगुलनो असंख्यातमोभा
ग।उत्कृष्टी चौद राजलोक प्रमाणे ॥ केवल समुद्घातनी अपेक्षाये॥तथा पोत
पोताना सरीर प्रमाणे जाणवी ॥ एम अवघेणा जाणवी ॥ २ ॥ संघयण कहेता
संघयणछ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ १ ॥ ऋषभनाराचसंघयण ॥ २ ॥ नारा
चसंघयण ॥ ३ ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥४॥ किलकसंघयण ॥५॥ छेवट्ठसंघयण
॥ ६-३ ॥ संठाण कहेता संठाणछ ॥ समचउरस संठाण ॥१॥ निगोहपरिमंडल
संठाण ॥ २ ॥ सादि संठाण ॥ ३ ॥ वामन संठाण ॥ ४ ॥ कुबज संठाण ॥ ५ ॥
हुंड संठाण ॥६॥५॥ कसाय कहेता कषाय च्यार ॥४॥ क्रोध १ मान २ माया ३
लोभ४॥५॥ तदहुति कहेता तिमज होय॥स णाउ कहेता संज्ञा च्यार॥ आहा
रसंज्ञा ॥ १ ॥ भयसंज्ञा ॥२॥ मैथुनसंज्ञा ॥ ३ ॥ परिग्रहसंज्ञा ॥ ४-६ ॥ लेसि
कहेता लेस्याछ ॥ कृष्णलेस्या ॥ १ ॥ नीललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या ॥ ३ ॥

तेजुलेस्या ॥ ४ ॥ पदमलेस्या ॥ ५ ॥ सुकललेस्या ॥ ६-७ ॥ इंदिय कहेता । इंद्रिय पाच सोतेंद्रीया॥१॥चषुइंद्रिया॥२॥घाणेंद्रीया॥३॥रसेंद्रीया॥४॥फरसेंद्रीया॥ ५-८॥ समु घाए कहेता ॥ समुद्‌घात सात। वेदनी ॥१॥ कषाय ॥ २ ॥ मारणातिक ॥३॥ वैक्रेय ॥४॥ तैजस ॥५॥ आहारक ॥६॥ केवल ॥७-९॥ सन्नी कहेता सज्ञी असज्ञी। मन होय ते संज्ञी। मन न होय ते असज्ञी ॥१०॥ वेदेय कहेता वेद त्रण ॥ स्त्रीवेद ॥१॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुसकवेद ॥३-११॥ पज्जति कहेता पर्याप्त आहारपर्या ॥१॥ सरीरपर्या ॥२॥ इंद्रीपर्या ॥३॥ स्वासोस्वासपर्या ॥ ४ ॥ भाषापर्या ॥५॥ मनपर्या ॥६-१२॥ दिठि कहेता दृष्टि ॥ ३ ॥ समकितदृष्टि॥१॥ मिथ्यातदृष्टी ॥२॥ समामिथ्यातदृष्टी ॥३-१३॥ दसण कहेता दर्शनच्यार। चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शन ॥ २ ॥ अवधिदर्शन ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥४-१४॥ नाण कहेता ज्ञान ॥ ५ ॥ मतिज्ञान ॥ १ ॥ श्रुतज्ञान ॥ २॥ अवधिज्ञान॥३॥

मनपर्यवज्ञान ॥४॥ केवलज्ञान ॥५-१५॥ अनाणे कहेता ॥ अज्ञान त्रण । म
तिअज्ञान ॥१॥ सुतअज्ञान ॥२॥ विभंगज्ञान॥३-१८॥ जोग कहेता जोगपनर।
च्यार मनना। च्यार वचनना। सात कायाना॥ हवे च्यार मनना कहेछे। सत्य
मनजोग ॥१॥ असत्यमनजोग ॥२॥ मिश्रमनजोग ॥३॥ ववहारमनजोग॥४॥
हवे च्यार वचनना कहेछे ॥ सत्यवचनजोग ॥१॥ असत्यवचनजोग ॥२॥ मिश्र
वचनयोग ॥३॥ ववहारवचनजोग ॥४॥ हवे सात कायाना कहेछे॥उदारिक॥१॥
उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ वैक्रेय ॥ ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ४ ॥ आहारक ॥ ५ ॥
आहारकनो मिश्र ॥ ६ ॥ कार्मणकायजोग ॥ ७ ॥ एव पनर जोग ॥ १७ ॥ उ
वयोग कहेता उपयोग वार॥पांच ज्ञान॥त्रणअज्ञान॥च्यारदर्शन॥एवं वार
॥ १८॥ तहाक्रिमाहारे कहेता ॥ तिमज अनुक्रमे आहार लीए ॥ जघन्य त्रण
दिसनो ॥ उत्कृष्टो ७दिसनो ॥ त्रण दिस ते कइ ॥ उंची नीची ने त्रीछी ॥ ए त्रण

दिशानो लीए ॥ ६दिस ते कइ ॥ पूर्व ॥ १ ॥ पछिम ॥२॥ उतर ॥ ३ ॥ दषण ॥
४ ॥ उंची ॥ ५ ॥ नीची ॥६॥ ए ६ दिसनो आहार लीए ॥ तथा वलि त्रण प्र
कारनो । आहार । सचेत ॥ अचेतने मिश्र । उंज ॥ १ ॥ रोम ॥२॥ कवल॥३॥
ए त्रण प्रकारनो आहार ॥१९॥ उववाय कहेता आवीने उपजे चोविस दंडक
नो ते आगल कहेवासे ॥२०॥ ठिइ कहेता थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी॥ अने
उतकृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ ते आगल कहेवासे ॥२१॥ समुद्घाए कहेता ।
समो हियामरण ॥१॥ असमोहियामरण ॥२॥ समोहियामरण ते केहने कहिये
कीडीनीलारनीपरे जीवना परदेसछुटाछुटा नीकले ॥ तेहने समोहिया मरण क
हिये ॥ १ ॥ असमोहियामरण ते केहने कहिये बंडुकना भडाकानीपरे जीवना
प्रदेश सामटा नीकले ॥ तेहने असमोहियामरण कहिये ॥ १-२२ ॥ चवण
कहेता चविने जाय जेटला दंडकमा ते आगल केहेवासे ॥२३॥ गइ कहेता गति

पाच ॥ नरकनी गति तिर्यंचनी गति ॥ मनुष्यनि गति । देवतानी गति । सिधनी गति । एहमां जे जावुं ते गति ॥ अने आगइ कहेता जेमाथी । आववु ते आगति च्यार ॥ नरकनी । तिर्यंचनीमनुष्यनीदेवतानी ॥ ४-२४ ॥ चेव कहेता निश्चे ए बे गाथानो । अर्थ कह्यो ॥ हवे प्राणदश । पांच इंद्रीना पाच प्राण ॥ श्रोतेंद्री ॥ १ ॥ चक्षुइंद्री ॥ २ ॥ घाणेंद्री ॥ ३ ॥ रसइंद्री ॥ ४ ॥ फरसइंद्री ॥ ५ ॥ मनबल ॥ ६ ॥ वचनबल ॥ ७ ॥ कायबल ॥ ८ ॥ स्वासोस्वास ॥ ९ ॥ आउषुं ए ॥ १० ॥ ए पचविस द्वार कह्या ॥ २५ ॥ हवे चोविस दंडकना नाम कहेछे ॥ पेहेलो नारकीनो दंडक ॥ ते सात नरकना नाम कहेछे ॥ पहेली घमा ॥ १ ॥ बीजी वसा ॥ २ ॥ त्रीजि सीला ॥ ३ ॥ चोथी अजणा ॥ ४ ॥ पाचमी रिठा ॥ ५ ॥ छठी मघा ॥ ६ ॥ सातमी माघवइ ॥ ७ ॥ ए सात नरकना नाम कह्या ॥ हवे सातना गोत्र कहेछे । पहेली रतनप्रभा ॥ बीजी सकरप्रभा । त्रीजी वालुप्रभा । चोथी पकप्रभा ॥ पाचमी धुम

प्रजा ॥ ठठी तमप्रजा ॥ सातमी तमतमाप्रजा ॥ ए सात मलिने एक दंमक थयो ॥१॥ हवे दश ज्ञवनपतिना दस दंमक ॥ तेहना नाम कहेठे ॥ पेहेला असुरकुमार ॥ बीजा नागकुमार ॥ त्रीजा सोवनकुमार ॥ चोथा विज्जुकुमार ॥ पाचमा अग्निकुमार ॥ ठठा दिपकुमार ॥ सातमा उदधिकुमार ॥ आठमा दिसाकुमार ॥ नौमा पवनकुमार ॥ दशमा थणितकुमार ॥ एव अगियार दंमक थया ॥ ११ ॥ हवे पाच थावरना पाच दंमक कहेठे ॥ इंदियावरकाय ॥ बंभीथावरकाय ॥ सपीथावरकाय ॥ सुमतिथावरकाय ॥ पयावचथावरकाय ॥ ए नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेठे प्रथवीकाय ॥ अपकाय ॥ तेउकाय ॥ वाउकाय ॥ वणसइकाय एव सोल दंमक थया ॥१६॥ हवे त्रण विगलिंडीना त्रण दंमक कहेठे ॥ बेइंडी । तेरिंडी ॥ चउरिंडी ॥ एव उंगणीस दंमक थया ॥१९॥ हवे विसमो तिर्यंच पंचेंडीनो दंमक कहेठे ॥ तिर्यंच पचेंडीना पाच ज्ञेद ॥ जलचर ॥ थलचर ॥ उरपर ॥ ज्ञुजपर । षेचर । हवे

जलचर ते केहने कहिये ॥ जे जलमा चाले तेहने जलचर कहिये॥तेहना अनेक भेद ॥ मछ कछ गाहा । मगर । सुसुमार ॥ प्रमुष ॥ १ ॥ हवे थलचर ते केहने कहिए ॥ जे थल पृथविइ चाले ॥ तेहने थलचर कहिये ॥ तेहना च्यार भेद ॥ एगखुरा डखुरा । गम्भीपया । सणपया ॥ एगखुरा ते घोमा घर प्रमुष ॥ डखरा ते गाय भैंस प्रमुष ॥ गंम्भीपया ते सुहालापग ॥ सोनीनी अहिरणने घाटे पग ॥ ते हाथी गैंमा प्रमुष ॥ सणपया ते नोहोरालाजीव ॥ ते सिंह वाघ चित्रा कुतरा बिलामा प्रमुष ॥ २ ॥ उरपर ते केहने कहिये । हइयाभर चाले ते सर्पनी जात ॥ तेहना बे भेद ॥ एक फेण मारे ने ॥ एक फेण न मारे ॥३॥ भुजपर सर्प ते केहने कहिये। भुजाए तथा हइयाभर चाले ते भुजपर सर्प ॥ तेहना अनेक भेद । नोल कोल कार्कीमा । गोह । उदर ॥खीसकोली प्रमुख ॥४॥ षेचर ते केहने कहीये ॥ जे आकासे चाले ते पषीनी जाति ॥ ते पंषीना च्यार भेद।

चरमपपी । रोमपपी । विततपपी । समुगपपी ॥ चरमपपी ते चामफानी पाप ॥ ते गपा ॥ वागुल प्रमुप ॥ १ ॥ रोमपपी ते रोमरायनी पाष ॥ ते सुफा चरकला पारेवाप्रमुप ॥ २ ॥ ए वे पपी अढी दीपमाहे अने बाहिर छे ॥ वितत पपी ते पोहोलीज रहे पाप जेहनी ते वितत पषी कहिए ॥ ३ ॥ समुग पपी ते फावफानीपेरे वीफीरहे पाष जेहनी ते समुग पषी ॥ ए वे पषी अढी धिप वाहरेज छे ॥ ए पाच तिर्यंच पचेंद्री । समुर्छिम ने गर्भज जाणवा ए विसमो तिर्यंच पचेंद्रीनो दम्क थयो ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्य पचेंद्रीनो दम्क कहेछे ॥ ते मनुष्य पचेंद्रीना च्यार भेद । पनर कर्मभुमिना मनुष्य ॥१॥ त्रीस अकर्मभुमिना मनुष्य ॥२॥ छपन्न अतरदीपना मनुष्य ॥३॥ चउद थानकना समुर्छिम मनुष्य ॥ ४ ॥ एव एकसो एक षेत्रना गरभज मनुष्य अपर्याप्ता ॥ एकसो एक पर्याप्ता ॥ ने एक सो एक समुर्छिम मनुष्य

अपर्याप्ता । एव त्रणसें त्रण नेदनो एकविसमो मनुष्यनो दमक थयो ॥२१॥ हवे बाविसमो वाणव्यतरनो दमक कहेठे ॥ तेहनी सोल जाति । पिशाच ॥ १ ॥ नूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किंनर ॥ ५ ॥ किंपूरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गधर्व ॥ ८ ॥ आणपनी ॥ ए ॥ पाणपनी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ नूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंम ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥ १६ ॥ इति बाविसमो वाणव्यतरनो दमक सपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतीषीनो दमक कहेठे ॥ तेहनी दस जाति चङमा ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए पांच चरते अढिधीप मध्ये ठे ॥ अने पाच थिर ते अढिधीप बाहिर ठे ॥ एव दस जाता॥ वे चंङमाने वे सूर्य जंबूधिपमध्ये ठे ॥ च्यार चङमा च्यार सूर्य लवण मध्ये ठे ॥ बार चङमा बार सूर्य धातकीषंमध्ये ठे ॥ बेतालिस चङमा । बेता

लिस सूर्य कालोदधिसमुद्रमध्ये छे ॥ बहुत्तेर चंद्रमा ॥ बहुत्तेर सूर्य पुष्करार्द्ध
द्विपमध्ये छे ॥ एव सर्व मलीने मनुष्यषेत्रमा । एकसो बत्रीस चंद्रमा ॥ एकसो
बत्रीस सूर्य ॥ परिवारसहित चर छे ॥ परिवार ते जिहा एक चंद्रमा एक सूर्य
तिहा अठासी ग्रह ॥ अठाविस नक्षत्र ॥ छासठहजार नवसे पच्योतेर कोडा
कोडी तारा ॥ एवं सर्व चंद्रमासूर्यनो परिवार गणवो ॥ असंख्याता चंद्रमा अ
संख्याता सूर्य परिवारसहित मनुष्यषेत्र बाहेर असंख्याता दिपसमुद्रमाहि
थीर छे ॥ एव दस जातनो त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंडक थयो ॥२३॥ हवे चोविस
मो वैमानिकनो दंडक कहेछे ॥ तेहना छविस भेद छे ॥ बार देवलोक ॥ नव
ग्रीवेयक ॥ पाच अनुत्तर विमान । एव छविस । हवे तेहना नाम कहेछे ॥ सु
धर्म ॥ १ ॥ इसान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥
लांतक ॥ ६ ॥ महासुक्र ॥ ७ ॥ सहसार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ९ ॥ प्राणत ॥ १० ॥

आरण ॥ ११ ॥ अचुय ॥ १२ ॥ ए बार देवलोकना नाम कह्या ॥ हवे नव ग्रैवेयकना नाम कहेछे ॥ नदे ॥ १ ॥ सुनदे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ पीयदसणे ॥ ५ ॥ सुदसणे ॥ ६ ॥ आमोदे ॥ ७ ॥ सुपम्विधे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ ए नव ग्रैवेयकना नाम कह्या । हवे पाच अनुत्तरविमानना नाम कहे छे । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥ ५ ॥ ए पाच अनुत्तर विमानना नाम कह्या । ए छविस नेदनो वैमानीकनो दन्क थयो ॥ २४ ॥ हवे पनर परमाधामीना नाम कहेछे । अंब ॥ १ ॥ अवरस ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ सवल ॥४॥ रुद्र ॥५॥ वेरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असीपत्र ॥ ९ ॥ धणुष ॥ १० ॥ कुंन ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरसर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥ ए पनर परमाधामी ते असुरकुमारमा नल्या । हवे दस जातिना जंनका तेहना नाम कहेछे॥

आणजन्नका ॥ १ ॥ पाणजन्नका ॥ २॥ लयणजन्नका ॥ ३ ॥ सयणजंन्नका ॥ ४ ॥ वह्नजन्नका ॥ ५ ॥ पुफजन्नका ॥६॥ फलजन्नका ॥७॥ वीजजंन्नका॥८॥ विछ्नजंन्नका ॥ ए ॥ अवीयतजंन्नका ॥ १० ॥ ए दस जातिना जन्नकादेवता ते वाणव्यंतरमा न्नल्या ॥३॥ किल्विषीनानाम त्रण पलिया ॥ १॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेरसागरिया ॥ ३ ॥ ए त्रणकिलविषी ॥ देवलोक अंतरनिवासीमाटे विमानीकमा न्नल्या। नव लोकांतिकना नाम कहेछे ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥ २ ॥ विन्ही ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गदतोया ॥ ५ ॥ तोसीया ॥६ ॥ अवाबाहा ॥ ७ ॥ अगीचा ॥ ८ ॥ रिठा ॥ ए॥ ए नव लोकातिक बंन्नलोकवासीमाटे ॥ उत्तम वैमानिकमा न्नल्या ॥इति चोविस दम्कना नाम कह्या ॥२४॥ हवे सात कोमी बोहोत्तेर लाष न्नवनपतिना न्नवन छे। चोरासी लाष नरकावासा छे। असप्याता वाणव्यतरना नगर छे ॥ असंप्याता जोतिषीना विमान छे ॥ अस

प्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिषीना छे । चोरासी लाष सताणु हजार त्रेवीस विमान वेमानिकना छे ॥ सष्याता वास मनुष्यना छे । सेष दन्डक नवना असष्याता असष्याता वास छे ॥ ते सर्व वर्णव अन्य सिद्धांतादिकथि जाणवो ॥२४॥ हवे सिद्धसिलाना बार नाम कहेछे ॥ इसितिवा ॥१॥ इसिपभारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुत्तिवा ॥ ४॥ सिधितिवा ॥५॥ सिद्धाल एतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तितिवा ॥ ७ ॥ मुत्ताल एतिवा ॥ ८ ॥ लोयग्गेतिवा ॥ ए ॥ लोगथुभियातिवा ॥ १० ॥ लोगपडिबोहेतिवा ॥ ११ ॥ सवपाणभुय जीवसत्तसुहावहेतिना ॥ १७ ॥ ए बार मोक्षना नाम कह्या ॥ ए नामद्वार किंचित्मात्र सपूर्ण ॥ १ ॥ हवे चोविस द्वार ते चोविस दन्डक उपरे उतारवा ते कहेछे ॥ पेहलो नारकीनो दन्डक ॥ तेमाहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेय० ॥ तेजस० ॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवधारणि सरीरनी ज० अंगु० अस० ॥ उ० पाचसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवै

क्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० सष्या० ॥ उ० हजार धनुषनी ॥ पेहेली नरकेज०
अगु० असं० ॥ उ० पोणा आठ धनुष्य ने ७ अंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे
तो ज० अगु० सष्या० उ० साढापनर धनुष ने वार अगुलनी ॥ वीजी नरके
ज० अगु० अस० ॥ उ० साढापनर धनुष्य ने बार अंगुलनी ॥ अने उत्तरवै
क्रेय करे तो ज० अगु० संष्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ त्रीजि नरके
ज० अंगु असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज०
अगु० सष्या० ॥ उ० साढीवासठ धनुषनी । चोथी नरके ज० अगु० असं० ॥
उ० साढीवासठ धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो । ज० अंगु० सष्या० ॥
उ० सवासो धनुषनी ॥ पाचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनु
षनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० सष्या० ॥ उ० अढीसे धनुषनी ॥
छठि नरकेज० । अगु० अस० उ० अढिसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे

तो ज० अगु० सप्या० उ० पाचसें धनुपनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० पाचसें धनुपनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संष्या० ॥ उ० हजार धनुपनी । सघयण क०॥ नारकीअसंघेणी॥संठाणनारकीनेएकहु न्संठाण ॥ कपाय च्यारेक्रोध मान माया ने लोन ॥पण नारकीने क्रोध घणो॥ सज्ञा च्यारे आहारसंज्ञा॥नयसज्ञा। मैथुनसज्ञा। परिग्रहसज्ञा। पण नारकी ने नय घणो। लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥ पेहेली ने बीजी नरके एक कापुत लेसा॥ त्रीजी नरके बे लेस्या कापुत घणी अने नील थोमी ॥ चोथी नरके एक नीललेस्या॥ पाचमी नरके बे लेस्या नील घणी अने कृष्ण थोमी ॥ छठी नरके एकली कृष्णलेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्णलेस्या ॥ इन्द्री पाच । सुतइंद्रि ॥ १ ॥ चपूइन्डी ॥ २ ॥ घाणइन्द्री ॥ ३ ॥ रसइन्डी ॥४॥ फरसइंन्डी ॥५॥ समुद्घा त च्यार ॥ वेदनी कषाय मारणातिक। वैक्रेय ॥ सनि कहेता पेहेली नरके संज्ञी

असंज्ञी बे होय ॥ बीजीथी मांमी सातमी नरकसुधी एकला सञ्ज्ञी छे॥ वेद नारकी ने एक नपुंसक वेद ॥ नारकीने ५ पर्या त्राषामन नेलावाधे । द्रष्टीनारकीने त्रण॥ समकीतदृष्टी ॥ मिथ्यातदृष्टी॥ समा मिथ्यादृष्टी॥दर्शण त्रण नारकीने॥ चषुदर्श न ॥ अचषुदर्शन । अवधिदर्शन ॥ ज्ञान त्रण नारकीने । मतिज्ञान।श्रुतज्ञान ॥ अवधिज्ञान॥ अज्ञान त्रण नारकीने।मतिअज्ञान॥श्रुतअज्ञान।विभंग ज्ञान॥ जोग इग्यार नारकीने ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रए कायाना ॥ ते वैक्रेय वैक्रेय नोमिश्र ने कार्मणकाय जोग ॥ एव इग्यार जोग ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान।त्रण दर्शन एव नव॥तहा तेमज आहार लेतो जघन्य उत्क ष्टो ७ दिसनो । आहार ले ॥ ते बे प्रकारनो॥उंज आहार ने।रोम आहार।तेपण असुज्ञ॥ तेपण अचेत ॥ उववाय ते आवीने उपजे पहेलीनर्के बे दम्कना ते मनुष्य गर्भ्भज अने ॥ तिर्यंचगर्भ्भज ने समुर्छिम॥ए बे दंम्कना आविने उपजे अने बीजीथी

मीने सातमी सुधी गर्भजतिर्यंच अने गर्भज मनुष्यना आवी उपजे । थिति प
हेली नरके जघन्य दस हजार वरसनी॥ उत्कृष्टी एक सागरनी॥ बीजी नरके ज०
एक सागरनी ॥ उ० त्रण सागरनी ॥ त्रीजी नरके ज० त्रणसागरनी ॥ उ० सात
सागरनी ॥ चोथी नरके ज० सात सागरनी उ० दस सागरनी॥ पांचमी नरके ज०
दस सागरनी ॥ उ० सतर सागरनी ॥ छठी नरके ज० सतर सागरनी। उ० बावीस
सागरनी॥ सातमी नरके ज० बावीस सागरनी ॥ उ० तेत्रीस सागरनी॥ समोहिया
मरणअने असमोहियामरण। बे मरण छेचवण ते नारकी चविने पेहेलीथी छठीसु
धिना बे दंडकमा जाय मनुष्यने तिर्यंचमा जाय॥ अने सातमी नरकनो एक दंडक
माते तिर्यंचमा जाय।।गइ कहेता। पेहेलीथी मांडी छठी सुधिना नारकी मरीने बेगती
मा जाय ते॥ मनुष्यने तिर्यंचमा जाय॥ आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो
सातमी नरकना नारकी बे गतिमाथी आवे मनुष्यने तिर्यंच ने जाय एक तिर्यंच

निगतिमा॥ प्राणदस लाने॥जोग त्रण मन वचन ने कायाना।ए त्रण॥ए प्रथम
दंडक नारकीनो सपूर्ण थयो॥१॥हवे दस भवनपतिना दस दंडक॥ तेहमा सरीर
त्रण॥ वैक्रिय॥ तेजस ॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो अ
सप्यातमो भाग॥ उत्कृष्टी सात हाथनी। अने उत्तरवैक्रिय करे तो जघन्य अंगुल
नो सप्यातमो भाग॥ उत्कृष्टीलाप जोजननी। सघेण नथी। सठाण एक समचउरं
ससठाण॥कषाय च्यारे पण देवताने लोभघणो॥ संज्ञाच्यारे पण देवताने परि
ग्रह संज्ञा घणी। लेस्या च्यार कृष्णलेस्या। नीललेस्या। काप्तुतलेस्या॥ तेजुले
स्या। इन्द्री पाचे छे॥ समुद्घात पाच।वेदनी कषाय मारणातिक। वैक्रिय ने तेजस
सज्ञी असज्ञी बे जाणवा॥ वेद बे स्त्री ने पुरुष। प्रजा ५ भाषामन भेला बाधे॥
द्रष्टी त्रण॥ दर्शण त्रण। केवलदर्शन एक नही ॥ ज्ञान त्रण ॥ मतिज्ञान श्रुत
ज्ञान अवधिज्ञान॥ अज्ञान त्रण॥ मतिअज्ञान। श्रुतअज्ञान ॥ विभगज्ञान ॥

जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रण कायाना । वैक्रेय वैक्रेय नो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग । एव इग्यार ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन ॥ एव नव ॥ तहा तिमज आहार ले ॥ जघन्य । अने उत्कृष्टे ठ दिसनो आहार छे । वली वे प्रकारे आहार छे । उंजआहार ने रो मआहार ॥ ते पण सुन्न ॥ ते पण अचेत आहार ॥ उववाय तेआवीने उपजे वे दं म्कनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो आवीने उपजे । थिति ज्ञवनपतिमा दक्षण दिसना । असुरकुमारनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागरनी ॥ तेहनी ॥ देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० साढा त्रण पल्योपमनी ॥ तेहना नवनी कायना देवतानी । ज० दस हजारवरसनी । उ० दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० पोणा पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुरकु मारनी स्थीति ॥ ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागर जाझेरानी ॥ तेहनी

देवीनी ज० दश हजार वर्षनी । उ०साढा च्यार पल्योपमनी ॥ तेहना नव
निकायना देवतानी ज० दसहजार वरसनी । उ० वे पल्योपम देसे उणी ॥ तेह
नी देवीनी ज० दस हजार वरसनी।उ० एक पल्योपम देसे उणीनी॥ समोहियाम
रण अने असमोहिया मरण॥ ए वे मरण लाभे । चवण ते चविने पाच दंडकमा
जाय॥प्रथवी॥ पाणी॥ वनस्पति॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पाचमा जाय॥गइकहे०।
मरिने वेगतिमा जाय मनुष्यने तिर्यंचमा॥ आगइ ते आवे पण वेगतिनो॥ मनुष्य
नेतिर्यंच नो॥ प्राणदस लाभे। जोग त्रण ॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक सं
पूर्ण॥११॥ हवे पाचस्थावरना पाचदंडक कहेछे पृथवी॥१॥ पाणी॥२॥ तेउ॥३॥
वनस्पति॥४॥ए च्यार ने सरीर त्रण॥उदारिक॥ तेजस ने कार्मण॥ अने वाउ ने
सरीर च्यार । उदारिक। वैक्रेय। तेजस ने कार्मण॥ अवघेणा प्रथवी पाणि तेउ वा
उ ए च्यारेनी॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने वनस्प

तिनी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो नाग॥ उत्कृष्टी हजार जोजननी झाझेरी कमल प्रमुपनी ॥ सघेण एक छेवट्ठु ॥ सठाण एक हुंम। पाचे ना संठाण कहे छे ॥ प्रथवीनु संठाण मसुरनी दाल तथा चद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनु सठाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनु सठाण सोयना नाराने आकारे ॥३॥ वायरानुं सठाण धजापताकाने आकारे॥४॥ वनस्पतिनु सठाण नाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ कषाय च्यारे ॥ सज्ञा च्यारे ॥ लेस्या पृथवी पाणी वनस्पति ए त्रणने अपर्याप्ता वेला च्यार पेहेली ॥ अने पाचे ने लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंडी एक कायानी । समुद्घात पृथवी पाणी तेउ ने वनस्पति ए च्यारेने ॥३॥ वेदनी कषायमारणांतिक ॥ अने वायराने समुद्घात च्यार वैक्रियनी वधी ॥ सज्ञी ते पाचे थावर असज्ञी ॥ वेद् एक नपुसक ॥पर्या पाचे ने च्यार॥आहार पर्या ॥ सरीरपर्या ॥ इडीपर्या॥स्वासो स्वासपर्या ॥दृष्टीएक मिथ्यात॥दर्शन एक

अचक्षुदर्शन। ज्ञान नथी। अज्ञान बे। मतीअज्ञान॥श्रुतअज्ञान। जोग पृथवी
पाणी तेउ वनस्पति ए च्यार ने जोग त्रण॥ उदारीक॥१॥ उदारिकनो मिश्र॥२॥
कार्मण कायजोग ॥३॥ अने वायरा ने जोग पाच॥ वैक्रेय॥ वैक्रेयनो मिश्र॥ ए
बे वध्या। उपयोग त्रण॥ बे अज्ञान॥ एक अचक्षु दर्शन॥ एव त्रण। तहा
तिमज आहार ले ज० त्रण दिसनो उ० ६ दिसनो॥ ते वलि बे प्रकारनो उज
ने रोम आहारकरे॥१॥कवलवर्जिने॥ते पण ३ प्रकारनो॥सचेत॥अचेतने मिश्र
उववाय ते आवीने उपजे। पृथवी पाणीने वनस्पतिमा॥ त्रेविस दण्डकना एक ना
रकी वरजीने॥ अने तेउ वाउमा दस दण्डकना आवीने उपजे॥ पाच थावर॥ त्रण
विगलेंद्री॥ मनुष्य ने तिर्यंचा॥एवं दसना॥स्थिति पृथवीनी ज० अतर्मुहुर्त्तनी॥उ०
बाविस हजार वरसनी॥१॥पाणीनी ज० अतर्मुहुर्त्तनी। उ० सात हजार वरसनी
॥२॥ तेउनी ज० अतर्मुहुर्त्तनी उ० त्रण अहोरात्रनी॥३॥वायरानी। ज० अतर्मु

हुर्त्तनी ॥ उ० त्रण हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी ज० । अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० दस हजार वर्षनी ॥ समोहियामरण अने असमोहियामरण । ए वे मरण छे ॥ चवण ते चविने ॥ प्रथवि पाणी ने वनस्पति ॥ दस दम्कमा जाय ॥ पाच थावर त्रण विगलेंद्रि ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमा जाय । अने तेउ वाउ नव दंडकमां जाय॥पाच थावर त्रण विगलेंद्री ने तिर्यंच ए नव॥गइ क०ते मरीने प्रथवी पाणी ने वनस्पति वे गतिमा जाय मनुष्यने तिर्यंचमा ॥ अने तेउ वाउ एकगतिमा जाय तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पृथवी पाणी ने वनस्पतिमा त्रण गति नो आवे देवता मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने तेउ वाउमा वेगति नो आवे। मनुष्य ने तिर्यंचनो । प्राण पाचे ने च्यार ॥ एक ईंद्रिपणु ॥ १ ॥ कायबल॥२॥ स्वासोस्वास ॥ ३ ॥ आउपु ॥ ४ ॥ जोग एक कायजोग ॥ इति पाच थावरना पाच दंम्क सपूर्ण॥१६॥हवे त्रण विगलें द्रियना ३ दम्क कहेछे वेइंद्रि॥तेरडी ॥

चोरिंद्रीमा सरीर त्रण ॥ उदारिक । तेजस । कार्मण । अवघेणा वे इंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ उ० वार जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी ज० अंगुल नो असंख्यातमो नाग ॥ उ० त्रण गाउनी । चउरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असं ख्यातमो नाग । उ० च्यार गाउनी ॥ सघेण एक छेवटुं ॥ सठाण एक हुंड ॥ कपायच्यारे ॥ सज्ञा च्यारे ॥ लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री बेरिंद्रीने ॥ वे ॥ काया ॥ १ ॥ जिन ॥ २ ॥ तेरिंद्रीने इंद्री त्रण । नासिकावधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्रीचार ॥ आपवधि ॥ समुदघात त्रण वेदनी कषाय ने मारणातिक ए त्रण ॥ सज्ञीके ते असज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥ पर्या पाच मन नही ॥ द्रष्टी वे ॥ समकित द्रष्टीने । मिथ्यातद्रष्टी ॥ दर्शन वेइंद्री तेइंद्रीने एक अचक्षुदर्शन ॥ चउरिंद्री वे दर्शन ॥ चक्षुदर्शन ने । अचक्षुदर्शन ॥ ज्ञान । वे मतिज्ञान ने । स्रुतज्ञान ॥ अज्ञान वे मतिअज्ञान । स्रुतअज्ञान ॥ जोग च्यार उदारिक ॥ १ ॥ उदारिकनो

मिश्र ॥ २ ॥ कार्मणकाय जोग ॥ ३ ॥ व्यवहार वचन ॥ ४ ॥ उपयोग बेइन्द्री तेइन्द्री ने पाच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान । एक अचक्षुदर्शन ए पाच ॥ चउरिंद्री ने उपयोग ६ ॥ बे ज्ञान ॥ बे अज्ञान । बे दर्शन ए ६ । तहा कहेता तिमज आहार ले ॥ जघन्य अने उत्कृष्टो छदिसनो आहार ले ॥ तथा त्रण प्रकारनो आहार ले । उंज ॥ १ ॥ रोम ॥ २ ॥ ने कवल ॥ ३ ॥ उववाय ते आवीने उपजे दस दंडकना । पाच थावर त्रिण विगलेंद्री । मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए दस॥ थिति बेरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी उत्कृष्टी बार वरसनी ॥ तेइन्द्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्कृष्टी उगण पचास दिवसनी । चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर मुहुर्त्तनी ॥ उत्कृष्टी ६ महिनानी ॥ समोहिया मरण । अने असमोहिया मरण बे छे ॥ चवण ते चविने जाय दस दंडकमा ॥ पाच थावर त्रिण विगलेंद्री ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । गइ ते मरीने बेगतिमा जाय ॥ मनुष्य ने त्रिजंचमा

आगइ ते आवे पण बेगतिनो मनुष्य ने त्रिजंचनो ॥ प्राण बेरिंडी ने छ प्राण। बे इंडीना बे प्राण ॥ कायबल ॥ स्वासोस्वास ॥ आउषू । वचन । ए छ। तेरिंडी ने सात प्राण। ते नासिकावधी। चउरिंडी ने आठप्राण आंखवधी ॥ जोग बे॥ वचनजोग ने। कायजोग ॥ इति त्रण विगलेंडीना त्रण दंमक संपूर्ण ॥ १९ ॥ हवे विसमो तिर्यंच पंचेंडीनो दंमक कहेछे। हवे पांचे समुर्छिमने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ॥ ने कार्मण ॥ अने गर्भजने च्यार सरीर वैक्रेयवध्यु ॥ अवघेणा पांचनी कहेछे॥ हवे जलचर समुर्छिम ने गर्भजनी। ज० अंगु० अस०॥ उ० हजार जोजननी ॥ थलचर समुर्छिमनी ज० अंगु० अस०॥ उ०। प्रत्येक गाउनि ॥ गर्भजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० छ गाउनी। उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंगु० अस० ॥ उ० प्रत्येक जोजननी ॥ अने गर्भजनी ज० अंगु० अस० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ भुजपर सर्प समुर्छिमनी। ज० अंगु० अस०॥

उ० प्रत्येक धनुषनी । गर्भजनी । ज० अगु० अस ॥ उ० प्रत्येक गाउनी ॥ षेचर समुर्छिमने गर्भजनी ज० अगु० अस० । उ० प्रत्येक धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अगु० सख्या० । उ० नवसें जोजननी ॥ सघेण समुर्छिमने एक छेवट्ठु ॥ गर्भजने छ सघेण । सठाणसमुर्छिमने । एक हुंड । गर्भजने छ संठाण ॥ कषाय च्यारे पण त्रिजचने माया घणी ॥ सज्ञा च्यारे पण त्रिजचने आहार सज्ञा घणी ॥ लेस्या समुर्छिमने त्रण पेहेली । गर्भज ने छ लेस्या ॥ इंद्री पांचे छे ॥ समुदघात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणातिक अने गर्भज ने समुदघात पाच वेदनी कषाय मारणातिक वैक्रेय ने तेजस ॥ समुर्छिम असज्ञी गर्भजसज्ञी ॥ वेद एक नपुसक समुर्छिमने ॥ गर्भजने त्रण वेद ॥ पर्यास मुर्छिमने पांच मन नही ॥ अने गर्भजने पर्या छ ॥ द्रष्टी समुर्छिमने वे ॥ समकितने । मिथ्यात ॥ गर्भजने त्रण द्रष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने वे चषूदर्शन ने । अच

पूदर्शन ॥ गर्न्नजने त्रण दर्शन ॥ ज्ञानसमुर्छिमने वे मतिज्ञान॥ श्रुतज्ञान । ग
र्न्नजने त्रण ज्ञान ॥ अज्ञानसमुर्छिमने वे । मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान ॥ गर्न्न
जने त्रण अज्ञान ॥ जोगसमुर्छिमने च्यार॥उदारिकना वे ॥ कार्मण । ववहारवच
ना॥गर्न्नजने तेर जोग आहारकना वे नही॥उपयोगसमुर्छिमने ठ।वे ज्ञान वे अ
ज्ञान वे दर्सन ॥ गर्न्नजने नव उपयोग॥त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्स
न । तिमज आहार ॥ जघन्य उत्कृष्टो ठ दिसनो आहार ले ॥तथा त्रण प्रकारे
आहार ले। उजरोमने कवल आहारले ते पण सचेत अचेतने मिश्र॥उववायते।
आवीने उपजे ॥ समुर्छिममा दस दमकना ॥ पाच थावर त्रण विगलेंडी॥मनुष्यने
त्रिजच ॥ गर्न्नजमा चोविसे दमकना आविने उपजे । थिति जलचर समुर्छिमने
गर्न्नजनी । ज० अत० । उ० पूर्व कोमनी। थलचर समुर्छिमनी ज० अत० ॥ उ०
चउरासी हजार वर्सनी । अने गर्न्नजनी ज० अत० ॥ उ० त्रण पल्योपमनी ॥

उरपर सर्प सम्मुर्छिमनी ज० अंत० । उ० त्रेपन हजार वरसनी ॥ अने गर्भज
नी ज० अंत० ॥ उ० पूर्व कोमनी ॥ नुजपर सर्प समुर्छिमनी। ज० अंत० ॥उ०
बेतालिस हजार वरसनी अने गर्भजनी ज० अंत० । उ० पूर्व कोमीनी ॥ पेचर
सम्मुर्छिमनी ज० अंत० उ० बोहोतेर हजार वरसनी ॥ अने गर्भजनी ज० अंत०
उ० पल्योपमनो असंख्यातमो जाग । समोहियामरण ने असमोहियामरण ॥
ए बे मरण ठे ॥ चवण के चवीने ॥ सम्मुर्छिम जाय तो बाविस दंमकमा । जोती
षीने विमानीकमां जाय नही ॥ अने गर्भज चउविसे दंमकमा जाय । गइ ते स
मुर्छिम मरिने । च्यार गतिमा जाय ॥ अने गर्भज पण च्यार गतिमां जाय ।
आगइ ते आवे सम्मुर्छिममां बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने गर्भजमा
च्यार गतिनो आवे ॥ प्राण समुर्छिमने नव । मन नही । अने गर्भजने प्राण
दश जाणे ॥ जोगसमुर्छिमने बे ॥ कायजोग ने वचनजोग ॥ अने गर्भजने

त्रण जोग मन वचन ने कायजोग ॥ इति विसमो तिर्यंचपचेंद्रीनो दन्क ॥ सं
पूर्ण॥२०॥ हवे एकविसमो मनुष्यनो दन्क कहेछे ॥ तेमा समुर्छिम मनुष्यमां श
रीर त्रण । उदारिक तेजस ने कार्मण । जुगलीयामा सरीर त्रण तेहज ॥ पनर
कर्मभुमिना मनुष्य गर्भजमा सरीर पाच लाने ॥ अवघेणा सम्मुर्छिमनि जघन्य
ने । उत्कृष्टी अगुलनो असख्यातमो भाग ॥ अने गर्भज मनुष्यनी भरतईरवत
मा आराने मेले जाणवी ॥ पेहेले आरे वेसता त्रण गाउनी ॥ उतरता वे गा
उनी ॥ वीजे आरे वेसता वे गाउनी ॥ उतरता एक गाउनी ॥ त्रीजे आरे वेस
ता एक गाउनी ॥ उतरता पाचसें धनुषनी । चोथे आरे वेसता पाचसें धनुषनी॥
उतरता सात हाथनी ॥ पाचमे आरे वेसता सात हाथनी ॥ उतरता एक हाथ
नी ॥ छठे आरे वेसता एक हाथनी ॥ उतरता मुढा हाथनी ॥ पछे चढता अव
ला सवली जाणवी ॥ ५ महाविदेहमां पाचसे । धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे

तो ॥ ज० अगु० सष्या० ॥ ਤ० लाष जोजननी ऊंऊेरी ॥ हेमवयइरणवयमा ज० अगु० अस० ॥ ਰ० एक गाਤनी ॥ हरिवासरमकवासमा ॥ ज० अगु० अस० ॥ ਤ० वे गाਤनी । देवकुरु ਤत्तरकुरुमा ज० । अगु० अस । ਤ० त्रण गाਤनी॥ हवे ਰपन्न अतरद्विपामा ज० अगु० अस० ॥ ਤ० आठसें धनुषनी। सघयण ॥ समुर्छिम ने एक छेवट्ठ ॥ जुगलियाने एक वज्रऋषभनाराचसघयण॥ पन्नर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने ਰ सघयण ॥ सठाण समुर्छिमने एक हुंडा॥जुग लियाने । एक समचਤरस ॥ कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने ਰ संठाण । कपाय च्यारे पण मनुष्यने मानघणु ॥ संज्ञा च्यारे पण मनुष्यने ॥ मैथुन सज्ञा घ णी ॥ लेस्यासमुर्छिमने त्रण पेहेली ॥ जुगलीयाने लेस्या च्यार पेहेली गर्भज ने ਰ लेस्या । इन्द्री पाचे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण वेदनी ॥ कषाय ने मार णांतिक ॥ जूगलियाने समुदघात त्रण तेहज ॥ कर्मभुमीना गर्भज मनुष्यने॥

सात समुद्घात ॥ समुर्छिम असज्ञी गर्भज सज्ञी ॥ वेद समुर्छिमने एक नपु
सक ॥ जुगलियामा वे वेद ॥ स्त्री ने पुरुष । कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यमा त्रण
वेद ॥ स्त्री पुरुष ने नपुसक ॥ पर्या समुर्छिमने च्यार ॥ भाषाने मन नही ॥ गर्भ
ज ने छ पर्या ॥ दृष्टी समुर्छिमने । एक मिथ्यात ॥ दस अकर्मभुमीमा वे दृष्टी॥
समकित ने मिथ्यात ॥ वीस अकर्मभुमीने छपन्न अतरधीपामा ॥ एक मिथ्या
त दृष्टी ॥ कर्मभुमिनां मनुष्यमा त्रणे दृष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने अने जूगली
याने ॥ वे । चक्षुदर्शन ने अचक्षुदर्शन । गर्भजने दर्शन च्यारे लाभे । ज्ञान
दस अकर्मभुमीमा वे ॥ अने वीसअकर्म भूमी अने छपन्न अतर धीपामा
अने समुर्छिमने नथी ॥ गर्भजने पाचे ज्ञान । अज्ञान समुर्छिमने वे मति
अज्ञानने श्रुतअज्ञान । गर्भजने त्रण । जोग समुर्छिमने त्रण। उदारिकना वे
ने १ कार्मणकायजोग ए त्रण ॥ जूगलीयाने जोग ॥ ११ ॥ मनना ॥ ४ ॥

वचनना ॥ ४॥ उदारिकना ॥१॥ कार्मण ॥१॥ एव जोग ॥११॥ गर्नजने पनर जोग ॥ उपयोग दश॥अकर्मनूमी ते पाच देवकुरु पाच उत्तरकुरु ए दशमां॥६॥ते वे ज्ञान ॥२॥ अज्ञान ॥२॥ दर्शन ए ॥६॥ अने वीस अकर्मनूमी ॥५६॥ अतरद्वी पामा ने समुर्छिमने च्यार ॥ वे अज्ञान वे दर्शन। गर्नजने वार उपयोग ॥ तिमज आहार ले तो। जघन्यने उत्कृष्टो ७ दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार ले उजरो मने कवल। ते पण सचेत अचेतने मिश्र उववाय ते आवीने उपजे । समुर्छिममा आठ दमकना ॥ पृथवि पाणी वनस्पति त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने तिर्यंच ए आ ठनो॥जुगलीयामा२ दमकनो ते मनुष्यने तिर्यंचनो गर्नज मनुष्यमा वाविस दंम कना उपजे॥तेउ वाउना नही॥थितिसमुर्छिमनी जघन्य ने उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी॥ गर्नजनी आरा ने मेले जाणवी ॥पेहेले आरे वेसता॥त्रण पल्योपमनी।उतरता वे प ल्योपमनी ॥वीजे आरे वेसता वे पल्योपमनी॥उतरता एक पल्योपमनी ॥ त्रीजे

आरे वेसता एक पल्योपमनी ॥ उतरता पूर्व कोम्नी ॥ चोथे आरे वेसता पूर्व कोम्नी ॥ उतरता सवासो वरसनी । पाचमे आरे वेसता सवासो वरसनी । उतरते आरे विस वरसनी ॥ छठे आरे वेसता वीस वरसनी । उतरते आरे सोल वरसनी ॥ एम चम्ता उतरता अवला सवली जाणवी । हिमवय इरणवयमा एक पल्योपमनी ॥ हरिवास रमकवासमा । बे पल्योपमनी ॥ देवकुरू उतरकुरूमा त्रण पल्योपमनी । छपन्न अतरद्विपामा । पल्योपमनो असंख्यातमो जाग । ५ महाविदेहमां पूर्व कोम्नी ॥ समोहियामरण ने ॥ असमोहियामरण ॥ ए बे मरण छे ॥ चवण ते चवीने समुर्छिम दस दंम्कमा जाय ॥ पाच थावर ने त्रण विगलेंडी । मनुष्य ने तिर्यंचमा जाय ॥ जुगलीया एक देवगतिमा जाय गर्नज चोविसे दम्कमा जाय ॥ गइ ते मरीने समुर्छिम बे गतिमा जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमा जाय ॥ गर्नेज मनुष्य पाचगतिमा जाय ॥ आगइ ते समुर्छिम ने जुगलीयामा आवे तो बे गतिनो । मनुष्य

ने तिर्यंचनो॥गर्भजमा च्यार गति नो आवे॥प्राण समुर्छिमने आठ भाषा ने मन नही ॥ गर्भजने दस प्राण॥जोगसमुर्छिमने एक कायानो ॥ गर्भजने त्रण जोग ॥ इति एकविसमो मनुष्यनो दंडक सपूर्ण॥२१॥हवे बाविसमो वाणव्यंतरनो दंडक॥ तेमा सरीर त्रण॥ वैक्रेय॥ तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा ज० अगु० अस० उ० सात हाथनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या० । उ० लाष जोजननी ॥ सघयण नथी । सठाण एक समचउरस ॥ कषाय च्यारे पण देवता ने लोभ घणो । संज्ञा च्यारे पण देवताने ॥ परिग्रह संज्ञा घणी ॥ लेस्या च्यार पेहेली । इंद्री पाचे । समुद्घात पांच आहारकने केवल नही ॥ सज्ञी असज्ञी बे ॥ वेद बे ॥ स्त्री ने पुरुष ॥ पर्या ५ भाषामन भेलाबांधे । द्रष्टी त्रण ॥ दर्शन त्रण। ज्ञान त्रण । अज्ञान त्रण ॥ जोग अगीयार ॥ च्यार मनना च्यार वचनना ॥ त्रण कायाना ते वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग ॥ एव अगी

यार । उपयोग नव त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तेमज आ
हार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो ७ दिसनो ॥ तथा बे प्रकारे उज ने रोम तेपण
सुन्न ते पण अचेत श्राहार । उववाय ते आवीने उपजे बे दम्कना ॥ मनुष्य ने
तिर्यंचना । थिति वाणव्यतरनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक पल्योपम
नी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० अरध पल्योपमनी ॥ समो
हियामरण ने असमोहियामरण ए बे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय पाच
दम्कमा ॥ पृथवी पाणी ने वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पाच ॥ गइ ते मरीने
बे गतिमा जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमा ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिना मनुष्य
ने । तिर्यंचना ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण । मन वचन ने कायानो ॥ इति बावि
समो वाणव्यतरनो दम्क सपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतिषीनो दम्क ते
हमा सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस । ने कार्मण । अवघेणा ज० अंगु० अस० उ० सा

तद्दाथनी अने उत्तरवैक्रेय करे तो ॥ ज० अगु० सख्या० उ० । लाष जोजननी॥
सघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरस । कषाय च्यारे ॥ सज्ञा च्यारे ॥ लेस्या ए
क तेजु । इंडी पांचे ॥ समुद्घात पाच ॥ आहारकने केवल नही । सज्ञी छे ॥
वेद बे । पर्या ५ भाषामन भेलाबाधे । दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण । ज्ञान त्रण ॥
अज्ञान त्रण ॥ जोग अगीयार । च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते
वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्रने । कार्मण कायजोग॥एव अगीयार ॥ उपयोग नव । त्रण
ज्ञान॥त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एव नव ॥ तिमज आहार ले तो जघन्यने
उत्कृष्टो छदिसनो ॥ तथा बे प्रकारे ॥ उंजने रोम तेपण सुभ ने अचेत आहार॥
उववाय ते आविने उपजे ॥ बे दंडकना॥ मनुष्यने तिर्यंचना । थिति चंद्रमा ना
देवतानी ज० पापल्यनी । उ० एक पल ने लाष वरसनी॥तेहनी देवीनी ज० पा
पल्यनी॥उ० अरघ पल्य ने पचास हजार वरसनी॥ सूर्यना देवतानी ज० पाप

ल्यनी॥ उ० एक पल्य ने हजार वरसनी॥तेहनी देवीनी ज० पापल्यनी॥उ० अर
धपल्यने पाचसे वरसनी॥ग्रहनादेवतानी ज० पापल्यनी॥ उ० एक पल्यनी ॥ ते
हनी देवीनी ज० पापल्यनी उ० अरध पल्यनी॥नक्षत्रना देवतानी। ज० पापल्य
नी॥ उ० अरध पल्यनी॥तेहनी देवीनी॥ज० पल्यनी॥ उ० पापल्यनी आठमोभा
ग॥तारानादेवतानी ज० पल्यनो आठमो भाग। उ० पापल्यनी॥तेहनी देवीनी ॥
ज० पल्यनो आठमो भाग॥ उ० पल्यनो आठमो भाग काझेरी॥समोहियामरण
ने। असमोहियामरण ॥ एबेमरण छे ॥ चवण ते चविने जाय। पाच दंडकमा।
पृथवी पाणी वनस्पति। मनुष्य ने तिर्यंचमा ॥ गइ ते मरीने बेगतिमा जाय ॥
मनुष्य ने तिर्यंचमा। आगइ ते मनुष्य ने तिर्यंचनो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग
त्रण ॥ इति त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंडक संपूर्ण ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वैमा
निकनो दंडक॥तेहमा सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा सुधर्मे

इशाण ए बे देवलोके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सात हाथनी। त्रीजे चोथे देव
लोके ठ हाथनी॥ पाचमे ठठे देवलोके पाच हाथनी॥ सातमे आठमे देवलोके
च्यार हाथनी॥नवमे दशमे इग्यारमे। वारमे दे०। त्रण हाथनी॥नव ग्रैवेयकें
वेहाथनी ॥ च्यार अनुत्तर विमानमा एक हाथनी ॥ सर्वार्थसीधमां मुढा हाथ
नी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो। वार देवलोकसुधी ज० अंगु० सख्या० ॥उत्क्र
ष्टी लाष जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरस॥ कषाय च्यारे
पण लोभघणो॥संज्ञा चारे पण परिग्रहसज्ञा घणी।लेस्या पेहेले वीजेदेवलोके
एकतेजुलेस्या।त्रीजे चोथे पाचमे एकपदमलेस्या। ठठाथी माण्डी नव ग्रैवेयकमा॥
एक सुकललेस्या। अने पाचे अनुत्तर विमानमा १ परमसुकललेस्या ॥ इन्द्री
पाचे ॥ समुद्घात वार देवलोकसुधी ॥ पाच आहारकने केवल नही ॥ नव ग्रै
वेयकने पांच अनुत्तर विमानमां त्रण॥वेदनी ॥ कषाय ने मारणांतिक ॥ सज्ञी

एकला छे ॥ वेद पेहेले बीजे देवलोके बे वेद स्त्रीवेद । पुरुष वेद ॥ त्रीजाथी ते स
र्वार्थ सीधलगे एक पुरूष वेद॥पर्या ५ भाषामन भेलाबाधे॥दृष्टी बार देवलोकमा
त्रण दृष्टी ॥ नव ग्रैवेयकमा बे दृष्टी ॥ समकित ने मिथ्यात ॥ पाच अनुत्तर विमानमा
एक दृष्टी समकित॥ दर्शन त्रण ॥ ज्ञान त्रण॥ अज्ञान त्रण ते बार देवलोकने नव
ग्रैवेयकमा ॥ पाच अनुत्तर विमानमा अज्ञान नथी। जोग अगीयार च्यार मन
ना च्यार वचनना त्रण कायाना ॥ वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥
एव अगीयार ॥ उपयोग बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमा नव ॥ त्रण ज्ञान ॥
त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन एव नव ॥ पाच अनुत्तर विमानमा छ उपयोग ॥
त्रण ज्ञान ॥ त्रण दर्शन ए छ ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने ॥ उत्कृष्टो छ
दिसनो तथा बे प्रकारे उंज ने रोम तेपण अचेत ते पण सुभ आहार॥ उववाय ते
आवीने उपजे पेहेला देवलोकथी माण्डीने आठमा देवलोकसुधी बे दंण्डकना

मनुष्य ने तिर्यंचना । अने नवमेथी ते सर्वार्थसिधलगे एक मनुष्यनो आवे ॥ थिति पेहेले देवलोके जघन्य एक पल्यनी ॥ उत्कृष्टी बे सागरनी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी । उ० सात पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ॥ ज० एक पल्यनी । उ० पंचास पल्यनी ॥ बीजे देवलोके ज० एक पल्यनी जाजेरी ॥ उ० बे सा० जाजेरी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाजेरी । उ० नव पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाजेरी ॥ उ० पचावन पल्यनी ॥ त्रीजे देवलोके ज० बे सा० ॥ उ० सात सा० तिहां देवी नथी पण तेआवी जाय ॥ चोथे देवलोके ज० बे सा० जाजेरी ॥ उ० सात सा० जाजेरी ॥ पाचमे देवलोके ज० सात सा० ॥ उ० दस सा० ॥ छठे देवलोके ज० दस सा० उ० चउद० सा०॥ सातमे देवलोके ज० चउद० सा० उ० सतर० सा० ॥ आठमे देवलोके ज० सतर० सा० ॥ उ० अढार सा०॥ नवमे

देवलोके । ज० अढार सा० । उ० उगणीस० सा० ॥ दसमे देवलो...
पीस सा० । उ० वीस सा० ॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस सा० ॥ उ० एक
विस सा० ॥ वारमे देवलोके ज० एकविस सा० । उ० बाविस सा० ॥ प्रथम
ग्रैवेयके ज० वाविस सा० । उ० त्रेविस सा० ॥ वीजी ग्रैवेयके ज० त्रेविस सा०
उ० चोविस सा० । त्रीजी ग्रैवेयके ज० चोविस सा० ॥ उ० पचविस सा०
चोथी ग्रैवेयके ज० पचविस सा० । उ० छविस सा० । पाचमी ग्रैवेयके ज०
छविस सा० । उ० सत्याविस सा० ॥ छठि ग्रैवेयके ज० सताविस सा० उ०
अठाविस सा० ॥ सातमी ग्रैवेयके ज० अठाविस सा० । उ० उगणात्रिस सा०
॥ आठमी ग्रैवेयके ज० उगणत्रिस सा० । उ० त्रिस सा० । नवमी ग्रैवेयके ज०
त्रीस सा० नी । उ० एकत्रिस सा० । च्यार अनुत्तरविमानमा ज० एकत्रीस
सा० । उ० तेत्रिस सा० ॥ सर्वार्थसिधमा ज० ने उ० तेत्रीस सा० । समोहि

या मरण ने असमोहिया मरण ए बे मरण लाभे। चवण ते चविने पेहेला बीजा देवलोकना देवता जाय तो पाच दण्डकमा जाय। पृथवी पाणी वनस्पति ॥ मनुष्य ने तिर्यंच। ए पाच ॥ त्रीजाथी ते आठमा देवलोकना देवता जाय तो बे दण्डकमा मनुष्य ने त्रिजचमा ॥ नवमेथी मांडीने सर्वार्थसीधलगेना देवता। एक दण्डकमा जाय। मनुष्यमा जाय ॥ गइ ते मरीने पेहेलाथी मांडीने आठमा देवलोकना देवता बे गतिमा जाय। अने नवमाथी मांडीने सर्वार्थ सिद्धसुधिना एक मनुष्यनी गतिमां जाय। आगइ ते पेहेलाथी मांडीने आठमा देवलोकलगे बे गति नो आवे। मनुष्यने त्रिजच नो आवे। अने नवमाथी मांडीने सर्वार्थसिद्धलगे एक मनुष्य नो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण॥ इतिश्री चोविसमो वैमानिकनो दण्डक सपूर्ण ॥ २४ ॥ हवे सिधनो वीचार कहेछे। सीधने सरीर नथी॥ अवघेणा सीधनी अरूपिजीवना प्रदेशना घननी।ज० एक हाथ ने आठ

अगुलनी। मभम च्यार हाथ ने सोल अगुलनी। अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनु
प ने। बत्रीस अंगुलनी॥सिधनेसघयण नथी॥सिधने सठाण नथी।सिधने कषा
यनथी। सिधने सञ्ञा नथी। सिधने लेस्या नथी॥ सिधने इन्द्रीय नथी॥सिधने
समुद् घात नथी। सिधसञ्ञी असञ्ञी नथी॥सिधने वेद नथी॥सिधने प्रजा नथी॥
सिध समकितद्रष्टी छे॥ सिधने एक केवल दर्शन छे॥सिधने एक केवल ज्ञान
छे॥ सिद्धने अज्ञान नथी॥ सिधने जोग नथी।सिधने उपयोग बे छे॥ केवल
ज्ञान। केवल दर्शन॥सिधने आहार नथी॥ उववाय ते आवीने उपजे। एक दरु
कनो मनुष्यनो। सिधनी थितिनो छेहमो नथी॥ सिधने मरण नथी॥ सिधने
चववू नथी॥ गइ ते मरीने सिधने कोइ गतिमा जावु नथी। आगइ ते सिधमा
एक मनुष्य नो आवे॥ सिधने प्राण नथी। पण जाव प्राणबेछे केवल ज्ञान ने केवल
दर्शन। सिधनेजोग नथी॥इति सिद्धनो द्वार सपूर्ण इतिश्री लघुदरुकना बोल स

पूर्ण॥अथ गतागतना बोल लिख्यते ॥ पहिलीनर्कें आगत ॥२५॥ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ॥ ५ सञ्ज्ञीतिर्यंच ने ॥ ५ ॥ असञ्ज्ञीतिर्यंच ॥ ए ॥ २५ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ गत ॥ ४० ॥ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ने ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यंच । ए ॥ २० ॥ ना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ १ ॥ बिजी नर्कें आगत ॥ २० ॥ निते ॥ ५ ॥ असञ्ज्ञीतिर्यंचना प्रजाप्ता वर्ज्यों । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ २ ॥ त्रिजीनर्कें ॥ १ए ॥ भेदनि आगत ते । पूर्वें ॥ २० ॥ कह्या तेहमाथि ॥ १ ॥ भूजपर वर्ज्यों । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ३ ॥ चउथी नर्कें आगत १८ भेदनि । ते । पूर्वें १ए कह्या तेहमांथि ॥ १ ॥ खेचर वर्ज्यों । गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ पाचमी नर्कें आगत १७ भेदनि ते । पूर्वें १८ कह्या तेहमाथि ॥ १ ॥ थलचर वर्ज्यों ॥ गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ छठी नर्कें आगत ॥१६॥ भेदनि ते ॥ १७ ॥ पूर्वें कह्या तेहमांहिथि ॥ १ ॥ उरपर वर्ज्यों गत ॥ ४० ॥

नि पूर्ववत् ॥ ६ ॥ सातमी नर्के आगत १६ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ने ॥
॥ १ ॥ मछजलचर ए ॥ १६ ॥ ना प्रजाप्तानि । स्त्री वर्जी । गत ॥ १० ॥ भेद
नि ते ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यचना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥ दश भवनपति
॥ १५ ॥ पर्माधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यंतर ॥ १० ॥ जंभका । ए ॥ ५१ ॥ जातिना
देवतामा आगत ॥ १११ ॥ भेदनि ते ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना सञ्ज्ञीमनुष्य ॥ ५ ॥
सञ्ज्ञीतिर्यंच ॥ ५ ॥ असञ्ज्ञीतिर्यंच । ए ॥ १११ ॥ ना प्रजाप्तानि । गत ४६
नि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यंच ए २० ने ॥ ३ ॥ प्रथवी ॥ १ ॥
पाणि ॥ २ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ २३ ॥ ना अ प्र० । ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥
ज्योतषी ने पहिला देवलोकमा आगत ॥ ५० ॥ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी
॥ ५ ॥ सञ्ज्ञी तिर्यंच ने ॥ ३० ॥ अकर्मभूमी । ए ॥ ५० ॥ ना प्रजाप्तानि । गत
॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ ए ॥ बिजा देवलोकमा आगत ४० भेदनि ते पूर्वे ५०

ल्नेद कह्या तेहमाथि ॥ ५ ॥ हेमवय ने ॥ ५ ॥ एरणवय । ए ॥ १० ॥ ना प्र
जासा वर्ज्या । गत ॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ १० ॥ पहिला किल्बिपीमा आगत
॥ ३० ॥ ल्नेदनि ते । पूर्वे ॥ ४० ॥ कह्या तेहमाथि ॥ ५ ॥ हरिवास ॥५॥ रमक
वास । ए । १० प्रजासा वर्ज्यां । गत ॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ ११ ॥ त्रिजा दे
वलोकथि आठमा देवलोकसुधि ॥ ६ ॥ देवलोक ॥ ए ॥ लोकांतिक ॥ ९ ॥
किल्बिपी । ए । १७ जातिना देवतामा । आगत ॥ ७० ॥ ल्नेदनि ते ॥ १५ ॥
कर्मभूमी ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यंच । ए ॥ ७० ॥ ना प्रजासानि गत ॥ ४० ॥ निते ।
आगतनिपरे ॥ १७ ॥ नवमा देवलोकथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ४ देवलोक॥ए॥
ग्रैवेयक ॥ ५ ॥ अनुत्तर विमान ॥ ए ॥ १८ ॥ मा । आगत ॥१५॥ कर्मभूमीना
प्रजासानि । गत ॥ १५ ॥ नि ते आगतनिपरे ॥ १३ ॥ पृथिवी ॥ १ ॥ पाणि
॥ ९ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ मा आगत ॥ ९४३ ॥ ल्नेदनि ते ॥ १०१ ॥

सम्मुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥१७॥ कर्मभूमीना ॥ अप्र० ने प्रजाप्ता । एव॥ ॥ १३१ ॥ ने ॥ ४७ ॥ भेदतिर्यंचना । एव ॥ १७ए ॥ नी लटने ॥ ६४ ॥ भेद देवताना ते ॥ १० ॥ भवनपति ॥ १५ ॥ परमाधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यंतर॥१० जंभका ॥ १० ॥ ज्योतषी । एवं ॥ ६१ ॥ ने ॥ ए ॥ देवलोक ॥ एक किल्विषी॥ एव ॥ ६४ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ एवं ए४३ ॥ नि । गत ॥ १७ए ॥ नि । लटनि ॥ ॥ १४ ॥ तेउ ॥ १ ॥ वाउ ॥ ए ॥ ए ए मा आगत ॥ १७ए ॥ नि लटनि गत॥ ॥ ४७ ॥ भेदतिर्यंचनी ॥ १५ ॥ त्रिण विगलेंद्रियनि आगत ॥१७ए॥ भेदनि। गत पण १७ए भेदनि ॥ १६ ॥ असज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ १७ए नि लटनि गत ॥ ३एए भेदनि ते ॥ ५६ ॥ अंतरद्विपाने ॥ ५१ ॥ जातिना देवता । ते ॥ १० ॥ भवनपति ॥ १५ ॥ परमा धामी ॥ १६ ॥ वाणव्यतर ॥ १०॥ जंभका ए ॥ ५१ ॥ जातिना देवता ॥ एव सर्व मिलि ॥ १०७ ॥ भेद थया । अनो॥१॥

पहिली नर्के एव ॥ १०८ ॥ ना अप्र० । नेप्रजाप्ता एव ॥ २१६ ॥ अने । १७९ नि लट । सर्वमिली ॥ ३९५ ॥ भेदनि ॥ १७ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यंचमा आगत ॥२६७ भेदनि ॥ ते ८१ भेद देवताना । ते ९९ माहिथि ॥ ४ ॥ देवलोक ॥ ९ ॥ ग्रैवेयक ॥ ५ ॥ अनुत्तरविमान । ९ ॥ १८ ॥ वर्ज्या ने १७९ नि लट । एवं सर्वमिलि ॥ २६० ॥ ने ७ नर्कना प्रजाप्ता ॥ एवं ॥२६७॥ नि ॥ गत पाचेनि जुदी २ कहेछे ॥ जलचरनि ॥ ५२७ ॥ नि ते ५६३ मांहिथि । नवमा देवलोकथि सर्वार्थसिद्धसुधि ॥ १८ ॥ ना अप्र० ने प्रजा० । एव ३६ वर्ज्या । शेष॥५२७॥ रह्या ॥ उरपरनि गत ॥५२३॥ नि ते ॥ ५२७ ॥ माहिथि ॥ छठी ॥१॥ सातमी॥ ९ ॥ २ ॥ नर्कना । अप्र० । प्रजाप्ता । ९ ॥४॥ वर्ज्या ॥ थलचरनि गत ॥५२१ नि ते ५२७ माथि ॥ पाचमी ॥ १ ॥ छठी ॥ २ ॥ सातमी ॥ ३ ॥ ९ ॥ ३ ॥ नर्कना । अप्र० । प्रजा० । ९ ॥ ६ ॥ वर्ज्या ॥ खेचरनि गत ॥ ५१९ ॥ नि ते

पूर्वें ५७१ कह्या तेहमाथि । चोथिनर्कना अप्र० । प्रजा० । ए २ नेद वर्ज्या ॥
नुजपरनि गत ५१७ निते पूर्वें ॥ ५१ए ॥ कह्या तेहमाथि ॥ त्रिजीनर्कना ।
अप्र० । प्रजा० । ए ॥ २ ॥ नेद वर्ज्या ॥ १७ ॥ समुर्छिम मनुष्यमा आगत
१७१ नेदनि ते ॥१७ए॥ नि लटमाथि ॥७॥ तेज वाउना वर्ज्या । शेष॥१७१॥
नि । गत ॥ १७ए ॥ नि लटनि ॥ १ए ॥ सज्ञीमनुष्यनि आगत २७६ नेदनि
॥ १७ए ॥ नि लटमाहिथि तेज वाउना ७ वर्ज्या । शेष १७१ रह्या । अने ॥
॥एए॥ जातिना देवता प्रजासा एव ॥२७०॥ ने ६ नर्कना प्रजासा सर्व मिली
२७६ नि । गत ॥ ५६३ ॥ नेदनि ॥ २० ॥ ३० ॥ अकर्मनूमीमा आगत २०
नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मनूमी ॥ ५ ॥ संज्ञीतिर्यंच । ए ॥२०॥ प्रजासानि ॥ गत
जुदी २ कहेठे ॥ ५ ॥ देवकुरु ॥५॥ उत्तरकुरुनि गत ॥१२७॥ नेदनि ते ॥१०॥
नवनपति ॥ १५ ॥ परमाधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यतर ॥ १० ॥ जन्नका ॥ १० ॥

ज्योतषी ॥३॥ देवलोक । पहिलो । बिजोने ॥ १ ॥ किल्बिषी । ए ॥ ६४ ॥ जातिना देवता । अप्र० । प्रजा० । एव ॥१३८॥ नि गत ॥५॥ हरिवास ॥५॥ रम्यकवासनि गत ॥१३६॥ नि ते पूर्वे १३८ भेद कह्या । तेमाथि पहिला किल्बिषीनो अप्रजा० । प्रजा० । ए ॥३॥ भेद वर्ज्या ॥५॥ हेमवय ॥५॥ एरणवयनि गत ॥१३४॥ भेदनि । ते । पूर्वे १३६ भेद कह्या । तेहमाथि । बिजा देवलोकना । अप्र० । प्रजा० । ए ॥३॥ भेद वर्ज्या ॥३१॥ छपन्न अंतरद्विपमां आगत ॥३५॥ भेदनि ते ॥१५॥ कर्मभूमी ॥५॥ सज्ञीतिर्यंच ॥५॥ असज्ञीतिर्यंच । ए ॥३५॥ ना प्रजाप्तानि । गत ॥१०३॥ भेदनि ते ॥१०॥ भवनपति ॥१५॥ परमाधामी ॥१६॥ वाणव्यंतर ॥१०॥ जंभका । एव ॥५१॥ ना अप्र० । प्रजाप्ता । सर्व मिली १०२ भेद ॥३३॥ इति ॥३४॥ दंडकनि गता गत समाप्त ॥ हवे तिर्थंकरदेवमा आगत ॥३८॥ भेदनि ते ॥१३॥ देवलोक ॥९॥ लोकांतिका ॥९॥

ग्रैवेयक ॥५॥ अनुत्तरविमान । ने ॥३॥ नरकपहिली ॥ एवं ॥३८॥ प्रजासानि॥
गत मोक्षनि ॥२३॥ चक्रवतीमा आगत ॥८२॥ भेदनि ते ॥एए॥ जातिना देव
तामाहिथि ॥१५॥ परमाधामी ॥३॥ किल्विषी । ए ॥१८॥ वर्ज्यां । शेष ॥८१॥
रह्या ने ॥१॥ पहिली नरक । एव ८२ भेदनि ॥ गत नर कनि ॥७॥ नरकना ।
अप्र०ने प्रजासानि ॥२४॥ वलदेवमा आगत ॥८३॥ भेदनि ते ॥८२॥ पूर्वे कह्या
तोने ॥१॥ बीजी नरकवधि । एव ॥८३॥ निागत ॥७०॥ भेदनि ते ॥१२ देवलोक
॥ए॥लोकातिक ए ग्रैवेयक ॥५॥ अनुत्तरविमानाएव ३५ ना अप्र०प्रजासानि
॥२५॥ वासुदेवमा आगत ॥३२॥ भेदनि ते ॥१२॥ देवलोक ॥ए॥ लोकातिक
॥ए॥ ग्रैवेयक । ए॥३०॥ ने पहिली २ नरक । एव ३२ नि । गत १४ भेदनि ॥७॥
नरकना अप्र०॥प्रजासानि ॥२६॥ केवलीमा आगत ॥१०८॥ भेदनि ते ॥एए॥
भेद देवता माहिथि॥१५॥परमाधामी ने॥३॥किल्बिषीाए॥१८॥वर्ज्यां शेष ८१

रह्या ने ॥१५॥ कर्मभूमी ॥५॥ सन्नीतिर्यंच एव १०१ ॥ ने ४ नरक पहिलीने॥
पृथिवी १ पाणी २ वनस्पति ३ एव १०८ नि। गत मोक्षनि ॥२७॥ साधुमां आ
गत २७५ भेदनि ते ॥ १७९॥ नि लटमाथि तेउवाउना ८ वर्ज्या शेष ॥१७१॥
रह्याने ॥ ९९ जातिना देवता । अने ॥५॥ नरक ॥ एव ॥ २७५ नि ॥ गत॥७०॥
भेदनि । ते ॥ १२ देवलोक ॥ ९ लोकांतिक ॥ ९ ग्रैवेयक ॥ ५ ॥ अनुत्तरवि
मान । एव ॥ ३५ ना अप०॥ प्रजाप्ता एवं ॥७०॥ नि॥२८॥ श्रावकमां आ गत
॥२७६॥ भेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या ते । अने ॥ १ छठी नर्कवधि । ए २७६
नि ॥ गत ॥ ४२ ॥ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ने ॥ ९ लोकांतिक । ए २१ ना
अप० । प्रजाप्तानि ॥२९॥ समदृष्टिमा आगत॥३६३॥ भेदनि ते॥९९॥जातिना
देवता । प्रजाप्ता ॥१०१॥ सम्मुर्छिम मनुष्य अप्रजाप्ता ॥१०१॥ सन्नी मनुष्य प्र
जाप्ता ॥१५॥ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता ॥ ७ ॥ नरकना प्रजाप्ता । अने ॥ ४८ ॥

तिर्यंचमाहिथि तेउ वाउना ८ वर्ज्या। शेष ४० रह्या ते। एव सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २२२ नि ते ॥ ८१ ॥ जातिना देवता ते ९९ माथि १५ परमाधामिने ३ किल्विषिए १८ भेद वर्ज्या ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञी तिर्यंचने ॥ ६ नरक। एव ॥ १०७ ना। अप्र० । प्रजाप्ता । वसे चउद । अने ॥ ३ विगलें द्रिना। अप्र०। अने ॥ ५ असञ्ज्ञीतिर्यं चना। अप्र०। एव ॥ २२२ नि ॥ ३०॥ मि थ्यातिमा आगत ॥ ३७१ ॥ भेदनि ते। पूर्वे ॥ ३६३ ॥ कह्या तेहमा तेउ वाउना ॥ ८ ॥ वध्या ॥ गत ५५३ भेदनि ते ५६३ भेदमाथि ॥ ५ अनुत्तर विमानना । अप्र० ने प्रजाप्ता। ए ॥ १० वर्ज्यो ॥ शेष ५५३ नि ॥ ३१ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ मा ॥ ३७१ भेदनि आगत ते मिथ्यातिनिपरे। गतपुरुषनि ५६३ नि। स्त्रीवेदनि ॥ ५६१ ॥ नि ते सातमी नरकना २ भेद वर्ज्या ॥ ३२ ॥ नपुसकवेद मा आगत ॥ २८५ ॥ भेदनि ते ॥ ९९ ॥ जातिना देवता प्रजाप्ता ॥ १७९ नि लट

॥ ७ ॥ नारकी । ए ॥ २ए५ ॥ नि ॥ गत ॥ ५६३ ॥ नेदनि ॥ ३२ ॥ नारकी देवता
जे गतिमा जाय तिहां प्रजाप्ता थइनेज मरे ढे अपर्याप्ता मरे नहि माटे नारकिदेव
ता निगतमा अपर्याप्ता नानेद गणवा नहि केटलीक प्रतमा गएया नथि माटे इति
गतागतना बोल संपूर्ण॥ अथ श्रीगुणस्थान द्वार लिख्यते श्रीजिनवरेंद्रायनम ॥
॥ नाम १ लरकणगुण २ ठिइ ३ ॥ किरिया ४ सत्ता ५ बंध ६ वेदेय ७ उदेय ८ उदिरणा ए
चेव ॥ निर्जरा १० नाव ११ कारणा १२ ॥ १ ॥ परिसह १३ मग्ग १४ आयाय
१५ ॥ जीवाय नेदे १६ जोग १७ उविउग १८ ॥ लेस्सा १ए चरण २० सम्मत्तं
२१ ॥ अप्पाबहुत्त २२ गुणठाणेहिं ॥ २ ॥ ए द्वार २२ नी गाथा २ कहि । हवे
पहिलो नाम द्वार कहे ढे ॥ पहिलु मिथ्यात्व गुणठाणु ॥ १ ॥ बिजु सास्वादान
गु० ॥ २ ॥ त्रिजु समामिछत गु० ॥ ३ ॥ चोथु अविरति सम्यक्त्वदृष्टि गु० ॥ ४ ॥
पाचमुं देशविरति गु० ॥ ५ ॥ छट्ठु प्रमत्तसजति गु० ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्तसंज

ति गुण ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्ठिबादर गुण ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्ठिबादर गुण ॥ ए ॥
दशमुं सुक्ष्मसपराय गुण ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोह गुण ॥ ११ ॥ बारमुं क्षि
णमोह गुण ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगि केवलि गुण ॥ १३ ॥ चउदमुं अजोगि केवलि
गुणगणु । ए नाम द्वार समाप्त ॥ हवे लक्षणगुणद्वार कहे छे ॥ पहिला मिथ्यात्व
गुणठाणाना लक्षण कहेछे ॥ श्रीवीतरागनि वाणिथि ऊंछु । अधिक । विपरीत श्र
द्धेपरूपेफरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये । ऊणिपरूपणा ते केहने कहिये । जिम को
इ कहे जे जीव अंगुठा मात्र छे । तंदुल मात्र छे ॥ शामामात्रछे ॥ दीपक मात्र छे ते
हने ऊणिपरूपणा कहिये ॥ १ ॥ अधिकी परूपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव
सर्व लोक ब्रह्मारू मात्रमा व्यापि रह्यो छे । तेहने अधिकीपरूपणा कहिये ॥ २ ॥
विपरीतपरूपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंच भूत थकि आत्मा उपनो छे ॥
अने एहने विना शे जीव पण विणशे छे ॥ ते जरू छे । तेथकि चैतन्य उपजे विण

शे। इम कहे तेहने विपरीत परूपणा कहिये ॥३॥ ए मीथ्यात्व इम नव पदार्थनु विपरीतपणुं सरदहेपरूपे फरसे तेहने मीथ्यात्व कहिये ॥ अने जैनमार्गे आत्मा अकृत्रिम अखंड अविनाशी नित्य छे। शरिर मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गौतम स्वामिहाथ जोडि मान मोडि वंदणा नमस्कार करीने श्रीजगवंतने पूछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने स्युगुणनिपनो ॥ तिवारे श्रीजगवंते कह्यु जे। जीवरूप दडि ने। कर्मरूप ॥ गेडिये करि ॥ ४ गति ॥ २४ दम्क ८४ लाख जीवा जोनिमाहि वा रवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नहि ॥ १ ॥ हवे विजा गुणठाणाना लक्षण कहिये छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखाम्नु जोजन जिम्यो ॥ तिवारपछि वम न कर्यु ॥ तिवारे कोइक पुरुषे पुछ्यु जाइ काइ स्वाद रह्यो। तिवारे कहे जे थोडो स्वाद रह्यो। ते समान समकित। अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ विजो दृष्टांत कहेछे। जेहवो घटानो नाद पहिलो गहेर गंजीर। पछि रणको रहि गयो

गढेर गम्भीर समान समकितने । रणको रहि गयो ते समान मिथ्यात्व ॥ २ ॥ हवे त्रिजो दृष्टांत आंवानो । जीवरूप आंबो ने । परिणामरूप डाल । समकितरूप फल । ते मोहरूप वायरे करि ॥ परिणामरूप डालथि । समकितरूप फल त्रुट्यु । मिथ्यात्वरूप धरतीये आवि पड्यु नथि विचमा छे ॥ तिहासुधि सास्वादन कहिये ॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं । तीवारे मिथ्यात्व ॥ ३ ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहेछे । कृष्णपक्षी हतो ते शुकलपक्षी थयो ॥ अर्ध पुद्गल ससार भोगववो रह्यो । जिम कोइ पुरुषने माथे लाख क्रोड्नु देणु हतुं ते परदेश जइने कमाइ आव्यो देणुं देता । एक अधेलिनु देणु रह्युं तेहनु व्याज थयु । अर्ध पुद्गल ससार भोगववो रह्यो । सास्वादन समकित पांचवार आवे ॥ २ ॥ हवे त्रिजा गुणठाणाना लक्षण क

हियेछे ॥ त्रिज्ञुं मिश्रगुणठाणु । ते बे वस्तु मिलिने मिश्र श्रीखंडनो दृष्टांत ॥
श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो । मिठास समान समकित ने खटास समान मि
थ्यात्व ॥ ते जिनमार्ग पण रुडो जाणे तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे जिम
कोइक नगर बाहिर साधु महापुरुष पधार्याछे ॥ तेहने श्रावक वांदवा जा
यछे ॥ तेहवामां मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो ॥ तिणे पुछु जे किहां जावछो ॥
तिवारे श्रावक कहे जे । साधु महापुरुषने वांदवा जइयेछे । तिवारे मिश्रदृष्टि
वालो कहे ॥ एहने वांदे स्युं थाय ॥ तिवारे श्रावक कहे जे महालाभ थाय ॥
तिवारे कहे जे हुं पण आवुं । इम कहिने मिश्रगुणठाणावाले ॥ वांदवाने पग
उपाड्यो ॥ तेहवामा बिजो महामीथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुछ्यु के स्या
नणि जावछो ॥ तिवारे मिश्रगुणठाणावालो कहे जे । साधु महापुरुषने वांदवा
जइयेछे ॥ तिवारे महामिथ्याति कहे जे । एहने वांदे स्युं थाय । ए तो मेला घे

ला छे इम कहिने जोळवि नाख्यो ॥ पाछो बेठो तिवारे साधुज्ञानिने श्रावके वांदिने पुछ्यु जे स्वामि वांदवा पग उपाड्यो तेहने स्यु गुण निपनो । तिवारे ज्ञानिगुरु कहेछे । जे काला अभ्र सरिषो हतो ते गभ्रिदाळ सरिखो थयो । कृष्णपक्षी टळिने शुक्लपक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उंधो हतो ते सुंधो थयो । समकित सन्मुख थयो ॥ पण पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडि मान मोडि वंदणा नमस्कार करिने श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंत कहेछे ते जीव ४ गती ॥ २४ ॥ दंडकमा भमिने पण देशो उणु अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनमा उत्कृष्टो संसारनो पार पामसे ॥ ३ ॥ चोथु अविरतिसम्यक्त्व दृष्टिगुणठाणु तेहना स्यु लक्षण ॥ ७ ॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । अनतानुबंधिक्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ६ ॥

मिश्रमोहनीय ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकृतिने काइक उदय आवे ॥ तेहने क्षय करे ॥ अने
सत्तामा दल छे ॥ तेहने उपशमावे । तेहने ॥ क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते
सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ३ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमा
वे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांचवार आवे ॥ अने ३
प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे । तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्य
क्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि
१ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसीआदि छमासी तप जाणे
सरदहेपरूपे पण फरसि शके नहि तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान
मोडि श्रीभगवतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ ति
वारे श्रीभगवत कहे ॥ गौतम ते जीव समकित व्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्त्ततो ।
ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेद

कसमकित एकवार आवे एक समयनि स्थितो छे। पूर्वे जो आयुषनो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बोलमा बंध पामे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ भ वनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यंचनु आयुष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनु आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुंसकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमा आ युषनो बंध पामे नहि ॥ ते जीव ॥ ८ ॥ आचार समकितना आराधि। चतुर्विध संघनिवाछलका परमहर्ष भक्तिभरथको जघन्य पहिले देवलोके उपजे। उत्० । बारमे देवलोके उपजे। पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने व्रत पच्च खाण करि न शके। पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रवर्ज्यानो पालक कहिये दशाश्रुत स्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे दर्शन श्रावकने। अविरय सम दिठी कहिये ॥ ४ ॥ पांचमु देशविरतिगुणठाणु तेहना स्युं लक्षण। इग्यार प्र कृतिने क्षयोपशमावे। ते ॥७॥ पूर्वे कहि ते। अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥१॥

मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एवं ॥ ११ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तो। क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ॥ ११ प्रकृ० ढाके उपशमावेतो उपशम समकित कहिये । अने ॥ ११ प्रकृतिने काइक ढाके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ पाचमे गुणठाणे आव्योथको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसीआदि देइने छमासीतप जाणे सर दहेपरूपे शक्तिप्रमाणे फरसे । एक पच्चखाणथि मांभिने ॥ १२ व्रत ॥ ११ श्रावकनि पडिमा आदरे । जावत् संलेखणासुधि अनशन करि आराधे । ति वारे गौतमस्वामी हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवतने पुछता हवा । ते जी वने स्यु गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवते कह्यु ॥ ज० त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उ० ॥ १५ भवे मोक्ष जाय ॥ ज० पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्० १२ मे देवलोके उपजे । ते साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये ॥ पणपरिणा

मथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइछे ॥ अल्पइछा ॥ अल्पआरंभ ॥ अल्पपरि
ग्रही ॥ सुशिल । सुव्रति ॥ धर्मिष्ठ । धर्मव्रति । कल्पउग्रविहारी । महासवेगवि
हारी ॥ उदासी ॥ वैराग्यवत ॥ एकातआर्य ॥ सम्यगमार्गी ॥ सुसाधु । सु
पात्र ॥ उत्तम । क्रियावादि । आस्तिक्य । आराधक । जैनमार्गप्रभावक ॥ अ
रिहंतना शिष्य वर्णव्याछे । गीतार्थे जाणेछे सिध्धातनि शाख छे । श्रावकपणुं ।
एक भवमा प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥ छवु प्रमत सजतिगुणगणु तेहनु
स्यु लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ ॥ प्रकृति पूर्वे कहि ते ।
अने पच्चखाणावरणीयक्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥
एव ॥ १५ प्रकृतिने क्षयकरे तो । क्षायिकसमकित कहिये । अने ॥ १५ प्रकृ
तिने ढाके तो । उपशमसमकित कहिये ॥ अने काइ ढांके ने काइ क्षय करे तो ।
क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोरि मान मोरि श्री

नगवतने पुवता हवा। ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्रीनगवंते कह्यु जे। ते जीव डव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नो कारसीत्र्यादि ठमासि तप जाणे सरदहेपरूपे फरसे ॥ साधुपणु एक नवमा नवसेंवार त्र्यावे । ते जीव जघन्य । त्रिजे नवे मोक्ष जाय ॥ उत्० ॥ १५ नवे मोक्ष जाय ॥ त्र्याराधक जीव। जघ० । पहिले देवलोके उपजे। उत्० । त्र्यनुत्तर विमाने उपजे ॥ १७ नेदे सजम निर्मल पाले ॥ १९ नेदे तपस्या करे पण जोग चपल। कषाय चपल ॥ वचन चपल दृष्टि चपलताना त्र्यश्र ठे। तेणे करिने यद्यपि उतम त्र्यप्रमादिथका रहेठे। तोपण प्रमाद रहेठे माटे प्रमादपणे करि तथा कृष्णादिक लेश्या त्र्यशुन्न जोग कोइक काले प्रणति प्र णमेठे माटे कषाय प्रकृष्टमत्त थइ जायठे। तेहने प्रमत्त सजतिगुणठाणु कहिये ॥ ६ ॥ सातमुं त्र्यप्रमत्त सजतिगुणठाणु तेहनु स्युं लक्षण। पाच प्रमाद ठमे।

तिवारे सातमे गुणठाणे आवे। ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मेद। विसय। क
साय। निंद्रा। विगंहा। पंचमा नणिया। एए पच पमाया। जीवापरुति
ससारे ॥ १ ॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद टले अने ॥ १६ ॥ प्रकृतिने उपशमावे ॥१५॥
पूर्वे कहि ते। अने सजलनो क्रोध। एव ॥ १६ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे तेहने
स्यु गुण निपनो। ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि तथा
नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यानस्नुगतपणे जाणे सरदहेपरूपे फ
रसे। ते जीव जघन्य०। तेज नवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे नवे मोक्ष
जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनि थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्ठानने विषे।
अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे। तथा शुन लेश्यापणेज करिने ॥ नथि प्रमत्त क
षाय जेहने ॥ तेहने अप्रमत्त सजतिगुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥ आठमु नियट्टि
बादरगुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ १७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ १६ पूर्वे

कहि ते । अने सजळनो मान । ए ॥ १७ ॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडि मान मोडि । श्रीभगवतने पुछता हवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवते कह्यु ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण जे कोइ काळे जीवने कोइ दिने आव्यु नथि । ते श्रेणि छुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि । काळथि । भावथि । नोकारसी आदिदइ छमासी तप जाणे । सरदहेपरूपे फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्० । त्रिजे भवे मोक्ष जाय । इहाथि श्रेणि ॥ २ करे । उपशमश्रेणि ॥ १ ॥ ने क्षपकश्रेणि ॥ २ ॥ उपशम श्रेणिवाळो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दळने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणासुधिजाय ॥ पडिवाइ पण थाय । हाय मान परिणामपण परिणामे ॥ अने क्षपकश्रेणिवाळो जीव ते । मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दळने खपावतो शुध्द मूळमाथि निर्जरा करतो । नवमे दशमे

गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय । अपम्बिाइज होय । वर्द्धमान परिणाम परिणमे । हवे नियट्टिबादरनो अर्थ ते निवर्त्योंछे बादर कषायथि । बादर स पराय क्रियाथि । श्रेणि करवे । अन्यतर परिणामे । अध्यवसाय स्थिरथते बादर चपलताथि निर्टत्योछे । माटे नियट्टिबादरगुणठाणु कहिये । तथा बिज्जं नाम । अपूर्व करणगुणठाणु पण कहिये ॥ स्यामाटे जे ॥ कोइ काले जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहुति । अने ए गुणठाणे पहिलुज करण ते पंम्तिवीर्यनु आवरण क्षयकरणरूपकरणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे तेहने अपूर्वकरण गु णठाणु कहिये ॥ ८ ॥ हवे नवमु अनियट्टिबादरगुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ए कविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥ १७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने सजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुसकवेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमी मान मोमी श्रीजग

हाथ जोमि मान मोमि ॥ श्रीजगवतने पुछता हवा स्वामिनाथ । ते जीवने स्युं गुण निपने । तिवारे जगवते कह्युं । ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि जावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छमासी तप निरजिलाष निर्वेछक निवेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहेपरूपे फरसे ते जीव । जघन्य० तेज जवे मोक्ष जाय । उत्० । त्रीजे जवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोम्कि लगारेक पातली सी ॥ सपराय क्रिया रहि छे । तेहने सुक्ष्मसंपराय गुणठाणु कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमु उपशांतमोहगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ २८ प्रकृति ने उपशमावे ते ॥ २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोज ॥ १ ॥ एव ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । जस्म जारि प्रछन्न अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि श्रीजगवतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे

श्रीभगवते कह्यु । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि
नोकारसी आदि देइने छमासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥
जाणे सरदहेपरूपे फरसे । एहवामा जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमा
जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो
कषाय अग्नि प्रकटे पछि पडे दशमांथि सर्वथा पडे तो पहिले गुणठाणे
जाय । पण इग्यारमेथि चढवु तो नथि । उपशातते उपशाम्यो छे मोह सर्वथा
जले करि अग्नि ढलव्यानिपरे टाल्यो नहि । ढाक्योछे माटे उपशातमोह गु
णठाणु कहिये ॥ ११ ॥ बारमु क्षीणमोह गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण जे २८
प्रकृति ने सर्वथा खपावे । क्षपकश्रेणि । क्षायकभाव । क्षायक समकित ॥ क्षा
यकजथाख्यातचारित्र ॥ करणसत्य । जोगसत्य । भावसत्य अमायी अकषायी
वीतरागी । भावनिर्ग्रंथ । सपूर्ण संबुडा।सपूर्ण भावितात्मा ॥ माहातपस्वी । महा

सुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानि ॥ वर्द्धमान परिणा
मी । अपम्चिाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्भव
ठे नहि । ठेहले समये पाच ज्ञानावरणिय नव दर्शनावरणिय पचविधअंतरा
यक्षयकरणोद्यमकरि तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि केवल ज्योति
प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कस्योछे मोह सर्वथा जेगुणठाणे ॥ तेहने क्षीण
मोह गुणठाणु कहिये ॥ १२ ॥ तेरमु सजोगी केवलि गुणठाणु तेहनु । स्मु ल
क्षण । दश बोलसहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥ १ ॥ सशरिरी॥२॥
सलेशी ॥ ३ ॥ शुकललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ५ ॥ क्षायकसमकित
॥ ६ ॥ पंम्डितवीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन
॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतमुहुर्त्त । उत्० । देशेऊणी पूर्व
कोम्डिसुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने॥बिजा त्रिजा

शुक्लध्यानना ॥ पायाने ध्याइने चउदमे जाय ॥ सजोगी ते शुन्न मन्न वचन कायाना जोगसहित ठे वाह्यज्यचलोपकरण ठे। गमनागमनादिक चेष्टा शुन्न सहित ठे। केवल ज्ञान केवलदर्शन। उपयोग समयातर। अविछिन्नपणे शुद्ध प्रणमे माटे सजोगि केवलिगुणठाणु कहिये ॥ १३ ॥ हवे चउदमुं अजोगी केवली गुणठाणु। तेहनु स्यु लक्षण। शुक्लध्याननो चोथो पायो समुछिन्नक्रिय अनतरअप्रतिपाती। अनिवृत्तिध्याता मनजोग रुंधि वचनजोग रुधि काय जोग रुधि आन प्राणनिरोध करि रूपातीत परमशुक्लध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोलसहित विचरे। तेरमे ॥ १० ॥ बोल कह्या तेहमाथि। सजोगी ॥ १ ॥ स लेशी ॥ २ ॥ शुकल लेशी ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ वर्जीने शेष ॥ ७ ॥ बोलसहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनिपरे। अमोल। अचल। स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पचलघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेप वेद

नाय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण क
रिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक । तेजस कार्मण । सर्वथा छांमिने समश्रेणि
रुजुगति अन्य आकाश प्रदेशानावगाहतो अणफरसतो । एक समय मात्र
मा । उर्द्धगति । अविग्रहगतिये तिहा जाय । एरंडबीज बंधन मुक्तवत् । निर्लेप
तुंबिवत् । कोदंड मुक्तबाणवत् इंधनवन्हिमुक्त धुम्रवत् । तिहां सिद्ध क्षेत्रे
जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय । बुद्ध थाय ॥ पारागत थाय । परंपरगत थाय ।
सकल कार्य अर्थसाधिकृत कृतार्थ । निष्ठितार्थ । अतुल शुखसागर निर्मग्नसा
दिअनंत भागे सिद्ध थाय ॥ ए सिद्ध पदनो भावस्मरण ॥ चिंतन मनन कदा
काले मुजने होशे । सो घटि पल धन्य सफल होशे ॥ हवे अजोगी ते । जो
गरहित केवलसहित विचरे तेहने अजोगी केवली गुणठाणु कहिये ॥ १४ ॥
इति लक्षण गुणद्वार बीजो संपूर्ण ॥ २ ॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे ॥ प

पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे ॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अतपण नथि ते अभव्यजीव आश्रि मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते भव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ २ ॥ सादियासपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि पण छे ने अत पण छे ते पडिवाइ समदिठिना मिथ्यात्वआश्रि तेह नी स्थिति जघन्य । अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्० । अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणी ॥ पछि अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ बिजा गुणठाणानि स्थिति । जघ० ॥ १ समय । उत्० ॥ ६ आवलिकाने ॥ ७ समयनि ॥ २ ॥ त्रिजा गुणठाणानि स्थिति । ज० । उ० । अंतर्मुहूर्त्तनी ॥३॥ चोथागुणठाणानि स्थिति ज० । अंतर्मुहूर्त्त । उ० ॥ ६६ सागरोपमझाझेरानि ॥ ते ३३ सागरोपमनि स्थितिये ॥ ३ वार वारमे देवलोके उपजे । त्रिण पुर्वकोडि अधिक मनुष्यना

नव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमां ३३ सागरोपमनि स्थितिये उपजे ॥ ३३ ङ गसठ सागरोपमने पूर्वकोमि ३ अधिक मनु ष्यना नव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पाचमा ठठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति ज० अत० उ० देशोउणि ते साढाआठ वर्षे उणि पूर्वकोमनि ॥ सातमाथि ते इग्यारमा गु० सुधि ज० ॥ १ समय० ॥ उ० अत । बारमा गु० । स्थिति ज० । उ० । अत० ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पाच न्हस्व अक्षर । अं । इं । उं । ऋं । लृं । बोलवा प्रमाणे जाणवि । इति त्रिजो स्थितिद्वार समाप्त ॥ ॥ ३ ॥ हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४ ॥ क्रिया लाभे । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ बिजे । चोथेगु० ॥ २३ क्रिया लाभे इरिया वहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पाचमे गु० ॥ २२ क्रिया लाभे मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ ठे

गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे । सातमे गुणठाणेथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाभे । चउदमे गुण०कोइ क्रिया लाभे नहि ॥ इति ॥४ थो ॥ क्रियाद्वार समास ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिलागुणठाणाथिते इग्यारमा गुणठाणा सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । बारमे ॥७॥ कर्मनि सत्ता । १ मोहनियकर्म वर्जिने॥ तेरमे चउदमे गुण० ॥ ४ ॥ कर्मनि सत्ता । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति पाचमो सत्ताद्वार समास ॥ ५ ॥ हवे छठो बंधद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिछु गुणठाणु वर्जिने ॥ ८ ॥ कर्म बाधे । अने जो ॥ ७ ॥ बाधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे नवमे गु० ॥ ७ ॥ कर्म बांधे । आयुष वर्जिने ॥ दशमे गुण० ॥ ६ ॥ कर्म बाधे ।

आयुष ॥ १ ॥ ने मोहनीय । ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ ॥ सातावेदनीय बांधे ॥ चउदमे गुण० । अबंध० इति ॥ ६ ठो ॥ बंधद्वार सम्मत्त ॥ ६ ॥ हवे ॥ ७ ॥ मो वेद ने ॥ ८ ॥ मो उदयद्वार जेलो कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ८ ॥ नो उदया इग्यारमे बारमे ॥ ७ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ७ ॥ नो । उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ ॥ नो उदय वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्त ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ ॥ कर्मनि उदीरणा । तथा ॥ ७ ॥ नीकरतो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ ॥ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने । तथा ॥ ॥ ६ ॥ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे

॥ ६ ॥ नि उदीरणा करे ॥ आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ।
मने ॥ ५ ॥ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए
॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे वारमे ॥ ५ ॥ नि उदीरणा । आयुष ॥ १ ॥ मोह
नीय ॥ २ ॥ वेदनीय । ए ॥ ३ ॥ वर्जिने । तथा ॥ २ ॥ नि करे तो । नाम ॥१॥
गोत्र ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नि ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ २ ॥ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥
॥ १ ॥ गोत्र ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नि करे ॥ चउदमे गुण० उदीरणा करे नहि ॥
इति ॥ [illegible] ॥ मो उदीरणाद्वार समाप्त ॥ ए ॥ चेवक० निश्चये ॥ हवे ॥ १० ॥
[illegible] र कहेछे ॥ पहिलाथि ते ॥ ११ ॥ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ ॥ कर्म
[illegible] जरा ॥ वारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि निर्जरा । मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे
॥ ४ ॥ कर्मनि निर्जरा । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥
[illegible] ४ ॥ नि । इति ॥ १० मो निर्जराद्वार समाप्त ॥ १० ॥ हवे ६

ग्यारमो जावद्वार कहेछे ॥ उदयजाव ॥ १ ॥ उपशमजाव ॥ २ ॥ क्षायकजाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमजाव ॥ ४ ॥ पारिणामिकजाव ॥ ५ ॥ सनिवाइजाव ॥ ६ ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ३ ॥ जाव । उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ पारिणामिक ॥ ३ ॥ बिजे गु० चोथे गु० पाचमे गु० छठे गु० सातमे गु० आठमेथि ते इग्यारमा गुणठाणासुधि उपशम श्रेणिवालाने ॥ ४ ॥ जाव उदय ॥ १ ॥ उपशम ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ पारिणामिक ॥ ४ ॥ तथा कोइक उपशमने ठेकाणे । क्षायकपण कहेछे ॥ अने ८ माथि मांडिने बारमासुधि । क्षपकश्रेणि वालाने ॥ ४ ॥ जाव उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ पारिणामिक ॥ ४ ॥ तेरमे चउदमे गु० ॥ ३ ॥ जाव । उदय ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ पारिणामिक ॥ ३ ॥ सिद्धमां ॥ २ ॥ जाव । क्षायक ॥ १ ॥ पारिणामिक ॥ २ ॥ इति ११ मो जावद्वार समाप्त ॥ हवे ॥ १२ ॥ मो कारणद्वार कहेछे ॥ कारण

॥ ५ ॥ कर्मबंधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय ॥ ४ ॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । त्रिजे गु० ॥ ५ ॥ कारण लाने ॥ बीजे चोथे ॥ ४॥ कारण लाने ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पाचमे छठे गुण० ॥ ३ ॥ कारण लाने ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ सातमेथि ते दशमा गु णठाणासुधि ॥ २ ॥ कारण लाने ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे १ कारण लाने ते ॥ जोग ॥ १ ॥ चउदमे कोइ कारण नथि । इति १२ मो कारणद्वार समाप्त ॥ १२ ॥ हवे १३ मो परिसहद्वार क हेछे ॥ पहिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि यद्यपि परिसह २२ लाने पण इ स्व रूप छे । निर्जरारूप प्रणमे नहि ॥ पाचमाथि ते ए मा गुणठाणासुधि २२ परिसह लाने ॥ एक समये २० वेदे । टाढनो तिहां तापनो नहि तापनो तिहा टाढनो नहि ॥ चालवानो तिहा बेसवानो नहि ॥ बेसवानो तिहा चालवानो

नहि ॥ दशमे इग्यारमे वारमे ॥ १४ ॥ परिसह लाभे ॥ आठ ज
कर्मने उदये हता ते वर्ज्यां ते कहेछे ॥ अचेलनो ॥ १ ॥ अरतिनो ॥२॥ स्त्रीनो
॥ ३ ॥ वेशवानो ॥ ४ ॥ आक्रोशनो ॥ ५ ॥ मेलनो ॥ ६ ॥ सत्कार पुरस्कारनो
॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ चारित्र मोहनीय कर्मने उदये हता ते ॥ नें ॥ ८ ॥ मो दशए
परिसह ॥ दर्शन मोहनीयने उदये हतो ते ॥ ए ८ वर्जिने शेष ॥ १४ रह्या ॥ तेमाहि
जाएक समये ॥ १२ ॥ वेदे ॥ टाढनो तिहा तापनो नहि । तापनो तिहा टाढनो
नहि ॥ चालवानो तिहा थानकनो नहि । थानकनो तिहा चालवानो नहि ॥
तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ११ ॥ परिसह लाभे ॥ पूर्वे ॥ १४ ॥ कह्या तेहमाथि ॥
प्रज्ञानो ॥ १ ॥ अज्ञाननो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ ज्ञानावरणिय कर्मने । उदये हता
ते अने ॥ १ ॥ अलाभनो अंतरायकर्मने उदये हतो ते । ए । ३ वर्जिने । शेष
॥ ११ ॥ रह्या ते माहिला ॥ १ ॥ समये ए वेदे ॥ टाढनो तिहा तापनो नहि ।

॥ ५ ॥ कर्मवधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय ॥ ४ ॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । त्रिजे गुo ॥ ५ ॥ कारण लाभे ॥ वीजे चोथे ॥ ४॥ कारण लाभे ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पाचमे छठे गुणo ॥ ३ ॥ कारण लाभे ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ सातमेथि ते दशमा गु णठाणासुधि ॥ २ ॥ कारण लाभे ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे ॥ इग्यारमे वारमे तेरमे १ कारण लाभे ते ॥ जोग ॥ १ ॥ चउदमे कोइ कारण नथि । इति १२ मो कारणद्वार समाप्तं ॥ १२ ॥ हवे १३ मो परिसहद्वार क हेछे ॥ पहिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि यद्यपि परिसह २२ लाभे पण इ ख रूप छे । निर्जरारूप प्रणमे नहि ॥ पाचमाथि ते ए मा गुणठाणासुधि २२ परिसह लाभे ॥ एक समये २० वेदे । टाढनो तिहां तापनो नहि तापनो तिहा टाढनो नहि ॥ चालवानो वेसवानो नहि ॥ वेसवानो [

पमे तो । आठमे चोथे आवे । अने चमे तो दशमे जाय ॥ दशमे मार्गणा ॥४॥
पमे तो नवमे चोथे आवे । चढे तो इग्यारमे वारमे जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥
॥ २ ॥ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय ॥ पमे तो दशमे तथा पहिले आवे ।
चढवु नथि ॥ वारमे मार्गणा ॥१॥ तेरमे जाय पमवु नथि ॥ तेरमे मार्गणा ॥१॥
चउदमे जाय । पमवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय । इति मा
र्गणाद्वार १४ मो समाप्त ॥ १४ ॥ हवे पनरमो आत्माद्वार कहेछे ॥ आत्मा ॥
॥ ८ ॥ द्रव्यआत्मा ॥ १ ॥ कपायआत्मा ॥ २ ॥ योगआत्मा ॥ ३ ॥ उपयोग
आत्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानआत्मा ॥ ५ ॥ दर्शनआत्मा ॥ ६ ॥ चारित्रआत्मा ॥ ७ ॥
वीर्यआत्मा ॥ ८ ॥ पहिलेत्रिजे गुण० ॥ ६ ॥ आत्मा । ज्ञान ॥ १ ॥ ने चारित्र
॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ बिजे चोथे गुण० ॥ ७ ॥ आत्मा । चारित्र वर्जिने ॥
पाचमे गुणठाणे ॥ पण ॥ ७ ॥ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥ छठेथि दशमा गु

णठाणासुधि ॥ ८ ॥ आत्मा । इग्यारमे वारमे तेरमे ॥ ७ आत्मा ॥ कषाय व र्जिने ॥ चउदमे ६ आत्मा ॥ कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमा ॥ ४ ॥ आत्मा । ज्ञानआत्मा ॥ १ ॥ दर्शनआत्मा ॥ २ ॥ उव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥ ४ ॥ इति १५ मो आत्माद्वार समाप्त ॥ १५ ॥ हवे १६ मो जीवन्नेदद्वार कहेछे । पहिले गुणठाणे ॥ १४ ॥ नेद । जाने ॥ बिजे गुण० ॥ ६ ॥ नेद जान्ने ॥ बेइंद्रिय ॥ १ ॥ तेइंद्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असंज्ञितिर्यंचपंचेंद्रिय ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ ना अपर्जाप्ता ॥ ने ॥ सज्ञी पचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ॥ ॥ ६ ॥ त्रिजे गुण० ॥ १ ॥ सज्ञी पचेंद्रियनो पर्जाप्तो जान्ने । चोथे गुणठाणे ॥ २ ॥ नेद जान्ने । सज्ञी पचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने । पर्जाप्तो ॥ ए ॥ २ ॥ पाचमाथि ते ॥ १४ ॥ मा गुणठाणासुधि ॥ १ ॥ संज्ञि पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो जान्ने ॥ इति १६ मो जीवन्नेदद्वार समाप्त ॥ हवे १७ मो जोगद्वार कहेछे ॥

पहिले बिजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥ १३ ॥ लाभे । बे । आहारकना वर्जिने ॥
त्रिजे गुण० १० जोगलाभे ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ १ ॥ उदारिकनो
॥ १ ॥ वैक्रेयनो । ए ॥ १० ॥ लाभे ॥ पाचमे गुणठाणे ॥ १२ ॥ जोग ॥ आ
हारकना ॥ २ ॥ ने एक कार्मणनो । ए ॥ ३ ॥ वर्जीने ॥ १२ ॥ लाभे ॥ छठे
गुण० ॥ १४ ॥ जोग लाभे ॥ १ ॥ कार्मणनो वर्जिने । सातमे गुण० ॥ ११ ॥
जोग ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ १ ॥ उदारिकनो ॥ १ ॥ वैक्रेयनो॥ १ ॥
आहारकनो । एव ॥ ११ ॥ आठमाथि मांम्ने ॥ १२ ॥ मा गुणठाणासुधि
जोग ॥ ए ॥ लाभे ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ने ॥ १ ॥ उदारिकनो । ए
॥ ए ॥ तेरमे गुणठाणे । जोग ॥ ७ ॥ लाभे ॥ बे मनना । बे वचनना । ए ॥ ४ ॥
ने उदारिकनो ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥२॥ कार्मणकायजोग ॥ ३ ॥ एव ॥७॥
चउदमे गुण० जोग नथि । इति १७ मो जोगद्वार समाप्त ॥ १७ ॥ हवे ॥ १८ ॥ मो

उपयोगद्वार कहेछे ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ ॥
अज्ञानने ॥ ३ ॥ दर्शन । एव ॥ ६ ॥ विजेचोथे पाचमे गुण० ॥ ६ ॥ उपयोग
लाभे ॥ ३ ॥ ज्ञान ॥ ३ ॥ दर्शन ॥ एवं ॥ ६ ॥ छठाथि ते वारमा गुणठाणा
सुधि उपयोग ॥ ७ ॥ लाभे ॥ ४ ॥ ज्ञानने ॥ ३ ॥ दर्शन । एव ॥ ७ ॥ तेरमे
चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमा ॥ २ ॥ उपयोग । केवल ज्ञान ॥ १ ॥ ने ।
केवलदर्शन ॥ २ ॥ इति १८ मो उपयोगद्वार समाप्त ॥ १८ ॥ हवे १९ मो
लेशाद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ ॥ लेशालाभे ॥ सा
तमे गुण० उपजि ॥ ३ ॥ लेशा लाभे । आठमेथि मान्ने वारमा गुणठाणा
सुधि ॥ १ ॥ शुकललेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥१॥ परमशुकललेशा लाभे।
चउदमे गुण० लेशा नथि । इति १९ मो लेशाद्वार समाप्त ॥ १९ ॥ हवे २०
मो चारित्रद्वार कहेछे । पहिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोइ चारित्र नथि ।

पाचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे। छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ ॥ चा
रित्र लाभे। सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥ २ ॥ परिहार
विशुद्धचारित्र ॥३॥। प ॥३॥ लाभे। आठमे नवमे गुणठाणे ॥२॥ चारित्र लाभे।
सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ दशमे गुण० १ सुक्ष्मसंपरायचारित्र
लाभे॥ इग्यारमेथि ते चउदमा गुणठाणासुधि १ जथाख्यातचारित्र लाभे ॥
इति २० मो चारित्रद्वार समाप्तं ॥ २० ॥ हवे २१ मो समकितद्वार कहेछे। प
हिले ने त्रिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ बिजे गुण० १ सास्वादान समकित
लाभे ॥ चोथेथि ते सातमा गुणठाणासुधि ॥ ४ ॥ समकित लाभे। उपशम ॥
॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥२॥ वेदक ॥३॥ क्षायकसमकित ॥४॥ आठमे नवमे गुण
ठाणे ॥ ३ ॥ समकित लाभे। उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥३॥
दशमे इग्यारमे गुणठाणे ॥२॥ समकित लाभे। उपशम ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥

वारमे तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमा ॥ १ ॥ क्षायकसमकित लाभे ॥ इति ३१ मो समकितद्वार समाप्त ॥ ३१ ॥ हवे ३२ मो अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथि थोडा इग्यारमा गुणठाणावाला ॥ एक समये उपशमश्रेणिवाला ५४ जीव लाभे माटे ॥ १ ॥ तेथि वारमा गुणठाणावाला संखेजगुणा ॥ एक समये क्षपकश्रेणिवाला । एकसो ने आठ जीव लाभे माटे ॥२॥ तेथि आठमा नवमा दशमा गुणठाणावाला सखेज गुणा॥ जघन्य वसे॥उत्० नवसें लाभे माटे ॥३॥ तेथि तेरमा गुणठाणावाला सखेजगुणा ॥ जघ० बे क्रोडि ॥ उत्०नव क्रोडि लाभे माटे ॥४॥ तेथि सातमा गुणठाणावाला सखेजगुणा । जघ० । वसे क्रोडि। उत्० ।नवसें क्रोडि लाभे माटे ॥५॥ तेथि छठा गुणठाणावाला सखेजगुणा। जघ० । बे हजार क्रोडि। उत्० । नव हजार क्रोडि लाभे माटे ॥ ६॥ तेथि पांचमा गुणठाणावाला असखेजगुणा । तिर्यंच श्रावक लभ्या माटे ॥ ७ ॥

तेथि बिजा गुणठाणावाला असखेजगुणा ४ गतिमा लाभे माटे ॥ ८ ॥ तेथि त्रिजा गुणठाणावाला असंखेजगुणा ॥ ४ गतिमां विशेष छे माटे ॥ ए ॥ तेथि चोथा गुणठाणावाला असखेजगुणा घणि स्थिति छे माटे ॥१०॥ तेथि चउदमा गुणठाणावाला ने सिद्धभगवतजि अनतगुणा ॥ ११ ॥ तेथि पहिला गुणठाणा वाला अनतगुणा ॥ एकेन्द्रिय प्रमुख सर्व मिथ्यादृष्टि छे माटे ॥ १२॥ इति २२ मो अल्पबहुत्वद्वार समाप्त ॥२२॥ इति गुणठाणाना २२ द्वार समाप्तं ॥ हवे भाव ६ कहेछे ॥ उदयभाव ॥१॥ उपशम भाव ॥२॥ क्षायकभाव ॥३॥ क्षयोप शमभाव ॥ ४ ॥ पारिणामिकभाव ॥ ५ ॥ सन्निवाइभाव ॥ ६ ॥ हवे उदयभा वना ॥ २ ॥ भेद ॥ जीवउदयनिष्पन्न ॥ १ ॥ ने अजीवउदयनिष्पन्न ॥ २ ॥ जीवउदयनिष्पन्नना ॥ ३३ ॥ बोल पामे ॥ ४ ॥ गति ॥ ६ ॥ काय ॥६॥ लेश्या ॥ ४ ॥ कषाय ॥ ३ ॥ वेद । एव ॥ २३ ॥ ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥

अविरति ॥ ३ ॥ असञ्ज्ञिपणु ॥ ४ ॥ आहारकपणु ॥ ५ ॥ छद्मस्थपणु ॥ ६ ॥
सजोगिपणुं ॥ ७ ॥ संसार परियट्ठणा ॥ ८ ॥ असिद्ध ॥९॥ अकेवलि ॥ १० ॥
एव ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥५॥वर्ण ॥ ३ ॥ गंध
॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श ॥ ५ ॥ शरिर ॥ ५ ॥ शरिरना व्यापार । एवं ॥३०॥ एव
उभय मिलिने ॥३३॥ने॥३०॥ त्रेशठ । भेद । उभयभावना कह्या ॥१॥ हवे उपश
मभावे ॥ ११ ॥ बोल छे । च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम॥५॥
द्वेषनो उपशम ॥६॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥७॥ चारित्रमोहनियनो उपशम
॥८॥ एव ॥८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने उवस मियादंशणलद्धि ते समकित ॥९॥
उवसमियाचरित्तलद्धि॥१०॥उवसमियाअकषायछउमछवीतरागलद्धि ॥११॥
एव ॥ ११ ॥ हवे चायक भावे ३७ बोल छे ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणिय॥ ९ ॥ देश
नावरणिय ॥२॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥४॥ कषायनि ॥१॥द

र्शनमोहनीयनि ॥ १ ॥ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुपनि ॥ २ नामनि ॥२॥
गोत्रनि ॥ ५ ॥ अतरायनि । एव ॥३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकभाव
कहिये । ते ए बोल पामे ॥ क्षायकसमकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र
॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥४॥ अने क्षायकदानादिलब्धि ॥ ५ ॥
एम ए बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमभावे ॥ ३० ॥ बोल छे ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रथम
॥३॥ अज्ञान ॥३॥ दर्शन ॥ ३ ॥ दृष्टि ॥ ४ ॥ चारित्र प्रथम ॥ २ ॥ चरित्ताचरि
त्त ते श्रावकपणु पामे ॥ १ ॥ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ ॥ चउद पूर्व ज्ञाननी
प्राप्ति ॥ ५ ॥ इन्द्रिय ५ नि लब्धि ॥५॥ दानादिलब्धि । एव सर्व मिली ॥३०॥
बोल ॥ ४ ॥ हवे पारिणामिक भावना ॥ २ ॥ भेद । सादिपारिणामिक ॥ १ ॥
अनादिपारिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपारि
णामिकना अनेक भेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तंदुल ए आदि ७३

बोल भगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपारिणामिकभावना ॥ १० ॥ बोल ॥ धर्मा
स्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्ति
काय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ अलोक ॥ ८ ॥
भव्य ॥ ९ ॥ अभव्य ॥ १० ॥ एवं ॥ १० ॥ ५ ॥ हवेसन्निवाइभावना २६
भागा ॥ १० ॥ द्विकसजोगीना ॥ १० ॥ त्रिकसजोगीना ॥५॥ चउकसजोगीना
॥ १ ॥ पचसजोगिनो । एव ॥ २६ ॥ भागा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार
सिद्धातथि जाणवो ॥ ६ ॥ हवे ॥ १४ ॥ गुणठाणा उपर ॥ १० ॥ क्षेपकद्वार
उतारेछे । तेहमा प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ २५ ॥ कषाय ॥ १५ ॥ जोग एव ४०
ने ॥ ६ ॥ काय ॥ ५ ॥ इन्द्रिय ॥ १ ॥ मन ए ॥ १२ ॥ अव्रत । एव ॥ ५२ ॥ ने
॥ ५ ॥ मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु । पहिले गुणठाणे ॥ ५५ ॥ हेतु ते आहार
कना २ वर्जिने ॥ १ ॥ विजे गु० ५० हेतु ते ५५ माथि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥२॥

त्रिजे गुण० ४३ हेतु ते ५७मांथि अनंतानुबंधि॥४॥उदारिकनो मिश्र ॥१॥वैक्रेयनो मिश्र ॥ २ ॥ आहारकना ॥२॥ मिथ्यात्व ॥ ५ एवं ॥ १४ ॥ वर्ज्यां शेष ४३ ॥ ३ ॥ चोथे गुण० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र ॥ १ ॥ वैक्रयनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मण कायजोग ॥ ३ ॥ ए ३ वध्या सर्व मिलिने ४६ ॥ ४ ॥ पाचमे गुणठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेह्माथि अप्रत्याख्यानीनि चोकडि ॥ ४ ॥ त्रश कायनोअव्रत ॥ १ ॥ कार्मणकायजोग ॥ १ ॥ एव ६ घट्या शेष ४० हेतु ॥ ५ ॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या तेह्माथि प्रत्याख्यानोवरणियनि चोकडि ॥४॥ पाच स्थावरनो अव्रत ॥ ५ ॥ इन्द्रिय ५ नो अव्रत ॥ ५ ॥ ने एक मननो अव्रत ॥ १ ॥ एव ॥ १५ ॥ वर्ज्यां शेप ॥ २५ ॥ रह्या ने आहारकना ॥ २ ॥ वध्या । एव सर्व मिलि ॥ २७ ॥ हेतु ॥ ६ ॥ सातमे गुण० ॥ २४ ॥ हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेह माथि ॥ उदारिकमिश्र ॥ १ ॥ वैक्रियमिश्र ॥ २ ॥ आहारकमिश्र । ए ॥३॥ वर्ज्यां ।

शेष ॥ २४ ॥ हेतु ॥ ७ ॥ आठमे गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमाथि । वैक्रे
यनो ॥ १ ॥ आहारकनो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्या । शेष ॥ २२ ॥ हेतु ॥ ८ ॥ नवमे
गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमाथि । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥
भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगछा ॥ ६ ॥ ए ७ वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ हेतु ॥ ९ ॥ दशमे
गुण० १० हेतु ते ॥ ९ ॥ जोगने ॥ १ ॥ संजलनो लोभ । एवं ॥ १० ॥ हेतु ॥ १० ॥
इग्यारमे बारमे गुण० ॥ ९ ॥ हेतु ते ९ जोग जाणवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तेरमे गुण० ७
हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चउदमे गुण० हेतु नथि ॥ १४ ॥ इति पहिलो हे
तुद्वार समाप्त ॥ १ ॥ हवे बीजो दंडक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंडक । बिजे
गुण० १९ दंडक ते ५ स्थावरना वर्ज्या । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंडक ते ३ विकले
न्द्रिय वर्ज्या । पाचमे गुण० २ दंडक संज्ञिमनुष्य १ संज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥
छठाथि ते चउदमा गुणठा० सुधि १ मनुष्यनो दंडक । इति २ दंडकद्वार समाप्त

॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहिले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥ बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंद्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा जोनि ॥ पाचमे गुण० ॥ १८ लाख जीवा जोनि । छठाथि ते १४ मा गुणठाणासुधि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्त ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतर द्वार कहेछेपहिले गुण०जघ० अंतरमुहूर्त्त उत्० ६६सागर जाझेरानु अथवा १३२ सागर जाझेरानु ते ६६ सागर चउथे गुण० रहे अत० त्रीजे गु० रहि पाछो चउथे ६६ रहि मिथ्यात्वे आवे ॥ बिजाथि मांडिने इग्यारमा गुणठाणासुधि ज० अंत० अथवा पल्यनो असंख्यातमो भागते एटलो काल विना उपसम श्रेणीकरिने पडे नहीं उत्० अर्द्धपुद्गल देशे उणु । बारमे तेरमे ने चउदमे गुण० अांतरु नथि । ए एक जीवआश्रि इति ४ अतरद्वार समाप्त ॥ ४ ॥ हवे ५ मो ध्यानद्वार कहेछे पहिले बिजे त्रिजे गुण० २ ध्यान पहिला । चोथे पाचमे

गुण० ३ ध्यान पहिला । छठे गुण० २ ध्यान आर्त्त १ ने धर्म ॥ २ ॥ सा
तमे गुण० १ धर्मध्यान० । आठमेथि मांडीने चउदमा गुण० १ शुक्लध्या
न । इति ५ मो ध्यानद्वार समाप्त ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे । प
हिलु गुणठाणु १४ राजलोक स्पर्शे॥ बिजु गुण० हेठुं पन्नगवनथि ते ६ ठिनर
कलगे फरसे तथा उच्चुं अधोगाम विजयथि तेएग्रैवेयकसुधि फरसे॥२॥त्रिजुं गुण०
लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे॥३॥चोथुं गुण० अधोगाम विजयथि १२मा दे
वलोकसुधि फरसे अथवा पन्नगवनथि छठीनरक सुधी फरसे॥४॥पाचमुं गुण० पण
इमज अधोग्रामविजयथि १२मा देवलोक सुधि फरसे॥५॥ छठाथि ते इग्यारमा गु
णठाणावाला अधोगाम विजयथि५ अनुत्तरविमानसुधि फरसे॥बारमुं गुण० लो
कनो असंख्यातमो भाग फरसे।तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे। चउदमुं गुण० लो
कनो असस्यातमो भाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समाप्त ॥ ६ ॥ हवे

तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ॥ चोथे पांचमे छठे ने सातमे ए ॥ ४ ॥ गुण
ठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४
६ । ७ । ८ । ए । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए॥ ए ॥फरसे इति ७मो द्वार
समाप्त ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ । । ४ । ५ । ६ ।१३ । ए ५ शास्वता । शेषए
गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समाप्त ॥८॥ गुणठाणा ॥ १४ ॥ मा । १ ।
२ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुण
ठाणासुधि । एकवज्ररूषभ नाराचसंघयण । इति ए मो द्वार समाप्त ॥ ए ॥
आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुधचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाकलब्धि
वंत ॥४॥ अप्रमादि साधु ॥५॥ चउद पुर्वीसाधु ॥ ६॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥
ए ॥७॥ नु कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समाप्त॥१०
इति १० क्षेपक द्वार समाप्त इति गुणठाणाद्वार समाप्त ॥

अथ श्री महोटो बासठियो लि
ख्यते॥गाथा॥जीव१गइ २ इंदिय
३ काय ४ । जोग ५ वेय ६ कषाय
७ लेस्सा ८। सम्मत्त ए नाण १०
दसण ११संजय १२ उवओग १३
आहारे १४।१। जासग १५ प
रित्त १६ पज्जत १७। सुहुम १८
सन्नि १ए जव ७ २० चरिमेय
२१ ॥ जीवियखेत्तेवधे । पुग्गलए
महादंरूएचेव ।२। ए २ गाथानो
विस्तार कहेछे ॥

१ समुच्चय जीवमा जीवना जेद॥१४
गुणगणा॥१४॥जोग॥१५॥उपयो
ग॥१२॥लेश्या॥६॥इति॥१॥द्वार॥
१ नरकगतिमांजीवना जेद॥३॥सज्ञी
नो अप्र० १ ने प्रजास्तो॥२। अस
ज्ञीनो अप्र०।३॥गुण०४प्रथमाजो
ग॥११।ते४मनना४वचनना१वैक्रे
य१वैक्रेयनो मिश्र॥१।कार्मणकाय
जोगाएवं११।उपयोग॥ए॥३ज्ञान
।३।अज्ञान३दर्शन।लेश्या३प्रथम
२ तिर्यंचनि गतिमा जीवना जेद१४

गुण० ५॥प्रथम॥जोग १३॥आहा
रकना २ वर्जिने॥उप० ए॥३ ज्ञान
३ अज्ञान ३ दर्शन॥ लेश्या ६ ॥
३ तिर्यंचणीमा जीवना भेद २ सज्ञी
नो अप० ने प्रजासो २ गुण० ५
प्रथम ॥ जोग १३ ॥उप० ए॥ज्ञान
३ अज्ञान ३ दर्श० ३॥लेश्या ६॥
४ मनुष्यनि गतिमा जीवना भेद ३
सज्ञीनो अप० ने प्रजासो॥२॥अ
सज्ञीनो अप० ॥ ३ ॥ ए३॥गुण०
१४॥जोग० १५॥उप० १२॥लेश्या ६

५ मनुष्यणीमा जीवना भेद २ सज्ञी
ना॥गुण० १४।जोग १३ आहारक
ना २ वर्जिने॥उप० १२॥लेश्या ६॥
६ देवतानि गतिमा जीवना भेद ३ सं
ज्ञीनो अप० १ ने प्रजासो २ अ
सज्ञीनो अप० ३॥ गुण० ४ पहि
ला ॥ जोग ११॥४ मनना ॥४॥वच
नना॥२वैक्रेयना॥१कार्मणनो॥एव
११ ॥ उप० ए लेश्या ६ ॥
७ देवागनामा जीवना भेद २ सज्ञी
नो अप्रजासो १॥ ने प्रजासो २ ॥

गुण० ४ प्रथम॥जोग ११।४मन
ना ४ वचनना॥७वैक्रेयना ने १कार्म
णनो॥एवं ११॥उपयोग ए॥लेश्या ४
८ सिद्धगतिमा जीवना भेद नथि ॥गु
णठाणा नथि॥जोग नथि॥उपयो०
२केवलज्ञान १॥केवलदर्शन२॥ले
श्या नथि॥एहनो अल्पबहुत्व॥सर्व
थि थोडि मनुष्यणी १॥तेहथि मनु
ष्य समुर्छिम भेखता असंखेज्जगु
ण २॥तेहथि नारकि असंखेज्जगु
ण ३॥तेहथि तिर्यंचणी असंखेज्ज
गुणि ४॥ तेहथि देवता असंखेज्ज
गुणा५॥तेहथिदेवीसंखेज्जगुणि ६॥
तेहथिसिद्धभगवंत अनंतगुणा ७॥
तेहथि तिर्यंच अनंतगुणा ८॥इति
बिजो द्वार ॥

ए सइंदियामाजीवनाभेद १४॥गुण०
१२प्रथम॥जोग १५उपयोग १०॥
केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए २
वर्जीनि॥लेश्या ६ ॥
एकेंद्रियमां जीवना भेद ४॥सूक्ष्म
एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ने १ प्रजा

त्तो ২॥वादर ऐकेंद्रियनो अप्रजा
त्तो ३ ने प्रजात्तो ४ ॥ गुण० १ प्र
थम ॥ जोग ५ उदारिक १ उदारि
कनो मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रेयनो
मिश्र ४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उप
योग ३॥ वे अज्ञानने ॥ १ अचक्षु
दर्शन ॥ लेश्या ४

५ वेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय
ए ३ मा ॥ जीवना भेद २ पोतपो
तानो अप्रजात्तो १ ने प्रजात्तो ২॥
गुण० २ पहिला । जोग ४ । २ उ
दारिकना ॥ १ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्यव
हारवचननो । एवं ४ ॥ उपयोग वेइ
द्रियतेइंद्रियमा ५ । २ ज्ञान ॥ २ अ
ज्ञान ॥ ने ॥ १ अचक्षुदर्शन एवं ५ ॥
अने चउरिंद्रियमा ६ ते १ चक्षुद
र्शन वध्यु एव ६ ॥ लेश्या ३

६ पचेंद्रियमा जीवना भेद ४ ॥ सज्ञि
नो अप्रजात्तो १ ने प्रजात्तो २
असंज्ञीनो अप्रजात्तो ३ ने प्रजा
त्तो ४ एव ४ ॥ गुण० १२ प्रथम ॥ जो
ग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १

केवलदर्शन२ए२वर्ज्या॥लेशा६॥
७ अणिंदियामा जीवनोभेद १ सङ्गि
नो प्रजास्तो॥गुणठाणा २तेरमुं ने
चउदमुं॥जोग७।२मनना ते सत्य
मन १ व्यवहारमन २ बे वचनना
ते सत्यवचन १ व्यवहारवचन २
एव ४॥ अने उदारिकनो ५ उदारि
कनो मिश्र ६ कार्मणकायजोग ७॥
उपयोग २॥केवलज्ञान १ केवल
दर्शन२॥लेशा१शुकल॥एहनो अ
टपबहुत्व॥सर्वथि थोमा पचेंद्रिया

१।तेहथिचउरिंद्रियाविशेषाहिया
२।तेहथितेइंद्रियाविशेषाहिया ३।
तेहथि बे इंद्रिया विशेषाहिया ४।
तेहथि अणिंदिया अनतगुणा५।
तेहथि एकेंद्रिया अनतगुणा ६॥ते
हथि सइंद्रिया विशेषाहिया ७॥
इति त्रिजो धार समास
१ सकायामा जीवनाभेद १४॥गुण
१४॥जोग१५॥उप०१२॥लेशा६।
४ पृथवीकाय १ अपकाय २ वनस्प
तिकाय ३॥ए ३ मा जीवना भेद

४॥गुण० १॥जो ३॥उप० ३॥लेश्या ४॥
६ तेउकाय १ वाउकाय २॥ ए २ मा
जीवना भेद ४॥गुण० १॥जोग तेउ
मा ३ ने॥ वाउमा ५ ते २ वैक्रेयना
वध्या॥ उप० ३ ॥ लेश्या ३ ॥
७ त्रसकायमा जीवना भेद १० ते ४
एकेंद्रियना वर्ज्या॥गुण० १४॥जोग
१५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेश्या ६॥
८ अकायमा जीवना भेद नथि गुण०
नथि॥जोग नथि उप० २ लेश्या नथि
एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथी थोमात्र

सकाया १॥तेहथि तेउकाया असंखे
ज्जगुणा २॥तेहथि पृथवीकाया वि
शेषाहिया ३॥तेहथि अपकाया वि
शेषाहिया ४॥तेहथि वाउकाया वि
शेषाहिया ५॥तेहथि अकाया अ
नतगुणा ६॥तेहथि वनस्पतिकाया
अनतगुणा ७॥तेहथि सकाया वि
शेषाहिया ८॥ इति चउथो द्वार
१ सजोगीमा जीवना भेद १४॥गुण०
१३॥जोग १५॥उप० १२॥लेश्या ६
२ मनजोगीमा जीवनो भेद १॥ स

ज्ञीनो अजाणो ॥ गुण० १३ जोग
१४ एक कार्मणनो वर्जिने ॥ उप
योग १२ ॥ लेश्या ६ ॥
३ वचनजोगीमा जीवना भेद ॥ ५ ॥
बे इंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रि
य ३ असज्ञीपचेंद्रिय ४ सज्ञिपचें
द्रिय ५ ए ५ ना अजाणा ॥ गुण०
१३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥
उप० १२ ॥ लेश्या ६ ॥
४ कायजोगीमा जीवनाभेद १४॥ गुण
१३॥ जोग १५॥ उप० १२॥ लेश्या ६

५ अजोगीमा जीवनो भेद १ सज्ञी
नो अजाणो॥ गुणठाणु। १ ॥ चउदमु
॥ जोग नहिं॥ उपयोग २ केवल ज्ञान
ने केवल दर्शन॥ लेश्या नथि॥ एह
नो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोडा मन
जोगी १॥ तेहथि वचनजोगी अस
खेज्जगुणा २॥ तेहथि अजोगी अ
नतगुणा ३॥ तेहथि कायजोगी अन
तगुणा ४ ॥ तेहथि सजोगी विशे
षाहिया ५ ॥ इति पाचमो द्वार ॥
१ सवेदीमा जीवना भेद १४ ॥ गुण ९

प्रथम॥जोग १५।उ० १०केवलज्ञा
न १ केवलदर्शन वर्जिने॥लेश्या ६
३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मा। जी
वना भेद २सज्ञीना॥गुण०ए॥जो
ग १५॥पुरुषवेदमा॥ अने॥स्त्रीवे
दमा १३।ते।२॥ अहारकनावर्जि
ने॥ उप० १०॥ लेश्या ६॥
४ नपुसकवेदमा जीवना भेद १४।गु
णए॥जोग१५॥उपयोग१०केवल
ज्ञान१केवलदर्शनवर्जिने लेश्या६
५ अवेदीमा जीवनो भेद १ सज्ञीनो

प्रजासो॥गुण ०६॥नवमाथि ते१४
मासुधि॥ जोग ११।४ मनना ४व
चनना॥ने॥२उदारिकना॥१॥कार्म
णनो॥ एव ११॥उपयोग ए।३ अ
ज्ञान वर्जिने॥लेश्या १ शुकल॥ए
हनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा पु
रुषवेदी॥१॥तेहथि स्त्रीवेदी सखेज्ज
गुणा २॥ तेहथि अवेदी अनतगु
णा ३॥ तेहथि नपुंसकवेदी अनत
गुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषा
हिया ५॥ इति ग्योघार॥

१ सकपायीमा जीवना भेद १४ ॥
गुण० १० प्रथम ॥जोग १५॥उप
योग १०॥केवलज्ञान १ केवलद
र्शन २ वर्जिने ॥ लेश्या ६ ॥
४ क्रोध १ मान २ माया ३ ए ३ मा जी
वना भेद १४॥गुण ए॥ जोग १५॥
उपयोग १० ॥ लेश्या ६ ॥
५ लोभकषायीमा जीवना भेद १४॥
गुणठाणा १० पहिला ॥जोग १५॥
उपयोग १० ॥ लेश्या ६ ॥
३ अकषायीमा जीवनो भेद॥ १॥संज्ञी

नो अजाप्तो॥ गुण ४ उपरला॥जोग
११। ४ मनना॥ ४ वचनना॥ २ उदा
रिकना॥ १ कार्मणनो॥एवं ११ ॥उपयो
गए॥५ज्ञान४दर्शनाएवंए॥ लेश्या
६॥एहनो अल्पबहुत्व सर्वथि थोमा
अकषायी १॥ तेहथि मानकसायी
अनतगुणा२॥तेहथि कोह कषायी
विशेषाहिया३ तेहथिमायाकषायी
विशेषाहिया४ ॥ तेहथि लोभकषा
यी विशेषाहिया ५तेहथिसकषायी
विशेषाहिया६॥इति सातमो द्वार॥

१ सलेश्यीमा जीवना भेद १४ ॥ गुण १३॥जोग१५॥उप० १२॥लेश्या६।

४ कृष्ण १ निल २ कापुत ३ ए ३ लेश्यीमे॥जीवना भेद १४॥गुणठाणा ६ प्रथम॥जोग १५॥उपयोग १० केवलना वर्ज्या।लेश्या पोतपोतानि

५ तेजुलेश्यीमे जीवना भेद ३ सञ्जिनो अप्रजाप्तो १॥ प्रजाप्तो २ ॥ बादर एकेन्द्रियनो अप्रजाप्तो ३ ॥गुण० ७ प्रथम ॥ जोग १५ उपयोग १० ॥ लेश्या १ तेजु ॥

६ पद्मलेश्यीमा जीवना भेद २ संज्ञिना ॥गुण० ७ प्रथम ॥ जोग १५॥ उपयोग १० ॥ लेश्या १ पदम ॥

७ शुकललेश्यीमां जीवना भेद २॥सञ्जिना॥गुण० १३ प्रथम॥जोग १५॥ उपयोग १२॥ लेश्या १ शुकल ॥

८ अलेश्यीमा जीवनो भेद १ सञ्जिनो प्रजाप्तो॥गुण० १ चउदमु ॥ जोग नथि ॥उपयोग २॥ केवल ज्ञान १ ने केवलदर्शन २ ॥ लेश्या नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा

शुकल लेशी १ ॥ तेहथि पद्मलेशीसखेज्जगुणा २॥तेहथि तेजुलेशीसखेज्जगुणा३॥तेहथि अलेशी अनतगुणा४॥तेहथि कापुतलेशी अनंतगुणा ५॥तेहथि निललेशी वीशेषाहिया६॥तेहथि कृष्णलेशी विशेषाहिया७॥तेहथि सलेशी विशेषाहिया ८॥ इति ८मो द्वार॥

१ समुचय सम्यत्कदृष्टिमा जीवना भेद ६॥बेइन्द्रिय १॥तेइन्द्रिय२॥चउरिंद्रिय३॥असज्ञीपचेंद्रिय४॥एना अप्रजाप्ता॥अनोसज्ञीपचेंद्रियनो अप्रजाप्तो।ने।प्रजाप्तो॥एव ६॥ गुण० १२ पहिलु त्रिजुं वरजीने॥ जोग १५॥उपयोग ए॥ ३ अज्ञान वर्जिने॥ लेशा ६॥

२ सास्वादान सम्यत्कदृष्टिमा जीवना भेद ६॥गुण० बिजु॥जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग६॥ ३ ज्ञान॥३ दर्शन ॥ लेशा ६॥

३ उपशाम सम्यत्कदृष्टिमा जीवना भेद२सज्ञीना॥गुण०ज।चोथाथि

११ मासुधि॥जोग१५उपयोग७॥
४ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६॥

५ क्षयोपशमने वेदकसम्यक्त्वदृष्टिमा जीवना भेद२ सज्ञीना ॥ गुण० क्ष योपशम सम्यक्त्वदृष्टिमा ४ थी न वमासुधि॥अने।वेदकमा ४ थी सा तमासुधि जोग१५उप०७॥लेश्या ६

६ क्षायक सम्य० जीवना भेद २ सं ज्ञीना॥गुण०११॥चोथाथि ते १४ मासुधि ॥ जोग१५उपयोग९॥ ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेश्या ६ ॥

७ मिथ्यात्व दृष्टिमा जीवना भेद १४ गुण १ प्रथम ॥ जोग १३ आहा रकना२ वर्जिने ॥ उपयोग ६ । ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

८ समामिथ्यात्व दृष्टिमा ॥जीवनो भे द १ संज्ञिनो प्रजाप्तो॥गुण०१त्रि ज्ञ॥जोग१०॥४ मनना॥४ वचनना १उदारिकनो॥१॥ कार्मणनो। एव १० ॥ उप० ६ लेश्या ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥सर्वथि थोडा सास्वाद न समकिति १ तेहथि

उपसम समकिति सखेजगुणा२॥ तेहथि मिश्रदृष्टि सखेज्जगुणा ३॥ तेहथि क्षयोपशम समकिति अ सखेज्जगुणा ४॥तेहथि वेदक सम किति सखेज्जगुणा५॥तेहथि क्षाय कसमकिति अनंतगुणा६॥तेहथि समुच्चय समकिति विशेषाहिया ७ तेहथि मिथ्यात्व दृष्टि अनंतगुणा इति ए मो द्वार ॥

१ समुच्चयज्ञानिमा जीवना भेद६॥ बेइंद्रिय १।तेइंद्रिय २।चउरिंद्रिय ३। असन्नीपचेंद्रिय ४।ए ४ना अ प्रजात्ता।नो।सन्नीनो अप्रजात्तो ने प्रजात्तो॥एवं ६॥गुण० १२पहिलुं त्रिजुं वर्जिने॥जोग१५॥उपयोग ए॥५ ज्ञानने ४ दर्शन ॥ लेश्या ६

३ मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानीमा २ जी वना भेद६॥गुण० १० पहिलुं त्रि जुं तेरमु चउदमु वर्जिने॥जोग१५॥ उप० ७ ॥ लेश्या ६ ॥

४ अवधिज्ञानीमा॥जीवना भेद २।

सञ्ज्ञीना॥गुण १०॥जोग१५॥उप
योग० ७ ॥ लेश्या० ६ ॥

५ मनपर्यवज्ञानीमा जीवनो भेद १
संज्ञीनो प्रजाप्तो॥गुण० ७॥छठाथि
बारमासुधि ॥ जोग १४ कार्मणनो
वर्जिने ॥ उप० ७ ॥ लेश्या० ६ ॥

६ केवलज्ञानीमां जीवनो भेद १ स
ञ्ज्ञिनो प्रजाप्तो॥गुण०२॥ तेरमु ने
१४ मु॥जोग७॥उपयोग२॥लेश्या
१ परमशुक्ल ॥

७ अज्ञानीमां जीवना भेद१४॥गुण२
पहिलु ने त्रिजु ॥ जोग १३ आ
हारकना २ वर्जिने उप० ६ । ३ अ
ज्ञान ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

९ मतिश्रुत अज्ञानीमा जीवना भेद
१४॥गुण० २पहिलुनेत्रिजुं॥जोग
१३ ॥ उपयोग० ६॥लेश्या० ६ ॥

१० विभंग ज्ञानीमा जीवना भेद २
संज्ञीना॥गुण० २ पहिलु ने त्रिजुं
॥जोग १३॥उप० ६॥लेश्या० ६॥
एहनो अल्प बहुत्व॥सर्वथि थोडा
मनपर्यवज्ञानी १॥तेहथि अवधि

ज्ञानी असस्यात गुणा ३॥ तेहथि मतिज्ञानी ने श्रुतज्ञानी माहोमा हि तुल्यने विशेषाहिया ४॥ तेहथि विभंग ज्ञानी असस्यात गुणा ५॥ तेहथि केवलज्ञानी अनंतगुणा ६॥ तेहथि ज्ञानीविशेषाहिया ७॥ तेहथि मति श्रुत अज्ञानी माहोमा हितुल्य ने अनतगुणा ए॥ तेहथि अज्ञानी विशेषाहिया ॥१०॥ इति १० मो द्वार ॥

१ चक्षुदर्शनीमा जीवना नेद ६॥ चउ रिंद्रिय १॥ असंज्ञि पंचेंद्रिय २॥ संज्ञीपचेंद्रिय ३॥ ए ३ ना अपजास्ता ने । पजास्ता ॥ गुण० १२ प्रथम ॥ जोग १४ कार्मणनोवर्जिने ॥ उप० १० केवलना २ वर्ज्या ॥ लेशा ६

२ अचक्षुदर्शनीमा जीवना नेद १४ गुण० १२ जोग १५ उप० १० लेशा ६

३ अवधिदर्शनीमा जीवना नेद २॥ गुण० १२ जोग १५ उप १० लेशा ६

४ केवलदर्शनीमा जीवनो नेद ॥ १॥ गुण० २ तेरमुचउदमु जोग ७ उप०

७ ॥ भंगा० १ ॥

[illegible]

१ मनविना जीवनो भेद १ संज्ञी
नो त्रजाणो ॥ गुण० ९ उजाणि ते
१४ ना जणि ॥ जोग १५ ॥ उप० ९
३ अज्ञानर्निं ते लेश्या० ६ ॥

: गलागर १ अंगोपांगनाम ७
॥ ते णा[illegible]ना जीवनो जेद १ सन्नि
नो त्रजाणो ॥ गुण० ४ तेजा[illegible]मा
गुणि ॥ जोग १४ कार्मणनो [illegible] ॥
उपयोग ७ । ४ ज्ञानने ३ दर्शन एवं
७ ॥ लेश्या० ६ ॥

४ परिहारविशुद्ध चारित्रमा जीवनो
भेद १ ॥ गुण ७ छट्ठु ने सातमु
॥ जोग ९ ॥ ४ मनना ४ वचनना ॥ ने
॥ १ ॥ उदारिकनो ॥ एवं ९ ॥ उप० ७
॥ लेश्या० ३ ॥ उपरि ॥

५ सुक्ष्मसपरायचारित्रमां जीवनो भेद १ ॥ गुण० १ ॥ दशमुं ॥ जोगए ॥ उपयोग ७ ॥ लेश्या १ शुकल ॥

६ यथाख्यातचारित्रमा जीवनो भेद १ ॥ गुण० ४ उपला ॥ जोग ११ । ४ मनना ४ वचनना २ उदारिकना ने १ कार्मणनो ॥ उप ए । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेश्या० १ ॥

७ संजतासजतिमा जीवनो भेद १ गुण० । १ पाचमुं ॥ जोग १२ आहारकना २ ने १ कार्मणनोवर्जिने ॥ उप योग ६ । ३ ज्ञाननो ३ दर्शना लेश्या ६ ।

८ असजतिमां जीवना भेद १४ गुण० ४ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप ए । ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

ए नो सजतिनोअसंजतिनो सजता संजतिमां जीवनो भेद० ॥ गुण० ॥ जोग० नथि ॥ ने । उप० २ ॥ लेश्या नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा सुक्ष्मसपरायचारित्रिया १ ॥ तेहथि परिहारविशुद्धचा

रित्रिया संखेज्ज गुणा २ ॥ तेहथि
यथाख्यातचारित्रियासखेज्जगुणा
३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारि
त्रिया सखेज्जगुणा ४ ॥ तेहथि सा
मायकचारित्रिया सखेज्जगुणा ५ ॥
तेहथि सजति विशेषाहिया ६ ॥
तेहथि संजतासजति असख्यात
गुणा ७ ॥ तेहथि ॥ नो सजति ॥
नोअसजति नो संजतासजति
अनतगुणा ८ ॥ तेहथि असजति
अनतगुणा ९ ॥ इति १२ मो द्वार

१ सागारोवउत्तामा जीवना भेद १४ ।
गुण १४ । जोग १५ । उप १२ । लेश्या ६
२ अणागारोवउत्तामा जीवना भेद
१४ ॥ गुण० १३ दशमु वर्जिने ॥
जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेश्या ६ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा
अणागारोवउत्ता १ ॥ तेहथि सागा
रोवउत्ता सखेज्जगुणा २ ॥ इति
१३ मो द्वार ॥
१ आहारकमा जीवनाभेद १४ ॥ गु
ण० १३ पहिला ॥ जोग १४ कार्म

णनो वर्जिने॥उप० १२॥लेश्या० ६।
२ अणाहारकमा ॥ जीवनाभेद ८ ॥
सात अप्रजाप्ता ने १ सज्ञिनो
प्रजाप्तो । एवं ८॥गुण० ५ पहिलुं
बिजु चोथु तेरमु ने चउदमु ए५॥
जोग १ कार्मणनो ॥ उपयोग १०॥
मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षुदर्शन२ए
२ वर्जिने ॥ लेश्या ६ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥सर्वथि थोमा
अणाहारक १॥ तेहथि आहारक
असखेज्जगुणा२॥इति१४मो द्वार॥

१ भासगामा जीवना भेद ५॥बेइंद्रि
य १।तेइन्द्रिय २। चउरिंद्रिय ३।अ
सज्ञीपचेंद्रिय ४।सज्ञीपचेंद्रिय ५।
ए५ना प्रजाप्ता॥गुण० १३ प्रथम
जोग १४ कार्मणनो वर्जिने॥उपयो
ग १२ ॥ लेश्या ६ ॥
२ अभासगामा जीवना भेद १०॥ते
१४ माथि। बेइन्द्रिय १ तेइन्द्रिय २
चउरिंद्रिय ३ असज्ञीपंचेंद्रिय ४
ए ४ वर्ज्या ॥ गुण० ५ते पहिलु १
बिजु २ चोथु ३ तेरमुं ४ चउदमुं

२ अप्रजाप्तामा जीवनाभेद ७॥गुण०
३। ते। पहिलुं। बिजुं। ने चउथुं॥जोग
५॥ते। २ उदारिकना॥२ वैक्रियनाने
१॥ कार्मणनो उप० ए॥ ३ ज्ञान॥ ३
अज्ञान ३ दर्शना॥एव ए॥लेश्या ६
३ नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्तामा॥जीवना
भेद ०॥गुण० ॥जोग० ॥नहि॥उप०
२ ॥ लेश्या नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥सर्वथि थोमा
नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्ता १ ॥ तेह
थि अप्रजाप्ता अनतगुणा २॥तेह
थि प्रजाप्ता सखेज्जगुणा ३ ॥इति
१७ मो द्वार ॥
१ सुक्ष्ममा जीवना भेद २ ॥ सुक्ष्म
एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो १ ने प्रजा
प्तो २॥ गुण० १ प्रथम ॥ जोग ३ बे
उदारिकनाने १। कार्मणनो॥उप०३
बे अज्ञान॥१। अचक्षुदर्शन॥ए ३॥
लेश्या ३ ॥
२ बादरमा जीवना भेद १२॥ते२ सु
क्ष्मनावर्ज्या॥गुण० १४। जोग १५उ
पयोग १२ ॥ लेश्या ६ ॥

गुणा २ ॥ तेहथि असङ्गी अनत गुणा ३ ॥ इति १९ मो द्वार ॥

१ भव्यमाहि जीवना भेद १४।गुण० १४॥जोग १५॥उप० १२॥लेश्या६॥

२ अभव्यमां जीवना भेद १४ गुण० १ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ लेश्या० ६ ॥

३ नोभव्यनोअभव्यमा जीवना भेद०॥गुण०॥जोग०॥नथि ॥उपयोग २ । लेश्या नथि ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा अभव्य १॥ तेहथि नोभव्यनोअभव्य अनतगुणा २॥ तेहथि भव्य अनंतगुणा ३॥ इति २० मो द्वार॥

१ चरममा जीवना भेद १४॥ गुण० १४॥जोग १५॥उप० १२॥लेश्या ६।

२ अचरममा जीवना भेद १४ गुण० १ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ९ ॥ लेश्या ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व।सर्वथि थोडा अचरम १॥तेहथि चरम अनतगुणा २ ॥ इति २१ मो द्वार ॥

१ समुच्चयकेवलीमां जीवना भेद २ सन्नीना॥गुण० २ २ उपला॥जोग १५ ॥उप० ए। ३ अज्ञान वर्जिने॥ लेश्या ६ ॥

२ वीतरागिमां जीवनो भेद १ ॥ गुण ४।जोग ११॥उप० ए॥ लेश्या १॥

३ जुगलियामां जीवना भेद २।संज्ञीना॥गुण०२पहिलु ने चउथु॥जोग ११ ते।४ मनना।४ वचनना।२उदारिकना॥ने।१कार्मणनो॥एव ११॥ उप०६बे ज्ञानात्रे अज्ञान बेदर्शन। एव ६॥ लेश्या ४ प्रथम ॥

४ असंज्ञीतिर्यंचमां जीवना भेद २। गुण० २ प्रथम॥जोग ४ ते॥२ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो॥ने। १ व्यवहार वचननो॥एवं ४॥ उपयोग ६ ते २ ज्ञान।२ अज्ञान२। दर्शन॥एव ६ ॥ लेश्या ३ प्रथम

५ समुर्छिम मनुष्यमां जीवनो भेद १॥गुण० १ पहिलु॥जोग ३। ते॥२ उदारिकना॥ने।१कार्मणनो॥एव ३॥ उपयोग ३। ते बे अज्ञाना ने १ अच

क्षुदर्शन। एवं ३ ॥ लेश्या ३ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा
जुगलीया १॥तेहथि सम्मुर्छिम मनु
ष्य असंखेज्जगुणा २॥तेहथि अस
ज्ञी तिर्यंच असंखेज्जगुणा ३॥तेह
थि वीतरागी अनतगुणा ४॥ तेह
थि समुचय केवली विशेषाहिया ५
१ उदारिकशरिरमा जीवना भेद
१४॥गुण० १४॥जोग १५॥उप०
१२ ॥ लेश्या ६ ॥
२ वैक्रेयशरिरमा जीवना भेद ४ ॥ते

॥२सज्ञीना॥नो १ असज्ञीतिर्यंचनो
अप्रजाप्तो॥अने। १ वादर वाउकाय
नो प्रजाप्तो॥एव॥४॥गुण० ७ प्रथम
जोग १२॥ते।२ आहारकना ने १
कार्मणनो।ए ३ वर्ज्या ॥ उप० १०
ते २ केवलना वर्ज्या ॥ लेश्या ६
३ आहारकशरिरमां जीवनो भेद १
संज्ञीनो प्रजाप्तो॥ गुण० २ छठुंने
सातमु॥जोग १२ ते।२ वैक्रेयना॥ने।
१ कार्मणनो।ए ३॥ वर्ज्या॥उप० ७
ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ लेश्या ६

५तेजस कार्मणशरिरमा जीवना नेद १४ ॥ गुण० १४ ॥ जोग ॥ १५ उप योग १२ ॥ लेश्या ॥ ६

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा आहारक शरीरि १ ॥ तेहथि वैक्रेय शरीरि असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि उदारिक शरीरि असंख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि तेजस कार्मण शरिरी माहोमांहि तुल्य ने अनतगुणा ५

॥ इति महोटो बासठियो समाप्त ॥

अथ श्रीअठाणुं वोलनो अल्प वहुत्वधारलिस्यते

१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी सखेजगुणी
३ वादर तेउकाया प्रजासा अस०
४ अनुत्तर विमानना देवता अस०
५ उपली त्रिकना देवता सखेजगुणा
६ मझमत्रिकना देवता संखेजगुणा
७ हेठली त्रिकना देवता सखेजगुणा
८ वारमा देवलोकना देवता संखे०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता स०
१० दसमा देवलोकना देवता सखे०
११ नवमा देवलोकना देवता संखे०
१२ सातमी नरकना नारकी असं०
१३ छठी नरकना नारकी असंखेज०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पांचमी नरकना नारकी असखेज०
१७ छठा देवलोकना देवता असंखे०
१८ चोथी नरकना नारकी असखे०
१९ पाचमा देवलोकना देवता अस०
२० त्रिजी नरकना नारकी असखे०

२१ चोथा देवलोकना देवता असं०
२२ त्रिजा देवलोकना देवता असं०
२३ त्रिजी नरकना नारकी असंखे०
२४ सम्मुर्छिम मनुष्य असंखेजगुणा
२५ बीजा देवलोकना देवता असं०
२६ बीजा देवलोकनी देवी संखेज०
२७ पहेला देवलोकना देवता संखेज०
२८ पहेला देवलोकनी देवी संखेज०
२९ भवनपति देवता असंखेजगुणा
३० भवनपतिनी देवी संखेजगुणी
३१ पहेली नरकना नारकी असंखे०

३२ खेचर पुरुष असंखेजगुणा
३३ खेचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३४ थलचर पुरुष संखेजगुणा
३५ थलचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३६ जलचर पुरुष संखेजगुणा
३७ जलचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३८ व्यंतर देवता संखेजगुणा
३९ व्यंतरनी देवी संखेजगुणी
४० जोतिषी देवता संखेजगुणा
४१ जोतिषीनी देवी संखेजगुणी
४२ खेचर नपुंसक संखेजगुणा

अथ श्रीअठाणुं वोलनो अल्प वहुत्वद्वारलिख्यते

१ सर्वथी थोमा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी सखेजगुणी
३ वादर तेउकाया प्रजाप्ता अस०
४ अनुत्तर विमानना देवता असं०
५ उपली त्रिकना देवता सखेजगुणा
६ मझमत्रिकना देवता संखेजगुणा
७ हेठली त्रिकना देवता सखेजगुणा
८ वारमा देवलोकना देवता संखे०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता स०

१० दसमा देवलोकना देवता सखे०
११ नवमा देवलोकना देवता सखे०
१२ सातमी नरकना नारकी अस०
१३ छठी नरकना नारकी असखेज०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पाचमी नरकना नारकी असखेज०
१७ छठा देवलोकना देवता असंखे०
१८ चोथी नरकना नारकी असखे०
१९ पाचमा देवलोकना देवता अस०
२० त्रिजी नरकना नारकी असखे०

६२ वादर अपकाया अप्रजाप्ता अ०
६३ वादर वाउ अप्रजाप्ता असंखे०
६४ सुक्ष्म तेउ अप्रजाप्ता असखेज०
६५ सुक्ष्म पुढवी अप्रजाप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अप अप्रजाप्ता विसेषा०
६७ सुक्ष्म वाउ अप्रजाप्ता विसेषा०
६८ सुक्ष्म तेउ प्रजाप्ता सखेजगुणा
६९ सुक्ष्म पुढवी प्रजाप्ता विसेषाढी०
७० सुक्ष्मअप पर्याप्ता विसेपाढीया
७१ सुक्ष्म वाउ पर्याप्ता विसेषाढीया
७२ सुक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता अ०
७३ सुक्ष्म निगोदा प्रजाप्ता सखे०
७४ अभव्य अनतगुणा
७५ पडिवाइ समदिठी अनतगुणा
७६ सिद्धभगवतजी अनतगुणा
७७ बादर वणसई प्रजाप्ता अनंत०
७८ बादर प्रजाप्ता विसेषाढीया
७९ बादर वणसइ अपर्याप्ता अस०
८० बादर अप्रजाप्ता विसेषाढीया
८१ समुचय बादर विसेषाढीया
८२ सुक्ष्म वणसइ अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषाढीया

४३ थलचर नपुसक संखेजगुणा
४४ जलचर नपुसक सखेजगुणा
४५ चउरिंद्रिय प्रजाप्ता सखेजगुणा
४६ पचेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४७ वेंद्रिय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४८ तेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४९ पचेंद्रीय अप्रजाप्ता असंखेजगु०
५० चउरिंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाही
५१ तेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५२ वेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५३ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति० प्रजाप्ता असखेजगुणा
५४ बादर निगोदा प्रजाप्ता अस०
५५ बादर पुढवी काया प्रजाप्ता अ०
५६ बादर अपकाया प्रजाप्ता असं०
५७ बादर वाउकाया प्रजाप्ता असं०
५८ बादर तेउ काया अप्रजाप्ता अ०
५९ बादर प्रत्येक शरीरि वणसई० अप्रजाप्ता असखेजगुणा
६० बादर निगोदा अप्रजाप्ता अ०
६१ बादर पुढवी अप्रजाप्ता अस०

॥ ॐ नम श्रीवीतरागाय नम ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नम ॥ श्रीगणधरेभ्यो नम ॥ अथ श्रीछआराना वोल लिख्यते ॥ दसकोडि कोडि सागरोपमना ६ आरा जाणवा । तेहमा पहिलो आरो ॥ ४ ॥ कोडाकोडि सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सुसमसुसमनामा जाणवो । एकत्तु सुखमा सुख जाणवु ॥ ए आरानेवि षे ३ गाउनु देहमान । अने ३ पल्योपमनु आउखुं । उत्तरते आरे २ गाउनु देहमान । अने २ पल्योपमनु आउखुं जाणवु ॥ ए आरे बसे छपन्न पासली । उत्तरते आरे एकसो अठाविस पासली जाणवी ॥ ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र ऋषभनाराच सघयण ने ॥ १ ॥ समचउरस सठाण जाणवु ॥ स्त्रि पुरुषना रूप सोभाग्य । घणा । दिपे । ए आराने विषे अठम भक्ते आहारनी इछा उपजे । ती वारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ साकर सरखी जाणवि । उत्तरते आरे खांडसरखि जाणवि । ए आरानेविषे ॥ १० ॥ दश प्रकारना क

८४ सुक्ष्म वणसइ पर्याप्ता संखेज०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुच्चय सुक्ष्म विसेषाहीया
८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वणसइ जीव विसेषाहीया
९० एकेंद्रीया जीव विसेषाहीया
९१ तिर्यंच जीव विसेषाहीया
९२ मिथ्यादृष्टी जीव विसेषाहीया
९३ अविरति जीव विसेषाहीया
९४ सकसाया जीव विसेषाहीया
९५ छद्मस्था जीव विसेषाहीया
९६ सजोगी जीव विसेषाहीया
९७ ससारत्था जीव विसेपाहीया
९८ सव जीवा विसेषाहीया

॥ इतिश्री अठाणुं बोलो अल्प बहुत्व सपूर्ण ॥

ठेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे। तीवारे जुगल परभवनुं आउखुं बाधे। तिवारे जुगलीणी एक जोमलुं प्रसवे। ते ठेरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे। जुगलजुगलीणीने क्षण मात्रनो विजोग न पमे। एकने ठींक ने एकने बगासुं आवे मरिने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। गति तो १ देवनी जाणवी॥ ए आराने विषे जुगलीयाने वेर विरोध इर्षा झेहेर नही॥ इति पहिलो आरो सपूर्ण॥१॥ हवे पहिलो आरो उतरीने। बीजो आरो बेठो। तीवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव॥ अनता २ हीणा थया। ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो। सूसमनामे जाणवो। एकलुं सुख जाणवुं। ए आराने विषे २ बे गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं। उतरते त्यारे ॥ १ ॥ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनुं आउखुं। ए आराने विषे वज्रऋषभ नाराच सघयण॥ समचउरस सठाण॥ ए आरो॥१२५॥

ल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पद्दोचाडे। ते कल्पवृक्षना नाम कहेछे । गाथा। मतं गायन्निंगा तुडियगा। दिव जोइ चित्तगा। चित्तरसा मणवेगा। गिहगारा अ णियगणाउ ॥ १ ॥ मतंगाय कहेता। मिष्ट मधुराररसना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ १ ॥ भिंगा कहेता । रत्नजडाव भाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥ तुडियगा कहेता ॥४९॥ ओगणपचास जातिना वाजिंत्रना। क० थ० ॥ ३ ॥दिव कहेता। रत्नजडाव दीवीओना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता। सूर्यनी जोतिना क० ॥ ५ ॥ चित्तगा कहेता। चित्रामणसहित फूलनी मालाना क० ॥ ६ ॥ चितरसा क० चितने गमे तेवा रसवति भोजनना। क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नजडाव आभरणना। क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क०। बेतालीस भोमिया आवासना क० ॥ ए ॥ अनियगणाउ क० ॥ रत्नजडाव नाकने वायरेउडे एहवा वस्त्रना । क० १०। ए १०। प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित्त सुख आपे। ए आराने विषे

ठेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे। तीवारे जुगल परभवनुं आउखुं बांधे। तिवारे जुगलीणी एक जोमलु प्रसवे। ते गेरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे। जुगलजुगलीणीने त्रण मात्रनो विजोग न पमे। एकने ठीक ने एकने वगासु आवे मरिने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। गति तो १ देवनी जाणवी॥ ए आराने विषे जुगलीयाने वेर विरोध इर्षा ऊेहर नही॥ इति पहिलो आरो सपूर्ण ॥१॥ हवे पहिलो आरो उतरीने। बीजो आ रो वेठो। तीवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव॥ अनंता २ हीणा थया। ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो। सूसमनामे जाणवो। एकलु सुख जाणवु। ए आराने विषे २ बे गाउनु देहमान अने २ पल्योपमनु आउखु। उतरते आरे ॥ १ ॥ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनु आउखु। ए आराने विषे वज्रऋषभ नाराच सघयण॥ समचउरंस सठाण॥ ए आरो॥१२७॥

एकसो अठावीस पासली ॥ उतरते आरे ६४पासली जाणवि। ए आरे ७० जके आहारनी ईछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाई साकर सरखि। उतरते आरे गोल सरखि जाणवी। ए आरे १० प्रकारना कल्प वृक्ष मनवंछीत सुखपोचारे। छेक थाकतां। जुगलना आउखा आगु ॥ ७ मास रहे। तिवारे जुगल परभवनु आउखु वांधे। तिवारे जुगलिणी एक जोरलुं प्रसवे। छोरुनी प्रतिपालणा ॥ ६४ दिन करे। जुगल जुगलीणीने। त्रण मात्रनो वि जोग न परे। एकने छीक ने एकने बगासु आवे। मरिने देवता थाय। एना श रीरनुं निहरण देवता करे ॥ गत्ति १ देवतानि जाणवि। इति विजो आरो संपूर्ण ॥ २ हवे वीजो आरो उतरीने। त्रिजो आरो बेठो तिवारे। अनता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जव अनताहीणा थया। ए आरो ॥ २ ॥ बे कोराकोर सागरोप मनो जाणवो। ए आरो सूसमङसमनामा जाणवो। सुख घणुं ने छुख थोरु जाणवु॥

ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ ॥ एक पल्योपमनु आउखुं जा
णवुं ॥ उत्तरते आरे ५०० ॥ पाचसें धनुषनुं देहमान ने क्रोड पूर्वनु आउखु
जाणवु । ए आराने विषे वज्र रुषभनाराच संघयण। नेसमचउरंस सठाण जा
णवुं । ए आरानेविषे ॥ ६४ चोसठ पांसली जाणवी । उत्तरते आरे ३२ बत्रिस
पासली जाणवि । ए आराने विषे चउथ भक्ते आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे
शरीरप्रमाणे आहार करे । धरतिनि सरसाइ गोल सरखि जाणवि॥उतरतेआ
रे थोडेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवछीत सुख पोंचाडे ।
छेक थाकता जुगलना आउखा आमा छ मास रहे । तीवारे जुगल परभवनुं
आउखु बांधे । तिवारे जुगलिणी एक जोडलु प्रसवे ॥ ते छोरुनी प्रतिपालणा
४९ दिन करे । जुगल जुगलिणीने क्षणमात्रनो विजोग न पडे । एकने छीक ने
एकने बगासु आवे तिवारे मरीने देवता थाय ।एहना शरीरनो निहरण देवता

करे । ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो । ए आराने
विषे । जरारोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अग उपाग विषयसूख भोगवे ते दान पू
न्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे ठेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण व
र्षने साढा आठ महीना वाकी रह्या । तीवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी ते
त्रीस सागरोपमनुं आउखु भोगवीने चविने । विनिता नगरी । नाभी कुलगर
राजापिता । मरुदेवी मातानी कुंखे रुषभ देवस्वामी उपना । सवानव मासे
जन्म्या ॥ प्रथम रुषभनु सुपन देखि रुषभदेव नाम दिधु । रुषभदेवस्वामीये
जूगलाधर्म निवारीने । असि मसि कसि आदि देईने ७२ बोतेर कला सिख
वि । अनुकपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे तो कुमरपणे रह्या ॥ ६३ ॥
त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य भोगव्यु । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पु
रुष सघाते सजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे सजम पाल्यो ॥ केवल पामिने ।

अष्टापद पर्वत उपरे। पद्मासने बेसीने। दसहजार साधुसंघाते स्वामिनिर्वाण पधार्या। ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया। पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा न क्षत्रमा सर्वार्थसिध विमानथकी चविने मातानि कुखे उपना ॥ १ ॥ बिजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० संजम लि धो ॥ ४ ॥ पाचमे क० उ० केवलज्ञान उपनु ॥ ५ ॥ ए ५ ने ६ ठु क० अभीच नक्षत्रमा मोक्ष पधार्या। ए ६ ॥ ए आराने विषे गति पांच जाणवि। इति त्रीजो आरो संपूर्ण ॥ ३ ॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो। तीवारे अ नता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जवहीणा थया। ए आरो १ कोडाकोड सागरोप ममा बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो।ए आरो दुसम सूसमनामे जाणवो। दुख घणुं ने सूख थोडु जाणवुं। ए आराने विषे ५०० पाचसे धनुषनुं देहमान ने। क्रोड पूर्वनुं आउखु ॥ उतरते आरे सात हाथनु देहमान ने । सवासो वर्षनुं

करे। ए ३ आरा जुगलना जाणवा एकलो जुगल धर्म जाणवो। ए आराने विषे। जरारोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपाग विषयसुख भोगवे ते दान पून्यना फल जाणवा॥ ए आराने विषे छेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्षने साढा आठ महीना बाकी रह्या। तीवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी ते त्रीस सागरोपमनुं आउखु भोगवीने चविने। विनिता नगरी। नाभी कुलगर राजापिता। मरुदेवी मातानी कुंखे ऋषभ देवस्वामी उपना। सवानव मासे जन्म्या॥ प्रथम ऋषभनु सुपन देखि ऋषभदेव नाम दिधु। ऋषभदेवस्वामीये जुगलाधर्म निवारीने। असि मसि कसि आदि देईने ७२ बोतेर कला सिखवि। अनुकपा निमिते॥ २० विस लाख पूर्वलगे तो कुमरपणे रह्या॥ ६३॥ त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य भोगव्यु। भरतने राज्य आपिने। चार हजार पुरुष सघाते सजम लिधो। एक लाख पूर्व लगे सजम पाल्यो॥ केवल पामिने।

देवी क्षत्रियाणीनी कुखे मुको । अने त्रिसलादेवि राणीनी कुंखे । पुत्रिपणे गर्भ
छे ते देवानंदाजीनी कुखे मुको ॥ तिवारे हरण गमेषी देवता तेहत प्रमाण
करी । तेज वेलाइं आव्यो । आविने भगवंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्यु
जे स्वामी रूडु जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरु छु । तिवारे माता देवानंदाजीने
अवस्वापिनी निद्रा मुकिने तानिथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्या
तिहा स्वामि सर्वे थइने सवानवमासे जन्म्या । त्रिस वर्ष घरमां रह्या ।
एकाकीपणे संजम लिधो । संजम लेईने साढाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सु
धि । आकरा तप जप ध्यान ज्ञान करिने । स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन
पाम्या । बहोतेर वर्षनु आउखु भोगविने । चोथा आराना ३ वर्ष ने साढा
आठ महिना बाकी रह्या । तिवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वा
मिना छ कल्याणिक थया । तेमा ॥ ५ ॥ कल्याणिक तो उतराफाल्गुणी नक्षत्र

आठखु ॥ ए आराने विषे ७ संघयण ने ६ संठाण जाणवा । ए आरानेविषे ३२ बत्रिस मासलि उतरते आरे १६ सोल पासली जाणवी । ए आरानेविषे दिन २ प्रते आहारनि इछा उपजे । तिवारे ३२ कवलनो आहार करे । धरतिनि सर साइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोभ्री जाणवि । ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्षने साढाआठ महिना वाकीरह्या ॥ तिवारे दशामा देवलोकथि वीस सागरोपमनु आवखू भोगविने चविने । माहणकुन गाम नगरनेविषे । ऋषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानदाजीनी कुंखे । महा विरस्वामी उपना ॥ तिहा स्वामी साढीब्यासी रात रह्या । ब्यासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो । तिवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने नीरवाग कुले उपनादीठा अनते काले अछेरु थयु । तिवारे हरण गमेषी देवताने कह्यु । जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो । साहरीने खत्रीकुन गाम नगरने विषे । सिद्धार्थराजाने घरे । त्रिसला

ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥२॥ केवलज्ञान ॥३ ॥ परिहारवि
सुधचारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पूला
कलब्धी ॥७॥ क्षायकसमकीत ॥८॥ आहरकशरिर ॥९॥ जिनकल्पीसाधु॥१०॥
ए ॥१०॥ बोल इति चोथो आरो सपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पाचमो
आरो बेठो । तीवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । एआरो
दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आ
रानेविषे । ७हाथनु देह मान ने १२५ वर्षनुं आउखु । उतरते आरे ॥ १ ॥ हा
थनु देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ सघयण ने । ७
सठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवट्ठु सघयण ने ॥ १ ॥ हुरु सठाण जाणवु
। ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पासली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पासलिजा
णवि । ए आरानेविपे । दिन २ प्रते आहारनि ईछा उपजे । तीवारे शरीर प्र

मां थया । ते चवनक० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २ ॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पाचने । स्वाति नक्षत्रमा निर्वाण पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनु । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवल ज्ञान उपनु । ते ॥ ८ ॥ आठ वर्ष सुधि केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए जम्बुस्वामिने केवलज्ञान उपनु ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्षसूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । नर्तक्षेत्रमा ॥ ६४ ॥ चोसठ वर्षसूधि केवलज्ञान रह्युं । चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पाचमा आरामा मोक्ष जाय । पाचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामा मोक्ष जाय नही । जम्बूस्वामि मोक्ष पहोंतापछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया

ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥२॥ केवलज्ञान ॥३ ॥ परिहारवि
सुधचारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पूला
कलब्धी ॥७॥ क्षायकसमकीत ॥८॥ आहरकशरिर ॥९॥ जिनकल्पीसाधु॥१०॥
ए ॥१०॥ बोल इति चोथो आरो सपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पाचमो
आरो बेठो । तीवारे अनंता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । एआरो
डुसमनामा एकलुं डुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आ
रानेविषे । उहायनु देह मान ने १२५ वर्षनु आउखु । उतरते आरे ॥ १ ॥ हा
थनुं देहमान ने २० वर्षनु आउखु ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ संघयण ने । ७
सठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवठ्ठु संघयण ने ॥ १ ॥ हुंरु सठाण जाणवुं
। ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पासली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पासलिजा
णवि । ए आरानेविपे । दिन २ प्रते आहारनि ईछा उपजे । तीवारे शरीर प्र

माणे आहार करे। घरतिनी सरसाइ। काइक सारेरि जाणवि। उतरते
आरे कुनारना निभामानी गरसरखि जाणवी। हवे पाचमा आराना लक्षण
कहेछे १ मोटानगर ते गामडा सरिखा थाशे १॥ गाम ते मसाणसरिखा थासे
॥ २ ॥ नवा कुलनां गेरु ते दास दासीपणा करस्ये ॥ ३ ॥ प्रधान ते ला
लचि थासे ॥ ४ ॥ राजा तेजमन्तसरिखा थास्ये ॥ ५ ॥ नवा कुलनी
स्त्री ते लजारहित थास्ये ॥ ६ ॥ रूनाकुलनी स्त्रि वेस्यासरिखि थास्ये ॥ ७ ॥
पोताना पुत्र पोताने गमे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद
बोलसे ॥ ९ ॥ दुर्जन लोक सुखि थास्ये ॥ ॥ १० ॥ सजन लोक दुखि
थास्ये ॥ ११ ॥ दुर्भिक्ष दुकाल घणा पडस्ये ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादीकनी
दाढ घणी थास्ये ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थास्ये ॥ १४ ॥ हिंसाधर्मना
परूपक घणा थास्ये ॥ १५ ॥ एक धर्मना घणा भेद थास्ये ॥ १६ ॥ मिथ्याति

देवता घणा पूजास्ये ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थास्ये ॥ १८ ॥ माणसने देवदर्शन दुर्लभ थास्ये ॥१९॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोमा हुस्ये ॥२०॥ गोरस दुध दहिमा सरसाइ थोडी हुस्ये ॥ २१ ॥ बलद प्रमुषना बल आउखा थोडा हुस्ये ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मासकल्प तथा चोमासा करवा जेवां खेत्र थोडा हुस्ये ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पमिमा ॥ साधुनी १२ पमिमा विछेद जास्ये ॥ २४ ॥ गुरु शिष्यने भणावसे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहकारी हुस्ये ॥ २६ ॥ अधर्मकारि जगमाकारी कलहकारी कुमाणस घणा हुस्ये सुमाणस थोमा हुस्ये ॥२७॥ आचार्य आप आपणा गछनी परंपरा सामाचारि जूदि २ प्रवर्तावसे । तथा मूढ मुर्ख जनने मोहिने मिथ्यात्व पासमा पामस्ये॥उत्सूत्र भाखस्ये । आप आपणी प्रससामा राचसे । नंदक कुबुद्धि होस्ये ॥ २८ ॥ सरल भद्रिक ॥ न्याइ प्रमाणिक माणस थोमा हुस्ये ॥ २९॥ म्लेछनाराज घणा

हुस्ये ॥ ३० ॥ हिंडु राजा अल्पऋधिया ने थोडा हुस्ये ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना रा
जा हुस्ये ते निच काम करसे । अन्याय अधर्म कुविसनमा घणा राजसे ॥ ३२
ए ॥ ३२ ॥ लक्षण जाणवा । ए आरानेविषे धातु सर्वे विछेद जास्ये । लोढानी
धातु रहेसे चामडानी मोहरो चालस्ये । ते धनवत कहेवासे । ए आरानेविषे ॥ १
एक उपवास करसे ते मास खमणसरिखो थासे । ए आरानेविषे । ज्ञान तथा सु
त्र सर्वे विछेद जास्ये । तेमा दसविकालीकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेस्ये ।
ते उपरे ॥ ४ ॥ जीव एका अवतारि थास्ये । तेना नाम । डुपसह नामा साधु
॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका
॥ ४ ॥ ते आषाढ सुद १५ पूनमने दिने शक्रेंद्रनु आसन चलसे । तिवा
रे शक्रेंद्र उपयोग मुकि जोसे जे । आज पाचमो आरो उतरीने काले
छठो आरो बेससे । तिवारे शक्रेंद्र आवसे । ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे

काले छठो आरो बेससे। माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने संथारो करस्ये। तारे संवर्तक वायरो थास्ये। तिणे करिने पहाड। पर्वत। गढ कोठा वाव कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थास्ये॥ वैताढ पर्वत १ गंगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवणनिखाडी ए ५ वर्जिने शेष सर्व थानक त्रुटी पडस्ये॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमा जासे तिवारे ४ बोल विछेद जास्ये पेहले पोहरे। जैनधर्म वीछेद जास्ये॥ १॥ बीजे पोहरे॥ ३६३ ॥पाखंडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जास्ये॥२॥ त्रीजे पोहरे राजनीती विछेदजास्ये॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जास्ये॥ ४ ॥ए आरे बेसता गति॥५॥ जाणवी उतरता ४ गतितेमोक्ष अटकी इति पांचमो आरो संपूर्ण। हवे पांचमो आरो उतरीने छठो आरो बेठो। तीवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पजेवहीणा थया। ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो।ए आरो दुसमदुसमनामा एकलु दु ख

माउ ख जाणवु । ए आरे ॥ १ ॥ एक हाथनु देहमान ने ॥ २० ॥ वर्षनुं आउ
खु । उतरते आरे । मूढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनु आउखुं । जाणवुं ।
ए आराने विषे १ छेवटुं संघयण ने हुंड संठाण जाणवु । उतरते आरे पण ६
मज जाणवुं । ए आराने विषे ॥८॥ आठ पासली ॥ उतरते आरे ॥४॥ चार पा
सली जाणवी ॥ ए आराने विषे । ६ वर्षनी स्त्री गर्भ धरस्ये । ते काला कुदर्शनी
रोगीने रिसाल नखने मूवाला घणा एहवा छोकरा घणा जणसे । ते कुतरीनी प
रे परीवार नेलो फेरवस्ये । ए आराने विषे गंगासिंधु नदि रहेसे ॥ तेमा ७२ बी
ल छे ॥ तेमा त्रणत्रण ॥ माल छे । तेमा मनुष्य त्रीजच पखी बीज मात्र रहेसे ॥ गं
गा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पोहोट छे तेमा । रथना चिला प्रमाणे पहोलु
ने गाम्रानि धुरि बूडे एटलु उंडु पाणि रहेसे । तेहमा मछ कछ घणा थासे । ते ७२ बी
लनां मनुष्य साझे ने प्रभाते । मछ कछ काढीने वेलुमा भारसे । सूर्य घणो तपसे

टाढ घणी पमस्ये । तेणे करी सीळ वाइ रहेसे । तेहनो आहार करस्ये । तेना हाम्का चामरा तिर्यंच चाटीने रहेस्ये मानवीना माथानि तुंबळीमा पाणीला विने पिसे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पूरा करसे । ए आराने विषे नव काररहित समकितरहित व्रत पचखाणरहित हसे । ते एहवा ६ठा आराने विषे आविने अवतरसे । ते माटे एहवुं जाणिने जे जीव जिनधर्म करसे ते जीव सूखि थासे ॥ इति ६ आराना बोल संपूर्ण ॥

जनम ॥ अथ चोविस जिनातरा लिख्यते ॥ अढार कोडाकोडि सागरने आतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया॥ विनीता नगरीनेविषे॥ नाभी राजा पीता। मरु देवा राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ वृषभ लंछन। पाचसें धनुषनु देहमान। चोरासी लाख पुर्वनु आउषू ॥ वीस लाख पुर्व तो कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्यु ॥ एक लाख पुर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधापछि एक हजार

वरसे। केवलज्ञान उपनुं। साधु। साधवी। श्रावक। श्रावीकारूप। चतुर्विध स
घतिर्थ थापीने। द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने॥ त्रीजा आराना। त्रण व
रसने साढाआठ महिना। ठेक थाकता बाकी रह्या॥ तिवारे महावद तेरसने
दहाडे। दस हजार साधुसंघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी नीरवाण मोक्ष पधार्या
॥१॥पहेला श्रीआदीनाथ तिर्थंकर निरवाण मोक्षपोहोंतापछिपचास लाख कोडि
सागरनेआंतरे॥बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया। अयोध्या नगरीनेविषे। जी
तसत्रुराजा पिता॥ विजयादेवी राणी माता॥ हेमवर्णे॥ गज कहेता हस्तिनु
लंछन। साढाचारसें धनुषनु देहमान॥ बहोतेर लाष पूर्वनु आउषू॥ तेमा अ
ढारलाष पूर्व तो कुवरपणे रह्या। त्रेपन लाष पूर्वनु राज पाल्यु। एक लाष
पूर्वनीप्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधापछि। बार वरसे केवलज्ञान उपनु। साधु
साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने। द्वादसागी गणी

नी पेटी । आपीने ॥ एक हजार साधुसघाते स्वामी निरवाण मोक्षनेविषे प
होंता॥२॥हवेबीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंतापछि॥त्रीस लाष क्रोडि साग
रने आतरे। त्रीजासम्भवनाथ तिर्थंकर थया॥सावथींनगरीनेविषे ॥ जीतार्थ राजा
पीता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णें ॥ अस्व कहेता घोडानुलंछन । चारसें
धनुषनुं देहमान । साठ लाष पुर्वनु आयूष॥ पनर लाष पुर्व तो कुंवरपणे रह्या ।
चुमालीस लाप पूर्वनु राज पाल्यु ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या
लीधापछि चउद वर्से केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप।
चतुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार
साधुसघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा सम्भवनाथ तिर्थंकर मोक्ष
पोहोंता पछि । दस लाष क्रोडि सागरोपमने आतरे । चोथा अभीनंदन ति
र्थंकर थया । विनीता नगरीनेविपे । सवर राजा पीता । सीधार्था राणी माता ।

हेमवर्णे ॥ वानरनु लंछन । साढा त्रणसें धनुषनु देहमान । पचास लाख पूर्वनुं आयुष ॥ तेमा साढा बारलाष पूर्व तो कुंवरपणे रह्या । साढा छत्रीस लाष पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाप पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछि ॥ अढार वर्सें केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी निरवाण मोक्षनेविषे पोहोंता ॥४॥ हवे चोथा अभीनंदन तिर्थंकर मोक्षपोहोंतापछि । नव लाष कोडि सागरने आंतरे । पांचमा सुमत्तिनाथ तिर्थंकर थया । कुसलपुरी नगरीने विषे । मेघरथ राजा पिता । सुमंगला देवी राणी माता । हेमवर्णे । क्रोंच पषीनुं लंछन ॥ त्रणसें धनुषनु देहमान । चालीस लाष पूर्वनु आयुष । तेमा दश लाप पूर्वतो कुंवरपणे रह्या ॥ ओगणत्रीस लाष पूर्वनु राज पाल्युं । एक लाप पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि । वीस वर्सें केवलज्ञान उपनु ।

साधुसाधवी । श्रावकश्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशागी ग णीनि पेटि आपिने एकहजार साधुसघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधास्या ॥ ५॥ पाचमा सुमतिनाथतिर्थंकर निरवाण मोक्ष पोहोतापछि । नेवु हजार कोडिसाग रने आंतरे । छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर थया । कोसबीनगरीनेविषे । धर राजा पिता सुसिमा देवीराणी माता । राते वर्णे । पद्म कमलनु लछन । अढीसो धनुषनु देहमान । त्रिशलाष पूर्वनु आयुष ॥ साढासात लाष पूर्व तो कुवरपणे रह्या । साढीएकविस लाष पूर्वनु राज पाल्युं ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रव र्ज्या लीधापछि । छठे महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक । श्रावी कारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने द्वादसागीगणीनी पेटी आपीने । त्रिहुंतेर साधु सघाते स्वामी नीवार्ण मोक्ष पधास्या ॥ ३ ॥ छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर नि र्वाण मोक्ष पोहोंतापछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आतरे । सातमा सुपार्श्व

नाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसीनगरीने विषे । पइठ राजा पिता । पृथ्विदेवि राणी माता। हेमवर्णे॥साथीयानु लगन।बसे धनुषनुं देहमान।विस लाष पूर्वनु आयूष।तेमा पाचलाष पूर्व तो कुवरपणे रह्या॥ चउद लाष पूर्वनु राज पाल्यु। एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधापछि॥ नव मासे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक । श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थथापीने ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आपीने।पांचसें साधुसघातेस्वामी नीर्वाण मोक्षपधास्या ॥७॥ सातमा सुपार्श्वनाथतिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछे । नवसें कोडि सागरनें आतरे । आठमा चंद्रप्रभतिर्थंकर थया। चंद्रपुरी नगरीने विषे । महासेन राजा पिता। लषमणादेवी राणीमाता । उज्वल वर्णें । चद्रमानु लगन । दोढसो धनुष्यनु देहमान । दश लाष पुर्वनु आयूष।तेहमा अढीलाष पुर्व तो कुवरपणे रह्या । साढालाष पूर्वनुं राजपाल्यु । एक लाष पुर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा

पछि छठेमहिने केवल ज्ञान उपनु । साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ८ ॥ हवे आठमा श्रीचंद्रप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि । नेवु कोडि सागरने आंतरे ॥ नवमा श्रीसुविधीनाथ तिर्थंकर थया । काकंदी नगरीनें विषे ॥ सुग्रीव राजा पिता । रामादेवि राणी माता । उज्वल वर्णे । मघरमछनु लंछन ॥ सो धनुष्यनु देहमान ॥ बे लाप पूर्वनु आउषु तेमा अर्ध लाप पूर्व तो कुंवरपणें रह्या । अर्ध लाष पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाप पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधापछि । चार महीने केवलज्ञान उपनु साधु साधवी श्रावक । श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादशांगीगणीनी । पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते । स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ ए ॥ हवे नवमा सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण

मोक्ष पोहोंतापछि॥ नवक्रोडिसागरने आतरे॥ दशमा श्रीसितलनाथ तिर्थंकर थया। भदलपुर नगरीने विषे॥ दढरथ राजा पिता। नदादेवी राणी माता॥ हेम वर्णे॥ श्रीवछ साथीयानु लंछन॥ नेवु धनुष्यनुं देहमान। एक लाष पूर्वनु आउषु। तेमा पाछाखपूर्वतो कुंवरपणे रह्या। अर्ध लाष पूर्वनु राज पाल्यु॥ पाछाखपूर्वनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पछे। त्रण मासे केवलज्ञान उपनु। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥ १० ॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर। निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि॥ एक क्रोडिसागर तेमा॥१००॥ सागर॥ छासठ लाष छविस हजार वरसने उणे आतरे॥ इग्यारमा श्रेयासनाथ तिर्थंकर थया। सिंहपुरी नगरीनेविषे। विश्नु राजा पिता॥ विश्नुदेवी राणी माता। हेम वर्णे गेंडानु लंछन॥ एसी धनुष्यनु देहमान।

चोरासी लाप वरसनु आयूप ॥ तेमा ॥२१॥ लाष । वरस कुवरपणे रह्या ॥४२॥ लाप वरसनु राज पाल्यु ॥ २१ ॥ लाप वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पठि वे मासे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसागीगणीनि पेटी आपीने । एक हजार साधु सघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोंता ॥११॥ हवे इग्यारमा श्रेयासनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पठी ॥५४॥ सागरने आतरे ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य तिर्थंकर थया चपापुरी नगरीने विषे । वसुपुज्य राजा पिता । जयादेवी राणी माता । राते वर्णे । नेंसानु लछन । सितेर धनुष्यनुं देहमान । बोहोतेर लाष वर्सनु आउपु ॥ तेमा अढार लाप वरस तो ॥ कुवरपणे रह्या । चोपन लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पठि ॥ एक मासे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आ

पीने । ठसें साधु सघाते स्वामीनीर्वाण मोच्च पधार्या ॥ १७ ॥ हवेबारमा वा सुपूज्य तिर्थंकर निर्वाण मोच्च पोहोंता पछि । त्रीस सागरने आतरे ॥ तेरमा श्रीवीमलनाथ तिर्थंकर थया । कपीलपूर नगरने विषे ॥ कृतवर्म राजा पिता ॥ सामादेवि राणी माता ॥ हेम वर्णे वराहके० सुवरनु लंछन ॥ साठधनुष्यनु देहमान ॥ पनर लाष वरस तो कुंवरपणें रह्या ६० लाख वर्षनु आउखु तेमा त्रीस लाष वरसनुं राज्य पाल्युं ॥ १५ ॥ लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने केव लज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध सघतिर्थ थापीने । छपदसागी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० ॥ साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोच्च पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमां विमलनाथ तिर्थंकर मोच्चपोहोतापछी ए सागरने आत रे ॥ चउदमा अनंतनाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीनें विषे ॥ सवसेन राजा पिता । सुजसादेवी राणी माता । हेम वर्णो ॥ सकरानु लंछन । अने पंचास धनुष्यनुं

देहमान ॥३०॥ लाष वरसनु आयुष। तेमा साढासात लाष वरस तो कुंवरपणें रह्या। पन्नर लाष वरसनु राज पाल्यु। साढासात लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि॥३॥महीने केवलज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापी द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने। सातसें साधुसघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे जंउदमा अनतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि ॥ चार सागरने आतरे ॥ पनरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीनेवीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुव्रतादेवी राणीमाता। हेम वर्णे ॥ वज्रनु लछन। पिस्तालिस धनुष्यनुदेहमान दस लाष वर्सनुं आउषु ॥ तेमा अढी लाष वर्स तो कुवरपणे रह्या ॥ साढापाच लाष वरसनु राज पाल्यु ॥ एक लाष वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवलज्ञान पाम्या। साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीकारूप ॥ च

तुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसागी गणीनि पेटी आपिने॥ आठसें साधु सघाते
स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥१५॥ हवे पन्नरमा धर्मनाथ तिर्थंकर। निर्वा
ण मोक्ष पोहोतापछी ॥ त्रण सागर। तेमा पोणापल्यने उणे आंतरे॥सोलमा श्री
शांतिनाथ तिर्थंकर थया॥हस्तीनागपरनगरनेविषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥ अ
चिरादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ मृगनुं लंछन ॥ चालीस धनुष्यनु देहमान। ए
क लाष वर्सनु आउषुं ॥ तेमा पा लाष वर्से तो कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाष वरसनुं
राज पाल्यु ॥ पा लाख वर्षनि चक्रवतीनि पदवी भोगवी॥पा लाष वरसनी प्रव
र्ज्यापाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एक महीने केवलज्ञान उपनु। साधु साधवी श्रा
वक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने॥ द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने ॥
नवसेंसाधुसघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥१६॥ हवे सोलमा शांति
नाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी॥ अर्द्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमा श्रीकुंथु

नाथ तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीनेवीषे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरादेवी राणी मा
ता ॥ हेम वर्णे ॥ छगल कहेता बोकडानु लंछन॥ पात्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पचा
णु हजार वरसनु आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस तो कुंवरपणे रह्या ॥
पोणीचोवीस हजार वरसनु राज पाल्यु ॥ पोणीचोवीस हजार वरस चक्रवत्तिनी
पदवी भोगवी ॥ पोणीचोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लिधापछि
सोल महीने केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध स
घतिर्थ थापिने ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसघाते । स्वा
मी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१७॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष
पोहोतापछी ॥ पापल्यमाथी । एक क्रोड ने १ हजार वर्सने उणे आतरे ॥१८॥ मा
श्रीअरनाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विपे ॥ सुदर्सण राजा पिता ॥ दे
वकीदेवी राणी माता ॥ हिम वर्णे ॥ नदावृत साथीयानुं लछन ॥ त्रीस धनुषनुं

देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनु आउष्य ॥ तेमा २१ हजार वरस तो कुंवर पणे रह्या ॥२१॥ हजार वर्सनु राज पाल्यु ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी चक्रवर्त्तीनी पदवी पाळी ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पाळी ॥ प्रवर्ज्या लीधापछी ॥ त्रण वर्षे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनि पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी ॥ नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१८॥ हवे अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी । एक कोडने एक हजार वरसने आंतरे॥ १९ मा मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरिनेविषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निले वर्णे ॥ कलसानु लंछन ॥ पचविस धनुषनुं देहमान ॥ पचावन हजार वर्सनु आउपू तेमा सो वरस तो कुंवरीपणे रह्या॥ बाकी प्रवर्ज्या पाळि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि॥ त्रीजे पोहोरे केवल ज्ञानउपनु॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतु

विंध सघतिर्थ थापिने द्वादसागी गणीनी पेटी आपिने॥पांचसें साधु॥ अने पाचसें साधवी सघाते॥स्वामी निर्वाण मोक्ष पधास्या ॥ १ए ॥ हवे ओगणीसमा मल्लि नाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥५४॥ चोपन लाष वरसने आतरे॥२०॥मा मु निसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीनेविषे ॥ सुमीत्र राजा पीता ॥ पद्मा वति राणी माता ॥ साम वर्णे ॥ काछबानु लछन ॥ विस धनुषनु देहमान ॥ त्रीस हजार वर्सनुं आउषुं॥ तेमा साढासात हजार वरस तो कुंवरपणें रह्या।प नर हजार वर्सनु राजपाल्युं। साढासात हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावि कारूप चतुर्विध ॥ सघतिर्थ थापीने । द्वादसागीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजा र साधुसंघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधास्या ॥२०॥ हवे वीसमा मुनिसुव्रत तिर्थं कर मोक्ष पोतापछी ६ लाप वर्सने आतरे २१ मां नमिनाथ तर्थंकर थया ॥

मथुरा नगरीनेविषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी माता ॥ हेम
वर्णे ॥ निलोत्पलकमलनुं लंछन । पनर धनुषनु देहमान ॥ दस हजार वर्सनु
आउषू ॥ अढि हजार वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ साढाठ हजार वर्सनुं राज
पाल्यु ॥ एक हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि ॥ नव महीने
केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी० । एक हजार साधुसघाते॥स्वामी निर्वाण मो
च्छनेविषे पधास्या॥२१॥हवे एकवीसमा नमीनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी । पा
च लाख वर्सने आतरे ॥२२॥ मा नेमनाथ तिर्थंकर थया । सोरीपुर नगरीनेविषे ।
समुद्रविजय राजा पीता ॥ सीवा देवी राणी माता॥साम वर्णे । सपनु लंछन ॥
दसधनुषनु देहमान ॥ एक हजार वर्सनु आउषू ॥ तेमा त्रणसें वर्स तो कुंव
रपणे रह्या ॥ सातसें वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछी । चोपन ८
हाडे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु० ॥ पाचसें ने छत्रीस साधुसघाते ॥ स्वामी नि

र्वाण मोक्ष पधास्या॥२२॥हवे बावीसमा नेमनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥
पोंणीचोरयासीहजार वर्सने आतरे ॥ २३ ॥ मा पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥
वाणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥
निले वर्णे ॥ सर्पनु लंछन ॥ नव हाथनु देहमान ॥ सो वर्सनु आउषू ॥ तेमा
३० वर्स तो कुंवरपणे रह्या सितेर वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि
चोरयासी दाहाडे केवलज्ञान उपनु साधु० एक हजार साधुसंघाते ॥ स्वामी
निर्वाण मोक्ष पधास्या ॥ २३ ॥ हवे त्रेवीसमा श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पो
होंतापछी ॥ अढिसें वर्सने आतरे ॥ चोविसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥
पत्रीकुन्ग्राम नगरनेविषे ॥ सिद्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥
हेम वर्णे ॥ सिंहनु लछन ॥ सात हाथनु देहमान ॥ बोहोतेर वर्सनु आउषू ॥
तेमा ॥३०॥ वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ ॥ बेतालिस वर्षनी प्रवर्जा पाली ॥

प्रवर्जा लिधापछी ॥ साढाबार वर्स ने एक पषवाडे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ आसो वद अमावास्यानी रात्रे । पावापुरी नगरीनेविषे । चोथा आराना त्रणवर्स ने साढाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे स्वामीनाथ एकाकि पणे ॥ बे दीवसनु अणसण करी ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पहोता ॥ २४ ॥ ० ॥ ए प्रथम पेहला तिर्थंकर श्रीऋषभदेवस्वामी ॥ अने चोविसमा तिर्थंकर श्रीमहाविरस्वामी ॥ ए बेहू विचे । एक कोडाकोड सागरो पम ऊणेरु ॥ तेहमा ४२ बेंतालिस हजार वर्स उणानु आतरु जाणवू ॥ इति श्रीचोविस तिर्थंकरना आतरा संपूर्ण ॥

ॐ नम अथ श्रीकर्मप्रकृतिना बोल लिख्यते ॥ पहिलु ज्ञानावरणीय कर्म ते आखना पाटासमान ॥१॥ बिजुं दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोलिया समान

॥२॥ त्रिजु वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खड्गसमान ॥ ३ ॥ चउथु मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पाचमुं आयुष कर्म ते हेड समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारासमान ॥ ६ ॥ सातमु गोत्र कर्म ते कुम्भारना चाकडा समान ॥ ७ ॥ आठमु अंतराय कर्म ते राजाना भंडारीसमान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्में अनंत ज्ञानगुण ढांक्योछे ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय कर्में अनंत दर्शनगुण ढांक्योछे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्में अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युछे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्में क्षायक समकित गुण रोक्योछे ॥ ४ ॥ आयुष कर्में अक्षय स्थिति गुण रोक्योछे ॥ ५ ॥ नाम कर्में अमूर्तिगुण रोक्योछे ॥६॥ गोत्र कर्में अगुरु लघुगुण रोक्योछे॥ ७॥ अंतराय कर्में अनंत आत्मिकशक्ति गुण रोक्योछे ॥८॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ पहिले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना भुंडा बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते

ज्ञानिनो उपकार उळवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आ
शातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएण ते । ज्ञाननि अंतराय पाम्वे
॥ ४ ॥ पाचमे बोले नाणपउसेणं ते । ज्ञानिउपर द्वेषकरे ॥ ५ ॥ छठे बोले ना
णविसवायणाजोगेण ते । ते ज्ञानिसाथे खोटाकधमा विखवादकरे ॥ ६ ॥ एछ
प्रकारे बाधे ते ॥ पाच तथा १० प्रकारे जोगवे । ते पाच किया ते कहेछे । मति
ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥
मनपर्यवज्ञाना वरणीय ॥४॥ केवलज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ॥ ५ ॥ ज्ञान प्रगट
थावा दे नहि तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहेछे सोयावरणे ॥ १ ॥ सोयविन्ना
णावरणे ॥ २ ॥ नेत्तावरणे ॥ ३ ॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥
घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावर
णे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ए ॥ १० ॥ प्रकारे जोगवे । हवे ज्ञानावरणी

य कर्मनि स्थिति ॥ जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत् ० । त्रिश कोमाकोमि सागरो
पमनी । अने अबाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ १ ॥ हवे
दर्शनावरणीय कर्म ॥ ६ ॥ प्रकारे बाधे ते कहेछे ॥ पहिले बोले । दंशणपमिणी
याए ॥ १ ॥ दशणनिएहवणयाए ॥ २ ॥ दशण आसायणाए ॥ ३ ॥ दंशण
अतराएण ॥ ४ ॥ दंशणपउसेणं ॥ ५ ॥ दशण विसवायणाजोगेण ॥ ६ ॥ ए
॥ ६ ॥ प्रकारे बाधे ते ॥ ए ॥ प्रकारे जोगवे । ते कहेछे । चक्षुदर्शनावरणीय
॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अवधिदर्शनावरणीय ॥ ३ ॥ केवलदर्श
नावरणीय ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रानिद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचलाप्र
चला ॥ ८ ॥ थिण द्धिनिद्रा ॥ ए ॥ ए ॥ ए ॥ प्रकारे जोगवे ॥ दर्शनावरणीय
कर्मनि स्थिति जघ० । अतर्मुहुर्त्तनि । उत् ० ॥३०॥ कोमाकोमि सागरोपमनि ।
अनेअबाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ २ ॥ त्रिजु वेदनीय

कर्म तेहना २ भेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥ तेहमा सा
तावेदनीय दशप्रकारे बांधे ते कहेछे । पाणाणुकंपयाए ॥ १ ॥ भुयाणुकपयाए
॥ २ ॥ जीवाणुकपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणुकपयाए ॥ ४ ॥ बहुण पाणाण भुयाण
जीवाण सत्ताण अडुक्खणयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अझुरणयाए ॥ ७ ॥
अतिप्पणयाए ॥ ८ ॥ अपिट्टणयाए ॥ ए ॥ अपरियावणयाए ॥१०॥ ए ॥१०॥
प्रकारे बांधे । ते ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे । मणुणासद्दा ॥ १ ॥ मणुणारुवा ॥ २ ॥
मणुणागंधा ॥ ३ ॥ मणुणारसा ॥ ४ ॥ मणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणसुहया ॥ ६ ॥
वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥८॥ ए ॥८॥ प्रकारे भोगवे । हवे एहनि स्थिति ।
जघ० ॥ २ ॥ समयनि उत्० ॥ १५ ॥ कोमाकोम सागरोपमनि । अबाधा
काल करे तो । जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । दोढ हजार वरसनी स्थिति ।
हवे असातावेदनीय ॥ १२ ॥ प्रकारे बांधे ते कहेछे । परडुक्खणयाए ॥ १ ॥

परसोयणयाए ॥ २ ॥ परझुरणयाए ॥३॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिट्टणयाए ॥५॥ परपरियावणयाए ॥६॥ बहुणं पाणाणं भुयाण जीवाण सत्ताण दुःखणया ए ॥७॥ सोयणयाए ॥८॥ झुरणयाए ॥९॥ तिप्पणयाए ॥१०॥ पिट्टणयाए ॥११ परियावणयाए ॥ ९ ॥ १२ ॥ प्रकारे बाधे ते ॥८॥ प्रकारे नोगवे । ते । अमणुणा सद्दा ॥ १ ॥ अमणुणारूवा ॥ २ ॥ अमणुणागंधा ॥ ३ ॥ अमणुणारसा ॥ ४ ॥ अमणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणदुहया ॥ ६ ॥ वयदुहया ॥ ७ ॥ कायदुहया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ प्रकारे नोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ १ ॥ सागरना ॥ ७ ॥ नाग करिये एहवा ॥ ३ ॥ नाग एक पल्प ने असंख्यातमे नाग उणानि उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि । एहनो आबाधाकाल ॥ ३ ॥ हजार वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चउथु मोहनीय कर्म ते ७ प्रकारे बांधे ॥ तिव्वकोहे ॥ १ ॥ तिव्वमाणे ॥ २ ॥ तिव्वमायाए ॥ ३ ॥ तिव्वलोहे ॥ ४ ॥ तिव्वदंसणमोहणिज्जे ॥

५ ॥ तिव्रचरित्तमोहणिज्जे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते २८ प्रकारे नोगवे ।
अनंतानुबंधि क्रोध ते पर्वतनि राइसमान ॥ १ ॥ अनंतानुबंधि मान ते पथर
ना स्तंनसमान ॥ २ ॥ अनंतानुबंधि माया ते वाशनि गांठसमान ॥ ३ ॥ अनं
तानुबंधि लोन ते किरमजना रंगसमान ॥४॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे नरकनि ।
स्थिति करे जावज्जीवनि । घातकरे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते
तलावना खोटसमान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हाडकाना स्तंन समा
न ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते । घेटाना शृंगसमान ॥ ३॥ अप्रत्याख्यानी
लोन ते नगरनि खालना कर्दमसमान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि ।
स्थिति करे वरस एकनि । घात करे देशव्रतनि ॥ ८ ॥ पच्चखाणावरणीय क्रोध
ते वेळुनि लिटिसमान ॥ १ ॥ पच्चखाणावरणीय मान ते लाकमाना स्तंनस
मान ॥ २ ॥ पच्चखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिकासमान ॥ ३ ॥ पच्चखाणावर

पीय लोन्न ते गाम्हाना खजन समान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥ स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व व्रतनि ॥ १२ ॥ सज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटिसमान ॥ १ ॥ संज्वलनो मानते नेत्रना स्तम्नसमान ॥ २ ॥ सज्वलनो माया ते वासनि गेइ समान ॥ ३ ॥ सज्वलनो लोन्न ते । पतंग तथा हलिद्रना रंगसमान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवलज्ञाननि ॥ १६ ॥ ए ॥१६॥ कषाय । हवे ॥ ए ॥ नो कसाय कहेछे । हास्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥ नय ॥ २० ॥ शोक ॥ २१ ॥ डुगंछा ॥२२॥ स्त्रीवेद ॥२३॥ पुरुषवेद ॥ २४ ॥ नपुंसकवेद ॥२५॥ ए चारित्र मोहनीयनि ॥२५॥ प्रकृति ॥ हवे दसण मोहनीयनि ॥ ३ ॥ प्रकृति कहेछे । समकित मोहनीय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय ॥ २ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ दर्शन मोहनीयनि।

एव सर्व मिलि ॥ ७८ ॥ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० । अतर्मुहुर्तेनि । उत्० ॥ ३० ॥ कोमाकोम्डिसागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० । अं तर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७ ॥ हजार वरसनि छे ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म । सोल प्रकारे बाधे । तेहमांहि । नारकिनु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे । ते महा रंभयाए ॥ १ ॥ महापरिग्गहियाए ॥ २ ॥ कुणिमाहारेण ॥ ३ ॥ पंचिंदिय वहेण ॥ ४ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे ॥ माइलयाए ॥ १ ॥ नियम्डिलयाए ॥ २ ॥ अलियवयणेण ॥ ३ ॥ कुम्तोलेकुम्माणे ॥ ४ ॥ म नुष्यनु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे । पगइभद्दयाए ॥ १ ॥ पगइविणीयाए ॥ २ ॥ साणुकोसयाए ॥ ३ ॥ अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे । सरागसजमेणं ॥ १ ॥ सजमासजमेण ॥ २ ॥ बालतवोकमेणं ॥ ३ ॥ अकामनिजराए ॥ ४ ॥ ए १६ प्रकरे बाधे । ते ॥ ४ ॥ प्रकारे जो

गवे । नारकि ॥ १ ॥ देवतानुं आयुष जघ० ॥ १० ॥ हजार वर्ष ने अंतर्मुहु र्त अधिकनु ॥ उत्० ॥ ३३ ॥ सागर ने पूर्वकोम्किनो त्रिजो नाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नु आयुष जघ० । अंतर्मुहूर्त । उ त्० ॥ ३ ॥ पल्यने । पूर्वकोम्किनो त्रिजो नाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठु नाम कर्म तेहना २ नेद ॥ शुननाम ॥ १ ॥ अशुननाम ॥ २ ॥ तेमा शुननाम कर्म ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे ॥ कायुज्जुयाए ॥ १ ॥ नासुज्जुयाए ॥ २ ॥ नावुज्जुयाए ॥ ३ ॥ अविसंवायणाजोगेण ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ ॥ प्रकारे नोगवे । इठासद्दा ॥१॥ इठारुवा २ इठागधा ३ इठारसा ४ इठाफासा ॥ ५ ॥ इठागइ ॥ ६ ॥ इठा ठिइ ॥ ७ ॥ इठेलावणे ॥ ८ ॥ इठाजसोकित्ती ॥ ए ॥ इठेउठाणकम्मबलवीरि यपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ इम्सरया ॥ ११ ॥ कंतसरया ॥ १२ ॥ पिय सरया ॥ १३ ॥ मणुणसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ प्रकारे नोगवे ॥ अशुननाम

कर्म ॥ ४ ॥ प्रकारे वाधे ॥ कायअप्रुज्जुयाए ॥ १ ॥ भासापुज्जुयाए ॥२॥ भावा पुज्जुयाए ॥ ३ ॥ विसंवायणाजोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ ॥ प्रकारे भोगवे । अणि ठसद्दा ॥ १ ॥ अणिठरुवा ॥ २ ॥ अणिठगंधा ॥ ३ ॥ अणिठरसा ॥ ४ ॥ अणिठफासा ॥ ५ ॥ अणिठगइ ॥ ६ ॥ अणिठठिइ ॥ ७ ॥ अणिठेलावणे ॥८॥ अणिठजसोकित्ति ॥९॥ अणिठेउठाणकम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ हिणसरया ॥ ११ ॥ दिणसरया ॥ १२ ॥ अणिठसरया ॥ १३ ॥ अकंतसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ प्रकारे भोगवे ॥ हवे नाम कर्मनि ॥९३॥ प्रकृति कहेछे ॥ नरकगति ॥ १ ॥ तिर्यंचगति ॥ २ ॥ मनुष्यगति ॥३॥ देवगति ॥ ४ ॥ एकेंद्रिय जाति ॥ ५ ॥ बेइंद्रियजाति ॥ ६ ॥ तेइंद्रिय जाति ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय जाति ॥ ८ ॥ पंचेंद्रियजाति ॥ ९ ॥ उदारिकसरिर ॥ १० ॥ वैक्रियसरिर ॥ ११ ॥ आहारकसरिर ॥ १२ ॥ तेजससरिर ॥ १३ ॥ कार्मणसरिर ॥

॥ १४ ॥ उदारिकअंगोपांग ॥ १५ ॥ वैक्रेयअंगोपांग ॥ १६ ॥ आहारकअंगो
उपांग ॥ १७ ॥ उदारिकबंधन ॥ १८ ॥ वैक्रेयबंधन ॥ १९ ॥ आहारकबंधन॥
॥ २० ॥ तेजसबंधन ॥ २१ ॥ कार्मणबंधन ॥ २२ ॥ उदारिकसंघातन ॥२३॥
वैक्रेयसंघातन ॥ २४ ॥ आहारकसंघातन ॥ २५ ॥ तेजससंघातन ॥ २६ ॥
कार्मणसंघातन ॥ २७ ॥ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ २८ ॥ ऋषभनाराचसंघ
यण ॥ २९ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३० ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥ ३१ ॥ किलकुस
घयण ॥ ३२ ॥ छेवटुसंघयण ॥ ३३ ॥ समचउरश्रसंठाण ॥ ३४ ॥ निगोहपरि
मंडलसंठाण ॥ ३५ ॥ सादिसंठाण ॥ ३६ ॥ वामनसंठाण ॥ ३७ ॥ कुब्जसंठाण
॥ ३८ ॥ हुंडसंठाण ॥ ३९ ॥ कालोवर्ण ॥ ४० ॥ निलोवर्ण ॥ ४१ ॥ रातोवर्ण
॥ ४२ ॥ पिलोवर्ण ॥ ४३ ॥ धोलोवर्ण ॥ ४४ ॥ सुरभिगंध ॥ ४५ ॥ दुरभि
गंध ॥ ४६ ॥ तिखोरस ॥ ४७ ॥ कडवोरस ॥ ४८ ॥ कसायलोरस ॥ ४९ ॥

खाटोरस ॥ ५० ॥ मिठोरस ॥ ५१ ॥ खरखरोस्पर्श ॥ ५२ ॥ सुहाळो फरस
॥ ५३ ॥ भारि फरस ॥ ५४ ॥ हलुवो फरस ॥५५॥ टाढो फरस ॥५६॥ उन्हो
फरस ॥ ५७ ॥ चोपमो फरस ॥ ५८ ॥ लुखो फरस ॥ ५९ ॥ नरकानुपूर्वी ॥
॥ ६० ॥ तिर्यंचानुपूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥ ६२ ॥ देवतानुपूर्वी ॥ ६३ ॥
शुभविहायगति ॥ ६४ ॥ अशुभविहायगति ॥ ६५ ॥ ए ॥ ६५ ॥ पिंडप्रकृति
थइ । पराघातनाम ॥ ६६ ॥ उस्वासनाम ॥ ६७ ॥ अगुरुलघुनाम ॥ ६८ ॥
आतापनाम ॥ ६९ ॥ उद्योतनाम ॥ ७० ॥ उपघातनाम ॥ ७१ ॥ तिर्थंकरनाम
॥ ७२ ॥ निर्माणनाम ॥ ७३ ॥ त्रशनाम ॥ ७४ ॥ बादरनाम ॥ ७५ ॥ प्रत्येक
नाम ॥ ७६ ॥ पर्याप्तनाम ॥ ७७ ॥ स्थिरनाम ॥ ७८ ॥ शुभनाम ॥ ७९ ॥ सौ
भाग्यनाम ॥ ८० ॥ सुस्वरनाम ॥ ८१ ॥ आदेयनाम ॥ ८२ ॥ जशोकिर्तिनाम
॥ ८३ ॥ स्थावरनाम ॥ ८४ ॥ सुक्ष्मनाम ॥ ८५ ॥ साधारणनाम ॥ ८६ ॥

अअजासनाम ॥ ८७ ॥ अस्थिरनाम ॥ ८८ ॥ अशुजनाम ॥ ८ए ॥ दौर्जाग्य नाम ॥ ए० ॥ डस्वरनाम ॥ ए१ ॥ अनादेयनाम ॥ ए२ ॥ अजशोकिर्तिनाम ॥ ए३ ॥ ए ॥ ए३ ॥ प्रकृति थइ । तेहमा ॥ १० ॥ बधननि अधिक नेलता ॥ १०३ ॥ प्रकृति पण । ग्रथवाला कहेडे । अथवा नामकर्मनि ॥ ४२ ॥ पण खरि । गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरिर ॥ ३ ॥ अगोपाग ॥ ४ ॥ बधन ॥५॥ सघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गध ॥ ८ ॥ रस ॥ ए ॥ फरस ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ सगण ॥ १२ ॥ आनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहायगति ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ अने प्रत्येक प्रकृति ॥ ८ ॥ त्रशनो दशको ॥ १० ॥ स्थावरनो दशको ॥१०॥ एव ४२ थइ । तथा विस्तारे चउदनि ॥६५॥ तथा प्रत्येक प्रकृति ॥८॥ त्रशनो दशको ॥ १० ॥ स्थावरनो दशको ॥ १० ॥ एव विस्तारे ॥ए३॥ प्रकृति थइ॥ नामकर्मनि स्थिति । जघन्य । आठ मुहुर्त्तनि । उत्० । विश कोमाकोमि सागरो

पमनि ॥ अबाधा काल ॥ २ ॥ हजार वरसनो ॥ ६ ॥ हवे गोत्रकर्मना ॥ २ ॥
भेद ॥ उंचगोत्र ॥ १ ॥ निचगोत्र ॥२॥ तेहमा उचगोत्र ॥ ८ ॥ प्रकारे बांधे ॥
जाइअमदेण ॥ १ ॥ कुलअमदेण ॥२॥ बलअमदेण ॥३॥ रुवअमदेणं ॥ ४ ॥
तवअमदेण ॥ ५ ॥ सुयअमदेण ॥ ६ ॥ लाभअमदेण ॥७॥ इस्सरियअमदेणं
॥ ८ ॥ ए आठ मद अणकरवे करि उचगोत्र बांधे । ते ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे ॥
जाइविसिठिया ॥ १ ॥ कुलविसिठिया ॥ २ ॥ बलविसिठिया ॥ ३ ॥ रुवविसि
ठिया ॥४॥ तवविसिठिया ॥५॥ सुयविसिठिया ॥ ६ ॥ लाभविसिठिया ॥ ७ ॥
इस्सरियविसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे ॥ १ ॥ हवे निचगोत्र ॥८॥
प्रकारे बांधे ते । जाइमएण ॥ १ ॥ कुलमएण ॥ २ ॥ जावइस्सरियमएण । ए
॥ ८ मद करवे करि निचगोत्र बांधे । ते ॥८ प्रकारे भोगवे जाइविहिणया जावइ
स्सरियविहिणया ॥ २ ॥ गोत्रकर्मनि स्थिति । जघ० ॥ ८ ॥ मुहुर्त्तनि ॥ उत्०।

विश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल वे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे
८ मु। अंतरायकर्म । पाच प्रकारे बाधे ॥ दानातराय ॥१॥ लाभातराय ॥ २ ॥
भोगातराय ॥ ३ ॥ उवभोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यातराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ अतरा
य पाम्वे करि अतरायकर्म बाधे । ते पाच प्रकारे भोगवे दानातराय ॥ १ ॥
लाभातराय ॥ २ ॥ भोगातराय ॥ ३ ॥ उवभोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यातराय ॥५॥
ए ॥ ५ ॥ पामे नहि । ए । अतरायकर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अतर्मुहुर्त्तनि ।
उत् । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल ॥ ३ ॥ हजार वर्षनो ॥
॥ ८ ॥ बाध्यानि ॥ ७५ ॥ प्रकृति ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥
६ ॥ वेदनीयनि ॥ ७२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुपनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८
गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एव सर्व मिलि ॥ ७५ ॥ प्रकृति बाध्यानि
जाणवि ॥ भोगव्यानि ए३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि ॥ १० ॥ दर्शनावरणी

यनि ॥ ए ॥ नेम्नीयनि ॥ १६ ॥ मोहनीयनि ॥ ५ ॥ तेसम्मत्तवेयणिज्जे ॥ १ ॥
मिछत्तवेयणिज्जे ॥ २ ॥ सम्मामिछत्तवेयणिज्जे ॥३॥ कसायवेयणिज्जे ॥ ४ ॥ नो
कसायवेयणिज्जे ॥ ५ ॥ ए ॥५॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २८ ॥ गोत्रनि ॥
॥ १६ ॥ अतरायनि ॥ ५ ॥ ए सर्व मिली ॥ए३ ॥ प्रकृति नोगव्यानि जाणवी
॥ अथवा ॥ १४८ ॥ प्रकारे पण नोगवे ते पाच ज्ञानावरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शं
नावरणीयनि ॥ ए ॥ वेदनीयनि ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥ २८ ॥ आयुषनि ॥४॥
नामकर्मनि ॥ ए३ ॥ गोत्रकर्मनि ॥२॥ अतरायनि ॥ ५ ॥ एव सर्व मिलिने ॥
॥१४८॥ प्रकृति जाणवि। तथा वधन नामकर्मनि ॥ १० प्रकृति अथातरे कहिछे
ते नेलवता ॥१५८॥ प्रकृति पण थाय॥ अथवा मुलप्रकृति ॥८॥ तेहनि उत्तर
प्रकृति ॥ ३१ ॥ ज्ञाननरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ए॥ वेदनीयनि ॥
॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २ ॥ गोत्रनि ॥ २ अत

रायनि ॥ ५ ॥ एव ॥ ३१ ॥ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४८ ॥ कर्मप्रकृति
जाणवि । ए वोल सिद्धातप्रमाणे छे ॥ इति कर्मप्रकृतिना बोल समाप्त ॥
ॐनम सिद्ध ॥ सेकिंत धम्मेझाणे२ चउविहेचउपमयारेपन्नते ॥ तजहा ॥ आ
णाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥ २ ॥ विवागविजए ॥ ३ ॥ सगणविजए ॥४॥
धम्मस्सणझाणस्स चत्तारिलरकणा ॥ पन्नत्ता ॥ तजहा ॥ आणारुइ ॥ १ ॥ नि
सग्गरुइ ॥ २ ॥ सूतरुइ । उवएसरुइ ॥ ४ ॥ धम्मस्सणंझाणस्सचत्तारि ॥
आलवणापन्नत्ता ॥ तजहा ॥ वयणा ॥ १ ॥ पुछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥
धम्म कहा ॥ ४ ॥ धम्मस्सणझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा ॥ पन्नत्ता ॥ तजहा
एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसारा
णुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहेछे ॥ धर्म्मध्यानना
च्यार भेद तेमाहि पहिलो भेद तेहनो अर्थ कहीएछे ॥ आणाविजए आणा

विजए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते। ए वीतरागनी आज्ञा
जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पच महाव्रत । त्री
खुनीबार पडिमा शुनध्यान । शुनयोग ॥ ज्ञानदर्सणचारित्र तप ॥ छकायनी
रक्षा। ए। वीतरागनी आज्ञा ॥ आराधवी ॥ तिहा समय मात्रनो प्रमाद न क
रवो ॥ चतुर्विध तीर्थना गुणकीर्त्तन करवा ॥ ए धर्मध्याननो पेहेलो नेद कह्यो
॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननो बीजो नेद कहीयेछे ॥ अवायविजए ॥ अवायविजए
कहेता ससारमाहि जीव जेहथकि डुष पामेछे ॥ तेहनो विचार चींतववो ॥ ते
हनो । ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अविरति ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ अशुनयोग ॥
तथा अढार पापस्थानक ॥ छकायनी हिंसा। एह डुषना कारण जाणी ॥ एहवो
आश्रवमार्ग॥ छमीने॥ सवरमार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव डु ख न पामे॥ ए धर्म
ध्याननो बीजो नेद कह्यो॥२॥ हवे धर्मध्याननो त्रीजो नेद कहेछे॥ विवागविजए॥

विवागविजए कहेतां जीव जे सुष डुःख जोगवेछे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिं
तववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवेरसेकरि पूर्वे ॥ जेहवा शुनाशुन ज्ञा
नावरणीयादिक कर्म उपार्ज्याछे ॥ ते शुनाशुन कर्मना उदयथी जीव तेहवां
सुख डुःख अनुजवेछे ॥ ते अनुजवताथका ॥ कोइ उपर राग द्वेष नाणीये ॥ स
मताजाव आणीए ॥ मन वचन कायाना शुन योगसहित ॥ श्री जिनधर्मने
विषे प्रवर्तिये ॥ जिमनिरावाध परम सुष पामीए ॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो जेद
कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननो चोथो जेद कहीये छीये ॥ सगणविजए ॥ सग
णविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनु स्वरुप चिंतवीए ॥ तेनु ए स्वरुप ॥ ए
लोक सुपइठकनेआकारे छे ॥ जीव अजीवे सपूर्ण लोक जर्योछे ॥ अस
ष्यात जोयणनी कोमाकोमप्रमाणे त्रीछो लोक छे ॥ तिहां असष्याता द्वीप
समुद्र छे ॥ तया असंष्याता वाणव्यतरना नगर छे ॥ तया असष्याता ज्योत

पीना विमान ठे । तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी ठे ॥ तीहां अढी द्वी
पमांहि तिर्थंकर जघन्य २० ॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय ॥ तथा केवलि जघन्य
पृथक् कोडि ॥ उत्कृष्टा पृथक् कोडि तथा साधु जघन्य पृथक् सहस्त्र कोडि ॥
उत्कृष्टा पृथक् सहस्त्र कोडि ॥ तेहने वंदामि ॥ नमंसामि ॥ सक्कारेमि ॥ समाणे
मि ॥ कल्लाण ॥ मंगल ॥ देवय ॥ चेइयं ॥ पज्जुवासामि ॥ तथा त्रिग लोकमांहि ॥
असंख्याता श्रावक श्राविका ठे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते त्रिग लोकथकी
असंख्यात गुणो अधिको उर्ध्वलोक ठे ॥ तिहां बार देवलोक ॥ नव ग्रैवेयक
पांच अनुत्तरविमान सर्व थइने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान
ठे ॥ तथा तेउपर सिद्धसिला ठे ॥ तिहां सिद्धभगवंत विराजेठे ॥ तेहने वंदामि ॥
जावपज्जुवासामि ॥ तेउर्ध्वलोकथी काइक विशेषेअधिक अधो लोक ठे ॥ तिहां
चोरासी लाख नरकावासा ठे ॥ सात कोडि बहुतेर लाख भवनपतिना भवन

छे ॥ एहवा त्रिण लोकना सर्व थानक समकित सहित करणी॥ विना सर्व जीवे॥ अ
नतीवार जन्म मरणेकरी फरसी मूक्याछे ॥ एम जाणी समकितसहित श्रुत
अने चारित्रधर्मनी आराधना करीये॥ जिम अजरामर पद पामीये ॥ ए धर्म
ध्याननो चोथो भेद कह्यो ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ लक्षण ॥ तेमा धर्मध्या
ननु पहिलु लक्षण कहियेछे ॥ आणारुइ ॥ आणारुइ कहेतां वीत रागनी
आज्ञा अगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये ॥ ए धर्मध्याननु
पहेलु लक्षण कह्यु ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननुं वीजु लक्षण कहियेछे ॥ निसग्गरुइ॥
निसर्गरुइ कहेता ॥ जीवने सभावेज ॥ तथा जाति स्मरणादिक ज्ञानेकरी श्रु
तसहित चारित्रधर्म करवानी रुचि उपजे ॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये ॥ ए
धर्मध्याननु वीजु लक्षण कह्यु ॥ हवे धर्मध्याननु त्रीजू लक्षण कहिएछीये ॥
सुत्तरुइ ॥ सुत्तरुइ कहेता ॥ सूत्रना बे भेद ॥ अगपविठ ॥ १ ॥ अने अगबा

हिर ॥२॥ अंगपविठ ते आचारांगादि १२ अंग॥तेमा ॥ ११ ॥अंग॥कालिक॥ अने वारमुं अंग दृष्टिवाद ॥ ते।उत्कालिक १ अगवादिरना २ भेद॥आवस्यक १ अने॥आवश्यक व्यतिरिक्त ॥ आवश्यक ते सामायकादिक ६ अध्ययन ते उत्का लिक ॥ तथा उत्तराध्ययनादिक ॥ कालिकसूत्र ॥ तथाउववाइप्रमुख उत्कालिक सूत्र ॥ सांभलवा तथा भणवानी रुचि उपजे ॥ तेहने सूत्ररुचि कहिए ॥ ए ध र्मध्याननुं त्रिजुं लक्षण कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननुं चोथुं लक्षण कहियेछे ॥ उवएसरुइ ॥ उवएसरुई कहेता ॥ अज्ञानेकरी ॥ उपार्ज्यां कर्म ॥ ते ज्ञानेकरी खपावीए ॥ ज्ञानेकरी नवा कर्म न बांधीए । मिथ्याते करी उपार्ज्यांकर्म ते सम किते करी खपावीए ॥ समकितेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥ २ ॥ अविरतेकरी उ पार्ज्यांकर्म ते विरतेकरी खपावीए ॥ विरतेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥ ३ ॥ प्रमा देकरी उपार्ज्यांकर्म ते अप्रमादेकरी खपावीए ॥ अप्रमादेकरी नवाकर्म न बा

धीए ॥ ४ ॥ कषायेकरी उपार्ज्योकर्म ते कषायने अणकरवेकरीने खपावीए ।
अने कषायने अणकरवे करीने नवा कर्म न बाधीए ॥ ५ ॥ असुभ योगेकरी
उपार्ज्योकर्म ते सुभयोगेकरी षपावीए ॥ शुभ योगेकरी नवा कर्म न बाधीए ॥
॥ ६ ॥ पाच इंद्रीयना स्वादरूप आश्रवेकरी उपार्ज्योकर्म ते तपरूप संवरेकरी
खपावीए ॥ तपरूप सवरेकरी नवा कर्म न बाधीए ॥ तेमाटे अज्ञानादिक आ
श्रवमार्ग बारीने ज्ञानादिक सवरमार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेससा
भलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेशरुचि कहीए॥तथा उगाढरुचि पण कहीए
ए धर्मध्याननुं चोथु लक्षण कह्यु ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना च्यार आलंबन कहि
एछे ॥ वायणा १ पूछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्मकथा ४ हवे धर्मध्याननुं
पेहेलुं आलंबन कहेछे ॥ वायणा ॥ २ ॥ ते केहने कहिए ॥ विनयसहित ॥
ज्ञान ॥ तथा निर्जराने अर्थें ॥ सूत्रना अर्थना जाण ॥ गुर्वादिक समीपे सूत्र

तथा अर्थनी वाचणी दीजीई ॥ तेहने वायणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननु पहिलु आलंबन कह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननूं बीजूं आलंबन कहिए छीए ॥ पूछणा ॥ २ ॥ पूछणा ते केहनें कहिइ ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जिनमत दीपाववाने अर्थे ॥ तथा संदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवाने अर्थे यथा योग्य विनयसहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननु बीजूं आलंबन कह्यु ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननु त्रीजूं आलंबन कहिएछे ॥ परियट्टणा ॥ परियट्टणा ते केहने कहिए ॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र अर्थ भण्याछे ॥ ते असस्खलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे सुद्ध उपयोगसहित सुद्ध सूत्र अर्थनी वारवार सझाय करीए तेहने परियट्टणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननूं त्रीजुं आलंबन कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननूं चोथु आलंबन कहीएछे ॥ धर्मकथा ॥ धर्मकथा ते केहने कहिए ॥ वीतरागे जे भाव जेहवा प

रुप्याछे ॥ ते नाव पोते तेहवा लहीने ग्रहीने विसेषे निश्चय करीने संका क
रवा ॥ वितिगिछरहितपणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सन्ना
मध्ये ते नाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता
थका अने सानलीने सहहताथका ॥ ते बेहु वीतरागनी आज्ञाना आराधक
होय ॥ ते धर्मकथा ॥ सवररूपीउरक्ष सेवीए ॥ जिम मनवछित सुषपामीइ ॥
ते सवररूपीउरक्ष वषाणी एछे ॥ ते सवररूपीउरक्ष केहवोछे ॥ विशुध समकि
तरूपी मूल छे जेहनु ॥ १ ॥ धीर्यरूप कद छे जेहनो २ विनयरूप वेदिका छे जे
हनी ॥ ३ ॥ तीर्थंकर तथा च्यार तीर्थना गुण कीर्त्तनरूप खध छे जेहनो ॥४॥
पांच महाव्रतरूप मोटी शाखाछे जेहनी ॥ ५ ॥ पचवीस नावनारूप त्वचा छे
जेहनी ॥ ६ ॥ शुनध्यानने शुनयोगरूप प्रधानपल्लवपत्र छे जेहना ॥ ७ ॥ गु
णरूप फूल छे जेहना ॥ ८ ॥ सीयलरूप सुगध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आ

अवहीत फल छे जेहना ॥ १० ॥ मोक्षरूप प्रधानबीज छे जेहनुं ॥ ११ ॥ मंद रगिरीना शिखरउपरे जिम चूलिका विराजेछे तिम समकितीना हृदयमा संवर रूपिउंवृक्ष वीराजेछे ॥ १२ ॥ एहवा संवररूप वृक्षनी शीतल छाया जेहने परिणमे तेहना जवोजवना पाप टले ॥ अने ते परम अतुल सुख पामे इत्या दिक ४ प्रकारनी कथा अखेवणी ॥ १ ॥ विखेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निव्वे गणी ॥ ४ ॥ ए च्यार कथा विस्तारपणे कहिए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्म ध्याननु चोथु आलंबन कह्यु ॥ ४ ॥ अखेवणी प्रमुष ४ कथानो ए विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देसे २ बीजे सूत्र ५७ मा मध्येछे ॥ हवे धर्मध्याननी च्यार अणु प्पेहा कहिएछे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य ते हनो स्वजावसरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अ णुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहिली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकत्वाणुप्पेहा ते

केहने कहिए ॥ जीवअसंख्यात प्रदेसी अरुपीसदासउपयोगी ते चैतन्यरूप एहवो एकमाहरो आत्मा निश्चय नयेछे ॥ तिम सर्व आत्मा निश्चय नये एह वा छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते अचैतन ॥ जरू वर्णादि २० रूपसहित पुदगलनो संयोगीथको ॥ त्रस ॥ १ ॥ अने थावर २ ए २ रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे ॥ अनेक रूप अनेक छादे प्रवर्ते छे ॥ ते त्रसनोत्रसरूपे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो बे हजार सागर जाझेरासूधी रहे ॥ अने थावरनो थावरपणे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो अनतीउत्सर्पणी ॥ अवसर्पणी कालथी ॥ षेत्रथी अनता लोक प्रमाणे ॥ अलो कना आकास प्रदेस तेतला काल चक्र उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी ॥ तेहना असंख्याता पुद्गल परावर्त्तनथाय ॥ अगुलने असंख्यातमे भागे आकास प्र देस आवे तेतला असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन ॥ थावरमध्ये पुद्गल लेइ खे

ल्यो ॥ एव व्यवहार नयथी जीव जाणीई ॥ १ ॥ वलीत्रस ॥ थावरमध्ये रह्यो थको स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ॥३॥ ए वेदे पुद्गलने सयोगे खेल्यो ॥ प्रवर्त्यो ॥ अनेक रूप नवा लाव्यो ॥ तिहा स्त्रीपुरुषना रूप कोण कोण रीतना लाव्यो ते कहेछे कोइक प्रस्तावइ देव देवीपणे ॥ तत्र देवीपणे भवनपत्यादिक इसान देवलोकसूधी देवी इद्रनी इद्राणी सुरूपवती अपछरा थई ॥ जघन्य १० हजार वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवागनानेरूपे अनंतिवार ए जीव खेल्यो ॥ पुरुपमध्ये देवतापणे भवनपत्यादिकजावनवमानवग्रैवेयकसूधी महर्धिक देव ॥ महाशक्तिवत इद्रादिक लोकपाल प्रमुखपणे रूपवंत देदीपमान वछित भोग सयोग पणे प्रवर्त्यो ॥ जघन्य ॥ १० ॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम अनतीवार भोगीहूउ ॥ शक्रेंद्रे एकभवमाहि ७ पल्योपमनी बाविस कोमाकोरू पंचासी लाप कोरू एकोत्तर हजार कोरू च्यारसे अठावीस कोरू सतावन लाष

चउद हजार वसे अठ्यासी उपर पाच पल्यनी ८ एव एतली देवि भोगवी तोहि तृप्ति न पाम्यो ॥ हवे मनुष्यमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देवकुरु उत्तरकुरु मध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहा मनोहर रूप मनवछित सुष भोगव्या १० दसप्रकारना कल्पवृक्षना मनवछित सुष भोगव्या ॥ १० ॥ दस प्रकारना क ल्पवृक्ष मनवछित सुष पहुचाडे स्त्रीपुरुषने क्षणमात्रनो वियोग पडे नहि ॥ ३ पल्योपम निरतर सुख विलस्या हरिवास रमकवासमध्ये २ पल्योपम हेमवय क्षेत्र १ एरणवय क्षेत्रमध्ये १ पल्य ॥ छपन अंतरदीपामध्ये पल्योपमनो अस ख्यातमो भाग जुगल पुरुष ॥ युगलणी स्त्री वेदपणे अनतीवार स्त्रीवेदपुरुष वेदना रूप लेइ खेल्यो पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्त्तिने घरे स्त्री रत्नपणे लक्ष्मी सरिषा रूप अनतीवार स्त्रीवेद पुरुषवेदना रूप लेइ खेल्यो पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वासुदेव मरूलीक राजा ॥ प्रधान ॥ व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्रीवेद ॥

मनोज्ञ सुख। वछित जोग॥ दीर्घपूर्व कोडादिकनां आउषा स्त्रीपुरुषपणे प्रवर्त्यों॥
वलि तेहिज॥ जीव मनुष्यमध्ये दुर्भागीकुल॥ दरीद्री जर्त्तार स्त्री पण अल
ठरूप दुर्भागिणी पण ए जीव नटवापणे प्रवर्त्यों॥ तोदि मनुष्यपति स्त्री पुरु
पनो अवतार पूरो नथयो॥ वली तीर्थंच पचेंद्रीयमध्ये जलचरादि ५ मध्ये स्त्री
वेदे पुरुषवेदे प्रवर्त्यों वली ते जीव सात नरक॥ पाच एकेंद्रीय त्रिण विगलेंद्रीय
तथा असज्ञी तिर्यंच मनुष्य ए नियमानपुंसकवेद अने सज्ञीतिर्यंच मनुष्य
मध्ये पण नपुसक होए ते सर्वे नपुसकवेद ए जीव स्त्रीवेदे प्रवर्त्यों ते उत्कृष्टा
एकसो दस पल्य अनइ प्रथक पूर्व कोडसूधी स्त्रीवेदे खेल्यो॥ जघन्य आउखा
जोगव्या आश्री अतमुहुर्त्त॥ पुरुषवेदे उत्कृष्टो पृथक् सो सागर जाझेरासूधी
पुरुषवेदमध्ये खेल्यो जघन्य आउषा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त॥ नपुसक
वेद उत्कृष्टो अनंता कालचक्र असंख्याता पुद्गल परावर्त्तनसूधी नपुसकवेदे

खेल्यो ॥ जघन्य आउषा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ ए जिहां गयो तहां एकलो पुद्गलने सयोगे अनेकरूप परावर्त्तन कीधा ए सर्वे व्यवहारनय जी वने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तनने मिटाडणहार तेथी जिनधर्मने विषे सुधस द्दहणासहित सुद्धउदम पराक्रमनुं फोरववुं ॥ एहविशुद्ध ॥ जिनमते करी आ त्मानुं साधन थाय ॥ तिवारे सिद्धपणु पामें ॥ तत्रज एकलो निश्चय नय आत्मा जाणवो तेमाटे शुद्ध व्यवहार प्रवर्त्तवे ॥ अशुद्ध व्यवहार मिटे तिवारे सिद्ध होय एहवो माहरो एक आत्मा छे जेहनणी अपरपरिवार ते सवार्थ रूपी अने पउ गसा १ मीससा २ वीससा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्जवे करी जे जेहवे सन्नावे छे ॥ ते तेहवे सन्नावे नरहे ते पण असास्वता तेमाटे एक माहरो पोतानो आत्मा पोताना कारजनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानु साधन करीये ॥ ए धर्मध्याननी पेहेली अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा

कहेछे ॥ अणी च्चाणुप्पेहा ॥ १ ॥ ते केहने कहिये रूपीपुग्गलने अनेकप्रकारे
यतना करिइ ॥ तोहि पण अनित्य ॥ नित्य एक श्रीजिनधर्म परम सुखदायक
पोताना आत्माने ॥ तेमाटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक सवरेकरि
पुष्ठो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी बीजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननी
त्रीजी अणुप्पेहा कहीयेछे ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने क
हिये आ जवनेविषे अने परजव पहोंचता ॥ जीवने एक समकितपूर्वक जिन
धर्मविना जन्म जरा ॥ मरणना ॥ डुख निवारवा बीजो कोइ सरण समर्थ
नथी ॥ इम जाणी श्रीजिनधर्मनुं सरण करीये ॥ जिम परम सुख उपजे ॥ ए
धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी चोथी अणुप्पेहा कहि
येछे ॥ ससाराणुप्पेहा ससाराणुप्पेहा ते केहने कहिये ॥ सवार्थरूप ससार
समुद्रमाहे ॥ जनम जरा मरण ॥ सयोग वियोग ॥ सारीरी मानसी डुख कषा

य मिथ्यात त्रसनादिक बहुत ॥ जल कल्लोलादिकनी लहिरे करी ॥ चार गति चोवीस दण्डकनेविषे परिभ्रमण करता जगत जीवने श्रीजिनधर्मरूप द्विपानो आधार छे ॥ तथा संजमरूप नावा तिहां सुधसमकितरूप निर्जामक नावानो खेवणहार छे ॥ एहवीनावायेकरी जीव सिद्धिरूप महा नगरनेविषे पहुचें ॥ तिहां अनत अतुल ॥ विमल ॥ सिद्धना सुख जीव पामे ॥ ए धर्मध्याननी चोथी अणुप्पेहा कही ॥ ४ ॥ एहवा धर्मध्यानना गुण जाणीने सदा धर्मध्यान ध्याइये जिमपरम सुखपामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

ॐ नम अथ श्रीपाचबोल लिख्यते ॥ पहिलो नारकिनो द्वार ॥१॥ बिजो भवनपतिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यतरनो द्वार ॥ ३ ॥ चउथो ज्योतिषीनो द्वार ॥४॥ पाचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहिलो नरकनो द्वार कहेछे पहिले नाम ॥१॥ बिजे गोत्र ॥२॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंड ॥ ४ ॥ पाचमे पोलार ॥ ५ ॥

ठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥७॥ आठमे आतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पा विकीर्ण ने आवलिकावध ॥ ए॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकि ने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधामिना नाम ॥ १३ ॥ चउदमे जीवअजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नारकिने अवधिनुं देखवु ॥ १५ ॥ सोलमे सघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कुंणजीव केइ नरके उपजे ॥१७॥ अढारमे ॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहिले नाम । घमा ॥१॥ वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥४॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उंधाछत्रने आकारेछे ॥ १ ॥ बिजे गोत्र कहियेछे ॥ रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥७॥ रत्नप्रभा ते स्यामाटे ते सोलहजार जोजननो खरकाम्डछे । सोलजातिना रत्नमयछे । एकेकु रत्न हजार हजार जोजननु जाम्पणे

छे ॥ वल्या कोयलाशरिखा छे। तेमाहि ८० हजार जोजननो आछवल छे ॥ अने ॥८४॥ हजार जोजननो पकवल छे ॥ इम त्रणेकाम थइने ॥ एकलाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंम जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहेछे ॥ रत्नप्रभा ते रत्ननो पिंम ने रत्ननि पिठिका । ते रत्न केहवाछे । श्यामवर्णो वल्या कोयला सरिखा छे ॥१॥ शर्करप्रभा ते काकरानो पिंम ने काकरानि पिठिका ते काकरा केहवाछे । लुखा निरसगोखरुना फरससरिखो फरसछे ॥ २ ॥ वालुप्रभा ते वेलुनो पिंम ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहविछे। उन्हि धगधगति । अग्निनिपरे जाज्वल्यमान छे ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ते कादवनो पिंम ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवोछे । लोहिमय परुमय ने वज्रमय काटाछे ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ते धुमामानो पिंम ने धूमामानि पिठिका ॥ ते धूमामो केहवोछे तिखो तमतमो ने दरदुरोछे॥५॥ तमप्रभा ते अंधकारनो पिंम ने अधकारनी पिठिका॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ते

विशेपे अधकारनो पिंड ने अधकारनि पिठिका ॥७॥३॥ चोथो पिंम्ने पाचमो
पोलार ए वे द्वार नेला कहेछे। पहिलि नरके। एक लाख ने एंशीहजार जोज
ननो प्रथवीनो पिंम्डछे। तेहमांथि। एकहजार जोजन उंचु मुकिये एकहजार जो
जन निचु मुकिये विचे १ लाख ने अठोतेर हजार जोजननी पोलारछे ॥ ते
माहिं १३ पाथम्रा नें ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ वीजी नरके एक लाख
नेवत्रिश हजार जोजननो प्रथवीनो पिंम्डछे। तेहमाथि एकहजार जोजन उचु
मुकिये ॥ एकहजार जोजन निचु मुकिये विचे एकलाख ने ३० हजार जोजनानि
पोलारछे ॥ तेमाहि ११ पाथम्रा ने ॥ २५ ॥ लाख नरकावासाछे ॥ २ ॥ त्रिजी
नरके एकलाख ने अठ्याविशहजार जोजनो प्रथवी पिंम्डछे। तेहमाहि ॥ १ ॥
हजारजोजन उचु मुकिये ॥ १ ॥ हजारजोजन निचु मुकिये विचे एकलाख ने
छविशहजार जोजननो प्रथविनो पिंम्डछे। तेमाहि ॥ ए ॥ पाथम्राने ॥ १५ ॥

लाख नरकावासाछे ॥३॥ चोथि नरके एकलाख ने ॥ २० ॥ हजार जोजननो प्रथवीनो पिंम्छे तेहमाथि ॥१॥ हजार जोजन उच्चु मुकिये ॥ १ ॥ हजार जोजन निचु मुकिये विचे एकलाख ने १८ हजार जोजननि पोलार छे । तेमाहि ॥ ७ ॥ पाथरा ने ॥१०॥ लाख नरका वासा छे ॥४॥ पान्चमि नरके एकलाख ने अढारहजार जोजननो प्रथवीनो पिंम्छे। तेहमाथि एकहजार जोजन उच्चु मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये। विचे एकलाख ने १६ हजार जोजननि पोलार छे। तेहमाहि ॥ ५ ॥ पाथराने ॥ ३ ॥ लाख नरकावासा छे ॥५॥ छठी नरके एकलाख ने ॥ १६ ॥ हजार जोजननो प्रथवीनो पिंम्छे तेहमाथि । एकहजार जोजन उच्चु मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये विचे ॥१॥ लाख ने ॥ १४ ॥ हजार जोजननि पोलार छे तेहमाहि ॥ ३ ॥ पाथरा ने १ लाखमा ॥ ५ ॥ उणा नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥१॥ लाख ने ॥ ८ ॥ हजार

जोजननो प्रथवीनो पिंम़ ठे तेहमाथि । साढावावनहजार जोजन उंचुं मुकिये
साढावावनहजार जोजन निचुं मुकिये विचे ३ हजार जोजननो जाम़ो एक पा
थम़े ठे तेहमाहि ॥ ५ ॥ नरकावासा ठे ॥ ७ ॥ ५ ॥ बठे अलोक कहेछे॥पहि
ली नरकथि ॥१२॥ ॥ जोजन जइये तिवारे त्रिगे अलोक आवे ॥ १ ॥ विजी
नरकथि ॥ १२ ॥ जोजनने ॥२॥ त्रियाभागे त्रिगे अलोक आवे ॥ २ ॥त्रिजी
नरकथि ॥१३॥ जोजनने ॥ १ ॥ त्रियाभागे त्रिगे आलोक आवे ॥३॥ चोथि
नरकथि ॥ १४ ॥ जोजने त्रिगे अलोक आवे ॥ ४ ॥ पाचमिथी ॥ १४ ॥ जो
जनने २ त्रियाभागे त्रिगे अलोक आवे ॥ ५ ॥ बठीथि ॥ १५ ॥ जोजनने १
त्रिया भागे त्रिगे अलोक आवे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १६ ॥ जोजने त्रिगे
अलोक आवे ॥ ७ ॥ ६ ॥ सातमे आधार कहेछे । साते नरक स्याने आधारे
रहिछे २० हजार जोजननो घनोदधि जाम़पणे ठे असंख्याता जोजननो लाव

पणे पहोलपणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घीसरिखो जा
णवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघल्या घीसरिखो जाणवो ॥ अ
संख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घीसरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे
७ नर्क रहिछे ॥ एकेकि नरके त्रणत्रण वलाका छे असंख्याता जोजननो आका
शास्तिकाय छे । विश हजार जोजननो घनोदधि जाम्पणे छे । ते छेहडे जाता
६जोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके ६जोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके ६जो
जनने ॥ १ ॥त्रियोभाग ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ६जोजननो ॥ २॥ त्रियाभाग॥३॥
चउथी नरके ॥ ७ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजनने ॥१॥
त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ ॥ जोजनने ॥ २ ॥ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सा
तमी नरके ॥ ८ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय
छे ते छेहडेजाता साढाच्यार जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके साढाच्यार जोज

ननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके पोणापाच जोजननो घनवायछे ॥ २ ॥
त्रिजी नरके ॥ ५ ॥ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चउथी नरके सवापाच जोजननो
घनवाय छे ॥ ४ ॥ पाचमी नरके साढापाच जोजननो घनवाय छे ॥ ५ ॥ छठी
नरके पोणाछो जोजननो घनवायछे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घन
वायछे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवायछे ते छेहडे जाता दोढ जोजननो
रह्यो ॥ पहिलीनरके दोढजोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोज
नने १ बारियो भाग ॥ २ ॥ त्रिजीनरके दोढ जोजनने बारिया २ भाग ॥
॥ ३ ॥ चउथी नरके दोढ जोजन ने बारिया ॥ ३ ॥ भाग ॥ ४ ॥ पाचमी नर
के दोढ जोजनने बारिया ॥ ४ ॥ भाग ॥ ५ ॥ छठी नरके दोढ जोजन ने
बारिया ॥ ५ ॥ भाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके २ जोजननो तनुवाय छे ॥ ७ ॥
तेहने आधारे ७ नरक रहिछे ॥ ७ ॥ आठमे आतरा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥

॥ १३ ॥ पाथमा ने ॥ १२ ॥ आतरा छे ॥ एकेका पाथमाने ॥ ११५८३ ॥
इग्यार हजार पाचसें त्र्यासी जोजन ने ॥ १ ॥ त्रिया जागनु आतरु ॥ १ ॥
बिजी नरके ॥ ११ ॥ पाथमा ने ॥ १० ॥ आतरा छे। एकेका पाथमाने ए७००
सताणुंसें जोजननु आतरु ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ए पाथमा ने ॥ ८ ॥ आतरा
छे। एकेका पाथमाने ॥ १२३७५ ॥ बारहजार त्रणसें पंचोतेर जोजननु आत
रु ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥ ७ ॥ पाथमा ने ६ आतरा छे। एकेका पाथमा ने ॥
१६१६६ ॥ सोळहजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ ॥ त्रिया जागनु आतरु
॥४॥ पाचमी नरके ॥५॥ पाथमा ने ॥४॥ आतरा एकेका पाथमाने ॥२५२५०॥
सवापचविशहजार जोजननु आतरु ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ ॥ पाथमा ने ॥२॥
आतरा ॥ एकेका पाथमाने ॥ ५२५०० ॥ साढाबावन हजार जोजननुं आत
रु॥६॥ सातमी नरके १ पाथमो छे॥ आतरुं नथि ७ ॥ ८ हवे नवमे पुष्फाविकी

र्णने आवलिकाबध नरका वासा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥ २९९५५६७ ॥ ७
गणत्रीशलाख पंचाणुहजार पाचसें सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥
अने ४४३३ चुमालिससें तेत्रीस पक्तिवंध नरका वासा छे ॥ एव सर्व मिलि
ने ३० लाख ॥ १ ॥ विजी नरके ॥ २४९७३०५ ॥ चोविसलाख सताणु
हजार त्रणसें पाच पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने २६९५ छविससें पं
चाणु पंक्तिवंध नरकावासा छे । एव सर्व मिलिने ॥ २५ ॥ लाख ॥२॥ त्रिजी
नरके ॥ १४९८५१५ ॥ चउदलाख अठाणु हजार पाचसें पंदर पुष्पाविकी
र्ण नरकावासा छे। अने १४८५ चउदससें पंच्यासी पक्तिवध नरकावासा
छे ॥ एव सर्व मिलिने ॥ १५ ॥ लाख ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥९९९२९३॥
नवलाख नवाणुंहजार बसेत्राणु पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७
सातसें सात पक्तिवंध नरकावासा छे ॥ एव सर्व मिलिनें ॥ १० ॥ लाख

॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥ २ए९ए७३५ ॥ वे लाख नवाणु हजार सातसें पा
त्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ ॥ वसें पासठ पक्तिवंध
नरकावासा छे ॥ एव सर्व मिलिनें ॥ ३ ॥ लाख ॥ ५ ॥ छठि नरके ॥
एएए३२ ॥ नवाणुं हजार नवसें वत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे अने
६३ पक्तिवंध नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ५ ॥ पक्तिवंध छे
॥ ७ ॥ साते नरकना ॥ ८३ए०३४७ ॥ त्र्यासी लाख नेवुंहजार त्रणसें
सम्तालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ॥ ए६५३ ॥
नवहजार छसें त्रेपन पक्तिवध नरकावासा छे ॥ सर्व मिलि ८४ लाख नर
कावासा जाणवा ॥ ए ॥ दशमे अधकार कहेछे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥
अशुन पुजलनो अधकार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना
स्थानक कहेछे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घमाने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने

आकारे ॥ ३ ॥ कुम्भने आकारे । एवं नाना विध विषमस्थानके उपजे ॥
११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना कहेछे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥
उष्ण ॥ ४ ॥ दाह ॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ भय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज
॥९॥ परवश ॥१०॥ ए १० प्रकारनि अनति वेदना छे ॥१२॥ तेरमे ॥१५॥
परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अबरिस ॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सब
ल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ अ
शिपत्र ॥ ९ ॥ धनुष ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥
१३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महा घोष ॥ १५ ॥ १३ ॥ हवे चउदमे जीव अ
जीवना परिणाम कहेछे । जीव परिणामना ॥ १० ॥ भेद ते । गतिपरिणाम
॥ १ ॥ इंद्रियपरिणाम ॥ २ ॥ कसायपरिणाम ॥ ३ ॥ लेसापरिणाम ॥ ४ ॥
जोगपरिणाम ॥ ५ ॥ उपयोगपरिणाम ॥ ६ ॥ नाणपरिणाम ॥ ७ ॥ दंसण

परिणाम ॥ ८ ॥ चरित्तपरिणाम ॥ ए ॥ वेदपरिणाम ॥ १० ॥ हवे अजी
वपरिणामना १० भेद ते कहेछे ॥ बधनपरिणाम ॥ १ ॥ गतिपरिणाम
॥ २ ॥ सठाणपरिणाम ॥ ३ ॥ भेदपरिणाम ॥ ४ ॥ वर्णपरिणाम ॥ ५ ॥ ग
धपरिणाम ॥ ६ ॥ रसपरिणाम ॥ ७ ॥ फासपरिणाम ॥ ८ ॥ अगुरुलहुप
रिणाम ॥ ए ॥ शब्दपरिणाम ॥ १० ॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवु
कहेछे ॥ पहिली नरकना नारकि । जघ० । साढात्रण गाउ देखे । उत्० ।
च्यार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ॥ ३ ॥ गाउ । उत्० । साढात्रण गाउ
देखे ॥ २ ॥ त्रिजीना जघ० अढिगाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥ ३ ॥ चोथिना ।
जघ० । बे गाउ । उत्० । अढिगाउ देखे ॥ ४ ॥ पाचमीना जघ० दोढ गाउ ।
उत्० ॥ २ ॥ गाउ देखे ॥ ५ ॥ छठिना जघ० ॥१॥ गाउ । उत्० दोढ गाउ देखे
॥ ६ ॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ ॥ गाउ देखे ॥ ७ ॥ १५ ॥

सोलमे संघयण कहेछे ॥ पहिली बिजी नरके ७ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवट्ठ वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलक्क ॥ १ ॥ ने छे वट्ठ ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥४॥ संघयणनो धणि जाय ॥ पाचमी नरके ॥३॥ संघयणनो धणि जाय ते । किलक्क ॥ १ ॥ छेवट्ठ ॥ २ ॥ अर्द्धनाराच । ए ३ व र्जिने ॥ ७मी नरके । वज्रऋषभनाराच संघयण ॥१॥ ने ऋषभनाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥२॥ नो धणि जाय । सातमीये ॥ १ ॥ वज्रऋषभनाराच संघयणनो धणिजाय ॥ १६ ॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहेछे ॥ असंज्ञीति र्यंच पहिली नरक सुधि उपजे ॥ १ ॥ भुजपरसर्प बीजी सुधि उपजे ॥ २ ॥ खे चरतिर्यंच त्रिजी नरकसुधि उपजे ॥३॥ थलचरतिर्यंच चउथि नरकसुधि उपजे ॥ ४ ॥ उरपरतिर्यंच पाचमी नरकसुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री ७मी नरकसुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञिमनुष्यनो आवि उपजे

॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुन । वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ फ
रस जोगवताथका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्त
॥ १ ॥ हवे विजो नवनपतिनो घार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ विजे
चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ॥
५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवागना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥
८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ए ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे
परिपदा ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥
चउदमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ १४ ॥ पहिले नाम कहेछे ॥ असुरकुमार ॥ १ ॥
नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥
॥ ५ ॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकु
मार ॥ ए ॥ थणितकुमार ॥ १० ॥ १ ॥ विजे चिन्ह कहेछे असुरकुमारने

चुम्रमणि मुगटनु चिन्ह ॥ १ ॥ नागकुमारने फेणनुं चिन्ह ॥ २ ॥ सुवर्ण
कुमारने गरुम्नुं चिन्ह ॥ ३ ॥ विज्जु कुमारने वज्रनु चिन्ह ॥ ४ ॥ अग्नि
कुमारने कलशनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ द्विपकुमारने सिंहनु चिन्ह ॥ ६ ॥ उदधिकु
मारने घोमानु चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशा कुमारने गजनु चिन्ह ॥ ८ ॥ पवनकुमा
रने मगरमछनुं चिन्ह ॥ ९ ॥ थणितकुमारने सपुरुनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥
हवे त्रिजे वर्ण कहेछे ॥ असुरकुमारनो श्यामवर्ण ॥ नागकुमार ने उदधिकु
मारनो धोलोवर्ण ॥ विज्जुकुमार अग्निकुमार ने द्विपकुमारनो रातोवर्ण ॥
सुवर्ण कुमार दिशाकुमार ने थणितकुमारनो पीलोवर्ण ॥ पवनकुमारनो नि
लोत्पलकमलसरिखो निलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे वस्त्र कहेछे ॥ राता नि
ला पिला धोला विविध प्रकारना ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा
॥ ४ ॥ हवे पाचमे सामानिक कहेछे ॥ दक्षिणदिशाना चमरेंद्रने चोसठ हजार

सामानिक छे ॥१॥ उत्तरदिशाना वलेंद्रनें ॥६००००॥ सामानिक छे॥२॥ धरणें
द्रादिक ॥ १८ ॥ इंद्रने छगे हजार सामानिकछे ॥ ३० ॥५॥ छठे आत्मरक्षक
ते सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवागना कहेछे ॥ चमरेंद्र
तथा वलेंद्रने पाच पाच देवीओ जाणवी॥एकेकि देवि आठ आठ हजाररूप
वैक्रेय करे ॥ धणिजोगववाने अर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे॥
॥२॥ धरणेंद्रादिक १८ इंद्रने छगे देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छगे हजार
रूप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणिपण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे
॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ ॥ कहेछे ॥ गधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥
॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुजट ॥ ६ महीष ॥ ७ ॥८॥ नवमे वोले अणि
काना अधिपति एमज जाणवा ॥९॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उ
द्योत ॥१॥ देवीओनो उद्योत ॥ २ ॥ आजरणनो उद्योत ॥३॥ शुज पुजलनो

उद्योत ॥ ४ ॥ ॥१०॥ हवे ११ मे त्रण परिषदा कहेछे ॥ दक्षिणदिशाना चम
रेंद्रनी ३ परिषदा । समीया ॥ १ ॥ चमा ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥
॥ २४ ॥ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चमानो ॥ २८ ॥ हजारनो परिवार ॥ २ ॥
जायानो ॥ ३२ ॥ हजारनो परिवार ॥ ३ ॥ समीया तेड्याआवे ने मोकल्या
जाय तेसाथे गुझ करे ॥ १ ॥ चमा तेड्या आवे ने अणमोकल्याजाय तेसाथे
गुझ न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जायाअण तेड्या आवेने अणमो
कल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
॥ ३ ॥ परिषदा तेमाहि अभ्यतरनि परिषदाना ॥ ६०००० ॥ हजार ॥१॥ म
ध्यमपरिषदाना ॥ ७०००० ॥ हजार ॥२॥ वाहिरलि परिषदाना ॥ ८०००० ॥
हजार ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशाना चमरेंद्रनि देवी ओनी ॥३॥ परिषदा तेमाहि अ
भ्यतरनि ॥ ३५० ॥ देवीओ १ मध्यमपरिषदानी ॥ ३०० ॥ देवीओ ॥ २ ॥

वाहिरली परिषदानी ॥ २५० ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देव
तानि देवीश्रोनि ॥ ३ ॥ परिषदा तेमाहि अभ्यतरनि ॥ १७५ ॥ देवीउ ॥ १ ॥
मझमनि ॥ १५० ॥ देवीउ ॥ २ ॥ वाहिरलीनि ॥ १२५ ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ ए सर्व
परिवार दक्षिणदिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ इमज उत्तरदिशना वलेंद्रनि ३
परिषदा जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहिलीना ॥ ४० ॥ हजार देवता ॥ १ ॥
बिजीना ॥ २४ ॥ हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥३॥ हवे
एहना नवनीकायना देवतानि ॥३॥ परिषदा ते पहिलीना ॥५०॥ हजार ॥१॥
बिजीना ॥ ६० ॥ हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७० ॥ हजार ॥ ३ ॥ वलेंद्रनि देवी
उनी ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥ ४५० ॥ देवीउ ॥ १ ॥ बिजीनि ४०० दे
वीउ ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० ॥ देवीउ ॥३॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
देवीउनि ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥२२५॥ देवीउ ॥१॥ बिजीनि ॥२००॥

देवीठ ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥१७५॥ देवीठ ॥ ३ ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल कहेछे । सोम ॥ १ ॥ जम ॥ २ ॥ वरुण ॥ ३ ॥ वेसमण ॥ ४ ॥ सोमनो वारो पूर्वदिशे ॥ १ ॥ जमनो वारो दक्षिणदिशे ॥ २ ॥ वरुणनो वारो पश्चिमदिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तरदिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥१॥ जमने वारे मार मरकि ने मेह घणा होय ॥२॥ वरुणने वारे गमरुवरुने रोग घणा होय ॥३॥ वेसमणने वारे सुगाल सुभिक्ष ने लाभ घणा होय ॥ ४ ॥ १२ तेरमे त्रायत्रिंशक ते ॥३३॥ ते गुरुसमान ॥१॥ प्रोहितसमान ॥२॥ पुज्यसमान ॥३॥ मित्रसमान ॥४॥ पितासमान ॥५॥ आज्ञा आराधक छे ॥ १३ ॥ चउदमे शुभ वर्ण गंध । रस । स्पर्श । भोगवताथका भवनपति विचरेछे ॥१४॥२॥ हवे त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥४॥ पाचमे सामानिक ॥५॥ छठे आतमरक्षक ॥६॥ सातमे देवांगना ॥७॥ आठमे

अणिका ॥८॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥९॥ दशमे उद्योत ॥१०॥ इग्यारमे परिषदा ॥११॥ बारमे ॥४॥ बोल ॥१२॥ पहिले नाम। कहेछे। पिशाच ॥ १ ॥ भुत ॥२॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥४॥ किंनर ॥५॥ किंपुरुष ॥६॥ महोरग ॥७॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भुइवाइ ॥ १२ ॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महाकदीय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥ १६ ॥ बिजे चिन्ह कहेछे ॥ पहिलाने कलंबवृक्षनुं चिन्ह ॥ १ ॥ बिजाने शालिवृक्षनु चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजाने वडवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चउथाने पाडलिवृक्षनु चिन्ह ॥ ४ ॥ पाचमाने अशोकवृक्षनु चिन्ह ॥ ५ ॥ छठाने चंपकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सातमाने नागवृक्षनु चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरुवृक्षनु चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षिणदिशाना कह्या। एमज ॥ ८ ॥ उत्तरदिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते ॥ पहिला। त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ ॥ नोश्यामवर्ण ॥ बिजानो का

लोवर्ण ॥ पाचमानो निलोवर्ण ॥ चोथा ने छठानो धोलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे
वस्त्र कहेछे ॥ निला राता पीला ने धोला विविध प्रकारना ते पण सध्याना रा
गसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ते एकेकाने च्यार च्यार हजार
सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ते सामानिकथी चउगुणा जाणवा
॥ ६ ॥ सातमे देवागना ते एकेकाने च्यार च्यार देवीओ छे। एकेकी देवी ॥१॥
हजार ॥ १ ॥ हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थेधणि पण एटला
रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ ॥ मे ॥ ७ ॥ अणिका कहेछे। गधर्व ॥१॥ नट
॥ २ ॥ हय ॥ ३ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीप ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे
अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ ९ ॥ हवे ॥ १० ॥ मे उद्योत कहेछे ॥
देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ १०॥
हवे ११ मे परिषदा ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ ॥ हजार देवता ॥ १ ॥ चंमाना ॥

॥ १० ॥ हजारदेवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ ॥ हजार देवता ॥ ३ ॥ आववु जावु प्रथमनि रिते जाणवु ॥३॥ परिषदानुं ॥१२॥ बारमे शुभ वर्ण ॥ गंध ॥ रस स्पर्श नोगवताथका वाणव्यंतर विचरेछे ॥१२॥ इति वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चउथो ज्योतिषीनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लाबपणुं ने पहोलपणु ॥७॥ आठमे उंचपणुं ने जाडपणु ॥ ८ ॥ नवमे पक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषदा ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥११॥ बारमे देवीउ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्यराहु ने पर्वराहु ॥१३॥ चउदमे परिवार ॥१४॥ पनरमे अणिका ॥ १५ ॥ सोलमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे मघयण ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात ॥ १८ ॥ उगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥२०॥ एकविशमे चाल ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवु ॥ २२ ॥ त्रेविशमे

उपपणु ॥ २३ ॥ चउविशमे आतरु ॥ २४ ॥ पंचविशमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ २५ ॥
पहिले नाम ते चंद ॥१॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥५॥१॥
बिजे वाहक कहेछे ॥ चंद्रमा सूर्यना विमानने सोल सोल हजार देवता उपाडेछे
तेहनो विवरो कहेछे ॥ च्यार हजार देवता सिंहनेरूपे पूर्वदिशे उपाडेछे ॥ १ ॥
च्यार हजार देवता हाथिनेरूपे दक्षिणदिशे उपाडेछे ॥२॥ च्यार हजार देवता
वृषभनेरूपे पश्चिमदिशे उपाडेछे ॥ ३ ॥ च्यार हजार देवता घोडानेरूपे उत्तर
दिशे उपाडेछे ॥४॥ एव ॥१६॥ हजार देवता चंद्रमा सूर्यना विमानने उपाडेछे ॥
आठ हजार देवता ग्रहना विमानने उपाडेछे ॥ च्यार हजार देवता नक्षत्रना
विमानने उपाडेछे ॥ बे हजार देवता ताराना विमानने उपाडेछे । च्यारे दिशे
पाचसें पाचसें एणेज रूपे जाणवा ॥ राहु ने चंद्रमानिपरे जाणवु ॥ २ ॥ त्रिजे
वर्ण कहेछे ॥ ज्योतिषीना विमाननोमाहि कनकवर्ण ने बाहिरनो स्फाटिक

रत्नसमान जाणवो ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र पूर्वनिपरे विविध प्रकारना जाणवा ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक देवता ॥ ४ ॥ हजार जाणवा ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक देवता ॥ १६ ॥ हजार जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे बोले लांबपणु ने पहोलपणु ते चंद्रमानु विमान । एक जोजनना ६१ भाग करिये तेहवा ॥ ५६ ॥ भागनुं लांबु ने पहोलुछे ॥ १ ॥ सूर्यनुं विमान एकसठिया ४८ भागनुं लांबु ने पहोलु छे ॥ २ ॥ ग्रहनु विमान ॥ २ ॥ गाउनुं लांबु ने पहोलु छे ॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं विमान ॥ १ ॥ गाउनु लांबु ने पहोलुं छे ॥ ॥ ४ ॥ तारानुं विमान अर्द्ध गाउनु लांबुं ने पहोलु छे ॥ ५ ॥ ७ ॥ आठमे उंच पणु ने जाडपणुं । चंद्रमानु विमान एकसठिया ॥ २८ ॥ भागनुं उंचुं ने जाडु ॥ १ ॥ सूर्यनु विमान एकसठिया ॥ २४ ॥ भागनु उंचु ने जाडु छे ॥ २ ॥ ग्रहनु विमान ॥ १ ॥ गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं विमान अर्द्ध गाउनु

ऊंचु ने जाडु छे ॥ ४ ॥ तारानुं विमान पा गाउनु ऊंचुं ने जाडु छे ॥ ५ ॥ ८ ॥
नवमे पंक्ति कहेछे ॥ गाहाउ गाहागनि ॥ ४ ॥ पंक्ति छे ॥१३२॥ चंद्रमाने ॥१३२॥
सूर्य छे ॥ ए बेहु मिलिने ॥ २६४ ॥ हवे सर्वथि मंद गति चंद्रमानि ॥ १ ॥ तेह
थि सूर्यनि शीघ्र गति ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि शीघ्र गति ॥ ३ ॥ तेहथि नक्षत्र
नि शिघ्र गति ॥ ४ ॥ तेहथि तारानि शीघ्र गति ॥ ५ ॥ सर्वथि थोडि ऋद्धि
तारानि ॥ १ ॥ तेहथि नक्षत्रनि अधिकी ऋद्धि जाणवि ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि
अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ३ ॥ तेहथि सूर्यनि अधिक ऋधि जाणवि ॥ ४ ॥ तेह
थि चंद्रमानि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ५ ॥ ए ॥ दशमे परिषदा कहेछे ॥ परि
षदा ॥ ३ ॥ इशा ॥ १ ॥ तुडिया ॥ २ ॥ पच्चा ॥ ३ ॥ पहिलीना ॥ ८ ॥ सहस्र
देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ १० ॥ सहस्र देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ १२ ॥ सहस्र
देवता ॥ ३ ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥

आभरणनो ॥३॥ शुभपुद्गलनो॥४॥विमाननो ॥५॥११॥ बारमे देवीउ कहेछे। एकेकाने च्यार च्यार देवीउ छे॥एकेकि च्यार च्यार हजार रूप वैकेय करे धणि भोगववानेअर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैकेय करे ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहुने पर्वराहु कहेछे । तेनित्य राहु चंद्रमाने केमछे । ते अमावास्याना पछवा थीमांडिने एकेकि कला छेमतो जाय । ते पुनमने दिने॥१६॥कला संपूर्ण थाय चंद्रमा॥अने पुनमने पछवेथि एकेकिकला दबावतो जाय। अमावास्याने दहा डे१ कला रहे चंद्रमानि॥अने परव राहु वेहुने आवे। चंद्रमानु ग्रहण।जघ०॥६ मासे उत्०। वेतालिशमासे आवे ॥ अने सूर्यनु ग्रहण। जघ०॥ ६ ॥ मासे। उत्०। अडतालीश वर्षे। आवे। तेहमा नित्य राहुना विमान श्याम वर्णा छे। अने पर्व राहुना विमान पंच वर्णाछे ते नित्य राहुना २ विमान। अने पर्व रा हुना ॥ २० ॥ विमान जंबुद्विपमां छे ॥ चंद्रमा सूर्यना मांडला क्षेत्र फरसे तो ॥

॥५१०॥ जोजन क्षेत्र फरसे तेमाहि॥१८०॥जोजन जम्बुद्विपमाहि फरसे अने ३३० जोजन लवणसमुद्रमां फरसे। चन्द्रमाना १५ मांडला छे तेमाहि ॥ ॥५॥ मांडला जम्बुद्विपमाहि करे अने १० मांडला लवणसमुद्रमा करे। मांडलेनो मा मले आवे तो ॥१५॥ दीने आवे॥ सुर्यना १८४ मांडला छे तेमाहि ॥६५॥ मा डला जम्बुद्विपमा करे। अने ११९ मांडला लवणसमुद्रमाकरे॥ मांडलेनो मा मांडले आवे तो ६ मासे आवे॥ सूर्यने मांडले मांडले बे बे जोजननु आंतरु चन्द्रमाने मांडले मांडले॥३५॥ जोजनने एकसठिया॥ ३१ ॥ भाग अने एक सठीया एक भागना ७ भाग करिये तेहवा॥ ४ ॥ चुरणिया भागनु आंतरु॥ ॥ १३ ॥ चन्द्रमे परिवार कहेछे॥ एक चन्द्रमाने एक सूर्यनो परिवार ॥ २८ ॥ नक्षत्र ॥८८॥ ग्रह॥ अने छासठ हजार नवसें पचोतेर कोडाकोडि तारा छे ॥ एटलो परिवार जाणवो॥ १४ ॥ पदरमे बोले ७ अणिका कहेछे॥ गंधर्व॥१॥

नट ॥ २ ॥ हय ॥३॥ गय ॥४॥ रथ ॥ ५ ॥ सुभट ॥ ६ ॥ वृषभ ॥ ७ ॥ १५ ॥
सोलमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण क
हेछे । छये संघयणनो धणि ज्योतिषी थाय ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात कहेछे ॥
व्याघातसहित आतरु पडे तो एक विमानथि बिजा विमानने । जघ० ॥२६६
॥ जोजननुं आतरु अने उत्० ॥ १२ ॥ हजार बसे ने ॥ ४२ ॥ जोजननु आ
तरु ॥ १८ ॥ उगणिशमे निर्व्याघात कहेछे निर्व्याघात सहित आतरु पडे तो।
जघ ॥ ५०० ॥ धनुषनु ॥ उत्० । विमान विमानने ॥ २ ॥ गाउनुं आतरु ॥
॥ १९ ॥ हवे विशमे देखवु कहेछे ॥ आषाढमासे कर्कसंक्रातिने दहाडे ॥१८॥
मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १२ ॥ मुहुर्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ॥४७२६३॥
जोजनने साठिया ॥ २१ ॥ भाग वेगलेथि उगतो दिशे ॥ अने पोशमासे मक
रसंक्रातिने दहाडे ॥ १२ ॥ मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १८ ॥ मुहुर्त्तनि रात्रि ते दि

श्शो उगतो सूर्य ॥ ३१८३१ ॥ जोजनने एकसठिया ॥३०॥ नाग वेगलोथि उ
गतो सूर्य दिशे ॥ ४७ ॥ एकविशमे चाल कहेछे ॥ आपाढमासे कर्कसक्रांतिने
दहाडे । एकेक मुहूर्ते सूर्य पाच हजार त्रणसें पाच जोजनने साठिया उगण
त्रिश नाग चाले । आखे दिवशे थइ ने ॥ ए४५४६ ॥ जोजन ने साठिया ४४
नाग चाले । अने पोषमासे मकरसक्रांतिने दहाडे। एकेक मुहुर्ते सूर्य ॥ ५३०५
॥ जोजनने साठिया ॥ १५ ॥ नाग चाले। आखे दिवसे थइने ॥ ६३६६३ ॥ जो
जन चाले ॥ ४१ ॥ बाविशमे तपवो कहेछे ॥ सूर्य उचो ॥१००॥ जोजन तपेछे
॥ हेठो १८०० जोजन तपेछे । अने त्रिछो ॥ ४७२६३ ॥ जोजननेसाठिया ॥
४१ ॥ नाग तपेछे ॥२४॥ त्रेविशमे उचपणु कहेछे। समभूतलथकि ॥ ७ए० ॥
जोजन उंचा जइये तिवारे तारामंडल आवे। तिहांथि १० जोजन उचपणे सू
र्यनु विमान छे। तिहांथि ॥ ८० ॥ जोजन उचपणे चंद्रमानु विमान छे। तिहांथि

॥ ४ ॥ जोजन ऊंचपणे नक्षत्रना विमानछे ॥ तिहांथि ॥ ४ ॥ जोजन ऊंचपणे बुधनो तारो छे तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊचपणे शुक्रनो तारो छे ॥ तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊचपणे बृहस्पतिनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊचपणे मंगलनो तारो छे । तिहांथि ॥३॥ जोजन ऊंचपणे छेहलो शनिश्चरनो तारो आवे । ए ११० जोजनमा ज्योतिष चक्र छे ॥२३॥ चऊविशमे आतरु क हेछे । चंद्रमा चंद्रमाने ॥ सूर्य सूर्यने ॥१॥ लाख जोजननु आतरुं छे ॥ अने चंद्रमा सूर्यने अर्द्ध लाख जोजननु आतरु छे ॥ २४ ॥ पच्चवीशमे बोले शुभ वर्ण गंध रस फरस भोगवताथका ज्योतिषि विचरेछे ॥ २५ ॥ ४ ॥ हवे पाचमो वैमानिकनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे आधार ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चऊथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥६॥ सातमे जारूपणु ॥ ७ ॥ आठमे ऊचपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान ॥ ए ॥ दशमे

आवलिकाबंध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥११॥ बारमे उद्योत ॥१२॥ तेरमे देवींद ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोलमे ॥ ७ ॥ अणिका ॥ १६ ॥ सतरमे अणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अ ढारमे सघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवु ॥१९॥ विशमे ॥४॥ बोल ॥ २० ॥ पहिले नाम कहेछे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लांतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्त्रार ॥८॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नवग्रैवेयकना नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥३॥ सुमाणसे ॥४॥ पीयदसणे ॥५॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आ मोहे ॥ ७ ॥ सुपडिबद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपब्भा

रातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥३॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल एतिवा ॥६॥ मुत्तितिवा ॥७॥ मुत्तालएतिवा ॥८॥ लोयगेतिवा ॥९॥ लोगग्गुन्नि एतिवा ॥१०॥ लोगपडिबोहएतिवा ॥११॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ १ ॥ बिजे आधार कहेछे। पहिला बे देवलोक घनोदधिने आधारे रह्याछे। त्रिजु चोथु ने पाचमु ए ॥ ३ ॥ देवलोक घनवायने आधारे रह्या छे। छठु सातमुं ने आठमु। ए ३ देवलोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्याछे॥ नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धसुधि एक आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहेछे। पहिले बिजे देवलोके ॥ ५ ॥ वर्ण लाभे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥ ॥ १ ॥ कालो वर्जिने ॥ ४ ॥ वर्ण लाभे ॥ पाचमे छठे देवलोके ॥ ३ ॥ वर्ण लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलोए २ वर्ज्या। सातमे आठमे ॥ २ ॥ वर्ण लाभे पीलो ॥ १ ॥ ने धोलो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ ॥

आवलिकाबध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिपदा ॥११॥ बारमे उद्योत ॥१२॥ तेरमे देवींड ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोलमे ॥ ७ ॥ अणिका ॥ १६ ॥ सतरमे अणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अढारमे सघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवुं ॥१९॥ विशमे ॥४॥ बोल ॥ २० ॥ पहिले नाम कहेठे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्नार ॥८॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नवग्रैवेयकना नाम । नद्दे ॥ १ ॥ सुन्नद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥३॥ सुमाणसे ॥४॥ पीयदंसणे ॥५॥ सुदसणे ॥ ६ ॥ आ मोद्दे ॥ ७ ॥ सुपम्भिन्द्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पाच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपन्ना

सिद्धतीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल
रतीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥३॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल
एतिवा ॥६॥ मुत्तितिवा ॥७॥ मुत्तालएतिवा ॥८॥ लोयगेतिवा ॥ए॥ लोगथुन्नि
एतिवा ॥१०॥ लोगपडिबोहएतिवा ॥११॥ सवपाणनुयजीवसत्तसुहावहेतिवा
॥ १२ ॥ १ ॥ विजे आधार कहेछे । पहिला बे देवलोक घनोदधिने आधारे र
ह्याछे । त्रिजु चोथु ने पाचमु ए ॥ ३ ॥ देवलोक घनवायने आधारे रह्या छे ।
छठु सातमु ने आठमु । ए ३ देवलोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्याछे ॥
नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धसुधि एक आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे
वर्ण कहेछे । पहिले बिजे देवलोके ॥ ५ ॥ वर्ण लाने ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥
॥ १ ॥ कालो वर्जिने ॥ ४ ॥ वर्ण लाने ॥ पांचमे छठे देवलोके ॥ ३ ॥ वर्ण
लाने ते कालो ॥ १ ॥ निलोए २ वर्ज्या । सातमे आठमे ॥ २ ॥ वर्ण लाने
पीलो ॥ १ ॥ ने धोलो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ ॥

धोलो वर्ण छाजे ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र कहेछे ॥ चार देवलोकना देवताना वस्त्र विविध प्रकारना ॥ ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ उपरे वस्त्रनु कारण नथि ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक कहेछे ॥ पहिला देवलोकना देवताने ॥ ८४००० ॥ हजार सामानिकदेवता ॥ १ ॥ बिजाने ८० हजारसामानिक ॥२॥ त्रिजाने ॥ ७२ ॥ हजार सामानिक ॥ ३ ॥ चउथाने ॥ ७० ॥ हजारसामानिक ॥ ४ ॥ पाचमा ने ॥ ६० ॥ हजार सामानिक ॥ ५ ॥ छठाने ॥ ५० ॥ हजार सामानिक ॥ ६ ॥ सातमाने ॥ ४० ॥ हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० ॥ हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमा दशमा ने ॥ २० ॥ हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमा बारमाने ॥ १० ॥ हजार सामानिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ ५ ॥ छठे बोले आत्मरक्षक कहेछे । सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना नोयतखिपानुं जाम्पणुं कहेछे । पहिला बिजा देवलोकनु तखुं ॥२७०० ॥ जो

जननुं जाडु ॥ त्रिजा चउथा देवलोकनु तणुं ॥२६००॥ जोजननु जाडु ॥ पाच मा छठा देवलोकनु तणु ॥ २५००॥ जोजननु जाडु ॥ सातमा आठमा देवलो कनु तणु ॥२४००॥ जोजननुं जाडुं ॥ नवमा दशमा इग्यारमा बारमा देवलो कनु तणु ॥ २३०० ॥ जोजननु जाडु ॥ नवग्रैवेयकनुं तणु ॥ २२०० ॥ जोजन नुं जाडु छे ॥ पाच अनुत्तर विमाननु तणु ॥ २१०० ॥ जोजननु जाडु छे ॥७॥ आठमे महोलनु उचपणुं कहेछे ॥ पहिला बिजा देवलोकना ॥ ५००॥ जोजन ना उचा महोल ॥ त्रिजा चउथा देवलोकना॥६००॥ जोजनना उंचा महोल॥ पाचमा छठा देवलोकना ॥७००॥ जोजनना उचा महोल ॥ सातमा आठमा देवलोकना ॥८००॥ जोजनना उचा महोल ॥ नवमा दशमा इग्यारमा ने बा रमा देवलोकना ॥९००॥ जोजनना उचा महोल ॥ नवग्रैवेयकना ॥१०००॥ जोजनना उचा महोल ॥ पाच अनुत्तर विमानना ॥ ११०० ॥ जोजनना उचा

महोल ॥ पहिले बिजे देवलोके ॥१३॥ प्रतर छे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥१२॥ प्रतर छे ॥ पांचमे देवलोके ॥ ६ ॥ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ ॥ प्रतर ॥ सातमे ॥ आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने बारमे ए ६ देवलोके च्यार च्यार प्रतर छे ॥ नवग्रैवेयकमा ए प्रतर । पांच अनुत्तर विमाननो ॥ १ ॥ प्रतर ॥ ए सर्व मिलि ॥६२॥ प्रतर जाणवा ॥८॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान कहेछे ॥ ॥ ८४८९१४९ ॥ चोर्यासीलाख नेव्यासीहजार एकसो उगण पचास पुष्पावि कीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिकावध विमान ॥७८७४॥ अठोतेर सोने चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषदा कहेछे पहिला देव लोकना इन्द्रने ॥३॥ परिषदा । पहिलीना १२ हजार देवता ॥ बिजीना ॥१४ हजार दे वता ॥ त्रिजीना ॥ १६ हजार देवता ॥१॥ बिजा देवलोकना इन्द्रने ॥ ३ परिष दा ॥ १० सहस्र ॥ १२ सहस्र ॥ १४ सहस्र ॥२॥ त्रीजा देवलोकना इन्द्रने ॥३

परिषदा ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥१२॥३॥ चउथे देवलोके ॥ ६ सहस्र ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥४॥ पाचमे देवलोके ॥४॥ सहस्र ॥ ६ सहस्र । ने ॥ ८ ॥ सहस्र ॥५॥ ठठे देवलोके ॥२॥ सहस्र ॥४॥ सहस्र । ने ॥६॥ सहस्र ॥६॥ सातमे देवलोके १ सहस्र ॥२॥ सहस्र ने ॥४॥ सहस्र ॥७॥ आठमे देवलोके ॥५००॥ १ सहस्र ने ॥ २ सहस्र ॥८॥ नवमे दशमे देवलोके॥२५०॥५००॥१०००॥ ॥९॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ॥१२५॥ २५० ॥ ५०० ॥ ११ ॥ १२ ॥११॥ बारमे उद्योत कहेछे ॥देवतानो ॥१॥देवीनो ॥२॥आजरणनो ॥३॥ शुजपुजलनो ॥४॥ ने विमाननो ॥१२॥ तेरमे देवीउ कहेछे एकेका इंडने आठ आठ देवीउ छे एकेकि देवी सोल सोल हजार रूप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल कहेछे ॥ एकेका इडने च्यार च्यार लोकपाल छे ॥ वारा पूर्वेनिपरे जाणवा ॥ सोमने जमनुं ॥ १ ॥प

ल्यने १ पल्यना त्रिजा नागनु आयुष अधिक जाणवु ॥ वरुणनु देशोऊणा ॥
॥ २ ॥ पल्यनु आयुष जाणवु ॥ वेश्रामणनु पुरा वे पल्यनु आयुष जाणवु ॥
॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ते पूर्वनिपरे जाणवा ॥ १५ ॥ सोळमे अणिका
७ ते । गधर्व ॥१॥ नट ॥२॥ हय ॥३॥ गय ॥४॥ रथ ॥ ५ ॥ पाळा ॥६॥ वृषभ ॥ ७
१६॥सत्तरमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा॥१७॥ आढारमे संघयण कहेछे
पहिलाथि ते चऊथा देवलोकसुधि ॥ ६ ॥ सघयणनो धणी जाय ॥ पाचमे ने
छठे देवलोके ॥१॥ छेवट्ठ वर्जिने पाच संघयणनो धणि ऊपजे ॥ सातमे आठमे
देवलोके ॥ ४ ॥ सघयणनो धणि जाय ते किलक्क १ ने छेवट्ठ ए २ वर्जिने ॥ न
वमे दशमे इग्यारमे ने बारमे देवलोके ॥ ३ ॥ संघयणनो धणि जाय ॥ नवग्रै
वैयकमां ॥ २ ॥ सघयणनो धणि जाय ॥ पांच अनुत्तरविमानमा ॥ १ वज्र ऋ
षभ नाराचसघयणनो धणी ऊपजे ॥१८॥ ऊगणिशमे अवधिदेखवुं कहेछे ॥ प

हिला विजा देवलोकना देवता निचु पहिली नरकना तलासुधि देखे ॥ उचु
पोताना विमाननी ध्वजालगे देखे । त्रिछु असंख्याता द्विप समुद्रलगे देखे ॥
त्रिजा । चोथा देवलोकना । देवता । निचु बिजीनरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछुं
तेटलुज देखे ॥ पाचमा छठा देवलोकना देवता निचुं । त्रिजीनरकना तलासुधि
देखे । उंचु त्रिछु तेटलुं ज देखे । सातमा आठमा देवलोकना । देवता । निचु च
उथि नरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछु तेटलुंज देखे । नवमा दशमा इग्यारमा
ने वारमा देवलोकना देवता । निचु पाचमी नरकना तलासुधि देखे । उंचु त्रिछुं
तेटलुज देखे । नवग्रैवेयकना देवता । निचुं छठि नरकना तलासुधि देखे उचु त्रिछुं
तेटलुज देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता निचु सातमि नरकना तलियासु
धि देखे । उचु त्रिछु तेटलुज देखे ॥ सर्वार्थसिद्ध महाविमानना देवता किंचित् उणि
लोक नालि देखे ॥ नारकि त्रापाने आकारे देखे ॥ १ ॥ जवनपति पालाने आकारे

देखे ॥ २ ॥ व्यंतर जालरने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पम्हाने आकारे देखे ॥ ४ ॥ वैमानिक ॥ १२ ॥ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नव ग्रैवेयकनादेवता विखस्या फुलने आकारे देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता कुमारीना कंचुवाने आकारे देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे देखे ॥ १ए ॥ विशमे बोले शुज वर्ण गंध रस स्पर्श जोगवतायका वैमानिक विचरेछे ॥ २० ॥ इति पाचमो वैमानिकनो द्वार समाप्त ॥ ५ ॥ इति पाच बोल समाप्तं ॥ अथ श्री २३ पदवीना बोल लिख्यते ॥ तेना नाम कहेछे ॥ प्रथम ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्न ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्न ने ॥ ए ॥ महोटि पदवी । तेह्मा ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्नना नाम । चक्ररत्न ॥ १ ॥ छत्ररत्न ॥ २ ॥ चर्मरत्न ॥ ३ ॥ दम्डरत्न ॥ ४ ॥ असिरत्न ॥ ५ ॥ मणिरत्न ॥ ६ ॥ कागणिरत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्नना नाम कहेछे ॥ से

नापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥ अश्व ॥ ६ ॥ गज ॥ ७ ए ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ए॥ महो टि पदवीना नाम कहेछे ॥ अरिहतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥ २ ॥ बलदेवनि ॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥ ७ ॥ सम्यक्दृष्टिनि ॥ ८ ॥ मंडलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ॥ए॥ महोटि पदवी कही ॥ एव सर्वेमिलि २३ पदवी ॥ हवे ॥ १४ रत्न स्युं स्युं काम करे ॥ चक्ररत्न षट् खडसाधतामार्ग बतावे ॥ १ ॥ छत्ररत्नते ॥ ४८ ॥ कोशप्रमाणे छाया करे ॥२॥ चर्मरत्न ते नदी आदे पार उतारे ॥ ३ ॥ दंडरत्न ते तमस गुफाना बार उघाडे ॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥ ५ ॥ मणिरत्न ते उद्योतकरे ॥ ६ ॥ कागणि रत्न ते ॥ ४ए ॥ माडला आलेखे । तथा तोला माप वधारे ॥ ७ ॥ सेनापति ते देश साधे ॥८॥ गाथापति ते । धान रसवती निपजावे ॥ ए ॥ वार्द्धिक ते ।

आवास घर निपजावे ॥ १० ॥ पुरोहित ते घाव साजा करे । तथा शांतिकर्म करे । विघ्न टाले ॥ ११ ॥ स्त्रीरत्न ते जोगसाधन आवे ॥ १२ ॥ अश्व ने गज वेढु चढवाने काम आवे ॥ १४ ॥ हवे ॥१५॥ रत्न किहां किहां उपजे ते कहेछे चक्र ॥१॥ छत्र ॥ २ ॥ असि ॥ ३ ॥ दंड ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ आयुधशालामा उपजे ॥ चर्ममणि ने कागणि । ए ॥ ३ ॥ लक्ष्मीना भंडारमा उपजे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ पोताना नगरमां उपजे ॥ स्त्री विद्याधरनि श्रेणिमा उपजे ॥ अश्व ने । गज । ए ॥ २ ॥ वैताढने मुले उपजे ॥हवे॥१५॥ रत्ननी कायानुं परिमाण कहेछे ॥ चक्र छत्र ने दंड ए ॥ ३ ॥ वामप्रमाणे । वाम ते ॥४॥ हाथप्रमाणे । चर्मरत्न ते ॥२॥ हाथ प्रमाणे ॥ खड्गरत्न ते ॥ ५० ॥ अगुलनु लाबु ने ॥१६॥ अगुलनु पहोलु । ने अर्ध अगुलनुं जाडुं ॥ मणिरत्न ॥ ४ ॥ अगुलनु लाबु ने ॥ २ ॥ अगुलनु प

होलु ॥ कागणिरत्न ने ७ तला । आठखुणा । वार हांशो।सोनीनि अहिरणने संगाणे ॥ १ ॥ अंगुलनु लांबु पहोलु ने ठचुं छे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित । ए ॥४॥ नीअवगाहना चक्रव्रतिप्रमाणे ठचि जाणवि ॥ स्त्रीरत्न चक्रव्रतिथि ४ अंगुल निचि होय ॥ अश्वरत्न ॥१०८॥ अंगु लनो लांबो । कानना मूलथि ते पुछना मूललगे । अने ॥८०॥ अगुलनो ठचो छे। गजरत्न चक्रव्रतिथि बमणो ठंचो होय ॥ ए ॥ २३ ॥ पदवी ॥ जे गतिमांहिथि नि कल्यो केटलि पदवी पामे ते कहेछे। पहिली नरकना निकल्या १६ पदवी पामे। ते ॥ २३ ॥ मांहिथि ॥७॥ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या ॥ १ ॥ बिजी नरकना निकल्या ॥ १५ ॥ पदवी पामे । पूर्वे ॥१६॥ कहि तेहमाथि ॥१॥ चक्रव्रतिनी वर्जि ॥२॥ त्रिजि नरकना निकल्या । तेर पदवी पामे ते ॥ १५ ॥ माथि बलदेव ने वासु देव वर्ज्या ॥ ३ ॥ चउथि नरकना निकल्या ॥ १२ ॥ पदवी पामे ते । तेरमाथि

॥ १ ॥ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पाचमी नरकना निकल्या । इग्यार पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ माहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकल्या दश प दवी पामे । ते । साधुजी वर्ज्या ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ ॥ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥३॥ ए ॥३॥ पदवी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥ ३ ॥ ना निकल्या । एकविश पदवी पामे । ते । वासुदेव ने ॥ १ ॥ तिर्थंकर ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्या ॥ प्रथवी । पाणी । वनरुपति । गर्भजमनुष्य । ने गर्भजतिर्यंच । एटलाना निकल्या ॥१ए॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्त्ति ॥२॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चउरेंद्रिय । समुर्छिमतिर्यंच ने स मुर्छिममनुष्य ॥ ए ॥ ५ ॥ नानिकल्या ॥ १८ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १ए ॥ माथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ । ना निकल्या ॥ए॥ पदवी पामे ते ॥ ७ ॥ एकें

ंडियरत्न ॥ अने हाथि १ । घोमो २ ॥ ए ॥ए॥ पदवी पामे ॥ पनरपरमाधामि ने।
पहिला किल्बिषीना निकल्या ॥१ए॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ माथि ॥४॥ उत्तम
पुरुष ने ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ उपजा ॥ २ ॥ किल्बिषीना निकल्या ॥ ११ ॥
पदवी पामे । ते ॥ १ए ॥ माथि ॥ ७ ॥ एकेंडिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सु
धर्म १ इशान ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥२३॥ पदवी पामे ॥ त्रि
जाथि ते आठमा देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकल्या ॥ १६ ॥ प
दवीपामे । ते ॥ २३ माथि ॥ ७ ॥ एकेंडियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ पामे ॥
नवमांथि नवग्रैवेयकसुधिना निकल्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ ॥ माथि अश्व
॥ १ ॥ ने गज ॥ २ ॥ ए ॥२॥ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना नि
कल्या ॥ ए ॥ पदवी पामे । ते ॥ २३ ॥ माथि ॥ १४ ॥ रत्न ने ॥ १ ॥ वासुदेव
वर्ज्या । शेप ॥ ए ॥ पामे ॥ सङ्गिमाहि ॥ १५ ॥ पदवी लाभे ते ॥ २३ ॥ माथि

॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ केवलिनी । ए ॥ ८ ॥ वर्जी ॥ शेष १५ लाभे । असं
ज्ञिमाहि ॥ ८ ॥ पदवी लाभे ते ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ समकीतनी ॥ ८ ॥
लाभे ॥ तिर्थंकर । तथा चक्रव्रतिमां ॥ ६ ॥ पदवी लाभे ॥ तिर्थंकरनि ॥ १ ॥ च
क्रव्रतिनि ॥ २ ॥ मण्डलिकनि ॥ ३ ॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केव
लिनि । ए ॥ ६ ॥ लाभे ॥ वासुदेवमा ॥ ३ ॥ पदवीलाभे । वासुदेवनी ॥ १ ॥ स
मकितनि ॥ २ ॥ मण्डलिकनि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ लाभे ॥ बलदेवमा पाच पदवी
लाभे । बलदेवनि ॥ १ ॥ मण्डलिकनि ॥ २ ॥ साधुनि ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥
समकितदृष्टिनि ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ लाभे ॥ मनुष्यमाहि । पदवी ॥ १३ ॥ लाभे ॥
नव महोटि पदवी ने । सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरो
हित ॥ ४ ॥ एव । सर्व मिलि ॥ १३ ॥ पदवीलाभे ॥ मनुष्यणीमांहि पदवी ॥
॥ ५ ॥ लाभे ॥ समकितनि ॥ १ ॥ श्राविकानि ॥ २ ॥ साधवीनि ॥ ३ ॥ केव

लिनि ॥ ४ ॥ स्त्रीरत्ननि ॥ ५ ॥ ९ ॥ ५ ॥ इति २३ पदवीना बोल समाप्त ॥

अथ श्रीसिद्धणाद्वार लिख्यते

१ पहिली नर्कना निकल्या एक समये १० सिझे
२ बिजी नर्कना निकल्या एक० १०
३ त्रिजि नर्कना निकल्या एक० १०
४ चउथी नर्कना निकल्या एक० ४
५ भवनपतिना निकल्या एक० १०
६ भवनपतिनि देवीना निकल्याए ५
७ पृथ्वीना निकल्या ४ एक० सिझे
८ पाणिना निकल्या एक० ४ सिझे
९ वनस्पतिना निकल्या एक० ६
१० पचेंद्रिय तिर्यंच गर्भजना निकल्या एक० १० सिझे
११ तिर्यंचणीना निकल्या एक० १०
१२ मनुष्यना निकल्या एक० १०
१३ मनुष्यणीना निकल्या एक० २०
१४ वाणव्यंतरना निकल्या एक० १० सिझे
१५ वाणव्यतरनि देवीना निकल्या एक० ५ सिझे

१६ ज्योतिषीना निकाया एक० १०
१७ ज्योतिषीनी देवीना निकाया एक० २० सिझे
१८ वैमानिकना निकाया एक० १०८ सिझे
१९ वैमानिकनि देवीना निकाया एक० २० सिझे
२० स्वलिंगी सिझे तो १०८ सिझे
२१ अन्यलिंगी सिझे तो १० सिझे
२२ गृहस्थलिंगे सिझे तो ४ सिझे
२३ स्त्रीलिंगे २० सिझे

२४ पुरुषलिंगे १०८ सिझे
२५ नपुंसकलिंगे १० सिझे
२६ ऊर्ध्वलोके ४ सिझे
२७ अधोलोके २० सिझे
२८ त्रिगलोके १०८ सिझे
२९ उत्कृष्टि अवगाहनावाला एक० २ सिझे
३० जघन्य अवगाहनावाला ए० ४
३१ मध्यम अवगाहनावाला एक० १०८ सिझे
३२ समुद्रमा २ सिझे

३३ नदीप्रमुख शेषजलमा ३ सिझे
३४ तिर्थमा १०८ सिझे
३५ अतिर्थमा १० सिझे
३६ तिर्थकर २० सिझे
३७ अतिर्थकर १०८ सिझे
३८ स्वयबुद्ध ४ सिझे
३९ प्रत्येक बुद्ध १० सिझे
४० बुद्धबोधि १०८ सिझे
४१ एक सिद्धाते एक समये १ सिझे
४२ अनेक सिद्धा ते एक समये उत्० १०८ सिझे

४३ विजय विजय प्रते एक समये विश विश सिझे
४६ भद्दशालवन १ नंदनवन २ सोमनसवन ३ ए ३ मा च्यार च्यार सि
४७ पंडगवनमा २ सिझे
४८ अकर्मभूमिमा १० सिझे
४९ कर्मभूमिमा १०८ सिझे
५३ पहिले १ बिजे २ पाचमे ३ छठे ४ ए ४ आरे १० दश सिझे
५५ त्रिजे १ चउथे २ ए २ आरे १०८ एकसो आठ सिझे

५७ अवसर्पिणी १ उत्सर्पिणी २९२ मा १०८ एकसो आठ सिझे

५८ नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमा १०८ सिझे

५९ एकथि माम्ने ३२ लगे सिझे तो समयसुधि

६० ३३ थि माढिने ४८ सुधि सिझे तो ७ समयलगे

६१ ४९ थि माढिने ६० सुधि सिझे तो ६ समयलगे

६२ ६१ थि माढिने ७२ सुधि सिझे तो ५ समयलगे

६३ ७३ थि माढिने ८४ सुधि सिझे तो ४ समयलगे

६४ ८५ थि माढिने ९६ सुधि सिझे तो ३ समयलगे

६५ ९७ थि माढिने १०२ सुधि सिझे तो २ समयलगे

६६ १०३ थि माढिने १०८ सुधि सिझे तो १ समयलगे

इति सिझणाद्वार समाप्त

अथ श्रीविरहद्वार लिख्यते ॥ समुचय चार गतिनो विरहकाल ॥ जघन्य ॥ ॥ १ ॥ समयनो उत्कृष्टो ॥ १२ ॥ मुहुर्त्तनो ॥ हवे पहिली नरकेज० ॥ १ ॥ समय० ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ बिजी नरके ज० १ समयनो उ० ७ दिननो विरह काल ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो उ० १५ दिननो विरहकाल ॥ ३ ॥ चोथी नरके ज० १ समयनो उ० १ मासनो विरहकाल ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥ ज० १ समयनो उ० २ मासनो विरहकाल ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो उ० ४ मासनो विरहकाल ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पखे ॥ हवे दस भवनपती नो ज० १ समयनो उ० २४ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ पाच एकेंद्रीय अविरहिया संख्याताने गमे सख्याताउपजे ॥ असख्याताने गमे असंख्याताउपजे ॥ अनंताने गमे अनताउपजे ॥ समय समयउपजे ॥ समय समयचवे ॥ त्रण विग

लेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहूर्त्तनो विरहकाल ॥ सम्मुर्छिम तिर्यंच
पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो उ० अंतर्मुहूर्त्तनो विरहकाल ॥ गर्भज तिर्यंच
पचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहूर्त्तनो विरहकाल ॥ सम्मूर्छिम मनुष्यनो
ज० १ समयनो उ० २४ मुहूर्त्तनो विरहकाल ॥ गर्भज मनुष्यनो ज० १ सम
यनो ॥ उ० १२ मुहूर्त्तनो विरहकाल ॥ वाणव्यंतर ॥ ज्योतषी ॥ वैमानिकमां ने
इजा ॥ बीजा देवलोकसुधीनो ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहूर्त्तनो विरह
काल ॥ त्रिजे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० ए दिन ने वीसमुहूर्त्तनो विरह
काल ॥ चोथे देवलोके ॥ ज० १ समय उ० १२ दिन ने १० मुहूर्त्तनो विरह
काल ॥ पांचमेदेवलोके ॥ ज० १ समय उ० साढाबावीस दिननो विरहकाल ॥
छठे देवलोके ॥ ज० १ समयनो उ० ४५ दिननो विरहकाल ॥ सातमे देवलोके
ज० १ समयनो उ० ८० दिननो विरहकाल ॥ आठमे देवलोके ज० १ सम

यनो उ १०० दिननो विरहकाल ॥ नवमे दशमे देवलोके ॥ ज० १ समयनो उ० सख्याता मासनो ॥ ज्यालगे वरसन होय ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता वरसनो ॥ ज्यालगें सो वरस न होय ॥ पहिली त्रिके ज० १ समयनो उ० सख्याता वर्षना सेंकरा ॥ ज्यालगे हजार वरस न होय ॥ बीजी त्रिके ज० १ समयनो ॥ उ० सख्याता वरसनाहजार ॥ ज्यालगे लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० सख्याता लाख वरस नो ज्यालगे क्रोड वरस न होय ॥ च्यार अनुत्तर विमानमा ॥ ज० १ समयनो उ० ॥ पल्यना असंख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सर्वार्थसिद्धमा ज० १ समयनो उ० पल्यना सख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सिद्धनो विरह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ च्यार गतिमा पंचेंद्रीय आश्री विरह काल ज० १ समयनो उ० १२ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ सर्व इद्धस्थानकनो वि

रह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ इतिश्री विरहद्वार समाप्तं ॥ अथश्री पांच देवना बोल लिख्यते ॥ पहिलु नामद्वार ॥ १ ॥ बिजु गुणद्वार ॥ २ ॥ त्रिजु उववायद्वार ॥ ३ ॥ चोथु स्थितिद्वार ॥ ४ ॥ पाचमु ऋद्धि तथा विकुवणाद्वार ॥ ५ ॥ छठु चवणद्वार ॥ ६ ॥ सातमु संचिठणाद्वार ॥ ७ ॥ आठमु अंतरद्वार ॥ ८ ॥ नवमु अल्पबहुत्वद्वार ॥ ९ ॥ ए ९ द्वार ॥ पाच देव ॥ उपर उतारेछे ॥ हवे पहिलु नाम द्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्यदेव ॥ १ ॥ नरदेव ॥ २ ॥ धर्मदेव ॥ ३ ॥ देवाधिदेव ॥ ४ ॥ भावदेव ॥ ५ ॥ १ ॥ हवे बिजु गुणद्वार कहेछे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामा उपजवु छे तेहने भविय द्रव्यदेव कहिये ॥ १ ॥ चउद रत्न ॥ नव निधान ॥ जेहने होय तेहने ॥ नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्याविश गुणेकरीसहित होय तेहने धर्मदेव कहिये ॥ ३ ॥ अढार दोषरहित ने बार गुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव

कहिये ॥ अढार दोष ते कहेछे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोभ ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मछर १३ भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रीडाप्रसंग १७ हास्य १८ ए १८ दोषरहित ने १२ गुणेकरिसहित ॥ ते १२ गुण कहेछे ॥ जिहां जिहां भगवत उभा रहे बेसे समोसरे तिहां तिहां दश बोलसहित ते भगवंतथि बार गुणो उचो तत्काल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छायडो करे ॥ १ ॥ भगवत जिहां जिहां स मोसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचणप्रमाणे ढगला थाय ॥ २ ॥ भगवतनि जोजनप्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मनना ॥ संशय हरे ॥ ३ ॥ भगवतने चोविश जोड चामर विंझाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय ॥ पादपीठसहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥ ५ ॥ भामंडल अंबोडाने ठेकाणे तेजमंडल बिराजे दिशोदिशना अंधकार टाले ॥ ६ ॥ आकाशे साढा

शेष सर्व गमना आवि उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमां । पहिली । बिजी । त्रिजी नर्के । किल्बिषी वर्जिने वैमानिक देवना आवि उपजे ४॥ भावदेवमां तिर्यंच पचें द्रिय १ ने॥ सन्निमनुष्य ए २ गमना आवि उपजे ॥५॥३॥ हवे चोथु स्थिति द्वार कहेछे भवियद्रव्यदेवनि जघ० अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥ १ ॥ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्०॥ चोरासी लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्मदेवनि जघ० अं त०।उत्० देशो उणी पूर्वकोडिनि ॥ ३ ॥ देवाधिदेवनि जघ० बहुतर वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि॥४॥ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥उत्० ३३ सा गरनि ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ हवे पांचमु ऋद्धि तथा विकुवणाद्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्य देवमां जेहने वैक्रेय लब्धि उपनि होय तेहने॥ नरदेवने तो होयज॥ धर्मदेवमां जेहने होय तेहने॥ भावदेवने तो होयज॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० ॥१॥२ ॥ ३ उ० सख्याता करे शक्तितो असख्याता रूपकरवानि छे पण करे नहि॥ दे

वाधिदेवनिशक्ति घणि छे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठु चवणद्वार कहेछे नवि
यद्रव्यदेव चविदेवता थाय १ नरदेव चवि नर्केजाय ॥ २ ॥ धर्मदेव चवी वैमा
निक तथा मोक्षमा जाय ॥ ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ॥ ४ ॥ भावदेव च
विने ॥ प्रथ्वी ॥ पाणी वनस्पति बादरमा ने गर्भजमनुष्य तिर्यंचमा जाय ६
हवे सातमु सचिठणाद्वार कहेछे॥संचिठणा ते स्यु ते देवनो देवपणे रहे तो के
टलो काल रहे ते ॥ भविय द्रव्यदेवनि सचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्यो
पमनि १ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि २ धर्मदेवनि
जघ० १ समयनि॥उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनि ॥ ३॥ देवाधिदेवनि जघ० ब
हुतेर वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ४ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥
उत्० ३३ सागरोपमनि ५ ॥७॥ हवे आठमु अंतरद्वार कहेछे भवियद्रव्यदेवनु
आंतरुं परे तो जघ० दश हजार वर्षने अंतर्मुहूर्त्त अधिक ॥ उत्० अनंता का

लनुं आतरुपमे। १ ॥ नरदेवनु जघ० १ सागरझाझेरु। उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशो उणु २ ॥ धर्मदेवनु जघ० २ पल्यझाझेरुं ॥ उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशो उणु ३ ॥ देवाधिदेवनु आतरु नथि ॥ ४ ॥ जावदेवनु जघ० अत० ॥ उत्० अनता कालनु ॥ ५ ॥ हवे नवमु अल्पबहुत्व द्वार कहेछे ॥ सर्वथि थोमा नरदेव १ ते हथि देवाधिदेव सख्यात गुणा २ तेहथि धर्म देव सख्यात गुणा ॥ ३ ॥ तेहथि जवियद्रव्यदेव ॥ असख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेहथि जावदेव असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ ए ॥ इति पाच देवना बोल सपूर्ण ॥

अथ दिसाणुवाइ लिख्यते ॥ समुचय जीव ॥ सर्वथि थोमा पश्चिम दिशे जेजणि पश्चिम दिशे गौतमद्विप छे तथा चद्रमा सूर्यना द्विपछे तेथि पाणि थोकुछे। तेमाटे निल फुल पण थोमिछे। तेणे करि जीव थोमा छे॥ १ ॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जेमाटे गौतमद्विप नथी ॥ २ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जेमाटे चंद्रमा सूर्यना

द्विप पण नथि ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जेहनणि उत्तर दिशे संख्या
तमे द्विपे संख्याति जोजन कोम्रा कोम्रिनुं मानसरोवर छे तीहां पाणी घणु छे
तेहथी निलफुलना जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १ ॥ पृथवीकायना जीव सर्वथि
थोमा दक्षिण दिशे जेन्नणि दक्षिणदिशे ॥४॥ कोम्रिने ६ लाख न्नवनपतिना न्नवन
छे। तिहा पोलार घणि छे तेथि पृथवी थोम्रि छे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया
जे न्नणि न्नवनपतिना न्नवन थोमा छे ॥ ३ ॥ कोम्रि गन्नाठ लाख न्नवन छे तेथि
पोलार थोम्रि छे ते न्नणि पृथ्वी घणि छे ॥ ७ ॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाहिया
जेन्नणिन्नवन तो नथि पण चंद्रमा सूर्यना द्विप छे तेन्नणि पृथवी घणि छे ॥ ३ ॥
तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जेन्नणि गौतमद्विप छे ते माटे पृथवी घणि छे
॥ ४ ॥ ७ ॥ इमज अपकाय ॥ १ वनस्पतिकाय ॥ ७ ॥ त्रशकाय ॥ ३ ॥ बेइं
द्रिय ॥ ४ ॥ तेइंद्रिय ॥ ५ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ६ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥

समुच्चय जीवनिपरे जाणवा ॥ ए ॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य २ सिद्ध ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ सर्वथि थोमा दक्षिण उत्तर दिशे॥जेह्नणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाह्ना छे तेथि । ए ॥ ३ ॥ थोमा ॥ २ ॥ तेह्थि पूर्व दिशे सख्यात गुणा । जेह्नणि क्षेत्र मह्होटा छे तेमाटे ॥ ३ ॥ तेह्थि पश्चिम दिशे विशेषाह्िया । जेह्नणि पश्चिम दिशे अधो गाम विजय छे तिहा जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १२ ॥ वाउकाया जीव सर्वथि थोमा । पूर्व दिशे जेह्नणि भुमि घणि नकोर छे तेमाटे वाउकाया थोमा छे ॥ १ ॥ तेह्थि पश्चिम दिशे विशेषाह्िया जेह्नणि विजय उंमी छे तेमाटे ॥ २ ॥ तेह्थि उत्तर दिशे विशेषाह्िया जेह्नणि भवननि पोलार छे तेमाटे ॥३॥ तेह्थि दक्षिण दिशे विशेषाह्िया जेह्नणि भवन ने नरकावासा घणा छे तेह्नणि पोलार घणि छे तेमाटे वाउकाया घणा छे ॥ ४ ॥ १३ ॥ नारकि सर्वथि थोमा । पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर दिशे । जेह्नणि तिहा पुष्पाविकीर्ण नरका

वासा थोमा छे।अने वलि सख्याति जोजनना छे॥तेमाटे नारकि थोमा छे॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असख्यात गुणा जेनणि कृष्णपखी नारकि दक्षिण दिशाना उपजण द्वार घणा छे तेमाटे॥४॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्युं।इम प्रत्येक प्रत्येक नरके त्रिण दिशाना नारकि थोमा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना॥ तेहथकि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा अधिक छे॥ सातमी नरकना ३ दिशाना नारकि थकि दक्षिण दिशाना नारकि असख्यात गुणा। सातमी नरकना दक्षिण दिशाना नारकिथकि छठि नरकना ३ दिशाना नारकि असख्यात गुणा।तेथकि छठी नरकना दक्षिण दिशाना नारकि असख्यात गुणा। एणि परे पहिलि नरकसुधि जाणवु॥ १४॥ भवनपति देवता सर्वथि थोमा पूर्व। पश्चिम दिशे २ तेहथि उत्तर दिशे असख्यात गुणा अधिक जेभणि भवन घणा छे तेमाटे ॥ ३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असख्यात गुणा। भवन बहुलाछे तेमाटे॥ ४॥

॥ १५ ॥ वाणव्यंतर देवता सर्वथि थोमा पूर्वदिशे जेनणि जुमि घणि कठिन छे तेमाटे ॥ १ ॥ तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाधिया । व्यंतरना नगर घणा छे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाधिया ॥ ३ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाधिया तिहा कृष्णपक्षि घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १६ ॥ ज्योतिषी देवता सर्वथि थोमा । पूर्व पश्चिम दिशे जेनणि पूर्व पश्चिम दिशे चंद्रमा सूर्यना द्विपा छे तिहा ज्योतिषी थोडा रहेछे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाधिया जेनणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी घणा छे ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाधिया जेनणि उत्तर दिशे मानसरोवर छे ॥ तिहा मछादिक घणाछे ॥ ते मछ ज्योतिषिना विमान टुकडा देखिने जातिस्मरणज्ञान उपजे तेहथि व्रतादि पमि वर्जे । ते नियाणु करिने ज्योतिषीमा उपजे तेमाटे ज्योतिषी उत्तर दिशे घणा ॥ ४ ॥

॥ १७ ॥ सुधर्म ॥ १ ईशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥

वासा थोमा ठे।अने वलि सख्याति जोजनना ठे॥तेमाटे नारकि थोमा ठे॥३॥
तेहथि दक्षिण दिशे असरूयात गुणा जेभणि कृष्णपखी नारकि दक्षिण दिशना
उपजण हार घणा ठे तेमाटे॥४॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्यु।इम प्रत्येक प्र
त्येक नरके त्रिण दिशना नारकि थोमा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना॥ तेहथकि
दक्षिण दिशना असंख्यात गुणा अधिक ठे॥ सातमी नरकना ३ दिशना नार
कि थकि दक्षिण दिशना नारकि असख्यात गुणा। सातमी नरकना दक्षिण
दिशना नारकिथकि ठठि नरकना ३ दिशना नारकि असख्यात गुणा।तेथकि
ठठी नरकना दक्षिण दिशना नारकि असंख्यात गुणा। एणि परे पहिलि
नरकसुधि जाणवु॥ १४॥ भवनपति देवता सर्वथि थोमा पूर्व। पश्चिम दिशे
२ तेहथि उत्तर दिशे असख्यात गुणा अधिक जेभणि भवन घणा ठे तेमाटे
॥ ३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असरख्यात गुणा। भवन बहुलाठे तेमाटे॥ ४॥

विचारिये छिये ॥ जम्बुद्विप ॥ १ लाख जोजननो लांबो ने पहोलो छे । ते वा
टलो तेलना पुडलाने आकारे छे १ वाटलोरथनापइडानेआकारेछे २ वाटलो
कमलनीकर्णिकानेआकारेछे ३ वाटलोपूर्णचन्द्रमानेआकारेछे ४ ॥ तेहनि परिधि
॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनूष ने साडातेर अंगुल
झाझेरानि छे ॥ हवे जम्बुद्विप १० द्वारेकरि वखाणेछे ॥ गाथा । खंडा १ जोयण
२ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कुंडाय ५ तिछ ६ सेढिउ ७ ॥ विजय ८ दह ९ सलि
लाउ १० ॥ पिंडएहोइसंघहणी ॥ १ ॥ ए दश द्वार छे॥तेहमा प्रथम खण्डाद्वार
कहेछे । जम्बुद्विपना भरतसरिखा ॥१९०॥ खाण्डवा छे ॥ ते किम ॥ भरतक्षेत्रनु
॥१ खाडवु ॥ चुलहिमवत पर्वतना २ खाडवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ॥४॥ खाण्डवा
महाहिमवत पर्वतना ८ खाडवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खाडवा ॥ निषढ पर्व
तना ३२ खाडवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खाडवा ॥ निलवत पर्वतना ३२

खाडवा ॥ रमक्वास चेत्रना १६ खाडवा ॥ रूपि पर्वतना ८ खाडवा ॥ एरण
वय चेत्रना ४ खांडवा ॥ शिखरि पर्वतना २ खाडवा ॥ इरवत चेत्रनुं १ खाडवु
एव सर्व मिलिने विखन पहोलपणे ॥ दक्षिण उत्तरे थइने । नरत जेवडा पहो
लपणे १९० खांडवा थाय ॥ इति पहिलो खडाद्वार समाप्त ॥ १ ॥ हवे बिजो
जोयणद्वार कहेछे ॥ जोयण कहेता जम्बुद्विपना । च्यारे हांशो जोजन जोजनना
खड करिये तिवारे सातसें नेवु कोडि छपनलाख चोराणु हजार एकसो ने प
चास चउरसा थाय । उपरे १ कोश पनरसे पनर धनूप वधे।उपर ६० अगुल
वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयणद्वार समाप्त ॥ हवे त्रिजो वासाद्वार कहेछे।वासा
कहेता जम्बुद्विपनेविषे ॥ ७ ॥ चेत्र ते ॥ नरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास
॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमक्वास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ए
॥ ७ चेत्र ॥ तथा एक महाविदेहना ४ नाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ १ ॥

पश्चिममहाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु ॥१०॥ एव ॥ ६ ॥ ने ॥ ४ ॥
भेलता ॥ १० ॥ क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंभपणुं ॥ १ ॥ बाहा ॥२॥ जीवा ॥३॥
धनुपपिठ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कहेछे ॥ भरतक्षेत्रना २ भेद ॥ दक्षिणभरत ॥ १ ॥
उत्तरभरत ॥ २ ॥ दक्षिणभरतनुं विखंभपणु ॥ २३८ ॥ जोजन ने ॥ ३ ॥ क
लानु । एहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ९७४८ ॥ जोजन ने ॥ १२ ॥ कला
तेहनि धनुपपिठ ॥ ९७६६ ॥ जोजन ने १ कला जाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तरभर
तनु विखंभपणु ॥ २३८ ॥ जोजन ने ३ कलानु । तेहनि बाहा ॥१८९२॥ जो
जन ने साढिसात कलानि । तेहनि जीवा ॥ १४४७१ ॥ जोजन ने ॥६॥ कला
माठेरि । तेहनि धनूपपिठ ॥ १४५२८ ॥ जोजन ने ॥ ११ ॥ कलानि एव इर
वत क्षेत्रजाणवु ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ हिरणवय २ ए २ क्षेत्रनु पहोलपणु
२१०५ जोजन ने ॥ ५ कलानु ॥ तेहनि बाहा ॥ ६७५५ ॥ जोजन ने ३ कला

तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ ॥ जोजन ने १६ कलातेहनि धनूषपिठ ॥३८७४०
जोजन ने ॥ १० ॥ कला ४ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ क्षे
त्रनु विखंनपणु ॥ ८४२१ ॥ जोजन ने ॥ १ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥१३३६१
जोजन ने ॥ ६ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने ॥ १७ ॥ कला
तेहनि धनूषपिठ ॥ ८४०१६ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षे
त्रनु विखंनपणुं ॥ ३३६८४ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥
॥ ३३७६७ ॥ जोजन ने ॥ ७ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ १ ॥ लाख जोजननि ॥
तेहनि धनूषपिठ ॥ १५८११३ ॥ जोजन ने ॥ १६ ॥ कला झाझेरि ॥ ७ ॥ देव
कुरु उत्तरकुरु ए २ क्षेत्रनुं विखंनपणुं ॥११८४२॥ जोजन ने २ कलानुं ।तेहनि
बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ५३००० ॥ जोजननि ॥ तेहनि ॥ धनूषपिठ ॥
॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कला ॥ ए ॥ इति त्रिजो वासाधार समाप्तं ॥ ३ ॥

ह्वे ॥ ४ ॥ चोथो पश्नयद्वार कहेछे ॥ पश्नय क० जम्बुद्विपनेविषे ॥ २६९ ॥ पर्वत
छे । तेकिम ॥ ६ ॥ वर्पधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ ने विचित्त ॥ २ ॥ जमक
॥ २ ॥ २०० ॥ कचनगिरि ॥ ४ ॥ गजदता ॥ १६ ॥ वखारा ॥ ३४ ॥
लावा वैताढ ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ ॥ एव सर्व मिलिने ॥ २६९ ॥ पर्वत छे।
तेह्नु उचपणु। उरु पणु। विखजनपणु वाह्ा। जीवा धनूपपिठ। कहेछे। चुलहिम
वंत १ ने शिखरि २ ए ॥ २ ॥ पर्वत सो सो जोजनना उचा छे ॥ अने पचवीस पच
वीश जोजनना धरतीमा उमाछे। तेमनुं पहोलपणु ॥ १०५२ ॥ जोजन ने १२
कलानु ॥ तेमनि बाह्ा ॥५३५०॥ जोजन ने ॥ १५ ॥ कला ॥ तेमनि जीवा
॥ २४९३२ ॥ जोजन ने अर्द्ध कला माठेरि ॥ तेमनि धनूपपिठ ॥ २५२३० ॥
जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ २ ॥ महाहिमवत नेरुपि । ए ॥ २ ॥ पर्वत बसे बसे
जोजनना उचा ॥ अने। पचाश पंचाश जोजनना धरतीमा उडा छे। तेमनुं वि

खंजपणुं ॥ ४२१० ॥ जोजन ने १० कलानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ९२७६ ॥ जो
जन ने ॥ ९ ॥ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ ५३९३१ ॥ जोजन ने ६ कला ऊऊेरि
तेमनि धनूषपिठ ॥ ५७२९३ ॥ जोजन ने १० कला ॥ ४ ॥ निषढ ॥ १ ॥
निलवत ॥ २ ॥ ५ ॥ २ ॥ पर्वत च्यारसो च्यारसो ॥ जोजनना उंचा छे ।
अने सो सो जोजनना धरतीमा उंन्डा छे ॥ तेमनु विखम्नपणुं ॥ १६८४२॥ जो
जन ने ॥ २ ॥ कलानु । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला
तेमनि जीवा ॥ ९४१५६ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला । तेमनि धनूषपिठ ॥
॥ १२४३४६ ॥ जोजन ने ९ कला ॥ ५ ॥ ६ ॥ पर्वत थया ॥ ६ ॥ मेरुपर्वत
॥ १ ॥ लाख जोजननो छे तेमांहि ॥१॥ हजार जोजननो धरतीमाहि उन्डो छे।
तेहमाहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय छे ॥ २५० ॥ जोजन पाषाणमय छे
॥२५०॥ जोजन वज्र हीरामय छे ॥२५०॥ जोजन शर्कर पृथ्वीमय छे ॥ एव

॥ १ ॥ हजार जोजननो ऊंचो छे। ए प्रथम कांड ॥ ते उपरे नवाणु हजार जोजननो मेरु उंचो छे। तेहमांहि । पोणा सोल हजार जोजन अंकरत्नमय छे ॥ पोणा सोल हजार जोजन स्फटिकरत्नमय छे । पोणा सोल हजार जोजन पिला सुवर्णमय छे॥ पोणा सोल हजार जोजन रूपामय छे।ए ६३ हजार जोजननो बिजो कांड॥ तेउपरे त्रिजो कांड । छत्रिश हजार जोजननो जांबुनद राता सुवर्णमय छे॥ एव सर्व मिलिने ॥ १ ॥ लाख जोजननो मेरु पर्वत छे॥ ते मूले १००९० जोजन ने एक जोजनना ११ भाग करिये तेहवा १० भाग। एटलो धरतीने मूले पहोलो छे॥ दश हजार जोजननो । धरतीने समभूतले लांबो पहोलो छे॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उंचा जाइये॥ तिहां नव हजार जोजननो लांबोने पहोलो छे। इम इग्यार इग्यार हजारे १ हजार घटाडता शिखरे १ हजार जोजननो लांबो पहोलो छे तेहनी त्रिगुणि झाझेरि प

रिधि छे। मेरुने ॥ ४ ॥ वन छे ॥ भद्रशाल वन ॥ १ ॥ नदनवन ॥ २ ॥ सोम
नसवन ॥ ३ ॥ पन्डगवन ॥ ४ ॥ भद्रशालवन ते। मेरुने चउपखेर धरतीउपरे
छे। ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं लांबु छे। अने अढिसो अ
ढिसो जोजननु उत्तर दक्षिणे पहोलु छे। तेहने एक पद्मवरवेदिका छे॥एक वन
खंड सघले चउपखेर विंटिछे ॥ मेरु पर्वतथकि पूर्व दिशे ॥५०॥ जोजन वनमा
जाय। तिहा ॥१॥ सिद्धायतन छे।ते ५० जोजननुं लांबु ने ॥ २५ ॥ जोजननुं
पहोलु छे। अने ॥ ३६ ॥ जोजननुं उंचु छे। अनेक स्तंभ छे। ते सिद्धायतनने
३ बारणा छे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥३॥ तेहना दरवाजा ॥ आठ
आठ जोजनना उंचा छे। ने ॥ ४ ॥ जोजनना पहोला छे ॥ ते सिद्धायतनना
घणुं मध्य दिशा विभागनेविषे एक मणिमय पिठिका छे। ते ॥ ८ ॥ जोजननि
लांबिने पहोली छे ॥४॥ जोजननि जाडपणे छे। सर्व रत्नमय छे। ते उपरे ॥१॥

देवछंदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ ॥ जोजननो लांबोने पहोलो छे । अने ॥ ८ ॥ जोज
ननो झाझेरो उचो छे । तिहां जीनप्रतिमा छे तेहनो वर्णव देवछंदो जाव धूपना
कडुछा छे । एक कह्यु तिम च्यारे दिशे ॥४॥ सिद्धायतन छे ॥ एमज जाणवा ॥
च्यारे दिशे । मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन इशान कुणे वनमे जाय तिहां ॥४॥ वा
वड्यु छे॥मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन अग्नि कुणे वनमे जाय तिहां॥४॥वावड्यु
छे ॥ मेरुपर्वतसु ॥ ५० ॥ जोजन नैरुत कुणे वनमे जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावड्यु
छे मेरुपर्वतसु ५० जोजन वायव्य कुणे वनमा जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावड्यु छे ॥
ते एकेकि वावडि ॥ ५० ॥ जोजननि लांबि । अने २५ जोजननि पहोलि छे ।
अने दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ तेमांहि च्यारे । दिशे तोरणसहित छे ।
ते वावड्योना नाम ॥ पद्मा ॥ १ ॥ पद्मप्रभा ॥ २ ॥ कुमुदा ॥ ३ ॥ कुमुदप्रभा
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वावड्यो मध्ये ॥ २ ॥ शक्रेंद्रनाने ॥ २ ॥ इशानेंद्रना महोल

छे ॥ ते च्यारे पाचसो पांचसो जोजनना उंचा छे । अने । अढिसो अढिसो जो
जनना लांवा ने पहोला छे । उचाशिखरबंध जाणवा । भद्रशाल वनमा ॥८॥
कुट छे॥भद्रशालवनथकि पाचसें जोजन मेरुउपरे जइये । तिहा नंदनवन आवे।
ते नंदनवन ॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विरवंभपणे फिरतो वाटलो वलयाने
आकारे छे ॥ ते मेरुपर्वतने ढुकडु छे ॥ जिहा घणा देवता देवागना हास्यरति
खेलेछे ॥ तिहा पण ॥ ४ ॥ सिध्दायतन छे ॥ १६ ॥ वावडिउ छे ॥ ४ ॥ महोल
छे । पूर्वनिपरे ॥ ए ॥ कुट छे ॥ वलि नदनवनथकि । साढाबासठ हजार जोजन
उचा जइये । तिहा सोमनसवन आवे ॥ ते ॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विखंभ
पणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुने विंटि रह्युंछे ॥ ४ ॥ सिध्दाय
तन छे ॥ १६ ॥ वावडिउ छे ॥ ४ ॥ महोल छे ॥ तिहाथकि ॥ ३६ ॥ हजार जो
जन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंडगवन आवे ते ॥ ४९४ ॥ जोजन चक्रवाल

विखम्भपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि र ह्युछे ॥ पण्डगवननेविषे ॥ १ ॥ चुलिकाछे ॥ ते ४० जोजननि उंचि छे ॥ १२ ॥ जोजननि मूले पहोलि छे । अने ४ जोजननि मथाले पहोलि छे । आठ जोज ननि विचमे पहोलि छे। गायना पुछने आकारे छे॥सर्व वैरुलि रत्नमयछे॥तेहने एक पद्मवर वेदिका छे॥ उपर घणि समोरमणिक भूमिका छे । ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे ॥ ते १ कोशनु लांबु ने । अर्ध कोशनु पहोलु छे अने देशो उणु कोश उंचुं छे । अनेकस्तम्भा छे जावधुपना कडुछ छे ॥ ते पण्डगवनमां ॥४॥ सिद्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावड्यि छे ॥ ४ ॥ महोल छे । पूर्वेनिपरे जाणवुं।पण्ड वनमा ॥ ४ ॥ अभिषेकशिला छे । तेहना नाम ॥ पण्डु शिला ॥ १ ॥ पण्डु कम्ब लशिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्तकम्बलशिला ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चन्द्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पा

चसो पाचसो जोजननी लावि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोज
ननि पहोलि छे ॥ उत्तर दक्षिणनि शिला ते पूर्व पश्चिमे पाचसो पाचसो जो
जननि लावि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो जोजननि पहोलि छे ॥ ४ ॥ जो
जननि जाडपणे छे। सर्व कनकमय छे। ए ४ ने त्रिण दिशे पावभिया छे ॥ पूर्व
पश्चिमनि शिलाउपरे बे बे सिंहासन छे। अने उत्तर दक्षिणनि शिलाउपरे ए
केकुं सिंहासन छे ॥ ते पाचसो पांचसो धनूषना लावा ने पहोला छे ॥ अने
२५० धनूषना उचा छे। तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोछव करेछे। जंबुद्विपम
ध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो। ने उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्ममहोछव करेछे ॥ मेरुना
१६ नाम कहेछे ॥ मदर ॥ १ ॥ मेरु ॥ २ ॥ मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥
स्वयप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोक
मध्य ॥ ए ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ ७ चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमा छे॥ निपढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ ॥ जोजन ने एक जोजनना ॥ ७ ॥ भाग करिये तेहवा ४ भाग जइये तिहा सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ २॥ जमक ॥ २ ॥ पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निलवतपर्वतथकि दक्षिणे ॥ ॥ ८३४ ॥ जोजन ने १ जोजनना ७ भाग करिये तेहवा ॥ ४ ॥ भाग जइये। तिहा सिता नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ चित्त १ विचित्त ॥ २ ॥ जमक ॥ ३ ॥ ए ४ ॥ पर्वत १ हजार जोजनना उचा छे ॥ अने अढिसो जोजनना धरती माहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूले लांबा पहोला छे ॥ साढासातसें जोजनना विचमा लांबा पहोला छे । उपरे पाचसो जोजनना लांबा पहोला छे। तेहनी त्रिगुणी झाझेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ वसे कचन गिरि

पर्वत ते सिता सितोदा नदीनि विचे। पाच पांच द्रह छे। एव १०॥ एकेक द्रह पासे एकेकि कोरे दश दश पर्वत छे॥ इम बिजी पासे पण दश दश पर्वत छे। एव ॥१०॥ द्रहने वेहुकाठे मिलिने। विश विश पर्वत छे दशने काठे। बसे कंचन गिरि पर्वत थायाते सो सो जोजनना उंचा छे।पचविश पचविश जोजनना धरती माहि उंमाछे॥ मूले सो जोजनना लाबा ने पहोला छे॥ विचे पोणोसो जोजनना लाबा ने पहोला छे। उपरे पंचाश जोजनना लाबा ने पहोला छे। तेमनि त्रिगुणी जाझेरि परिधि छे॥ २११॥ हवे ॥ ४॥ गजदंता कहेछे। गधमादन ॥ १ ॥ मालवत ॥ २॥ विद्युप्रभ ॥ ३॥ सोमनसप्रभ ॥ ४॥ निपढथकि बे निलवतथकि बे गजदंता निकलिने मेरु पासे च्यारे आविने अफकि रह्याछे। ते ३०२०९ जोजन ने ६ कलाना लाबा छे॥ निपढ ने निलवत ने अमता च्यारसो च्यारसो जोजनना उचा छे। अने सो सो जोजनना धरतीमा उमाछे।

कलेवर कचरो पके तेहने त्रिणवार नमाक्ति उगलि नाखे ते कारणे उमगजला कहिये । तिहांथि २ जोजन आघा जइये तिहा निमगजला नदी छे । ते ३ जो जनना पहोटमा छे तेहमाहि हाथि घोडा मनुष्य बलदनु कलेवर अनेरु पुगल पके तेने त्रिणवार नमाडिने हेठे बेसाडे तेकारणे निमगजला कहिये ॥ शेष ॥ ३२ ॥दिर्घ वैताढ महाविदेह क्षेत्रमांहि छे। ते पण ए सरिखा छे । पण बाहा जीवा धनुपपिठ नथि । पल्यंगने आकारे छे ॥ ॥ ॥ हवे ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ कहेछे । सदावइ ॥ १ ॥ वियडावइ ॥ २ ॥ गधावइ ॥ ३ ॥ माल वंत । ए ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ जुगलियाना क्षेत्रमा छे । ते ॥ १ ॥ हजार जोज नना उचा छे ॥ २५० ॥ जोजनना धरतीमाहि उंडा छे । मूले ॥ १ ॥ हजार जो जनना लाबा ने पहोला छे । धानना कोठारने आकारे छे ॥ तेमनि ॥३१६२॥ जोजन जाझेरानि परिधि छे स्वेत वर्णे छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ २६९ ॥ पर्वत

जनना पहोला छे। वखारापर्वत घोमाना खधने आकारे छे॥ ७३१ ॥ चउ त्रिश लांबा वैताढ छे॥ तेमाहि॥ १ ॥ भरतनो वैताढ॥ १ इरवतनो वैताढ। अने ३२ विजयना॥३७॥एवं॥३४॥वैताढ।ते पचविश पचविश जोजनना उचा छे। अने सवाछो जोजनना धरतीमाहि उंडा छे। पचाश पंचाश जोजनना पहोला छे। तेमनि बाहा ४८८ जोजन ने १६ कला जाझेरि छे। तेमनि जीवा १०७२० जोजन ने १२ कलानि। तेमनि धनूषपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कला। एकेके वैताढे बे बे गुफा छे। तिमिसगुफा १ खंडप्रपातगुफा॥२॥ए॥२॥ गुफाउ। पंचाश पचाश जोजननि लांबि छे। अने १२ जोजननी पहोलिउ छे। अने आठ जोजननि उचिउ छे। तेमाहि बे बे नदी छे। तेहना नाम उमग जला॥ १ ॥ निमगजला॥ २ ॥ एकविंश जोजन जइये तिहां उमगजला नदी आवे। ते त्रिण जोजनना पहोटमां छे। तेहमाहि हाथि घोडा बलद मनुष्यनुं

ते ॥ १ ॥ नरतनो ॥ १ इरवतनो । अने ॥ ३२॥ विजयना ॥ ३२॥ एव ॥३४॥
अने नद्रशाल वनना ॥ ८ ॥ देवकुरुना ॥८॥ उतरकुरुना ॥ ८ ॥ एव सर्व
मिलिने ॥ ५८ ॥ कुट नूमीउपरना थया ॥ एव सर्व मिलिने ॥ ५२५ ॥ कुट
थया । इति ५ मो कुटद्वार समाप्त ॥ ५ ॥ हवे ६ गो तिर्थद्वार कहेछे ॥ तिछक० ।
जम्बुद्विपमध्ये ॥ १०२ ॥ तिर्थ छे । ते किम ॥ ३२ ॥ विजय ॥ १ ॥ नरत ॥१॥
इरवत । एव ॥ ३४ ॥ ठेकाणा छे । एकेकामे त्रिण त्रिण तिर्थ छे । मागध ॥१॥
वरदाम ॥ २ ॥ प्रनास ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ते अग्निकुणे ॥ १ ॥ नैरुत कुणे ॥२॥
वायव्यकुणे ॥ ३ ॥ एव ॥ ३४ ॥ त्रि १०२ तिर्थ थाय ॥ इति ६गो तिर्थद्वार स
माप्त ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणिद्वार कहेछे ॥ सेढिउ क० । जंबुद्विप माहि १३६
श्रेणियो छे । ते वैताढ्य पर्वतउपरे दश दश जोजन उंचा चढिये । तिहा १ द
क्षिणे ने ॥ १ ॥ उत्तरे बे विद्याधरनि श्रेणियो छे तेमाहि नरतना वैताढउपरे

। ४ ॥ चोथो पर्वतद्वार समास ॥ ४ ॥ हवे ५ मो कुटद्वार ॥ कहेछे।
ंबुद्विपमाहि ॥ ५१५ ॥ कुट छे ॥ तेमाहि ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वत उपरे
परो कहेछे ॥ ३४ ॥ दिर्घ वैताढ । निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥
र ॥ ३७ ॥ पर्वत ॥ अने । विद्युत्प्रभ ॥ १ ॥ ने मालवंत ॥ २ ॥ ए ॥
॥ । ए ३९ पर्वत उपरे नव नव कुट छे ॥ ३९ ॥ ने नवे गुणता ॥
: थाय । चुलहिमवत ने शिखरि ए २ पर्वतउपरे इग्यार इग्यार
। २२ ॥ महाहिमवत ने रूपि । ए ॥ २ ॥ पर्वतउपरे आठ आठ
६ कुट । सोल वखारा पर्वत उपरे च्यार च्यार कुट छे । एव ॥
सोमनस ॥ १ ॥ ने गधमादन ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ गजदंताउपरे
छे । एव ॥ १४ ॥ कुट ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वतउ
अने शेष ५८ कुट भूमि उपरना छे ते कहेछे ॥ ३४ ॥ ऋषभकुट

॥ ५ ॥ मंगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विज
यसिता महानदी ने उत्तर दिशो पूर्व महाविदेहने विषे श्रीमेरुपर्वतथि मा
फ्हिने सितामूखवनसुधिप्रथमखाम्बुजाणवु ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महा
वछे ॥ ११ ॥ वछगावइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥
मंगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसितानदीने दक्षिण पासे सितामूखवनथि
माडिने मेरुसुधि मायजण वखारापर्वतसुधि विर्जु खाडवु जाणवुं ॥ २ ॥ पह्मे
॥ १७ ॥ सुपह्मे ॥ १८ ॥ महापह्मे ॥ १ए ॥ पह्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥
कुमुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥२३॥ नलीणावती ॥२४॥ ए ८ विजयसितोदानदीने
दक्षिणने कांठे विद्युप्रभ गजदंता पछि। अंकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामू
खवनसुधि त्रिर्जुं खाडवु जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे
॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २ए ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गधिले ॥ ३१ ॥ ग

गगन वल्लभादिक ॥ ५० ॥ नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने रथ चक्रवाला
दिक ६० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । इमज इरवतना वैताढउपरे ६० नगर द
क्षिणनि श्रेणिये छे। अने ५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे। महाविदेहना ३२ वै
ताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रेणिये पचावन पचावन नगर छे। सर्व मिलिने
३७४० नगर विद्याधरनि श्रेणिये छे। एवं ३४ छ ६८ विद्याधरनि श्रेणि। वलि
विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन उंचा चढिये तिहां आभियोगिया देवतानि
॥ २ ॥ श्रेणि आवे। दक्षिणे १ ने १ उत्तरे । एव ३४ छ ६८ श्रेणि आभियो
गिया देवतानि छे॥ एव सर्व मिलिने ॥ ६८ ॥ विद्याधरनि ने ॥ ६८ ॥ देवतानि।
एव ॥ १३६ ॥ श्रेणियो छे। इति ७ मो श्रेणिद्वार समाप्त ॥ ७॥ हवे ८ मो वि
जयद्वार कहेछे। विजय क० जम्बुद्विपमाहि ॥ ३४ ॥ विजयरूप स्थानक छे। ते
हना नाम। कछे ॥ १ ॥ सुकछे ॥ २॥ महाकछे ॥ ३ ॥ कछगावइ ॥४ ॥ आवर्त्ता

॥ ५ ॥ मगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसिता महानदी ने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्रीमेरुपर्वतथि माण्डिने सितामूखवनसुधिप्रथमखाण्डुंजाणवु ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महावछे ॥ ११ ॥ वछगावइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥ मगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसितानदीने दक्षिण पासे सितामूखवनथि मांडिने मेरुसुधि मायजण वखारापर्वतसुधि विर्जु खाडवु जाणवु ॥ २ ॥ पह्मे ॥ १७ ॥ सुपह्मे ॥ १८ ॥ महापह्मे ॥ १ए ॥ पह्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥ कुसुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥२३॥ नलीणावती ॥२४॥ ए ८ विजयसितोदानदीने दक्षिणने कांठे विद्युप्रभ गजदंता पछि। अकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामूखवनसुधि त्रिर्जु खाडवु जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे ॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २ए ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गधिले ॥ ३१ ॥ ग

विजय ते सितोदामुखवनथि मांडिने । सितोदा नदीने
थिलावइ ॥ ३२ ॥ ए ८ विजय ते सितोदामुखवनथि मांडिने । सितोदा नदीने
कांठे देव वखारा पर्वतसुधि चोथु खांम्बु जाणवुं ॥४॥ ए ॥ ३२ ॥ विजयमहा
विदेह क्षेत्रमां छे ते सघलि विजय ॥ १६५९२ ॥ जोजन ने २ कलानि उत्तर
दक्षिणे लांबि छे । अने २२१३ जोजन माठेरानि पूर्वपश्चिमे पहोलियो छे
॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवत । एव ॥ ३४ ॥ तिहा ॥ ३२ ॥ विजयनि । एक भर
तनि । एक इरवतनि । ए ॥ ३४ ॥ राजधानी छे ॥ ३४ ॥ तिमिसगुफा ॥ ३४ ॥
खंडप्रपातगुफा ॥ ३४ ॥ कृतमालदेवता ॥ ३४ ॥ नटमालदेवता ३४ ऋषभकुट
एटला वाना शास्वता छे । इति ८ मो विजयद्वार समाप्त ॥ ८ ॥ हवे ए मो द्रह
द्वार कहेछे ॥ द्रह क० । जम्बुद्विपमा ॥१६॥ द्रह छे । तेहना नाम । पद्मद्रह॥१॥
महापद्मद्रह ॥२॥ पुंडरिक द्रह ॥ ३ ॥ महापुंडरिकद्रह ॥४॥ तिगिछ द्रह ॥५॥
केशरिद्रह ॥६॥ ए ॥६॥ द्रह रुपधर पर्वतना ॥ हवे ५ द्रह देवकुरुने विषे छे ।

निषढद्रह ॥ १ ॥ देवकुरुद्रह ॥ २ ॥ सूर्यद्रह ॥ ३ ॥ सुलसद्रह ॥ ४ ॥ विद्युत्प्र
भद्रह ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ द्रह देवकुरु क्षेत्रमा सितोदा नदीनि विचे छे । इमज
उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे सितानदीने मध्य भागे ॥ ५ ॥ द्रह छे तेहना नाम । नि
लवतद्रह ॥ १ ॥ उत्तरकुरुद्रह ॥ २ ॥ चंद्रद्रह ॥ ३ ॥ एरावतद्रह ॥४॥ माल्य
वतद्रह ॥५॥ एव १० ने ॥ ६ उपरला एव १६ द्रह थया ॥ हवे१पद्म अने पुं
डरिकद्रह २ ए द्रह ॥ १ ॥ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना
पहोला छे ॥ १० ॥ जोजनना धरतीमाहि उंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तर
कुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रहमाहि ॥ १२०५०१२० ॥ कमल छे । स
घला रत्नमय छे । पद्मद्रह मध्ये १ महोटुं कमल छे ते श्रीदेवीनु छे ॥ अने
१०८ कमल श्रीदेवीना भंडारना छे ॥ ४ कमल महत्तरिकाना छे ॥ ७ ॥ कमल
अणिकाना छे ॥१६॥ हजार कमल आत्मरक्षक देवना छे ॥४॥ हजार कमल



सामानिक देवना छे ॥ ८ ॥ हजार कमल माहिलीपरिषदाना छे ॥ १० ॥ हजार कमल विचलि परिषदाना छे ॥ १२ ॥ हजार कमल बाहिरली परिषदाना छे। हवे ३ कोट कमलना छे ॥ ३२ ॥ लाख कमल पहिला कोटना छे ॥ ४० ॥ लाख कमल विचला कोटना छे ॥ ४८ ॥ लाख कमल बाहिरला कोटना छे। एव सर्व मिलिने १२०५०१२० कमल थया ॥ तेहमाहि महोटु कमल ॥ १ ॥ जोजननु लाबु ने पहोलु छे। अर्द्ध जोजननु जाडु छे ॥१०॥ जोजननु पाणिमाहि उंडु छे ॥ २ कोश पाणिथकि उंचु छे ॥ १० जोजन झाझेरुं सर्वांगे परुप्यु। ते कमलनु वज्र रत्नमय मूल छे। रिष्ट रत्नमय कद छे। वैरुर्य रत्नमय निलवरणा बाहिर ला पानडा छे। जबुनद राता रत्न सुवर्णमयमाहिला पानडा छे॥ तपाव्या सोनामय केशरा छे। नाना प्रकारना मणिमय जे उपरे पाखन्यो छे। सोनानि कर्णिका छे। बे कोशानि कर्णिका लाबि ने पहोली छे॥ एक कोशनो जाडपणे मोटो छे तेउपर

घणु रमणिक छे। घणुंज मध्य देश भागे श्रीदेवीनु घर छे। ते १ कोशनु लांबु ने अर्ध कोशनु पहोलुं छे॥ अने देशो उणुं कोश उंचु छे अनेक स्तंभा छे घणाख्योसुव र्णकरि ते जोवा योग्य छे॥ ते भुवनने ३ बारणा छे॥ पूर्वे ॥१॥ दक्षिणे॥२॥ उत्तरे ॥३॥ ते बारणा ॥ ५०० धनुषना उंचाछे। अढिसे धनुषना पहोला छे। ते भुवनमे एक मणिपिठिका छे। ते ५०० धनूषनि लांबि ने पहोलि छे॥ २५० ॥ धनूषनी उंची छे। ते मणिपिठिका उपरे १ देवसेजा रहेवानो पल्यंग छे॥ हवे महापद्मद्रह ॥ १ ॥ महापुंडरिकद्रह। ए॥ २॥ द्रह॥ एकेको॥ २॥ हजार जोजनो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोलो छे। अने १० जोजननो धरती माहि उंडो छे॥ महापद्मद्रहमा ह्रीदेवी रहेछे॥ महापुंडरिकद्रहमा बुद्धि देवी रहेछे॥ एहना कमल श्रीदेवीनिपरे जाणवा। पण कमलनु मान बमणु जाणवु। ते माहि महोटु कमल ॥२॥ जोजननु लांबु ने पहोलु छे॥ अने १ जोजननु जाडु

छे ॥ ह्वेतिगिछद्रह ॥ १ ॥ केशरिद्रह ॥ २ ॥ ५ ॥ २ ॥ द्रह एकेको ॥ ४ ॥ ह
जार जोजननो लांबोने ॥ २ ॥ हजार जोजननो पहोलो छे ॥ १० ॥ जोजननो
धरतीमांहि ऊंडो छे ॥ तिगिछद्रहमां धृतिदेवी रहेछे । केशरिद्रहमां कीर्त्तिदेवी
रहेछे । एहनु महोटुं कमल ॥ ४ ॥ जोजननुं लांबु ने पहोलुं छे। अने २ जोजननुं
जाडुं छे। कमल श्रीदेविनिपरे जाणवा। इम सोले द्रहना ॥१२०५०१२० कमल
ने १६ गुणा करतां शाश्वता कमल ॥ १९२८०१९२० ॥ कमल थाय अने
५ द्रह देव कुरुमे ॥५॥ उत्तर कुरुमे ए १० द्रह धरती उपरे छे तेहने नामे देवता
नानाम छे । एक पल्यनु आयुष छे । अने चुलहिमवत पर्वत उपरे पद्मद्रह छे
तिहां श्रीदेवीनो वास छे। शिखरिपर्वत उपरे पुंडरिकद्रह छे ॥ तिहां लक्ष्मी
देवीनो वास छे महाहिमवत पर्वत उपरे महापद्मद्रह छे ॥ तिहां ह्रिदेवीनो
वास छे । रूपिपर्वत उपरे । महापुंडरिक द्रह छे तिहां बुद्धिदेवीनो वास

छे । निषढपर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे तिहां धृतिदेवीनो वास छे निलवतपर्वत उपरे केशरि द्रह छे । तिहा कीर्त्तिदेवीनो वास छे ए ६ देवीयो भवन पतिनी जा तिनि जाणवि । तेहनु आयुष १ पल्यनु छे इति ए मो द्रहद्वार समाप्त ॥ ए ॥ हवे दशमे सलिला द्वार कहेछे ॥ सलिलाउ क० जंबुद्विप मध्ये ॥ १४५६०ए०॥ नदियो छे तेमाहि पद्मद्रहने पूर्वदिशिने तोरणेथि गगा निकलि ॥ ५०० ॥ जोजन पूर्व साहमि गइ । तिहा गगा वर्तन कुट छे तिहां अफलाणी । तिहाथि दक्षिण दिशे चालि ते ॥ ५२३ जोजन ने ३ कला दक्षिण दिशे पर्वतउपरे गइ । तिहा महोटा घडाना मूखमाथि पाणि पडे तिम मोतिना हारसरिखु महामगरमछना मुखने आकारे परनालि जीभीकामाथि काइक । अधिक १०० जोजन उचेथि पाणि पडेछे । ते जीभीका अर्द्ध जोजननि लाबि छे । अने सवाछ जोजननि पहोलि छे ॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या तेहने संठाणेछे सर्व वज्र

मय छे। आगे तेजवत छे॥ तेमांदिथि पाणि पडेछे॥ तिहां १ महोटो गगाप्र पात नामा कुंड छे। ते कुंड॥ ६०॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे॥ १०॥ जोजननो उंडो छे। ते कुंडनि रूपामय उपकठपालि छे। वज्र पाषाणमय तलो छे। सुखे माहि उतरिये। नाना मणि रत्नेकरि बाध्योछे कांठो जेहनो॥ वज्रमय तलो छे। सुवर्णनो मध्य भाग छे। रूपानि वेलु छे। गंभिर शितल जल छे। अने कमलने पानडे ढांक्युं छे। घणा उत्पल कमल छे। कुमुद नलीन पुंडरिक शतपत्र सहस्रपत्र कमलघणा छे। गगा कुंडने ३ बारणा छे। त्रिण दिशे पावडिया छे। पूर्व दिशे॥ १॥ दक्षिण दिशे॥ २॥ पश्चिम दिशे॥ ३॥ पावडियानो वर्णव जिम पाषाण तेहनो उपरलो भाग रिष्ट रत्नमय छे। वैरुलिरत्नमय स्तंभा छे। सोना रुपाना पाटिया छे। लोहिताक्ष रत्नमय खिला छे। वज्रमयसांधो जड्या छे। मणिना आलंबन पकडवाने॥ पावडिया आगले प्रत्येक प्रत्येक तोरण छे।

तेमणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभेछे । ते गंगाप्रपातकुंडनिविचे ॥ १ ॥ ग
गा द्विपनामा द्विपो कह्यो ते ८ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ २ ॥ कोश पा
णिथकि उंचो छे । सर्व वज्र रत्नमय छे । गंगाद्विपने उपरे घणुं रमणिक छे । ते
उपर १ गंगादेवीनु भवन कह्यु । ते १ कोशनु लांबु ने । अर्द्ध कोशनु पहोलु
छे अने देशे उणुं कोश उंचु छे । अनेक स्तंभा छे तेहनो वर्णव श्रीदेवीनि परे
जाणवो । गंगानो शास्वतो नाम छे । ते गंगाप्रपातकुंडना दक्षिण दिशना बार
णाथि गंगा नदी निकलिने । उत्तर भरतमध्ये वहेतिथकि ७ हजार नदीसाथे
खंडप्रपात गुफाने । वैताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध भरतमांहि वहेति
बिजी ७ हजार नदी भलतिथकि सर्व ॥ १४ ॥ हजार नदीने परिवारे जगतीने
भेदिने पूर्वना लवणसमुद्रमांहि भलि इमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि ।
सलिलाउ क० । जंबुद्विपमांहि १४५६०९० नदियो छे । तेहनो विवरो कहेछे ॥

गगा ॥ १ ॥सिंधु ॥ २ ॥ रत्ता ॥ ३ ॥ रतवइ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ नदीयो मूल
थकि निकलता सवाछो जोजननि पहोलित। अने। अर्धगाउनि उन्डियो छे। छे
हडे समुद्रमा मलता साढावासठ जोजननि पहोलि अने अढि जोजननि उं
न्डियो छे। एकेकिनो चउद चउद हजार नदियोनो परिवार जाणवो ॥ सर्व मि
लिने ॥ १४ ॥ चोकु ॥ ५६००० ॥ हजार नदियो थइ ॥ हवे रोहिया १ रोहि
तसा २ ए २ नदि हेमवय क्षेत्रमा छे। अने सुवर्णकुला १ ने रूपकुला ॥ ए ॥
॥ २ ॥ नदीयो हिरणवय क्षेत्रमा छे एवं ४ नदी निकलता साढाबार जोजननि
पहोलि अने १ गाउनि उंन्डियो छे॥ छेहडे समुद्रमा मलता ॥ सवासो जोज
ननि पहोलि अने अढि जोजननी उन्डियो छे। एकेकिनो अठाविश अठाविश
हजार नदीयोनो परिवार जाणवो सर्व मिलिने । एक लाख ने १२ हजार न
दीयो थइ ॥ हवे हरिकता ॥ १ ॥ हरिसलिला ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो हरि

वास क्षेत्रमा छे। अने नरकंता ॥१॥ नारिकता२ ए॥२ नदीयो रमकवास क्षेत्रमा छे॥ ए ४नदीयो मूले निकलतां पचविश पचविश जोजनि पहोलियो छेअने ॥ २ गाउनि उंडियो छे। छेहडे समुद्रमां जलता। अढिसो अढिसो जोजननि पहोलियो छे। अने पाच पाच जोजननि उंडियो छे॥ एकेकि नदीनो परिवार छ पन हजार छपन हजार नदीयोनो जाणवो। एव ४ थइने ॥२॥ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो महावि देह क्षेत्रमां छे । ते मूले ॥५०॥ पंचास पंचास जोजननि पहोलियो छे। च्यार च्यार गाउनि उंडियो छे॥ छेहडे समुद्रमां जलता। पाचसो पाचसो जोजननि पहोलियो छे। दश दश जोजननि उंडियो छे॥ एकेकिनो पांच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे॥एवंश्नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जा णवो॥ महाविदेह क्षेत्रनि १६ विजयमा। गंगा॥ १ सिंधु॥ २॥ छे। ते॥

॥ १६ ॥ छ बत्रिश थइ। अने १६ विजयमा। रत्ता ॥१॥ रत्तवइ ॥ २ ॥ छे ते पण ॥ १६॥ छ ॥ ३२ ॥ थइ एव महाविदेह क्षेत्रमा ६४ नदीयो छे ॥ ६४ ॥ तु प होलपणुं नरतनि गगानि परे जाणवु । ते एकेकिनो चउद चउद हजार नदीयोनो परिवार जाणवो चोसठ ने १४ हजारे गुणाता ७ लाख ने ९६ हजार नदीयो थाय। अने देवकुरुनि ७४ हजार अने उत्तर कुरुनि ७४ हजार। एव १ लाख ने ६७ हजार अने ७ लाख ने ९६ हजार माहि नेलविये एटले ॥ १० लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेष १२ नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ९२ हजार एव सर्वमिलिने १४ लाख ५६ हजार नदीयो थाय। अने ९० महोटी नदीयो जाणवी हवे ॥ १२ ॥ अतर नदीयो महाविदेहक्षेत्रमा छे ते ॥७॥ विजयनु ॥ १ ॥ खाम्हु तेमाहि ॥३॥ नदीयो॥ पूर्व महाविदेहने उत्तर ने खाम्बे ॥ ३॥ अने दक्षिणने खांडवे ॥३ ए ६॥ इमज

पश्चिममहाविदेहने उत्तर खाडवे ॥ ३ अने दक्षिणने खाडवे ॥ ३ एव १२ अंतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहोलियो छे । अने अढि अढि जोजननि उंडियो छे ॥ १६५९२ ॥ जोजन ने २ कलानि लांबियो छे ॥ ते १२ अंतर नदीना नाम कहेछे ॥ गाहावइ ॥ १ ॥ दहावइ ॥ २ ॥ पंकावइ ॥ ३ ॥ ततजला ॥ ४ ॥ मतजला ॥ ५ ॥ उमतजला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिंहसोया ॥ ८ ॥ अतोवाहिणी ॥ ९ ॥ उमिमालिनी ॥ १० ॥ फेणमालीनी ॥ ॥ ११ ॥ गंभीरमालिनी ॥ १२ ॥ एव सर्व थइ महोटि नदीयो ॥ १४ ॥ ६४ ॥ ॥१२॥ थइने ९० नदीयो थइ । एहनो परिवार सर्व नदीयो थइने ॥१४५६०९० नदीयो थाय ॥ इति १० मो सलिलाद्वार सक्षेपथि समाप्त ॥ १०॥ इति खडा जोयण समाप्त ॥

ॐनम सिद्ध श्री अथ संजयाधि
स्यते ॥ गाथा पन्नवणा १ वेय २
रागे३ ॥ कप्प ४ चरित ५ पम्सिे
वणा ६ नाणे ७ ॥ तिछेय ८ लिंगे
९ शरीरे १०॥ खेत ११ काल १२
गइ १३ ठिइ १४ सजम १५ नि
कासे १६ ॥ १ ॥ जोग १७ वओगे
१८ कसाए १९ ॥ लेशा २० प
रिणाम २१ वध २२ वेदेय २३ ॥
कम्मोदीरणा २४ उव सपजहणा
२५ ॥ सन्नाय २६ आहारे २७
॥ २ ॥ जव २८ आगरिसे २९
कालं ३० तरेय ३१ ॥ समुघाय
३२ खेत ३३ फुसणाय ३४ ॥ ना
वेय ३५ परिमाणे ३६ खलु ॥ अ
पाबहुच ३७ संजयाण ॥ ३ ॥ इति
गाथा त्रण सपूर्ण ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना वे
नेद । एक थोमा कालनु ते प्रथम
जिनेश्वरने तथा चर्मजिनेश्वरने
वारे ॥१॥ अने वीजु घणाकालनु
ते वावीस जिनने वारे । तथा मदा

विदेह पेत्रे ७ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनी
यना वे प्रकार । एक अतीचार
सहित ने पच महाव्रत आ
रोपीए । बीजुं अतीचाररहित ने
पच महाव्रत आरोपीए ७ । परि
हार विसुधचारित्रना वे प्रकार ।
एक तप करवा पेठो ॥ १ ॥ अने
बीजो परिहार विसुधचारित्र सेवी
ने नीकल्यो ते ७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म सप
राय चारित्रना वे प्रकार । एक उप
समश्रेणीथी पड्तो ॥१॥ बीजो क्षप

क श्रेणीए चडतो ॥७॥ ४ ॥ यथा
ख्यातचारित्रना बे प्रकार । एक छद
मस्थ ॥ १ ॥ बीजो केवलीनो ॥७॥
७ सामायक ॥७॥ छेदोपस्थापनीय ७
सवेदी ने अवेदी जो अवेदी होयेतो
उपसमवेदीनेपीणवेदिहुवे । अने स
वेदी होय तो । त्रिणवेदमा हुवे । अने
परिहार विसुधसवेदी होय पण
अवेदीन होय । सवेदी होय तो ।
पुरुष ॥ १ ॥ पुरुषनपुसक । ए वे
वेदमेहुवे । सूक्ष्मसंपराय १ अने

जथाख्यात ए ॥२॥ अवेदी होय
उपसमनेपीणवेदीहोय
३ आगला ॥ ४ ॥ चारित्रसरागी ।
अने जथाख्यातवीतरागी ते उप
समनेपीणरागी होय ॥
४ स्थीतीकल्प ॥१॥ अस्थीतीकल्प
॥ २ ॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ थिवर
कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमा
स्थीतीकल्पमा ॥५॥ चारीत्र लाभे
अने अस्थीतीकल्पमा ३ चारीत्र
लाभे सामायक ॥ १ ॥ सूक्ष्मस

पराय ॥ २ ॥ जथाख्यात । ए
॥३॥ लाभे ॥ जिनकल्प अने थिव
रकल्प ए ॥२॥ मा आगल्या ॥३॥
चा० लाभे ॥ कल्पातीतमा ॥ ३ ॥
चारीत्रलाभे सा० ॥ सु० जथा
ख्यात । ए । ३ लाभे ॥
५ पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति
सेवणा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥४॥
निर्ग्रंथ ॥ ५ ॥ स्नातक ॥६॥ तेमा ।
पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति
सेवणा ॥ ३ ॥ प ॥ ३ ॥ मा बे चा

७ हवे ज्ञानद्वार कहेछे । आगला ॥ ४ ॥ चारित्रमा ॥ २ ॥ ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञान । तथा ॥ ४ ॥ ज्ञान लाभे । जथाख्यातमा ज्ञान ॥५॥ भजना । अज्ञान एके चारित्रमा लाभे नही । हवे केटलु भणे । सामा० ॥ १ ॥ छेदो० २ । सूक्ष्म० ३ । जथाख्यात ४ । ए ॥ ४ ॥ चारित्रजघन्य ॥ ८ ॥ प्रवचनमाता । भणे । उत् ॥१४॥ पूर्व पुराभणे । परिहारवीसुधनवमा पूर्वनी । त्रि

रित्र लाभे । सामा ॥ १ ॥ छेदो० । ए २ चारीत्र लाभे । कषायकुषी लमा आगला ॥ ४ ॥ चारीत्र लाभे । निर्ग्रंथमाने स्नातकमा । एकजथाख्यात चारीत्र लाभे ॥

८ हवे प्रतिसेवणाद्वार कहेछे । प्रतिसेवीमा आगला ॥ २ ॥ चारित्र लाभे तेमा पण मुल गुण ॥ उत्तर गुण प्रतिसेवीमा बे आगल्या चारित्र लाभे । अने अप्रतिसेवीमां तो ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे ॥

जिघ्नाचारवत्नुनणे । ज० । देशो
ऊणा ॥ १० ॥ पुर्वनणे ॥

८ ह्वे तीर्थद्वार कहेछे ॥ तीर्थमा पाच
चारित्र लाभे । अने अतीर्थमां
॥ ३ ॥ चारित्र लाभे । ते सामा०
॥ १ ॥ सुक्ष्मसंपराय ॥ ४ ॥ जथा
स्यात । ए ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे ।
तिर्थंकर प्रत्येकबूधमा ॥ ३ ॥ चा
रीत्र लाभे । सामा० । सुक्ष्म० ।
जथास्यात । ए ॥ ३ ॥ चारीत्र
लाभे ।

९ ह्वे लिंगद्वार कहेछे । द्रव्यलिंग
आश्रीसलिंगमा ॥ ५ ॥ चारित्र
लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमा ।
परिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ ॥ चा
रित्र लाभे । अने भावलिंग
आश्री । सलिंगमा ॥ ५ ॥ चारित्र
लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमा
एके चारित्र लाभे नही ॥

१० ह्वे सरीरद्वार कहेछे । सामा० ।
छेदो० । ए ४ मा ॥ ३ ॥ सरीर
॥ ४ ॥ सरीर तथा ॥ ५ ॥ सरीर

लाभे। पाछला ॥ ३ ॥ चारीत्रमा ॥३॥ सरीर लाभे। उदारीक ॥१॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे खेत्रद्वार कहेछे। कर्मभूमीमा जनम आश्रीछतआश्री ॥५॥ चारित्र लाभे । अकर्मभूमीमा एके चारित्र न लाभे ॥ साहारण आश्रीकर्मभूमीमा अकर्मभूमीमा परीहारवीसुधवरजीने ॥ ४ ॥ चारीत्र लाभे ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्पिणी उत्सर्पिणी ए २ मा ॥ ५ ॥ चारित्रलाभे । नोअवसर्पिणीनो उत्सर्पिणीमा । छेदोप० । परिहार० । ए ॥ २ ॥ वरजीने ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे ॥

तेमा अवसर्पिणीमा जनम आश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३ ॥ ४ ॥ आरामा ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे। पाचमा आरामा ॥३॥ चारित्र लाभे। सामा० ॥ १ ॥ छेदो० ॥ २ ॥ ए ॥३॥ चा

रित्र लाभे । ववेआरे एके नलाभे
॥ हवे वतआश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आ
रामा एके चारित्र न लाभे ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ५ ॥ आरामा ॥ ५॥ चारि
त्र लाभे ॥ वग आरामा । एके
चारित्र लाभे नही । सहार
ण आश्रीपरिहारवीसुध वरजीने
॥ ४ ॥ चारित्र लाभे । हवे चढता
कालमा । जनमआश्री ॥ १ ॥
आरे एके चारित्र न लाभे ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ ४॥ आरामा ॥५॥ चारित्र

लाभे ॥ ५ ॥६॥ आरामा एके चा
रित्र लाभे नही । हवे वतआश्री
॥ १ ॥ २ ॥ आरामा एके चारित्र
न लाभे ॥ ३ ॥४॥ आरामा ॥५॥
चारित्र लाभे ॥५॥ ६ ॥ आरामा
एके चारित्र न लाभे । हवे साहा
रण आश्री परिहारवीसुधवरजीने
॥४॥ चारित्र लाभे । नोउत्सर्पिणी
नोअवसर्पिणीमा।जनमवतआश्री
॥ ६ ॥ छपनदीपाना खेत्रमा एके
चारित्र न लाभे पंच महाविदेह

खेत्रमा । छेदो० । परिहारविसुध वरजीने ॥३॥ चारित्र लाभे । हवे साहारण आश्री परिहार वीसुध वरजीने६अकर्मभूमि१महाविदेह एवउत्तेत्रमा ॥४॥ चारित्र लाभे ॥

१३ हवे गतिद्वार कहेछे । नरक ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥२॥ मनुष्य । ए ॥३॥ गतिमा न जाय।१ देवगतिमा जाय। तेमा । सामा० । छेदो० । ए २ आराधिकआश्री । जघन्य । पहेले देवलोके उत्० । अनुत्तरविमाने

जाय । परिहारवीसुध । जघन्य० ॥१॥ देवलोकेजाय। अने। उत्०। आठमे देवलोके जाय । सूक्ष्मसपराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ ज० । उ० । अनुत्तर विमाने जाय। अने जथाख्यातवालो मोक्ष पण जाय । हवे आराधिक पाच पदवी पामे । ईन्द्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी ॥२॥ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ॥५॥ पदवी पामे।

तेमा । सामा० नेछेदो० । ए ॥३॥
पाच पदवी पामे । परिहारविसुध
१ अहमेंडनी वरजीने ॥४॥ पदवी
पामे।सूक्ष्मसंपरायने जथाख्याता
ए ॥३॥ १ अहमेडनीपदवी पामे।
हवे विराधिक आश्री पाचे चारि
त्रवाला ज०। भवनपतीमा जाय।
उ० । पहीले देवलोके । जाय ।
पदवी पांचमाहेथी एके न पामे ॥
१४ हवे स्थितिद्वार कहेछे । आवता
भवआश्री। आगला ॥ ३ ॥ चा

रित्रनी । ज० बे पल्यनी । उ० ॥
॥ ३३ ॥ सागरनी । अने परि
हारवीसुधनी । ज० बे पल्यनी
उ० ॥ १८ ॥ सागरनी ॥ सूक्ष्म
सपराय । जथाख्यात । ए २ चा
रित्रनी । जघन्य० उतकृष्टी ॥३३
सागरनी ॥
१५ हवे सजमठाणद्वार कहेछे । आग
ला॥३॥ चारित्रना असख्याता था
नक। सूक्ष्मसंपरायना असख्याता
थानक एक अतर्मु० मांहि अने

जथाख्याततु एकज स्थानक ॥
हवे अल्पबहुत्व । सर्वथी थोडा ।
जथाख्यातना ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म
सपरायना असख्यातगुणा ॥ २ ॥
तेथी परिहारवीसुधना असख्या
तगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा० ।
नेछेदोप० । माहोमाहि तुल्य ने
असख्यातगुणा ॥ ४ ॥

१६ हवे निकासद्वार कहेछे । पाचे
चारित्रना अनतापर्यव जाणवा।
सामायक । सामायक । छेदो

प० । परिहारवीसुध साथे छठा
णवडिया । उपला ॥ २ ॥ थी
अनंतगुणहीण ॥ १ ॥ छेदोप
स्था० । सामायक० छेदो० ।
परिहारवीसुधसाथे छठाण वडि
या । उपला ॥ २ ॥ थी अन
तगुणहीण ॥ २ ॥ हवे परिहारवी
सुध । सामा० छेदोप० । परिहार
वीसुधसाथे छठाणवडिया । उपला
२ थी अनतगुणहीण ॥ ३ ॥ हवे
सुक्ष्मसपराय । सामायक । छेदो

प० । परिहारवीसुधथि अनतगुण अधिक । पणनो तुल्य०। सूक्ष्मस पराय । सूक्ष्मसपरायसाथे छगण वर्मीयो । जो हीणो होय तो । अ नतगुणहीणो । जो अधिको होय तो अनंतगुण अधिक । अने तुल्य पण होय । अने जथाख्या तथि अनंतगुणहीण । अने जथा ख्यात आगला ॥ ४ ॥ थी अनं तगुण अधिक ॥ जथाख्यात जथा ख्यातसाथे तुल्य ॥ हवे अल्पब

तुल्य । सर्वथी थोमा । सामायक । छेदोपस्थापनीकना ज० । पर्यव मा होमादि तुल्य । तेथी परिहारवीसु धना । ज० पर्यव । अनंतगुणा । तेथी परिहारवीसुधना । उ० ।पर्यव अनतगुणा तेथी सामायक० छेदो पस्थापनियना उत्० । पर्यव अन तगुणा अने माहोमादितुल्य। तेथि सूक्ष्मसपरायना । ज० पर्यव अन तगुणा । तेथी सूक्ष्मसपरायना उ० । पर्यव । अनतगुणा । तेथी

जथाख्यातना । ज० । उ० । पर्यव अनतगुणा ने माहोमाहितुल्य

१७ हवे जोगद्वार कहेछे । पाचे चारित्र सजोगीमा तेमन जोग ॥१॥ वचन जोग ॥२॥ कायजोग ॥३॥ मा आ गल्या चारित्र ॥ ४ ॥ लाभे अने अजोगीमा एक जथाख्यात लाभे॥

१८ हवे उपयोगद्वार कहेछे । सागार उपयोगमा पाचे चारित्र लाभे । अणागार उपयोगमा । सूक्ष्मसप राय वरजीने ॥४॥ चारित्र लाभे॥

१९ हवे कसायद्वार कहेछे । आगला ॥ ४ ॥ चारित्र सकसाई । एक छे हलो अकसाई । आगला ॥ ३ ॥ चारित्रमा । सजलनो । क्रोध ॥१॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ लाभे । अने सू क्ष्मसपरायमा । १ सजलनोलोभ लाभे । अने जथाख्यात । उपस मने ॥ १ ॥ खिणकसाई होय

२० हवे लेशाद्वार कहेछे । सलेसीमा पाचे चारित्र लाभे । अलेसीमा

एक छेहलो । सामा० ॥ छेदोप
स्थापनीयमा लेसा ॥ ६ ॥ लाभे।
परिहारवीसुक्ष्मा पाछली ॥ ३ ॥
लेसा लाभे उपला ॥ २ ॥ मा १
सुकल लेसालाभे

हवे परिणामद्वार कहेछे। वर्द्धमान
परिणाममा पाचे चारित्र लाभे। हा
यमान परिणाममा आगला ॥४॥
चारित्र लाभे अवस्थित परिणाम
मा ॥ १ ॥ सूक्ष्मसंपराय वरजीने
॥४॥ चारित्र लाभे तेमा आगला

॥४॥ नी जघन्य टकी ॥१॥ समो॥
उत्०॥ अतर्मुहू०। अने जथाख्या
तनी ॥ ज० उ० टकि। अतर्मु०।
हवे हायमानमा आगला ॥ ४ ॥
नी ज० ॥१॥ समो। उ० अतर्मु०।
हवे अवस्थितमा आगला ॥ ३ ॥
नी। ज० ॥१॥ समो। उ० ॥ ७ ॥
सम० ॥ जथाख्यातनी। ज० ॥ १ ॥
समो। उत्कृष्टी। देशो उणी। पूर्व
कोडनी ॥

२२ हवे बंधद्वार कहेछे। आगला॥३॥

चारित्र ॥ ७ ॥ कर्म । तथा ॥ ८ ॥
कर्म बांधे ॥ ७ ॥ बांधे तो आउषु
वरजीने । सूक्ष्मसपराय ॥ ६ ॥ कर्म
बांधे । आउषू मोहनी वरजीनोज
थाख्यात एक सातावेदनीय बांधे।
अथवा अबन्धपण होय ॥

७३ वेदद्वार कहेछे आगला ॥ ४ ॥ चा
रित्र आठे कर्मवेदे ॥ अने जथा
ख्यात सात कर्मवेदे । मोहनीय वर
जीने । तथा ॥ ४ ॥ वेदे तो । वेद
नी ॥ १ ॥ आयु ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥
गोत्र० ५ ४ वेदे

७४ हवे उदीरणाद्वार कहेछे । आग
ला ॥ ३ ॥ चारित्र आठ कर्मनी
उदीरणा करे ॥ ७ ॥ नी करे तो
आउषूं वरजीने ॥ ६ ॥ नी करे तो
वेदनी वरजीने । सूक्ष्मसपराय
॥ ६ ॥ कर्मनी उदीरणा करे । आ
उषू ॥ १ ॥ मोहनी वरजीने ।
॥ ५ ॥ नी करे तो । आउषू मोह
नी । वेदनी वरजीने । जथाख्यात

॥ ५ ॥ नी उदीरणा करे । तथा
॥ ७ ॥ नी करे तो । नाम ॥ १ ॥
गोत्र । ए ॥७॥ नी उदीरणा करे ॥

७५ हवे उवसपजहणाद्वार कहेछे । सा
मायक चारित्रवालो चढे तो ।
छेदो० । सूक्ष्मसंपरायपणु पामे ।
अने पमे तो असजति० ने श्रावक
पणु पामे ॥ १ ॥ छेदो० । चढे तो ।
परिहा । ० । सूक्ष्म० पणुं पामे ।
पमे तो सामा० । असजती० ने
श्रावकपणु पामे । परिहा० चढे
नही । ने पमे तो । छेदो० । अस
जतीपणुं पामे । सूक्ष्मसप० चढे
तो जथाख्यातपणु पामे । पमे तो ।
सामा० । छेदो० । असजमपणु
पामे ॥जथाख्यात चढे तो मोक्षमा
जाय । पमे तो । सूक्ष्म० । असज
मपणु पामे ॥

७६ हवे सन्नाद्वार कहेछे । सनावउता
मा । आगल्या ॥ ३ ॥ चारित्र
लाभे । अने नोसनावउतामा ।
पाचे चारित्र लाभे ॥

२७ हवे आहारकद्वार कहेछे। पांचे चा
रित्र आहारकमां लाभे। एक ज
थाख्यात अणाहारकमां पण होय

२८ हवे भवद्वार कहेछे। सामा०।
छेदो०। ज० ॥ १ ॥ भव ॥ उत्कृ
ष्टा ॥ ८ ॥ भवकरे। बाकी ॥ ३ ॥
चारित्रवाला ज० १ भव। उ०
॥ ३ ॥ भव करे ॥

२९ हवे आकर्षद्वार कहेछे। एक भव
आश्री सामायक ॥ जघन्य ॥ १॥
वारआवे उत्० प्रत्येकसें॥९००॥
वारआवे ॥ १ ॥ छेदो ॥ ० ॥ ज०
॥ १ ॥ उत्० वीसपद्धुत्त ॥१२०॥
॥ २ ॥ परिहार०। ज० ॥ १ ॥
उत्० ॥ ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म०। ज०१
उ० ॥ ४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात। ज०
॥ १ ॥ उ० ॥ २ ॥ ५ ॥ हवे घणा
भवआश्री सामा०। ज० ॥ २ ॥
वारआवे उ० प्रत्येक हजारवार
आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० ॥ २ ॥
उत्० ॥९६०॥२॥ परिहा० ज०२
उ० ॥ ७ ॥३॥ सूक्ष्म०। ज०॥२॥

उ० ॥ ए ॥ ४ ॥ जथाख्यात। ज०
॥ १ ॥ उ० ॥ ५ ॥ ५ ॥
हवे स्थितीद्वार कहेछे। एक वचन
आश्री। सामा० छेदो०। ज०॥१॥
समय। उ०। देशे उणी पूर्व कोड
नी। परिहा०। ज० ॥ १ ॥ समो
उ० ॥ २ए ॥ वरस उणी पूर्व कोड
सूक्ष्म०। ज० ॥ १ ॥ समो। उ०।
अतर्मु० जथाख्यातज० ॥ १ ॥
समो। उ०। देशो उणी पूर्व कोड।
घणा जवआश्री। सामायकनि।

ज० उ०। सवधाकाल। छेदोप०।
ज० ॥ २५० ॥ वरस। उ० ५०
लाख कोड सागर। परिहा०। ज०
॥ २०० ॥ वरस। उ० देशे उणी
॥ २ ॥ पूर्व कोड। सूक्ष्म०। ज०
१ समो। उ० । अतर्मु०। जथा
ख्यातज०। उ०। सवधाकाल ॥

३१ हवे अतरद्वार कहेछे। एक वचन
आश्री। पाचे चारित्रनु। ज० ॥
अंतर्मु०। उ०। अर्द्ध पुदगल देशो
उणुआतरु पडे। बहुवचनआश्री

सामा० ज० । उ० । अंतर नथि ॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० ॥ वर्सउ० ॥ १८ कोमा कोम सागर नु । श॥परिहा० । ज० ॥८४०००॥ वर्स । उ० ॥ १८ ॥कोमाकोम सा गरनुं ॥ ३ ॥ सूक्षम जघन्य सम१ उ० । ६ मासनु ॥ ४ ॥ जथाख्या तनु । ज० । उ० । आतरु नथी॥५॥

३२ हवे समुद्घातद्वार कहेछे । सा मा । ० । छेदो० । ए॥श॥ मा ६ स मुद्घातलान्ने । परिहार० ॥ ३ ॥ समुद्घात पहेली । लान्ने । सूक्ष्म० । समुद्घात नथी । जथाख्यातमा ॥ १ ॥ केवल समुद्घात लान्ने ॥

३३ हवे खेत्रद्वार कहेछे । लोकने स ख्यातमे न्नागे । के असंख्यातमे न्नागे । के घणे सख्यातमे न्नागे । ते घणे असंख्यातमे न्नागे के सर्व लोकने विषे । उत्तर । लोकना अ सख्यातमा न्नागमा तो । पाचे चा रित्र लान्ने । अने एक थजाख्यात असख्यातमे न्नागे । घणे असख्या

तमे जागे । ने सर्व लोकने विषे
जाने ॥
हवे फरसनाघार खेत्रघारनीपरे
जाणवो ॥
हवे भावघार कहेछे। सामा० ।
छेदो० । परिहा० । सूक्ष्म० ए ॥४॥
मां । भाव १ षउपसम जाने ।
जथाख्यातमा ॥ ७ ॥ भाव जाने।
उपसम। ने षायक ए ॥२॥ जाने ॥
हवे परिमाणघार कहेछे। हवे पभि
वजमाणआश्री जो होय तो। सा

मा० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक
हजार। छेदो० । परीहार० । ज०
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रत्येकसें।
सूक्ष्मसपराय। ज० ॥ १ ॥ २॥३॥
उ० ॥ १६२॥ ते ॥१०८॥ षपका।
॥ ५४ ॥ उपस । ० । जथाख्यात।
ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६२॥
ते ॥ १०८ ॥ षपक० ॥ ५४ ॥ उप
स० । पूर्वपभिवजमाणआश्री जो
होयतो । सामा । ज० । प्रत्येक ह
जार कोड। उत्० । प्रत्येक हजार

कोम । छेदो० । प्रत्येकसे कोम ।
ठ० प्रत्येकसे कोम ॥ परिहारवी
सुध । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० ।
प्रथक हजार । सूक्ष्म० ज० ॥ १ ॥
॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येकसें ॥ ज
थाख्यात । ज० । प्रत्येक कोम । उ०
प्रत्येक कोम

३७ अल्पबहुत्वद्वार कहेछे । सर्वथी
थोमा सूक्ष्मसपराय ॥ १ ॥ तेथी
परिहा० सपेजगुणा तेथी जया
ख्यात० सपेजगुणा ॥ ३ ॥ तेथी
छेदो० संषेजगुणा ॥ ४ ॥ तेथी
सामा० । संषेजगुणा जाने ॥ ५ ॥
इति सजयाना बोल सपूर्ण ॥

॥ ॐ नम ॥ अथ नियठा लिख्यते
॥ गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे
३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पमिसेवणा
६ नाणे ७ ॥ तीछ्थय ८ ॥ लिंगे ९
सरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२
गइ १३ ठीइ १४ संजम १५ नि
कासे १६ ॥ १ ॥ जोग १७ वउगे
१८ कसाए १९ । लेसा २० परी

णाम २१ बंध २२ वेदेय २३ । क
म्मोदीरणा २४ उवसंपजहणा २५।
सन्नाय २६ आहारे २७ ॥ २ ॥
भव २८ आगरीसे २९ काल ३०
तरेय ३१ ॥ समुग्घाय ३२ खेत
३३ फुसणाय ३४ ॥ भावेय ३५ प
रीमाणे ३६ खलु । अप्पाबहुच्च
३७ नीयठाणं ३ ॥ ए ३ गाथा
हवे १ पन्नवणा द्वार । पुलाक
॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा
॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥ ४ ॥ नी

यंठो ५ सनातक ६ ॥ पुलाक ते
सहुसा धाननापुलानीपरे ॥ १ ॥
बकुस ते सहुसा धाननीपरे ॥ २ ॥
प्रतीसेवना ते मसल्याधाननीपरे
३ कषायकुसील ते । उपण्याधान
नीपरे ॥ ४ ॥ नीयठो ते कपाकीस
दितचोषानीपरे ॥ ५ ॥ सनातक्ते
अणीसुध चोषानीपरे ॥ ६ ॥ पु
लाकना बे भेद । लवधीपुलाक ते
चक्रवर्तिनी सेन्याचूरण करण स
की सपन्न ते लवधीपुलाक ॥ १ ॥

प्रतिसेवणापुलाक ते। मुलगुण उ
तरगुणमा दोष लगाडे। मुल गुण
ते पाच आश्रवमांहिलो अनेरो
दोष लगाडे ते। उतर गुण दोष ते
दश पचपाणमा दोष लगाडे ते पु
लाकना पाचभेद ज्ञान पु० ॥१॥
दर्शनपुलाक ॥२॥ चारित्रपुलाक
३ लिंगपु० ॥४॥ यथासूक्ष्मपुला
क ॥ ५ ॥ ते पुलाक ज्ञानादि अ
तीचार सेववेकरी संजमसाररहि
त करे तेने पुलाक कहीये ॥ १ ॥

वकुस ते सरीर वकुस ते सरीरनी
सुश्रूषा विभूषा करे ते ॥ १ ॥ उप
करण वकुस ते ऊजलता उपक
रण करे। उपकरणादि अधिक स
ग्रहे वस्त्रपात्रादि प्रक्षालनादि
॥ २ ॥ वकुस ते आभोगवकुस
॥ १ ॥ अणाभोगवकुस ॥ २ ॥
सवुत्तवकुस ॥ ३ ॥ असवुत्तवकुस
॥ ४ ॥ जथासूक्ष्मवकुस ॥ ५ ॥
जाणीने दोष लगाडे ते आभो
गवकुस ॥ १ ॥ अणजाणे दोष ल

गाभे ते । अणाभोग बकुस ॥ २॥ गनो दोष लगाभे ते संवृतबकुस ॥ ३ ॥ प्रगट दोष लगाभे ते असंवृतबकुस ४ यथा सूक्ष्मतेकिंचित् दोष लगाभे ते अहासुहुम बकुस ॥ ५ ॥ सातिचार नीरतीचार वेहु जेवा सहुसा धाननीपरे । संजमनेकावरुंकरे ते बकुस ॥ ४ ॥ प्रतिसेवनाकुसीलना ५ भेद ॥ ज्ञानप्रतिसेवना ॥ १ ॥ दर्शणप्रतिसेवना ॥२॥ चारित्रप्रतिसेवना ॥३॥

लिंगप्रतिसेवना ४जथासूक्ष्मप्रतिसेवना ॥५॥ इन्द्रियादि वस्य अनेपिंडविसुध्यादि । सुमतीभावना तपपडीमा । अभीग्रहित॥उतरगुण एटले मुलगुण उतर गुण विराधता सर्वज्ञनी आज्ञाथी । न्यूनाधिक प्रवर्त्ते । तेप्रतिसेवना ज्ञानादि ५ जाणवा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ते । सजल ना कषायने उदये करी कुत्सित जेहने सीलस्वभाव कषाय उदय थाय । अप्रशस्तपणु थाय ।

तेमाटे कपायकुसील । दोप लगा
ड्वासरीपा॥ निमित्तवासी परिणा
म थाय । पण प्रवर्त्तनवाद्ज्यमा
दोप न लगाडे ते कषायकुसील
ना ५ भेद । ज्ञानकपायकुसील
१ दर्सनकपायकुसील ॥ २ ॥ चा
रित्रकपायकुसील ३ लिंगकपाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथासूक्ष्मकपायकु
सील ॥ ५ ॥ हवे नियंठो ते मोह
नी कर्मथी नीकल्यो सपूर्ण ग्रथर
हित ॥ उपसमीत ॥ १ ॥ यथानि

र्मलज्ञायकज्ञाविक २ कषायवर
जित वीतरागावस्थायेवर्त्ति ते ॥ मु
नीनो प्रथम समय ते पढमसमय
नियंठो ॥ १ ॥ अपढमसमय ते
वीजासमयादिके वर्त्ते । ते अपढम
समय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुणस्था
नकने पर्यंतवर्तिसमयनो ते चरम
समय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणा
ना छेहला समयथी पूर्वलासमय
वर्ति ते अचरमसमय नीयंठो॥४॥
यथासुक्ष्म ते गुणठाणाना सर्वे सम

यवर्ती ते। अहासुहूमनीयठो॥५॥
अने स्नातक ते घातिकर्ममलपषा
लवाथी टालवाथी परमपवित्र ना
ह्यानीपरे उज्वल परीणामी रूपा
तीत ध्यानी॥ते स्नातक पचनामवि
ध्याता॥अठवीते जोगनीरुध्यामाटे
अठवी ॥ १ ॥ असवल ते निरती
चार कावरासरहित तेमाटे अस
वल ॥ २ ॥ घनघातिकर्म क्षय
कस्या ते माटे अकर्मांस॥ ३ ॥सं
सुध्नाणदसणधरे । अरहाजीण

केवली ते । सम्यक् सुध निर्दोष
ज्ञानदर्सनना धरणहार॥ अरहा
जीणे ते रहस्यगनीवात नही ते
राग द्वेषना जीतनार माटे केवली
कहीये ॥ ४ ॥ अपरीसावी ते नवा
कर्म आवेनही तेमाटे अपरीसावी
सर्व योगना रुंधवाथी ५॥ ६ ॥
ए नामनी प्रज्ञापनापरुपणाद्वार
किंचित् निरुपण
२ वेदद्वार। आगला ४ सवेदी ने छ
परला २ अवेदी ॥ तेमा पुलाक।

स्त्रिवेदमा नही । पुरुष ॥१॥ पुरुष नपुंसक ॥२॥ ए २ मा होय । बकुस ने प्रतिसेवना । ए ३ वेदमा होय । कषायकुसील सवेदी होयतो त्रिणे वेदमा होय । अने अवेदी होयतो उपसमने षीणवेदमा होय । निग्रंथ उपसमने षीणवेदमा होय स्नातक षीणवेदमा होय । ए द्वा०॥२॥

३ रागद्वार आगला ४ नीयंठा । सरागी अने नीग्रंथ ने स्नातक षीणरागी होय ॥ एद्वार ॥ ३ ॥

४ कल्पद्वार ॥ स्थितिकल्प ॥१॥ अस्थितिकल्प ॥२॥ जिनकल्प ॥३॥ थिवरकल्प॥४॥ कल्पातीत ५ तेमा थितिकल्प अथितिकल्पमा बए नीयंठा । लाभे ॥ जिनकल्पमाही बीजो॥त्रिजो चोथो ए३ नियंठा लाभे थिवरकल्पमा आगला ४ नीयंठा लाभे । कल्पातीतमा उपरला ३ नीयंठा लाभे ॥ ए द्वार ॥ ४ ॥

५ चारित्रद्वार । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ ए २ मा आ

गल्या ४ नियठा जाणे । परीहार
विसुद्ध ॥ १ ॥ सुक्ष्मसपराय ॥२॥
ए २ मा कषायकुसिलनीयठो जा
णे । जथाख्यात चारीत्रमां उपर
ला २ नीयठा जाणे । ए द्वार॥५॥
६ प्रतिसेवीद्वार । आगला ३ नीयठा
प्रतिसेवी॥उपरला ३ नियठा । अ
प्रतिसेवी । तेमा पुलाक मूलगुण
उत्तरगुणमा दोष लगाडे । वकुस
उत्तरगुणमा दोष लगाडे । प्रतिसे
वना मूलगुण उत्तरगुणमा दोष

लगाडे । उपरला ३ नीयठा दोष
न लगाडे ए द्वार ॥ ६ ॥
७ नाणद्वार आगला ३ नीयठामा
ज्ञान २ तथा ३ अने चोथा पाच
मां नीयठामा । २ ॥ ज्ञान ॥३॥
तथा ४ ॥ स्नातकमां १ केवल
ज्ञान । हवे पुलाक भणे तो जघ
न्य नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार
वस्तु सुधी । उत्त० नव पूर्व पूरा
भणे ॥ १ ॥ वकुस ने प्रतिसेवना
भणे तो ज० ८ प्रवचनमाता ।

उत्० १० पूर्व पुरा नणे ॥ कषायकु सीलने नीयंठो ज० ८ प्रव० उ० १४ पूर्व पूरा नणे ॥ स्नातक तो श्रुतथी अधिक छे । सर्वज्ञ छे

८ तिथद्वार । तिर्थ ॥१॥ अतिर्थ ॥२॥ तिर्थंकर ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुद्ध ॥ ४ ॥ तिहां तिर्थे छए नीयठा लाभे । वा कि ३ मा उपला ३ नीयठा लाभे। ए द्वार ८ मो ॥

ए लिंगद्वार द्रव्यथी । सलिंग । अन्य लिंग ॥ ग्रह लिंग । ए ३ लिंगमा छ ए नीयंठा लाभे ॥ अने भाव थी अन्यलिंग ग्रहलिंगमा एके न लाभे ने सलिंगमा छए लाभे ॥ ए द्वार ए मो ॥

१० सरीरद्वार ॥ पुलाकमा ३ शरीर लाभे॥ बकुस ने प्रतिसेवना । ए २ मा ३ सरीर लाभे ॥ उदारीक॥१॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ए ३ लाभे। तथा ४ लाभे तो वैक्रेय वध्यु॥ अने कपाय कुसीलमा सरीर ॥३॥४॥ ॥ ५ ॥ लाभे । अने नियथ ने स्ना

तकमा सरीर ३ लाभे उदारीक ते
जसकार्मण ॥ एद्वार १० ॥

११ पेत्रद्वार । जन्मआश्री कर्मभूमि
मा ठए नीयठा लाभे । अकर्मभू
मीमा एके न लाभे । ठतआश्री
पण ठए लाभे । साहारणआश्री
पुलाक वरजीने ५ नीयठा लाभे ।
कर्मभूमी अकर्मभूमी बेहुमा लाभे
ए द्वार ११ मो ॥

१२ कालद्वार समुचेअवसार्प्पिणी ॥
उत्सार्प्पिणीनोअवसर्प्पिणीनोउत्स

र्प्पिणीमा ६ नीयठा लाभे । तेमा
अवसर्प्पिणी उत्तरतो काल तेमा
६ आरा तिहा जन्मआश्री पही
ला ने बीजा आरामा एके न ला
भे । त्रीजा ने चोथा आरामा ६
नीयठा लाभे ॥ पाचमा आरामा ६
नीयठा लाभे । बीजो । त्रीजो ।
चोथो ए नीयठा ३ लाभे । ठठा आ
रामा एके नही । हवे ठतआश्री
पहिला । बीजा आरामा एके नही
त्रीजा चोथा पाचमा आरामा ठए

नीयठा लाभे । छठा आरामा एके
न लाभे । हवे साहारणआश्री पु
लाक वरजीने ५ नीयठा छए आ
रामा लाभे । हवे चउथा कालमा
जन्मआश्री पहिले आरे एके
नही बीजे त्रीजे चोथे आरे ६ नी
यठा लाभे । पाचमे छठे आरे एके
नही । हवे छतआश्री पहिले बी
जे आरे एके नही । त्रीजे चोथे
आरे ६ नीयठा लाभे । पाचमे छठे
आरे एके नही । हवे साहारणआ

श्री । पुलाक वरजीने छए आरा
मा ५ नियठा लाभे । हवे नोउत्स
र्पिणीनोअवशर्प्पिणी काल । ते
हेमवय ॥ १ ॥ एरणवय ॥ २ ॥ ह
रीवास ॥ ३ ॥ रमकवास ॥ ४ ॥
देवकुरु ५ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए ६
षेत्रमा जन्मछतआश्री एके नही ।
अने साहारणआश्री पुलाक वर
जीने ५ नीयठा लाभे पाच महावी
देह षेत्रमा ॥ जन्मछतआश्री छए
नीयठा लाभे । साहारणआश्री

तकमा सरीर ३ लाभे उदारीक ते
जसकार्मण ॥ एद्वार १० ॥

११ पेत्रद्वार । जन्मआश्री कर्मभूमि
मा ठए नीयठा लाभे । अकर्मभू
मीमा एके न लाभे । ठतआश्री
पण ठए लाभे । साहारणआश्री
पुलाक वरजीने ५ नीयठा लाभे ।
कर्मभूमी अकर्मभूमी वेहुमा लाभे
ए द्वार ११ मो ॥

१२ कालद्वार समुचेअवसार्पिणी ॥
उत्सार्पिणीनोअवसर्पिणीनोउत्स

र्पिणीमा ६ नीयठा लाभे । तेमा
अवसार्पिणी उत्तरतो काल तेमा
६ आरा तिहा जन्मआश्री पहीला
ला ने वीजा आरामा एके न ला
भे । त्रीजा ने चोथा आरामा ६
नीयठा लाभे ॥ पाचमा आरामा ६
नीयठा लाभे । वीजो । त्रीजो ।
चोथो ए नीयठा ३ लाभे । ठठा आ
रामा एके नही । हवे ठतआश्री
पहिला । वीजा आरामा एके नही
त्रीजा चोथा पाचमा आरामा ठए

वीराधक आगला ५ नीयंठा ज०
भवनपतिमा जाय उ० पहीले दे
वलोके जाय। पदवी ५ माहेली
एके न पामे। ए १३

१४ थितिद्वार देवतामां जाए तिहा
थितिकेतलीपामे।पुलाकज०प्रत्ये
क पल्यनी।उ०। १८ सागरनी पामे।
वकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक
पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे।
कपायकुसील ज० प्रत्येक पल्यनी
उ० ३३ सागरनी पामे ॥ निग्रंथ
ज० उ० ३३ सागरनो पामे। स्ना
तक मोक्ष जाय ए द्वार १४

१५ सजमस्थानद्वार। आगला ४ नी
यठाना असस्याता सजमस्थान
कतेपरिणामना थानक छेअने नि
ग्रंथ ने स्नातकनु एकेकु थानक छे।
हवे अल्प बहुत्व ॥पहिले बोले स
र्वथी थोडा निग्रथ ने स्नातकना था
नक बेहु माहोमाही तुल्य ॥१॥तेथी
वीजे बोले पुलाकना थानक। असं
ख्यातगुणा ॥२॥ तेथी त्रीजे बोले ब

पुलाक वरजीने ५ नीयठा लाने ॥
ए द्वार १२ मो ॥ ॥
१३ गतिद्वार । आगला ५ नीयठा आराधिक एक वीमानीकदेवनी गतिमा जाय । स्नातक मोक्ष जाए । तेमा पुलाक ज० पहिले देवलोके जाए उ० । आठमे देवलोके जाय । वकुस ने प्रतिसेवना ज० पहिले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाए । कषायकुसील ज० पहेले देवलोके जाए । उ० अनुत्तर विमानमा जाय ॥ नियठो ज० उ० अनुत्तरविमानमा जाय ॥ स्नातकमोक्षमा जाय । आराधिक पदवी पाचपामे ॥ इन्द्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी २ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ माहेली । आगला ३ नीयठा पदवी ४ पामे । एक अहमेंद्रनी नही । कषायकुसील पदवी ५ पामे । नीग्रथ एकपदवी अहमेंद्रनी पामे । स्नातकमोक्ष जाय । हवे

नतगुणहीणो ॥ ४ ॥ हवे निर्ग्रंथ
ने स्नातक। आगला च्यारथी अ
नंतगुण अधिक। ने माहोमाही
तुल्य ॥ ६ ॥ हवे अल्प बहूत्वद्वार
पहिले बोले। सर्वथी थोडा पुला
क ने कषायकुसीलना जघन्य प
र्जव माहोमाही तुल्य १ तेथी बीजे
बोले पुलाकना उत्कृष्ट पर्जव अ
नतगुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले
बकुस ने प्रतिसेवनाना। जघन्य
पर्जव माहोमाही तुल्य ने अनत

गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले बकु
सना ॥ उत्कृष्ट पर्जव अनंतगुणा
॥ ४ ॥ तेथी पाचमे बोले प्रतिसे
वनाना उ० पर्जव अनतगुणा॥५॥
तेथी छठे बोले कषायकुसीलना
पर्जव उ० अनंतगुणा ६ तेथी नि
र्ग्रंथ ने स्नातकना मांहोमांही तुल्य
पर्यव ने अनतगुणा ॥ ७ ॥ हवे
छठाणवडियालेसु हीणो होय के अ
धिको होय। जो हीणो होय तो
अनतभाग ॥१॥ असंख्यातभाग

कुसना थानक असस्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले प्रतिसेव नाना थानक । असस्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी पाचमे बोले । कषाय कुसीलना थानक असस्यातगुणा ॥ ५ ॥ ए द्वार १५ मो ॥

१६ निकासद्वार ते पर्यवद्वार एकेका नियठाना अनतापर्यव छे पुलाक । पुलाकसाथे छठाणवडीयो । पुलाक बकुसप्रति सेवनाथी ॥ अनतगुण हीणो कषायकुसीलसाथे छठाणवडीयोउपरलावेथी अनत गुण हीणो ॥ १ ॥ हवे बकुसपुलाकथी अनतगुण अधिक बकुसप्रतिसेवना ॥ कषायकुसीलसाथे छठाणवडीयोउपरलावेथी अनतगुण हीणो २ हवे प्रतिसेवना । पुलाकथी अनतगुण अधिक बकुसप्रतिसेवना कषायकुसीलसाथे छठाणवडीयो । ऊपरलावेथी अनंतगुण हीणो ॥ ३ ॥ हवे कषायकुसील आगला ४ साथे छठाणवडीयो ऊपरलावेथी अ

अने जो ३ होय। तो क्रो६ वरजी
ने वे होयतो मान वरजीने। ने
एक होयतो माया वरजीने तेमा
क्रो६ मान मायानी नजना लोन
नी नीयमा होय ॥ ४॥ निग्रंथ
उमसम तथा पीणकषाइ होय।
स्नातकषीणकषाइ होय ॥ ए द्वार
१ए मो थयो

२० लेस्याद्वार। आगला ३ नियठा
मा उपरली ३ लेस्या होय। कषा
यकुसीलमां ६ लेसा होय ने नि
ग्रंथने सुक्कलेस्या। स्नातकमा परम
सुक्कलेस्या अने अलेसी पण हो
य॥ ए द्वार २० मो थयो ॥

२१ परिणामद्वार। ठए नीयठामा वर्द्ध
मान परिणाम होय तो। आगला
४ मा॥ जघन्य १ समो उ० अंतर
मुहूर्त्त। उपला २ना जघन्य उत्कृ
ष्ट अंतरमुहूर्त्त। हवे हायमान प
रिणाम। आगला ४ ना। ज०
एक समो। उ०। अंत० उपला २
ना हायमान परीणाम होय नही।

॥ २ ॥ संख्यातभाग ३ संख्यात
गुण ॥ ४ ॥ असंख्यातगुण ॥५॥
अनंतगुणहीण ॥ ६ ॥ हवे अधि
क होय तो । अनंतभाग ॥ १ ॥
असंख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यात
भाग ॥ ३ ॥ संख्यातगुण ॥ ४ ॥
असंख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनंतगुण
अधिक ॥ ६ ॥ ए षटगुण हानी
वृद्धि जाणवी । ए द्वार १६ मो ।
७ जोगद्वार आगला ५ नीयठा ।
सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने

छठो स्नातक सयोगी होय तो ३
जोग होय ॥ अजोगी होय तो
जोग एके नही । ए १७ मो
१८ उपयोगद्वार । छए नीयठामा सा
कार उपयोग ने अणाकार उपयो
ग बेहू लाभे । ए द्वार १८ मो
१९ कषायद्वार । आगली ३ चोकडी
मां एके नीयठो न लाभे । हवे स
ज्वलनी १ चोकडीआगला त्रण
नीयठामा होय । अने कषायकु
सीलमा सज्वलना च्यारे होय ।

उदीरणा करे आउपू १ वेदनी ७ वरजीने। बकुस ने प्रतिसेवना आ ७ कर्मनी उदीरणा करे। अने जो ७ नी करे तो आउपूं वरजीने ६ नीकरे तो। आउपू वेदनी वरजीने। कषायकुसील ८ कर्मनी उदीरणा करे ७ नी करे तो। आउपू वरजीने ६ नी करे तो आयुष वेदनी वरजीने ५ नी करे तो मोहनी आउपू वेदनी वरजीने। अने नीग्रंथ आउपू वेदनी मोहनी ए ३ वरजीने। पाच कर्मनी उदीरणा करे। तथा नाम गोत्र २ नी उदीरणा करे। स्नातक नाम गोत्रनी उदीरणा करे। तथा न करे पण एके कर्मनी उदीरणा २४

२५ उवसपजहणाद्वार। पुलाक चढे तो। कषायकुशीलपणु पामे। अने जो पडे तो असजतिपणु पामे ॥ १ ॥ बकुस चढे तो प्रतिसेवनाने कषायकुसीलपणु पामे ॥ अने जो पडे तो असजति ने श्रावकप

हवे अवस्थितपरिणाम आगला ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा। निग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्वकोड़ ए द्वार ॥ २१ ॥

२२ बंधद्वार। पुलाक ७ कर्म बांधे। आउषू वरजीने ॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७। ८ कर्म बांधे ७ बांधे तो आउषू वरजीने कषायकुसील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म बांधे। ७ कर्म बांधे तो आउषूं वरजीने ६ कर्म बांधे तो आयुष तथा मोहनी वरजीने॥ निग्रंथ १ साता वेदनी कर्म बांधे। स्नातक १ सातावेदनी बांधे ने स्नातक अबंधक पण होय ॥ ए द्वार २२ मो।

२३ वेदद्वार ॥ आगला ४ आठे कर्म वेदे॥ निग्रंथ मोहनीकर्म वरजीने ७ कर्म वेदे । स्नातक ४ कर्म वेदे । वे० आ० ना० गो० ए ४ वेदे॥ ए द्वार २३ मो

२४ उदीरणाद्वार। पुलाक ६ कर्मनी

उ० ३ भवकरे ॥ बकुस ॥ १ ॥ प्र
तिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील ॥
॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ज० ॥ १ ॥ भव
उ० ८ भव । निग्रंथज० ॥ १ ॥
भव ॥ उ० ३ भव करे ॥ स्नातक
मोक्षमा जाय । ए द्वार २८ मो ॥

२ए आकर्षद्वार । आकर्ष १ भवे
पुलाकज० १ वार ॥ उ० ३ वार
आवे । बकुस प्रतिसेवना ॥ कषा
यकुसील ॥ ज० ॥ १ ॥ उ० प्रत्येक
सोए०० वार आवे ॥ निग्रंथ० ज० १
उ० २ वार आवे । स्नातक० ज०
उ १ वार आवे । हवे घणा भव
आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार
उ० ७ वार आवे । बकुस० ॥ १ ॥
प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील०
॥ ३ ॥ ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० ह
जार वार आवे ॥ निग्रंथ० ज० २ उ०
५ वार आवे । स्नातकने पुनर्भव
छे नही । ए द्वार २ए मो ॥

३० स्थितिद्वार । स्थिति १ भवआ
श्री । पुलाकनीज० अंत० । उ

णु पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चढे तो
कपायकुसीलपणु पामे अने जो
पडे तो वकुस० ॥१॥ असजति०
॥ २ ॥ श्रावक पणु ३ ॥ पामे ३
कपायकुशील चढे तो नीर्ग्रंथपणुं
पामे । अने जो पडे तो । पुलाक
॥ १ ॥ वकुस २ प्रतिसेवना ॥३॥
असजति ४ श्रावक ५ ए ५ थाय
॥ ४ ॥ निग्रथ चढे तो स्नातकपणु
पामे । अने जो पडे तो कषायकु
सीलपणुं पामे । असजति पण था

य ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय । प
ण पडवु नथी ए २५ ॥
२६ संज्ञाद्वार । बीजो १ त्रीजो २ ॥
चोथो ३ ॥ ए ३ नीयठा सनावउ
तामा होय । नोसनाउतामा ६ नी
यठा लाभे । ए द्वार २६ मो ॥
२७ आहारद्वार । आगला ५ नियठा
आहारक होय । छठो नीयठो स्ना
तक आहारक ने अणाहारक पण
होय ॥ ए द्वार २७ मो थयो ॥
२८ भवद्वार । पुलाक ज १ भवकरे ॥

उ० ३ त्नवकरे ॥ वकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील ॥ ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ज० ॥ १ ॥ त्नव उ० ८ त्नव । निर्ग्रंथज० ॥ १ ॥ त्नव ॥ उ० ३ त्नव करे॥ स्नातक मोक्षमा जाय । ए धार २८ मो ॥

२ए आकर्षधार । आकर्ष १ त्नवे पुलाकज० १ वार ॥ उ० ३ वार आवे । वकुस प्रतिसेवना ॥ कषायकुसील ॥ ज० ॥१॥ उ० प्रत्येक सोए००वार आवे॥नियथ०ज०१ उ० २ वार आवे । स्नातक० ज० उ १ वार आवे । हवे घणा त्नव आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार उ० ७ वार आवे । वकुस० ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कपायकुसील० ॥३॥ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० ह जार वार आवे॥नियथ०ज०२उ० ५ वार आवे । स्नातकने पुनर्त्नव छे नही । ए धार २ए मो ॥

३० स्थितिधार । स्थिति १ त्नवआश्री । पुलाकनीज० अत० । उ

तृ० अ० । वकुस प्रतिसेवना कषा यकुसीलनी ज० १ समोउ० देसे उणी पूर्व कोड निग्रथनी । ज० १ समो । उ० १ अतमु० । स्नातक नी ज० १ अत । उ० देशे उणी पूर्व कोड । हवे घणा जवआश्री । पुलाक ने निग्रथनी ।ज० १ समो उ० १ अत० बाकीने सवधाकाल
ए द्वार ३० मो ॥

अंतरद्वार । अतर एक जीवआश्री आगला ५ नियठाने । ज० अत०। उ० । अर्धपुगल देसे उणु आतरु पडे । स्नातकने आतरु नथी । हवे घणा जीवआश्री । पुलाकने ज० १ समो ॥ उ० सख्याता वरसनु । निग्रथने ज० १ समो । उ० ६ मा सनु शेष बाकिने आतरु नथी ।
ए द्वार ३१ मो थयो

३२ समुद्घातद्वार । समुद्घात पुला कमा त्रण वेदनी कषाय मारणा तिक ए ॥ ३ लाभे ॥ वकुस ने प्र तिसेवनामा पाच समुद्घात । वे

दनी १ कषाय २ मारणातिकमा ॥ ३ ॥वैक्रिय ॥ ४ ॥ तैजस ॥ ५ ॥ ए ५ कषायकुशीलमा ६ समुद्घात । केवल वरजीने । निग्रथमा समुद्घात नथी । स्नातकमा ॥ १ ॥ केवलसमुद्घात लाभे । ए द्वार ३२ मो ॥

३३ षेत्रद्वार । ते लोकने सख्यातमे भागे होय के असंख्यातमे भागे के घणे सख्यातमे भागे के घणे असख्यातमे भागे के सर्व लोकमा होय तेहनो उत्तर ॥ आगला ५ नियठा लोकने असख्यातमे भागे होय शेष४ बोलेन होयास्ना तक लोकने असख्यातमे भागे घणे असख्यातमे भागे ने सर्व लोकमा होय ए द्वार ३३ मो ॥

३४ फरसनाद्वार । ते फरसनाद्वार पण षेत्रद्वारनीपरे कहेवो इमज फरसे ॥ ए द्वार ३४ मो ॥

३५ भावद्वार ॥ आगला ४ नियठा । क्षयोपसमभावे होय । निर्ग्रंथ उ

पशामने १ चायक २ नावे होय। स्नातक १ चायकभावे होय ए द्वार ॥ पडिवज्जमाण ते परिमाण द्वार। पडिवज्जमाण तेनवीनथाताहोय ते वर्तमान आश्री एक समे जो होय तो। पुलाक बकुस प्रतिसेवना ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक सो। कषायकुशील। ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार ॥ निग्रंथ ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६२॥

तेमा ॥ १०८ ॥ चपकश्रेणीना अने ५४ उपसम श्रेणीना स्नातक ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० १०८ हवे पुव्वपडिवज्जमानआश्रीपुलाक होय तो। ज० ॥ १ ॥ २ ॥३॥ उ०। प्रत्येक हजार ॥ बकुस ने प्रतिसेवना होय तो ज० प्रत्येकसें कोड ॥ उ० प्रत्येकसें कोड। कषायकुसील होय तो। ज० प्रत्येक हजार कोड। उ० प्रत्येक हजार कोड। निर्ग्रंथ ज० ॥ १ ॥ २ ॥३॥

उ० प्रत्येकसें ॥ स्नातक । ज० प्रत्येक कोम उत्कृष्टा प्रत्येक कोम होय ए द्वार ३६ मो

३७ हवे अल्प बहूत्वद्वार । सर्वथी थोमा निर्ग्रंथ १ तेथी पुलाक संख्यातगुणा ॥ २ ॥ तेथी स्नातक संख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी बकुस संख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी प्रतिसेवना संख्यातगुणा ॥ ५ ॥ तेथी कषायकुसील संख्यातगुणा ॥६॥ ए छ नियंठानो अधिकार । सूत्र श्रीभगवतिशतक २५ मे उद्देशे छठे छे ॥

॥ इति श्रीनियठा बोल समाप्त ॥

अथ श्रीपट्द्रव्यनो विचार संक्षेप मात्र लिख्यते ॥ परिणाम जीवमुत्तं ॥ सपएसाएगखेत्तकिरियाय ॥ निच्चकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरेहिंअपवेसा ॥ १ ॥ ए गाथा । हवे एहनो अर्थ कहेछे । शिष्य आत्मार्थी पचाग नम्रता करि पुछे

छे जे। स्वामिन्। षट्द्रव्यमा परिणामि द्रव्य केटला। अने अपरिणामि द्रव्य केटला। गुरु कहेछे॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट्द्रव्य। पोत पोताने स्वभावे स्वरूपे पोत पोताना गुणपर्यायनि परिणतिरूपे छस्वभावपरिणामि। अने व्यवहार नये॥ एक जीव॥ १॥ ने पुद्गल॥ २॥ ए॥ २॥ विभावपरिणामि। शेष॥ ४॥ द्रव्य। अपरिणामि॥ १॥ हवे छ द्रव्यमे॥ एक जीवास्तिकाय। जीवद्रव्य चैतन्य। शेष॥ ५॥ जरू। अजीवद्रव्य॥२॥ हवे छ द्रव्यमें मूर्तिरूपी। एक पुद्गलद्रव्य॥ शेष॥ ५॥ अमूर्ति अरूपीद्रव्य॥ ३॥ छ द्रव्यमें एक काल द्रव्य। अप्रदेशी। एक समयिकज द्रव्यमाटे॥ शेष॥ ५॥ सप्रदेशी॥ धर्म। अधर्म। असख्यातप्रदेशी॥ आकाश लोकालोकप्रमाणे छे माटे अनंतप्रदेशी॥ पुद्गलद्रव्य। एकपरमाणु यावत् अनताणुक खंधमाटे। अनतप्रदेशी। एक जीवात्मा असख्यातप्रदेशी॥ ४॥ छ द्रव्य निश्चय नये

एक। हवे द्रव्य अनेक। धर्म० अधर्म०। द्रव्यथि एक। गुणपर्याय प्रदेशथि
अनेक। गुण अनता। पर्याय अनंता। प्रदेश असख्याता ॥ आकाशना प्रदे
श पण अनंता। कालद्रव्य। वर्त्तना लक्षणे एक ॥ गुण पर्याय समयथि अने
क। गुण अनता। पर्याय अनंता। समय अनता। ते किम ॥ एक आवलिका
ना चोथा असंख्यातप्रमाणे समय थाय। एम यावत् दश कोडाकोडि सागरो
पमे ॥ एक उत्सर्पिणी ॥ दश कोडा कोडि सागरोपमे ॥ एक अवसर्पिणी।
विश कोडा कोडि सागरोपमनो। एक कालचक्र थाय॥ ते एक कालचक्रना अ
सख्याता असख्यातभेदे समय थाय ॥ एहवे अनता भेद कालचक्रे एक पु
द्गल परावर्त्तन थाय ॥ एहवो अनंता पुद्गलपरावर्त्तननो अतीतकाल गयो।
वर्त्तमानकाल एक समयज ॥ अनंत पुद्गलपरावर्त्तननो। आगमियोकाल आ
वस्ये। एम त्रिणकालना समय अनंता ॥ हवे पुद्गलद्रव्य ॥ पुरणगलन स्व

ञावे एक ॥ गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुणअनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदे
श अनंता ॥ अनंता परमाणुया । अनंता द्विप्रदेशीया ॥ अनंता त्रिप्रदेशीया।
अनंता चतुप्रदेशीया । अनंता पंचप्रदेशीया । इमयावत् । अनंता संख्यातप्र
देशीया ॥ अनंता असंख्यात प्रदेशीया अनंता अनंत प्रदेशीया खंधठे ते मा
हे । एक अनंत प्रदेशीया खंधमा । अनंता अनंत प्रदेशीया प्रदेश ठे माटे पु
ग्गल अनंत प्रदेशी ठे । जीवास्तिकाय चैतन्य लक्षण । द्रव्यथि एक ठे । गुणप
र्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदेश एक जीवना॥
असंख्याता एहवा आत्मद्रव्य ठे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० ।
आकाश० । ए त्रिणे । एक । अने । काल । पुग्गल ॥ जीव । ए ॥ ३ ॥ द्रव्यअ
नेक ठे । सकलनु भिन्नभिन्न प्रवर्तन अवस्थापणुंठे माटे अनंत ॥ ४ ॥ ठद्रव्य
मे क्षेत्र आधार पात्रसमान ते एक आकाशद्रव्य ॥ क्षेत्र । शेष ॥ ५ ॥ द्रव्य

क्षेत्री । आध्येय रदेवायोग्य वस्तुमाटे ॥ ६ ॥ ७ द्रव्य निश्चय स्वरूपे पोत पो
तानि क्रियारूपे तो षट् द्रव्य सक्रिय चलणसहायरूप क्रिया ॥ स्थिरसहाय ॥
अवकाश । आश्रयरूप । वर्त्तना प्रावर्त्तना रूप पुरणगलन हानि वृद्धि रूप
उपयोग चैतन्य रूप क्रिया ए सक्रिय ॥ अने व्यवहार नये गमनागमन पररू
प चलणक्रिया आश्रि पुद्गल जीव । ए ॥ २ ॥ सक्रिय । शेष ॥४॥ द्रव्य । अ
क्रिय ॥ ७ ॥ ब द्रव्यमें निश्चय नये छए नित्य । छए । अनित्य ॥ ते किम । धर्म
ना । अधर्मना । च्यार गुण । पर्यायमा । खंधलोकप्रमाणे नित्य छे । अने देश
प्रदेश ॥ अगुरु लघु । ए ॥ ३ ॥ पर्याय अनित्य छे ॥ आकाशमा ॥ ४ ॥ गुण
लोकालोकप्रमाणे ॥ खंध । नित्य । देश प्रदेश अगरु लघु अनित्य । कालद्र
व्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्याय । अनित्य । पुद्गलद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण
नित्य ॥ ४ ॥ पर्यायअनित्य ॥ जीवद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण ॥ ३ ॥ पर्याय । नित्य ।

अगुरु लघुपर्याय अनित्य ॥ ८ ॥ ढ द्रव्यमा एक जीव कारण ढे। एटले जीव
ने पचेद्रव्य कारणरूप ढे ॥ जीव तो कारणी ढे॥ पाज द्रव्य अकारणी ढे॥ए॥
ढ द्रव्यमा। स्वरूप। चलणस्वन्नाव। स्थिरस्वन्नाव। अवकाशदान। नवीन।
पुराणस्वन्नाव। पुरणगलनस्वन्नाव॥ उपयोग लक्षण। चैतन्य स्वन्नाव ढए
स्वन्नावना कर्ता ढे॥ अने व्यवहार नये। एक जीवद्रव्य परन्नावरूपनो कर्ता
ढे। शेष॥ ५ ॥ द्रव्यअकर्ता॥१०॥ ढए। द्रव्यमें सर्वव्यापी एक आकाशद्र
व्य। शेष॥ ५ ॥ द्रव्य। असर्वगत लोक मात्र व्यापी माटे॥ ११ ॥ हवे इयर
अप्पवेशाके० । यद्यपि ढए द्रव्य। एक क्षेत्रमें स्थिर निरनिपेरे। एकठा मिलि
रह्याढे। तोहि पण एक बिजामे कोइ कोइमे नखे नहि ए द्रव्यनो विचार॥
हवे धर्मास्ति काय ते केहने कहिये॥ धर्म ते चलणस्वन्नावरूप॥ गतिमान्
पुरुषवत्॥ अस्तिके० त्रणकालमां ढे॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समुह॥

तेने धर्मास्ति कायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूप ॥ १ ॥ अचेतन्य ॥२
अक्रिय ॥ ३ ॥ चलणसहाय ॥४॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२
प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥१॥ इम अ कहेता नहि धर्मके० चलणस्वभा
एतावता प्रतिपन्न ते स्थिरस्वभाव ॥ स्थितिमान् पुरुषवत् ॥ अस्तिके० । त्र
एकालमा छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने अधर्मास्ति कायद्रव्य
कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचेतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ स्थिरसहाय
॥ ४ ॥ तेना पर्यायपण ४ ॥ ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ आके० सर्व दिशे ॥ काशके० प्र
काश अवगाह आश्रय दानरूप ॥ भित्तिमा खिंतिकावत् ॥ अस्तिके० त्रण
कालमा छे ॥ कायके० अनंत प्रदेशनो समूह ॥ तेने आकाशास्तिकाय द्रव्य क
हिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ अवकाशदान
॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जीवने पुद्गल निकलनाकरे तेने काल

कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ वर्त्त
नालक्षण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अतित ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान
॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥४॥४॥ समये समये पुरायगलायहानि वृद्धिरूप स्वभाव॥
अस्तिके० त्रण कालमा छे ॥ कायके० बेथिमाडि अनंत प्रदेशानो समूह ॥ तेने
पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ सक्रिय
॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥ ३ ॥
अगुरु लघु ॥४॥ तथा विजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥१॥ गंध ॥२॥ रस ॥३॥स्प
र्श ॥ ४ ॥ ५ ॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवेते जीव ॥ अस्तिके० त्रण काल
मा छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशानो समूह ॥ तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥
तेना ४ गुण ॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता च
रण ॥३॥ दायक अनतशक्ति ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अना

वगाह ॥ २ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥
एक परमाणुमा ५ वर्णमाहिलो १ वर्ण ॥ बे गधमाहिलो १ गध ॥ पाच रस
माहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमाहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी
खध थाय ॥ तेमा २ वर्ण ॥ २ गध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले
त्यारे त्रिप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा त्रण वर्ण ॥ २ गध ॥ ३ रस ॥ ४ स्पर्श ते ॥
शित ॥ १ ॥ उष्ण । निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतु
प्रदेशी खध थाय ॥ तेमा ४ वर्ण ॥ २ गध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पचपरमाणु
मिले त्यारे पचप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥५ रस ॥४ स्पर्श ॥
एम ७ सात आठ यावत् सख्यात असख्यात अनतप्रदेशी खधमा यावत् च
उथे अनते ॥ अभव्यजीवथि अनतगुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंतनेभागे उ
गपरमाणुमिले त्यारे उदारिकग्रहणयोग्यवर्गणाथाय लेवायोग्य ॥ इम अनंत

गुण अधिक वर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रियनिवर्गणाथाय ॥ एम अनतगुणे वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ नाषाव र्गणा ॥५॥ श्वासोश्वासवर्गणा॥६॥मनोवर्गणा ॥७॥ न कार्मण वर्गणा ॥८॥ ए ८ व र्गणा माहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनतगुणी॥ एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा ऊदारिक ॥ १ ॥ वैक्रेय ॥२॥ आहारक ॥३॥ तेजस ॥ ४ ॥ ए ४ मा ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने नाषा ॥ ॥ १ उश्वास॥२॥मनो ॥३॥ कार्मण ॥ ४ ए ४ वर्गणामा ५ वर्ण २ गध ॥५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमा आठ २ पक्षक ह्याठे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥२॥ एक ॥३॥ अनेक ॥४॥ सत् ॥५॥ असत्॥६॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥८॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा॥ नित्य॥ अनित्य॥ एक॥ अनेक॥ ए ४ पक्षतो पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ६ द्रव्य पोतपोताना

द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे छताछे ॥ तेमा धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ च
लणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आका
श० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥
पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण
गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोस्वक्षेत्र ॥ धर्म० अधर्म० स्वक्षेत्र असख्यातप्रदेशी
॥ २ ॥ आकाश० स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशी ॥ ३ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय॥४॥
पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमाणु एहवाअनता ॥ ५ ॥ जीवनो स्वक्षेत्र असख्यप्र
देशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोतानाअगुरुलघुनि समयसमयनि
प्रणतिफिरेछे ॥ ते छ द्रव्यनो स्वकाल ॥ छ द्रव्यनोस्वभाव ते छएद्रव्यमां पो
तपोताना ४ बोल पोतपोतामाजछे अनेबिजाद्रव्यना ४ बोल तेमानथि ॥ जि
मधर्मास्ति कायमा पोताना द्रव्यक्षेत्र काल भाव ४ बोलछे ॥ बीजा ५ द्रव्य

गुण अधिकवर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रियनिवर्गणाथाय ॥ एम अनतगुणे
वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ भाषाव
र्गणा ॥५॥ श्वासोश्वासवर्गणा॥६॥मनोवर्गणा ॥७॥ न कार्मण वर्गणा ॥८॥ ए ८ व
र्गणा माहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनतगुणी॥
एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा औदारिक ॥ १ ॥ वैक्रेय ॥२॥ आहारक ॥३॥
तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मा ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने भाषा ॥
॥ १ उश्वास॥२॥मनो ॥३॥ कार्मण ॥ ४ ए ४ वर्गणामा ५ वर्ण २ गध ॥५ रस
॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमा आठ २ पक्षक
ह्याठे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥२॥ एक ॥३॥ अनेक ॥४॥ सत् ॥५॥ असत्॥६॥
वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥८॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा ॥ नित्य ॥ अनित्य ॥
एक ॥ अनेक ॥ ए ४ पक्षतो पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ७ द्रव्य पोतपोताना

द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे छताछे ॥ तेमा धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ च
लणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आका
श० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥
पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण
गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोस्वक्षेत्र ॥ धर्म० अधर्म० स्वक्षेत्र असख्यातप्रदेशी
॥ २ ॥ आकाश० स्वक्षेत्र अनतप्रदेशी ॥ ३ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय॥४॥
पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमाणु एहवाअनता ॥ ५ ॥ जीवनो स्वक्षेत्र असख्यप्र
देशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोतानाअगुरुलघुनि समयसमयनि
प्रणतिफिरेछे ॥ ते छ द्रव्यनो स्वकाल ॥ छ द्रव्यनोस्वभाव ते छएद्रव्यमा पो
तपोताना ४ बोल पोतपोतामाजछे अनेबिजाद्रव्यना ४ बोल तेमानथि ॥ जि
मधर्मास्ति कायमा पोताना द्रव्यक्षेत्र काल भाव ४ बोलछे ॥ बीजा ५ द्रव्य

नानथि ॥ एम ६ एद्रव्यमा पोतपोताना ४ बोलछे ॥ विजा ५ नानथि ॥ एम
स्वनाव एसत्पक्षकह्यो ॥ अने असत् ते अछताद्रव्य क्षेत्रकालनाव परद्रव्य
ना अछतारूपे तो असत्छे ॥ जिमधर्म० द्रव्य अधर्मादि ५ परद्रव्यना द्रव्यक्षे
त्रकाल नावे असतके० अछतोछे ॥ एम ६ एद्रव्यमां जाणवुं ॥ हवे ६ द्रव्यमा
वक्तव्यते वचनसुं कहिवायोग्य एहवा अनतास्वनाव एक एकद्रव्यमा छे ॥ अने
अवक्तव्यके० वचनसु कह्याजायनहि केवलज्ञानेजणाय एहवाअनताधर्मस्वना
व एकएकद्रव्यमा रह्याछे ॥ एम अनतागुणपर्याय पण कहेवा ॥ हवे सर्वपदार्थ
केवलियेदिठा तेने अनतमेनागे अनिलाप्यवाक वर्गणायोग्य ॥ अननिला
प्यने अनतमे नागे ते अनिलाप्य ॥ ते वलिअनिलाप्यने अनतमे नागे व
क्तव्य कह्या ॥ तेने अनतमेनागे गणधरमहाराजे सूत्रगुंथ्याछे ॥ तेहथि अस
ख्यातमे नागे हमणा आगमरह्याछे ॥ ए ८ पक्ष ॥ वलिनित्य अनित्य पक्षथि

उपनि चउभंगीकहेछे ॥ अनादि अनंत ते जेनिआदिनेअतननथि ते प्रथमभा
गो ॥ १ ॥ जेनि आदिनथि ने अंतछे ते अनादिसात बिजोभागो ॥ २ ॥ जेनि
आदिछे ने अतपणछे ते सादिसातत्रिजोभागो ॥ ३ ॥ जेनि आदिछे पण अत
नथि ते सादिअनंतचउथोभागो ॥ ४ ॥ हवे धर्मास्तिकायमा ४ गुण अनादि
सातभांगोनथिज ॥ पर्याय ४ खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु
॥ ४ ॥ ए ४ सादिसातत्रिजेभागेछे सिद्धनाजीवमा धर्मास्तिकाय ना प्रदेशसा
दि अनत चउथेभागेछे ॥ एमज अधर्म द्रव्यमां ॥ आकाशमा पण एरिते जा
णवु पणएटलो विशेष खंध अनादि अनत पहिले भागे जाणवो ॥ कालद्रव्य
मा गुण ४ अनादि अनादि अनतछे पहिलेभागे ॥ अने पर्यायमा अतीतका
ल अनादिसात बिजेभागेछे ॥ वर्तमानकाल सादिसातत्रिजे भांगेछे ॥ अनागत
काल सादिअनत चउथे भागेछे ॥ पुद्गल द्रव्यमां ४ गुण अनादि अनंत प्रथम

भागेछे ॥ जीव पुद्गलनो संबध अभव्य जीवने अनादि अनत प्रथम भागेछे ॥
अने पुद्गल खधथि ते सादिसातत्रिजेभागेछे ॥ जघन्य १ समय उत्कृष्टो अस
ख्यकाल ते माटेसादिसातभागो ॥ सादि अनत भागो पुद्गलमा नथि ॥ अने
भव्यजीवने पुद्गलनो सबध अनादि सातचउथेभागेछे ॥ जीवद्रव्यमा गुण ४
अनादि अनत प्रथमभागेछे ॥ जीवने कर्मनो सजोग ॥ भव्यजीवने अनादि
सातजेकारणे क्विारेकककर्मथि छुटसे ॥ नरकतिर्यंचना भवकरवा ते सादिसात
त्रीजेभागेजाणवा ॥ अने जिवमा सिद्धपणु प्रक्टे ते सादिअनत चउथेभागे जा
णवु ॥ इम षट्द्रव्यनो विचार लेशमात्र लिख्योछे ॥ अथ आत्मद्रव्यनो विचा
र ॥ आत्मा ३ ॥ एकबहिरात्मा ॥ १ ॥ बीजोअतरात्मा ॥ २ ॥ त्रिजोपरमा
त्मा ॥ ३ ॥ तेमा बहिरात्माते ॥ धन ॥ स्वजन ॥ शरिर ॥ कर्म ॥ सर्व परवस्तु
पुद्गलिक माहरि अनेहुंपण एहनो एहवी परिणामनि लोल्यतापणे ॥ अज्ञा

न मोह मिथ्यात्वे परिणम्यो ॥ तेने बहिरात्मा कहिये ॥ दुहा ॥ पुद्गलसुरातोर
हे ॥ जाणेएहनिधान ॥ तसलाभेलोभ्योरहे ॥ सोबहिरात्मअनिधान ॥ १ ॥
पुद्गल विषय विलासद्रव्य कुटुंबादिमा रातो ने रातो तल्लीनपरिणामे ॥ म
ग्नरहे एहपुद्गलमनोज्ञ मिलेथके जाणेजे एहउपरांत बिजुंकोइ निधाननथि ॥
ते पुद्गलना लाभमाज लोभिरहे ॥ तेनुं नाम बहिरात्मा ॥ तेपहिला गुणठा
णाथि त्रिजागुणठाणा सुधिजाणवो ॥ १ ॥ हवे बीजा अंतरात्मानुं लक्षणकहे
छे ॥ दुहा ॥ पुद्गल खलसंगीपरे ॥ सेवे अवसर देख ॥ तनुंअशक्तज्युं लकडी ॥
ज्ञान भेद पदविलेख ॥ १ ॥ पुद्गलनो संबंध खल निच दुर्जन मनुष्यनि संग
ति सरिखो जाणे ॥ पण अणचाल्ये पुद्गलनो संगकरे ॥ जीम शरिरे असमर्थ
लाकडिराखे ते लाजतोथको ॥ पण समर्थाइ ये राखेनहि ॥ तिम परिणामथि
ज्ञानसम्यक्त्वेकरि पुद्गलीकवस्तुजीववस्तुनो भेदकरि ॥ अंतरंगपरिणामथि ॥

उदासी परिणामे ॥ आतमीकवस्तु न्यारि उलखिने ॥ तेनु ध्यान करणरुचिवा
लाने ॥ अंतरात्मपदप्रकटे ॥ ते चउथे गुणगणेथि मांडिने १२ मागुणगणा
सुधि जाणवो ॥ २ ॥ हवे त्रीजा परमात्मानु लक्षण कहेछे ॥ दुहो ॥ प्यारो आ
पस्वरूपमे ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जसभव को
मेल ॥१॥ आत्मस्वरूपने विषेमआ॥ दुहो ॥ समता रमता उर्द्धता ॥ ज्ञायकता
सुख भास ॥ वेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीवविलास ॥ १ ॥ एटला बोल प्र
गटथयाछे ॥ शुद्धप्रणतिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मन
ता वचनता ॥ जडता जडसमेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खे
ल ॥ १ ॥ ए सर्व परवस्तु मात्र कर्म चेतनाथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि भवा
दि सर्वमेलरहित ते परमात्मा तेरमे चउदमे गुणगणे तथा सिद्धने परमात्मा
कहिये ॥ ३ ॥ तेमा द्रव्यात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परि

एम्योते वहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्म पण कहिये १ एमज कषा यात्माते निश्चयव्यवहारे सर्वरिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा निश्चयनये तो वहिरात्मा ॥ व्यवहारनये शुद्ध योगते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध योगतेबहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मातेमा ज्ञानात्माना उपयोगमा ४ ज्ञानअतरात्मा ॥ केवलज्ञानपरमात्मा ॥ दर्शनआत्मामा ३ दर्शननो उपयोग शुद्ध प्रणतिये अतरात्मा ॥ अशुद्धप्रणतिये वहिरात्मा ॥ केवलदर्शनना उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानात्मामा ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवल ज्ञान परमात्मा ॥ ५ दर्शन आत्मामा ३ दर्शन शुद्धप्रणतिये अतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये वहिरात्मा ॥ केवल दर्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ चारित्र क्षयोपशमनि परिणतिये अतरात्मा ॥ अने जथाख्यातचारित्र क्षायक केवली चारित्रनि परिणति

नि अपेक्षाये ॥ परमात्मा ॥ ७ वीर्यात्मामा ॥ बालवीर्यनि परिणति ते ॥ वहि
रात्मा ॥ बाल पन्डित वीर्यनी श्रावकनि शुद्धपरिणति ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध
परिणति ते वहिरात्मा ॥ पंन्डित वीर्यक्षयोपशमपरिणतिनि अपेक्षाये छद्मस्त
नुं पन्डित वीर्य अतरात्मा अने क्षायक केवली पन्डित वीर्यनि परिणतिनि अपे
क्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आठ आत्मानो लेशमात्र अधिकारकह्यो ॥ हवे षट्
द्रव्य ॥ आत्मबोधनोविचार लेशमात्र निरुपण ॥ पण विस्तार रुचिये ॥ सात
नय चारप्रमाण चारनिक्षेप ॥ षट् उपक्रम नवअनुगम ॥ उघनिष्पन ॥ नाम
निष्पन ॥ सुत्रालापकनिष्पन ॥ निक्षेपनिर्युक्ति ॥ स्याद्वादि ॥ असख्यप्रदेशी॥
अनंत नयात्मक वाणी सिध्धांतनि ॥ विस्तार रुचिनो वर्णव करतापारनपामिइ
पण सारभूत एतलुंजे असंख्यप्रदेशी अनत केवल ज्ञान ॥ अनंत केवल द
र्शन ॥ अनंत स्वरुपस्थीरता रमण ॥ अनत क्षायकशक्ति ॥ अनत परमक्षमा

अनत परम मार्दव ॥ परमार्यव । परम सतोष । परम समता ॥ पर्म शीतली दसा॥ परम शाति ॥ परम दाति । पर्म चायक सम्यक्त ॥ परम चायक भाव ॥ परम शुध्द परिणामिक भावमयि ॥ शुध्द सत्तानि रासि । निस्पृदि ॥ स्वतत्री । इगरोध निरासंसी ॥ नाद मम ॥ अरागी अद्वेषी अमोदि अविकारी ॥ सदजानंदि स्वरुपविलासी ॥ स्वरुपमोचकर्ता ॥ स्वरुपमोचभोक्ता ॥ स्वरुपतत्वरमणीय ॥ तत्वानंदि । तत्वविश्रामि ॥ स्वरुपस्थायि ॥ तत्वविलासी तत्वानुभवी ॥ अछेद अभेद ॥ अप्रतिदत अविनासी ॥ अजरअमर ॥ नि कलकी ॥ अगम्य अल त्त अकल अगोचर अगाध ॥ सच्चिदानद पूर्णानद पूर्णब्रह्म ॥ आत्मद्रव्य अनतगुणी ॥ अनतपरयायमयि ॥ अनंतशुध्दात्मधर्ममयि ॥ आत्मसत्तानि स ददणाप्ररुपणास्पर्शनाकरवी ॥ एदवी शुध्दसत्ता ॥ केवल ज्ञानादि ॥ आत्मद्रव्य ने न माने ॥ तेदनी साध्य शुन्यसाधना ॥ क्रियापण जीम घृत अथवा

लुणविना रसवति न सोजे ॥ तिम सत्तायें केवलज्ञान न माने ॥
ते जीवपूर्व तेटली क्रीया करे ॥ द्रव्यज्ञाननो अभ्यासकरे ॥ पण जो
केवलज्ञानज सत्ताएनथी ॥ ने वीजाद्रव्यतो जम्बे । तिवारे सुंप्रगट
थसे ते माटे शुद्ध सत्ताप्रगटकरवी ॥ तेज कारज विनातो करणी सर्वेशुनाश्रव
पुन्यफलनी दाताछे ॥ तेतो परजावछे अनत वारजीवेपाम्या ॥ तेपाम्यानु सु
आश्चर्यछे ॥ ते माटे आचाराग नदीमोक्ष मार्गाध्ययन जगवति पन्नवणा अ
नुयोगद्वारादि दशवैकालिक आठमाध्ययनादि ॥ सकल आगमनीशाखे ॥
आत्मार्थि मोक्षार्थि निर्जरार्थिनेतो, ॥ एकातहित ॥ पार्श्वमणीचिंतामणी रस
कुंपि अमृत रस कुप ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथातरु ॥ सीद्धमत्रथी अधिक
अनोपम ॥ सारसर्वज्ञाननुं तत्वएजे केवलज्ञान सत्ताए मानिने ॥ शक्तिप्रमाणे
शुद्ध व्यवहार क्रियाकरीने शुद्ध सत्ता प्रगटकरवि ॥ ए सर्वे सद्दहणाथी ॥ को

निःसिद्धियुक्तिवालामीले ॥ सद्दहणासत्तानाप्रतिपत्ती ॥ पणनचलवुं ॥ फरीफरीने जीवने आत्मद्रव्यनी शुद्ध केवलसत्तानी श्रद्धाथावी मद्दादुर्लभछे ॥ ते माटे ज्ञा नामृतमाळीली ॥ सकलजंतुनीरत्नाकरी गुणीनागुणग्रामकरी ॥ आत्मानी निं दाकरी ॥ सकलजीवने उपगारबुद्धिचिंतवी ॥ सर्व इर्ष्या कोइजीवना अवर्ण वा दमात्रनो निषेधकरी ॥ सकल उपगारी पुरुषनो क्षणक्षण उपगारस्मरी ॥ स रल स्वभावी उदासी भावेरहिने ॥ पूर्वे अनतजीव सत्तानेवर्या वरेछे ॥ आगमी येकालेवरस्ये ॥ घणुंसुंकहिइ ॥ ए विचारणातो पोताना जीवने हाथछे॥ ए सिखा मण प्रमाणकरे ॥ तेहनासकल कार्य सिद्धथाय ॥ इति षट्द्रव्य वीचार संपूर्णं॥ अथ रूपि अरूपीना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मनवय जोगाय कम्मदेहा॥एसाचउफासा ॥ घनतनवाय घनोदही ॥ १ ॥ उरालाय चउदेहा ॥ पुग्गलथ्थिकाय दव्वलेसा ॥ तहकाय जोगोय ॥ नायवा अठ

फासा ॥ ২ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अच्छापावढाणा वत्तिय ॥ दिठिपच्चुग
णा ॥ ठवजगन्नावलेसाय ॥ ३ ॥ ठग्गहासन्नाबुद्धि ॥ चठचठ एगेगसठीय ॥
एए सव्वन्नणीया ॥ अरु वितथ्यनायवा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कर्म ॥ ७ ॥ पाप ॥१७॥
मनजोग ॥ १ ॥ वचनजोग ॥ १ ॥ कार्मणशरिर ॥ १ ॥ ए ॥ २ए ॥ बोलमां ४
स्पर्श लान्ने ॥ १ ॥ घनवाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक
॥ १ ॥ वैक्रेय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ॥ ४ ॥ सरिर ॥ पुजलास्ति
काय ॥ १ ॥ ज्व्यलेश्या ॥ ६ ॥ कायजोग ॥ १ ॥ ए ॥ १५ ॥ बोलमा ॥ ७ ॥
स्पर्श लान्ने ॥ २ ॥ ए ४४ वोलरूपिना जाणवा ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मा
स्तिकाय ॥ १ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥ काल ॥ १ ॥ अढार
पापनि निवृत्ति ॥ १७ ॥ दृष्टि ॥ ३ ॥ उगण ॥ १ ॥ कर्म ॥ १ ॥ वल ॥ १ ॥
वीर्य ॥ १ ॥ पुरुपाकारप्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग ॥ १२ ॥ न्नावलेश्या ॥ ६ ॥ अ

वग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥ १ ॥ सङ्गा ॥ ४ ॥ उत्पातकि ॥ १ ॥ विणयकि ॥ १ ॥ कर्मकि ॥ १ ॥ पारिणामिकि॥ए ॥४॥ बुद्धि।ए॥द१॥ बोल अरूपीना जाणवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्त ॥ ॥ ॥

॥ॐनम ॥ अथ भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना प्रल्योपमनुमान सूत्र अनुयोग द्वारथि लीखियेछे॥तेमा प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्मअंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥ हवे आत्मअंगुलनु मान कहेछे ॥ भरतादि १५ क्षेत्रछे॥तिहा जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतपोताने १२ अंगुले १ मुखथाय ॥ अने ए मुखे एक पुरुषनु उंचपणानु मान थाय ॥ एटले १२ नवा अछोत्तरसो १०८ आत्मअंगुलनो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥ हवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्र

माणे उम्भिजलनिकुम्भि होय ॥ तेने जलेकरि परिपूर्ण भरिये ॥ तेमाहि पुरुष
वेशे ॥ तिवारे एक डोण प्रमाणे जल कुंभिमाहिथि बाहिर निकले ॥ तथा
एक डोण प्रमाण जले करि कुंभिउंणि होय ते कुंभिमाहि ते पुरुष वेशे तिवारे
परिपूर्ण जलेभराय ॥ तिवारे ते मानोपेत पुरुष कहिये ॥ हवे डोण ते केवडो
होय ते कहेछे ॥ बेअसलीये १ पसली थाय ॥ बेपसलीये १ सइथाय ॥
च्यारसइये १ कुडवथाय ॥ च्यारकुडवे १ पाथोथाय ॥ च्यारपाथे १ आढो
थाय ॥ च्यारआढे १ डोण थाय ॥ ए डोणनु मान कह्यु ॥ ए रीते मानो पेत
पुरुष कहिये ॥ २ ॥ हवे उन्मान युक्त पुरुषकेहने कहिये ॥ जे पुरुष तोल्यो
थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मानयुक्त पुरुप कहिये ॥ अर्द्धभारनुं मान
कहेछे ॥ एक हजारने पचाशपले अर्द्धभार थाय ॥ ए अर्द्धभारनु मान कह्यु
॥ ३ ॥ हवे ए ॥ ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षणसाथियादिक ॥ व्यज

न मसतिलादिक ॥ गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम
पुरुष जाणवो ॥ हवे उत्तम पुरुष १०८ आत्मअंगुलनो ऊंचो होय ॥ १ ॥
मध्यम पुरुष १०४ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुष ९६
आत्म अंगुलनो ऊंचो होय ॥ ३ ॥ हवे जे पुरुष १०८ आत्म अंगुलथि न्यु
नाधिक होय ॥ स्वरआदेयवचन १ सत्वधीर्य ॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३
गुणे वर्जित होयते परनोदास किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्मअंगुले १ पगना
मध्यभागनु पहोलपणुं थाय ॥ बेपगे १ विहथि।वेंत थाय॥ बेविहथि। वेंते। ए
१ हाथ थाय ॥ बेहाथे १ कुक्षिथाय ॥ बेकुक्षिये अथवा ४ हाथे १ धनुष
थाय ॥ बेहजार धनूषे १ गाउथाय ॥ च्यारगाउ ए १ जोजन थाय ॥ जे काले
जे आरे जे मनुष्यनु आत्मअंगुल होय ते आत्मअंगुले ते ते वखतना ॥ न
गर ॥ गाम ॥ वन ॥ कुवा ॥ तलाव ॥ वाव ॥ गढ ॥ पोल ॥ कोठा ॥

यान ॥ रथ ॥ गाडादिक ७२ बोलनामानमळ्याछे ॥ १ ॥ हवे उत्सेधागुलनुं
मान कहेछे ॥ अनंता सुक्ष्मपरमाणुआमलेलाकरिये ॥ तिवारे १ व्यवहारिपर
माणु थाय ॥ तथा जालीनेविषे रह्या सूर्यना किरण तेमां रहिजे रजउडती
देखायछे ॥ ते रजनो अनंतमो भाग तेने व्यवहारिपरमाणु कहिये ॥ अन्य
मति रजनातेत्रिशमाभागने परमाणु कहेछे ॥ ते व्यवहारि परमाणु ॥ शस्त्रे
करि तरवारनी तथा छरपलानिधारायेकरि पण छेदाय भेदाय नहि ॥ अग्नि
माहि सोंसरो निकलिजाय पण बलेनहि ॥ दाझेनहि ॥ तथा पुष्कर सवर्त्त
महामेहमांहि चाल्योजाय पण पलडेर्भिजाय नहि ॥ तथा गंगामहानदीनो
प्रवाह उंचोचुलहिमवंत पर्वतथिपडेछे ते प्रवाहसाहमो चाल्योजाय पण
खलायनहि ॥ घातपामेनहि ॥ तथा पाणिना आवर्त्तन तथा बिंदुयामाहि रहे
पण तिहासमिगलिने पाणि नथइजाय ॥ ते अतितिखे शस्त्रे करिने देवतानी

शक्तिये छेदता भेदता एकखम्नो बिजोखंडन थाय ॥ तेने तत्वज्ञानी पर
माणु कहेछे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिलेतिवारे १ उण्ह
सन्नियो थाय ॥ आठ उण्हसन्निये १ सण्हसन्नियो थाय ॥ आठ सण्हसन्निये १
उर्ध्वरेणुथाय ॥ आठउर्ध्वरेणुये १ त्रशरेणुते बेंद्रीयादिक त्रशजीवने चालता रज
उम्नतेथाय ॥ आठत्रशरेणुये १ रथरेणुते रथादिकाहिंडता रजउडेतेथाय ॥ आठ
रथरेणुए १ देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयामनुष्यना वालाग्रनुं जाडपणुं
थाय ॥ आठदेव कुरु उत्तर कुरुनावालाग्रे १ हरिवास रमकवासक्षेत्रना जुग
लियाना वालाग्रनु जाडपणुथाय ॥ आठहरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हे
मवय एरणवयक्षेत्रनाजुगलियाना वालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥ आठहेमवयएर
णवयना वालाग्रे १ पूर्वपश्चिम महाविदेहना मनुष्यनावालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥
आठ पूर्वपश्चिम महाविदेहनावालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यनावालाग्रनु

जाडपणुथाय ॥ एह्वा ८ वालाग्रे १ लिखथाय ॥ आठलिखे १ जुथाय ॥ आठजुये १ जवमध्यथाय ॥ आठजवमघे १ अंगुलथाय ॥ ठअंगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेतथाय ॥ २४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूषथाय ॥ २ हजारधनूषे १ गाउथाय ॥ ४ गाउए १ जोजनथाय ॥ एउत्सेधांगुले २४ दंमकनी अवघेणामवीठे ॥ ह्वे प्र माणांगुलनुमानकहेठे॥नरतादिक चक्रवतीनुं कागणिरत्नहोय॥ते ८ सोनश्या नारनेतोलेठे ॥ सोनश्यानुं तोलकहेठे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेतसरसवथा य ॥ १६ सरसवे १ अरूदथाय ॥ २ अरूदे १ गुंजाथाय ॥ ५ गुजाये १ मासो थाय ॥ १६ मासे १ सोनश्योथाय ॥ एह्वा ८ सोनश्यानारनु कागणिरत्न होय ॥ तेनेठ तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हाराठे ॥ सोनीनी अहिरणने संठाणेठे ॥ ते कागणिरत्ननी एक्कीहारा उत्सेधांगुलनि पहोलिठे ॥ अने जे उत्सेधांगुल

ते समण भगवत महावीरनुं अर्द्धअंगुलथाय ॥ तेने हजारगुणुंकरिये॥तिवारे
१ प्रमाणांगुलथाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पांचसे आत्मअंगुले १ प्रमा
णांगुलथाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पगथाय ॥ १२ अंगुले १ वेतथाय ॥
२४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूष
थाय ॥ २ हजारधनूषे १ गाउथाय ॥ ४ गाउये १ जोजनथाय ॥ ए प्रमाणां
गुले । पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥ नरकावासा ॥ द्विप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देव
लोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीनरत्न प्रभादिक २८ बोलनु तथा
द्विपसमुद्रादि ॥ २८ बोलनु ॥ लांबपणुं ॥ पहोलपणु ॥ उंचपणु ॥ उंडपणु ॥
परिधिप्रमुखनामानमव्याछे ॥३॥ए३ प्रकारना अंगुलकह्याते प्रत्येक२ना त्रण
भेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥ १ ॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥ ३ ॥ तीहां असत्क
ल्पनाये श्रेणिते असख्याता जोजनकोडाकोडि प्रमाणेजाणवी ॥ अने एक आ

बादर ॥ ३ ॥ हवे प्रथम बादर उधारपल्योपमनु स्वरूप कहेछे ॥ एक जोज
ननो उत्सेधांगुले लांबोपहोलोने ऊंचोपहवो १ पालोकल्पिये ॥ तेनि त्रिगुणी
झाझेरी परिधिहोय ॥ ते पालोदेवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयानामस्तकना
केश ते एक दिनथिमांडिने ७ दिननाउग्यावालाग्रेकरि भरिये ॥ते एहवोगासी
भरियेके ॥ अग्निमांहि बलेनहि ॥ वायरेकरीतेमांथी १ रजउमेनहि ॥ समेनहि
पोलारना अभावथि ॥ विध्वशेनहि ॥ दुर्गंधथायनहि ॥ चक्रवर्तीनु सैन्य उपर
चाले तो पण नमेझोलेनहि ॥ गंगानदीनो प्रवाह उपरचाले तो पण पाणि
मांहि भेदायनहि ॥ एहवोगासीने पालोभरिये ॥ पछिते पालामांथि समये स
मये एक एक वालाग्रकाढिये ॥ इमकाढता जेटलेकालेपालोगलोथाय ॥ बाकी
एक रजरहेनहि ॥ तेटला कालने बादर उध्धार पल्योपमकहिये ॥ ते पल्यो
पम सख्यात समयनो जाणवो ॥ एहवा दशाकोडाकोडि पल्योपमे १ बादर

उध्धार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनुं काइ प्रयोजनथि ॥ केवल प्ररूपणा मात्रछे ॥ ए वादर उध्धार पल्योपम ॥ १ हवे सुक्ष्म उध्धार पल्योपमनु मान कहेछे ॥ जीम एक जोजननो पालो कल्पिये ते पूर्ववत् ॥ ते पालामाहि देव कुरु उत्तर कुरुना छुगलीयानामाथाना केश ते एकदीनना जावसात दीनना उग्यावालाग्रलेइये ॥ ते एकेका वालाग्रना असरव्याता खंडकरिये ॥ ते खंड केवज्ञानाहनाथाय ॥ चक्षु इंद्रियनि अवघेणाथि असरव्यातमे जागे अने ना हना सुक्ष्म वनस्पतिना जीवना शरिरनी अवघेणाथि असंख्यात गुणामहोटा॥ अने जेवडु एक वादर पृथ्वी कायना जीवनु शरिर तेवडा ते वालाग्रना खड नाहनाथाय ॥ ते वालाग्रनाखड अग्निये बलेनहि ॥ वायरेउडेनहि पूर्ववत् ॥ पछिते वालाग्रनेखडे करिने ते पालोठासी जरिये पूर्ववत् पछी ते पालामां हिथि ॥ समये समये एकेकोवालाग्रनोखड काढिये ॥ इम काढता जेटले काले

ते पाळोखाळीथाय ॥ तेटला काळने सुक्ष्म उद्धार पल्योपम कहिये ॥ ए प
ल्योपम असंख्याता समयनोथाय एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म
उद्धार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्विप समुद्रनुं मान मव्युछे ॥ अढि
उद्धार सागरोपमना जेटला समयथाय तेटला द्विपसमुद्र त्रिछा लोकमांछे ॥
जम्बुद्विप १ एकलाख जोजननोलाबोने पहोलो इम गम बमणो लवण समुद्र
बेलाख जोजननो ॥ धातकिखंड ४ लाखजोजननो ॥ इमगम बमणा असं
ख्याता द्विप समुद्र जाणवा ॥ ए सुक्ष्म उद्धार पल्योपम ॥ २ ॥ १ ॥ हवे अ
द्धापल्योपमनु स्वरूप कहेछे तेना २ भेद ॥ बादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा
बादर अद्धापल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबोपहोलोने उंडोच्या
रेहाशेसरिपो पूर्ववत् पाळोकलपीये पछी पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरुना जुग
लीया मनुष्यना वालाग्रेकरी पाळोगसी भरिये ॥ पछी सोसोवर्षे एकेकोवाला

ग्रकाढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालोगलोथाय ॥ तेटला कालने
बादर अद्धापल्योपम कहिये ॥ ए पल्यसंख्याताकोडिवर्षेथाय ॥ एहवा दश
कोडाकोडि बादर अद्धापल्योपमे १ बादर अद्धासागरोपमथाय ॥ ए सागरो
पमनुं काइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ २ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म अ
द्धापल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजननो लांबो पहोलोने ऊंडोपालो पूर्व
वत् कल्पिये ॥ तेहमा पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयानावा
लाग्रना असंख्याता खंडकरिनरिये ॥ पछी ते पालामाथि सोसोवर्षे एकेकिरज
काढिये ॥ जेटले काले ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म अद्धापल्यो
पम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म अद्धासागरोपमथाय
ए सागरोपमे ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष
मन्याछे ॥ २ ॥ २ ॥ हवे क्षेत्रपल्योपम कहेछे ॥ क्षेत्रपल्योपमना २ भेद ॥

वादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा वादर क्षेत्रपल्योपम केहने कहिये ॥ एक जो
जननो लांबोपहोलोने उंचो पूर्ववत् पालोकल्पिये ॥ तेमा पूर्ववत देवकुरु
उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना माथाना वालाग्रेभरिये ॥ पछी ते पालामाहिला
वालाग्रनें फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काले
ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने ॥ वादर क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ ए पा
लोखालिथाता असंख्याति अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश
कोडाकोडि पल्योपमे १ वादर क्षेत्र सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनो काइ
प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ तथा मतातरेजीव द्रव्यना परिणाम
मव्याछे ॥ ३ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म क्षेत्रपल्योपमनु स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजन
नोलांबो पहोलोनेउंचो पूर्ववत् पालोकल्पिये ॥ तेमाही पूर्ववत् देवकुरु उत्तर
कुरु क्षेत्रना जुगलियानावालाग्रना असंख्याता खंड करिभरिये ॥ पछि ते

पालामांहिलावालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेश तथा अण फरस्या आका
श प्रदेशछे ते फरस्या अणफरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अप
हरिये ॥ जेटले काले पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्यो
पम कहिये ॥ एहवा दशकोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र साग
रोपमथाय ॥ ए सागरोपमे दृष्टिवाद सूत्रना जाव मल्याछे ॥३॥४॥ ए ३ प्रकारना
अगुलतथा ३ प्रकारना पल्योपमनु मानकह्यु ॥ इति प्रमाणबोध समाप्त ॥
अथ सिद्धांतना मूल श्लोकनु मान तथा बीजा टीका चूर्णिभाष्यनु मान
लिख्युं छे ॥ आचारांगमूलश्लोक ॥ २५०० ॥ आचा० निर्युक्ति ॥ ४५० ॥
आचा० चूर्णि ॥ ८३०० ॥ आचा० वृत्ति० ॥ १२००० ॥ १ ॥ सूयगडांगमूल
॥ २१०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ २५० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १०००० ॥ तेनि वृत्ति
॥ १२८५० ॥ २ ॥ ठाणांगसूत्रमूल ॥ ३७७० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १५२५० ॥ ३ ॥

समवायागमूल ॥ १६६७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७७६ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४०० ॥ ४ ॥
नगवतीसूत्रमूल ॥ १५७७२ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १८६१६ ॥
॥ ५ ॥ ज्ञाताधर्मकथामूल ॥ ५५०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ४२५२ ॥ ६ ॥ उपाशक
दशामूल ॥ ८१२ ॥ अंतगडदशामूल ॥ ७९० ॥ अनुत्तरोववाइमूल ॥१९२॥
ए ३ सूत्रनि वृत्ति ॥ १३०० ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरणमूल ॥ १२५० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ४६०० ॥ १० ॥ विपाकमूल ॥ १२१६ ॥ तेनिवृत्ति ॥ ९०० ॥ ११ ॥ ए ११
अंगनु मान कह्यु ॥ हवे १२ उपांगनु मान कहेछे ॥ उववाइमूल ॥ ११६७ ॥ तेनि
वृत्ति ॥ ३१२५ ॥ १ ॥ रायपसेणीमूल ॥ २०७८ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७०० ॥ २ ॥
जिवाभिगममूल ॥ ४७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १५०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥१०००॥
तेनि मलयवृत्ति ॥ १३००० ॥ ३ ॥ पन्नवणामूल ॥ ७७८५ ॥ तेनि लघुवृत्ति
॥ ३७२८ ॥ तेनि वृहद्वृत्ति ॥ १६००० ॥ ४ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्तिमूल ॥ ४१४६ ॥

तेनि चूर्णि ॥ १८६० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १२००० ॥ ५ ॥ चंद्रप्रज्ञप्तिमूल ॥ २२०० ॥
तेनि वृत्ति ॥ ९४०० ॥ ६ ॥ सूर्यप्रज्ञप्तिमूल ॥ २३०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १००० ॥
तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ९१३० ॥ ७ ॥ निरयावलिका ॥ ८ ॥ कप्पिया ॥ ९ ॥ पु
प्फिया ॥ १० ॥ पुप्फचूलिया ॥ ११ ॥ विण्हिदसा ॥ १२ ॥ ए ५ नि मूल
संख्या ॥ ११०९ ॥ ए ५ निवृत्ति ॥ १८०९ ॥ १२ ॥ ए १२ उपांगनुं मान कह्युं ॥
हवे ४ छेदनु मान कहे छे ॥ व्यवहारमूल ॥ ६०० ॥ तेनु भाष्य ॥ ६००० ॥
तेनि चूर्णि ॥ १०३६१ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३३६२५ ॥ १ ॥ बृहत्कल्पमूल ॥ ४७३
तेनु लघु भाष्य ॥ ८००० ॥ तेनु बृहद्भाष्य ॥ १३००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १४०००
तेनि वृत्ति ॥ ४२००० ॥ २ ॥ निशीथमूल ॥ ८१५ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ७४०० ॥
तेनु बृहद्भाष्य ॥ १२००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २८००० ॥ ३ ॥ दशाश्रुतस्कंधमूल
॥ १८३० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ १६८ ॥ तेनि चूर्णि ॥ २२४५ ॥ तेनि वृत्ति ब्रह्म

कृत ॥ ७५०० ॥ ४ ॥ ए ४ छेदनुं मान कह्युं ॥ पचकल्पमूल ॥ ११३३ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३१७५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३१३१ ॥ १ ॥ जीतकल्पमूल ॥ २०५ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ १००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १७०० ॥ तेनुं टिपण ॥१२००॥२॥ केटलाक ए २ ने छेदसूत्र कहेछे पण ए २ नुं नाम नंदीसूत्रमा नथि ॥ एव ६ छेद ॥ हवे४ मूलसूत्रनुं मान कहेछे॥ उत्तराध्ययनमूल॥ २०००॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ६००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १२००० ॥ तेनि वृहद्दृत्ति ॥ १८००० ॥ १ ॥ दशविकालिकमूल ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ४५० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि वृहद्दृत्ति ॥ ७००० ॥ २ ॥ नदीमूल ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ २३१२ ॥ तेनि वृहद्दृत्ति ॥ ७३५३ ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वारमूल ॥ १८एए ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३००५ ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि वृहद्दृत्ति ॥ ७००० ॥

॥ ४ ॥ ए ४ मूलसूत्रनु मान कह्यु ॥ पाक्षिकसूत्रमूल ॥ ३०० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ३००० ॥ १ ॥ पिंडनिर्युक्तिमूल ॥ ७०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ४००० ॥ तेनि
बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥ उघनिर्युक्तिमूल ॥ १४०० ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३०० ॥
तेनि चुर्णि ॥ ९००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ७००० ॥ आवश्यकमूल ॥ १०० ॥ तेनि
निर्युक्ति ॥ ३००० ॥ तेनि चुर्णि ॥ १८००० ॥ तेनुं टिपण ॥ ४६०० ॥ तेनि बृ
हद्वृत्ति ॥ २२००० ॥ तिलकवृत्ति ॥ १२००० ॥ विशेषावस्यकमूल ॥५०००॥
तेनि लघुवृत्ति ॥ १४००० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ २८००० ॥ पर्युषणाकल्प ॥
॥ १२६० ॥ तेनि चुर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ६७५० ॥ तेनु टिपण ॥
॥ ७०० ॥ तेनि सदेहवि० ॥ ३०५१ ॥ महानिशियमूल ॥ लघुवाचना ॥
॥ ३५०० ॥ मध्यमवाचना ॥ ४२०० ॥ बृहद्वाचना ॥ ४५०० ॥ चउसरणपइ
नो मूलगाथा ६३ ॥ तेनि अवचुरि ॥ २२५ ॥ आउरपच्चखाणमूल ॥ ७० ॥

वृत्ति ॥ ९०० ॥ भत्तपच्चक्खाणमूल ॥ १७२ ॥ संथारकमुल ॥ १२२ ८ ॥ तंडुल
वेयालियमूल ॥ ४०० ॥ चंडावेधकमूल ॥ १७३ ॥ देवेंद्रस्तवमूल ॥ ३०३ ॥
गणिविद्यामूल ॥ ८५ ॥ महापच्चक्खाणमूल ॥ १४३ ॥ वीरस्तवमूल ॥ ४५ ॥
अजीवकल्पमूल ॥ ४५ ॥ गछाचारमूल ॥ १३८ ॥ मरणविधिमूल ॥ ६५९ ॥
सिद्धप्राभृतमूल ॥ १२१ ॥ तिथोगालियमूल ॥ १२५३ ॥ आराधनपताका ॥
॥ ९९३ ॥ दीवसागर पन्नत्तिसगहणीमूल ॥२२३॥ ज्योतिष्करंडक ॥ १८५० ॥
अंगविद्या ॥ ९००० ॥ रुषिभाषित सूत्र अध्ययन ४५ मूल ॥ ६०० ॥ इति
सूत्रादिश्लोकसंख्या ॥ अथनंदी सूत्रमा ७२ सूत्रना नाम कह्याछे ते सूत्र ३
प्रकारना छे ॥ कालिक ॥१॥ उत्कालिक ॥ २ ॥ तद्व्यतिरिक्त ॥ ३ ॥ ए ३ भेद॥
तेमा प्रथम कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ आचारंग ॥ १ ॥ सुयगडांग ॥ २ ॥
ठाणांग ॥ ३ ॥ समवायंग ॥ ४ ॥ भगवती ॥ ५ ॥ ज्ञाता ॥ ६ ॥ उपाशकदशा

॥ ७ अंतगडदशा ॥ ८ ॥ अनुत्तरोववाइ ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरण ॥ १० ॥ वि
पाक ॥ ११ ॥ उत्तराध्ययन ॥ १२ ॥ दशाकल्प ॥ १३ ॥ ववहार ॥ १४ ॥ नि
शिथ ॥ १५ ॥ महानिशिथ ॥ १६ ॥ ऋषिभाषित ॥ १७ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्ति ॥
॥ १८ ॥ द्विपसागरप्रज्ञप्ति ॥ १९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्ति ॥ २० ॥ खुल्लियाविमाणप
विभत्ति ॥ २१ ॥ महल्लियाविमाणपविभत्ति ॥ २२ ॥ अंगचूलिया ॥ २३ ॥
वग्गचूलिया ॥ २४ ॥ विवाहचूलिया ॥ २५ ॥ अरुणोववाए ॥ २६ ॥ वरुणोव
वाए ॥ २७ ॥ गरुडोववाए ॥ २८ ॥ धरणोववाए ॥ २९ ॥ वेसमणोववाए ॥
॥ ३० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ३१ ॥ देविंदोववाए ॥ ३२ ॥ उठाणसुए ॥ ३३ ॥
समुठाणसुए ॥ ३४ ॥ नागपरियावलियाउ ॥ ३५ ॥ निरयावलियाउ ॥ ३६ ॥
कप्पियाउ ॥ ३७ ॥ कप्पवडंसियाउ ॥ ३८ ॥ पुष्फियाउ ॥ ३९ ॥ पुष्फचूलियाउ
॥ ४० ॥ विण्हिदसाउ ॥ ४१ ॥ ए ४१ कालिक सूत्र रात्रि तथा दिवसने पहि

ले तथा छेल्ले पहोरे वांचवा जणवा सज्जायकरवीशेष ४ पहोर सज्जाय नकर वि हवे उत्कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ दशविकालिक ॥ १ ॥ कप्पियाकप्पिय ॥ २ ॥ चूलकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महाकप्पसुयं ॥ ४ ॥ उववाइय ॥ ५ ॥ रायपसेणि॥ ॥ ६ ॥ जिवाभिगम ॥ ७ ॥ पणवणा ॥ ८ ॥ महापणवणा ॥ ९ ॥ पम्मायपमा य ॥ १० ॥ नदी ॥ ११ ॥ अनुयोगद्वार ॥ १२ ॥ देवेंद्रस्तव ॥ १३ ॥ तंडु लवेयालिय ॥ १४ ॥ चंदगविज्जयं ॥ १५ ॥ सूरप्रज्ञप्ति ॥ १६ ॥ पोरिसीम ण्डल ॥ १७ ॥ मण्डलप्रवेश ॥ १८ ॥ विद्याचारणविणिछ्छ ॥ १९ गणिविद्या ॥ २० ॥ झाणविभत्ति ॥ २१ ॥ मरणविभत्ति ॥ २२ ॥ आयविसोहि ॥२३॥ वियरायसुय ॥ २४ ॥ सलेहणासूत्र ॥ २५ ॥ विहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरण वीसोहि ॥ २७ ॥ आउरपच्चखाण ॥ २८ ॥ महापच्चखाण ॥ २९ दृष्टिवाद सूत्र ॥ ३० ॥ ए ३० उत्कालिक सूत्र ते ४ अकाल तथा असज्झाय वर्जिने

आठे पहोर वाचवाजणवा सजाय करवी ॥ एक आवस्यक तद्यतिरिक्तबेथि न्यारुं ए ७२ सूत्रना नाम कह्या आज वर्त्तमानकाले केटला सूत्र नथि ते निविगत ॥ पाखिक सूत्रमा उत्कालिक २७ ॥ ने कालिक ३६ सूत्र कह्याछे ॥ तेमा १५ उत्कालिकने ॥ ३१ कालिक सूत्र हमणा नथि ॥ उत्कालिक १५ ना नाम ॥ कप्पिया कप्पियं ॥ १ ॥ चुलकप्पसुय ॥२॥ महाकप्पसुय ॥ ३ ॥ महा पन्नवणा ॥ ४ ॥ पमायपमायं ॥ ५ ॥ पोरसिमन्डल ॥ ६ ॥ मडलपवेसो ॥ ७ ॥ विद्याचारणविणिछ्ड ॥ ८ ॥ जाणविभत्ति ॥ ९ ॥ मरणविभत्ति ॥ १० ॥ आ यवीसोही ॥११॥ सलेहणासुय ॥१२॥ वियरायसुय॥१३॥ विहारकप्पो ॥१४॥ चरणविहि ॥१५॥ ए १५ नथि ॥ हवे कालिक ३१ ना नाम कहेछे ॥ खुड्डिया विमाण विभत्ति ॥ १ ॥ महल्लियाविमाणविभत्ति ॥ २ ॥ अगचूलिया ॥ ३ वगचूलिया ॥ ४ ॥ विवाहचूलिया ॥ ५ ॥ अरुणोववाए ॥ ६ ॥ वरुणोववा

ए ॥ ७ ॥ गरुलोववाए ॥ ८ ॥ धरणोववाए ॥ ए ॥ वेसमणोववाए ॥ १० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ११ ॥ देविंदोववाए ॥ १२ ॥ उठाणसुए ॥ १३ ॥ समुठाणसुए ॥ १४ ॥ नागपरियावलियाणं ॥ १५ ॥ कप्पियाकप्पियाणं ॥ १६ ॥ आसिविसन्नावणाणं ॥ १७ ॥ दिठिविसन्नावणाणं ॥१८॥ चारणन्नावणाए ॥ ॥ १ए ॥ महासुमिणन्नावणाए ॥ २० ॥ तेयग्गिनिसग्गाणं ॥ २१ ॥ ए २१ नथि ॥ अंगप्रविष्टमा १ दृष्टिवाद सूत्र ते पण नथि ॥ सर्वमिलिने ३६ सूत्र हालनाकालमा नथि पाक्षिक सूत्रनिर्युक्तिमां उत्कालिक २८ सूत्रना नाम नि व्याख्याना अंतमा कह्युंछे के ए २८ अध्ययन यथार्थ कह्यावलिए उपलक्षण मात्र छे स्यामाटे के हालमा एटला उत्कालिक नथि ॥ वलीएज सूत्र निर्युक्तिमा कालिक ३६ सूत्रकह्या छे तेना नामनि व्याख्याने अते कह्युं छे के ए ३६ अध्ययनउपलक्षण (उलखावारूप) नूत छे स्यामाटे के हालमा ए

टला कालिकसूत्र नथि ॥ आ सूत्रनि टिकाउपरथि पूर्वे कह्या ते सूत्र हालमा
नथि एम सिद्ध थाय छे ॥ हालमा ए ३६ माहिलाकेटलाक ए नामना सूत्र
वर्त्ते छे ते आधुनिककृत जणाय छे विशेष तो ज्ञानि जाणे अथ पूर्वे कह्या जे
सिद्धांत ते ३२ असजाय टालिने वाचवा जणवा ते ३२ असजायनुं स्वरूप लि
ख्यते ॥ ठाणांग ठाणे १० मे ॥ दस विहे अंतलिख ए असझाइए ॥ आका
शने आश्रिने १० असजाय उपजे छे तेना नाम ॥ उक्कावाए ते तारो खरे त
था ते प्रकारे रेखासहित अनेक प्रकाशसहित तेहनु पडवु ते उल्कापात ॥
अथवा उल्का के० ज्वालारहित अग्नि तेनु पात के० आकाशथि पडवुं तेउल्का
पात तेहमा थोडुं होय तो किंचित्काल खमवु निरंतर तथा कोई मोटो तारो
खरे तो १ पहोर लगे असजाय ॥ रात्रिने अंते तारो खरे तो सूर्य उदय थाय
तिहांसुधि असजाय गणवि ॥ १ ॥ दिसिदाहे के० दिशाउने विषे मोटि लाय

सरिखो उद्योतने रक्तता तेनिअस० जिहांसुधि होय तिहां लगि ॥ २ ॥ ग
ज्जिए के० अकाले गाजनि अस० ॥ ३ ॥ विज्जुए के० अकाले विजलि नि
अस० ॥ ४ ॥ निग्घाए के० अकाले कडाकानिअस०॥ ५ ॥ अकालते आर्द्रा
नक्षत्रथि मांडिने हस्तनक्षत्र उत्तरयासुधि काल ते उपरात शेषनक्षत्रे गाज
विजवरसाद जेटलीवार होय तेटलीवारसुधि अकाल जाणवो ॥ जुवएके०
शुक्लपक्षना वालाचंद्रमानि तेचंद्रना उदयथि ते अस्तसुधि जाणवि ॥ ६ ॥ ज
खालित्तएके० आकाशनेविषे भूतादिकनो चालो थाय जेटली वारसुधि चा
लो होय तेटली वारसुधि अस० ॥ ७ ॥ धुमियाएके० दिवश उग्या पछि जेट
लिवार धुम्र वर्षे तेटली वारसुधि अस० ॥ ८ ॥ महियाएके० रात्रिनेविषे जा
कलवर्षे ते मेघरवो तेनी अस० ॥ ९ ॥ रजोग्घाएके० घणो वायरोगुजे आ
काशे धूलि चडे दिशा धुंधली लागे ते रजोद्घात जीहां लगे रहे तिहांसुधि

असस० ॥ १० ॥ हवे १० उदारिकने आश्रिने असझाय कहेछे ॥ ठाणागठाणे
१० मे ॥ दसविहे उरालिए असझाइए ॥ तेमा प्रथम ॥ अठि के० हाडका
नि असझाय ॥ १ ॥ मसे के० मासनि अस० ॥ २ ॥ सोणिएके० रुधिरनि
अस० ॥ ३ ॥ असुइसामंते के० अशुचि विष्ठानजीकमा पडि होय तेनि
अस० ॥ ४ ॥ सुसाण सामंते के० मशाणनजीक होय तेनि अस० ॥ ५ ॥
चदोवराएके० चंद्रमानुं ग्रहण थाय तेनि अस० ॥ ६ ॥ सुरोवराएके० सूर्यनुं
ग्रहण थाय तेनि अस० ॥ ७ ॥ ए २ असझाय ग्रहण थयाथि मांडिने मुक्त
थया पछी वे घडिसुधि जाणवी ॥ पडणे के० मोटो अधिकारि राजा प्रमुखनो
मरण थाय तेनिअस० ते आखो दिवश एकअस० ॥८॥ रायवुग्गहेके० राजा
राजाने माहोमाहि लडाइ सग्राम थातो होय पोताना नगरनि समिपमा ते

मिटे तिहांसुधि असं० ॥ ए ॥ ठवसयस्स अतो उरालियसरिरगे के० उपा श्रयमांहि उदारिकपचेंद्रियनु शरिर जेटलीवार पड्युंहोय तेटलिवार असं० ॥ १० ॥ ए १० उदारिक आश्री कहि ॥ सर्व मिली २० थइ ॥ आषाढशुद्ध पुर्णिमानि असं० ॥ १ ॥ आषाढवद १ नि असं० ॥ २ ॥ भाद्रवाशुद्ध पुर्णिमानि असं० ॥ ३ ॥ भाद्रवावद १ नि असं० ॥ ४ ॥ कार्त्तिकशुद्ध पुर्णिमानि असं० ॥ ५ ॥ कार्त्तिकवद १ नि असं० ॥ ६ ॥ चैत्रशुद्ध पुर्णिमानि असं० ॥ ७ ॥ चैत्रवद १ नि असं० ॥ ८ ॥ प्रभातनि २ घडिसुधि असं० ॥ ए ॥ मध्यान्हनि २ घडि असं० ॥ १० ॥ सध्यासमयनि २ घडि असं० ॥ ११ ॥ मध्यरात्रिनि २ घडिसुधि असं० ॥ १२ ॥ ए १२ असझायठाणागसूत्रने चउथे ठाणे तथा छेद सूत्रमा कहिछे ॥ सर्व मिलि विशने बार बत्रिश असझाय

थइ ॥ ३२ ॥ ए ३२ असझाय टालि सिद्धांतनि वाचता भणता सझायकरता आशातना लागे नहि ॥ इति ३२ असझायसमाप्त ॥ इतिसिद्धांतमानसमाप्त ॥

॥इतिश्री प्रकरणसंग्रह संपूर्ण॥

॥ श्लोकः ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाधाजिसंज्ञं मुदा ।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतो जडोप्यलमहो जातोस्मि विद्याबुधौ ।
तद्धुं शक्तिधरोहमुत्तमपुरश्चंजानिधानो मुनि ॥ १ ॥

आ पुस्तक पण्डितराज पूज्यश्री ५ देवजीस्वामीना शिष्य साधाजीस्वामिपासे

शुद्ध करावी

श्रावक भगवान्दास केवळदासे

मुंबइमां निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्युं

आवृत्ति त्रीजी

संवत् १९५२

किंमत १ रुपयो

आ पुस्तकनो सर्व प्रकारे सरकारना धारा प्रमाणे हक मालेके स्वाधीन राख्योछे